

माध्यन्दिनशतपथब्राह्मणकण्डिकानाम्
अकाराद्यनुक्रमणिका

मिश्रोपाह्ववेदाचार्यपण्डितश्रीविंशेश्वरदास्त्रिणा
सङ्कलिता



प्रकाशनस्थानम्—

अच्युतग्रन्थमाला-कार्यालयः,

काशी ।

संवत्

१९९४

[मूल्यम् ४.०० रु.]

प्रथमावृत्तिः १०००]



मुद्रक—व. रा. सोमण,
मीलदमीनारायण प्रेस, बनारस सिटी ।

माध्यन्दिनशतपथब्राह्मणकण्डिकानामकाराद्यनुक्रमणिका



(अ)

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०पा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०पा०क० |
|--------------------------------|------------|-------------------------------|-------------|
| अक्रन्ददग्निस्तनयजिव | ६।७।३।२ | अग्निर्ज्यै देवानां नेदिष्ठम् | १।६।१।१ |
| अक्रन्तिं पितरो लोकमस्मा | ७।१।१।४ | अग्निर्ज्यै देवानामद्धातमान् | १।६।२।९ |
| असृष्टं ह वै सृकृतं चातुर्म्भा | २।६।३।१ | अग्निर्ज्यै भार्ग | १।२।३।४।८ |
| अगृहीते माहेन्द्रे । एष वा | ५।१।४।२ | अग्निर्ज्यै सर्वा देवता | १।६।२।८ |
| अगृहीते माहेन्द्रे । एष वा | ५।३।५।२ | अग्निर्होता वेदामेर्होत्रमिति | १।५।२।१ |
| | ३।०।३।०।२ | अग्निर्वेद्यः सैतवान् | १।४।५।५।२।१ |

BL 20

BILARATTYA VIDYA BHAVAN
(MUNSHI SARASWATI MANDIR GRANTHAGAR)
KULAPATIL 34 MUNSHI MARG BOMBAY 400 007

S No 33045 DATE 27/11/1986

Received with thanks from Smt/Smt/Rev S.V.

M No 1155 Class the sum of

Rs 80/- Parse eighty only

on A/c of Fine/Rules/E P Charges Rs P 80

Fee for Rs P

Admission Fee Rs P

TOTAL Rs P 80

LIBRARIAN

समुजो ३।४।४।९

५।२।२।१०

ज ७।१।१।२४

१।४।३।७

यता ९।२।३।२८

६।७।३।६

द्वय १।४।२।२

इति ७।१।१।२३

तव ७।५।१।३३

जे ८।७।१।६

९।३।४।९

अग्नेर्भस्मात्यम

अग्नेर्वर्माणोऽसि

अग्नेर्ह वै देवा

अग्ने वेर्होत्र वेदूर्ह्वमिति

७।१।१।११

८।४।२।३

४।४।५।१३

१।४।५।४

अग्निरेष पुरस्ताधीयते १०।१।१।१

अग्निर्वेदोति । अग्निर्ज्यै ३।२।२।९

अग्निर्मूर्द्धा दिव २।३।४।११

अग्निर्ज्यै देवाना मृदुहृदय १।६।२।१०

| कर्मिण्यस्तीहम् | श० अ० मा० प० | कर्मिण्यस्तीहम् | श० अ० मा० प० |
|----------------------------|--------------|------------------------------|--------------|
| अमे सदसादेति | १।२।३।३२ | अथ काय एककपालः | २।५।२।१३ |
| अनौ त्वेवोत्सादयेत् | १।२।१।२० | अथ कुम्भः द्रववितृणो | ५।५।४।२७ |
| अनौ ह वै देवाः सर्वाणि | २।२।३।२ | अथ कृष्णा गृहति | ५।३।४।१५ |
| अनौ ह वै देवाः सर्वान्पशू० | २।३।४।१ | अथ कृष्णविषाणां सिचि | ३।२।१।१८ |
| अनौ हुत्वाय मशयति | १।४।४।९ | अथ कृष्णाजिन च | ६।४।३।६ |
| अनौ हुत्वाय मशयति | १।५।१।११ | अथ कृष्णाजिनमादधे | १।१।४।१ |
| अनौ हुत्वाथैनमभिषिषति | १।३।४।१६ | अथ कृष्णाजिनमादधे | १।१।४।४ |
| अमेय भैत्रारुणस्य | ५।३।५।१० | अथ केशश्मश्रूण्या | २।५।२।४८ |
| अमेय भैत्रारुणस्य | ५।४।३।२७ | अथ केशश्मश्रूण्या | २।६।२।१९ |
| अमेय भैत्रावरुणस्य | ५।३।५।३ | अथ क्षत्ता पालागलीमणि० | १३।५।२।८ |
| अमेयहृदनीयं समाडा० | १४।१।३।८ | अथ क्षत्रियस्य । उदेषां वाट् | ६।६।३।१५ |
| अमे घृह्णुपसामूर्द्धो | ६।७।३।१० | अथ मनति प्रायमुत्तर० | ३।६।१।६ |
| अजान्यस्य दशरात्रमाहुः | १२।३।१।९ | अथ मनति प्रायमुत्तर० | ३।७।१।३ |
| अजान्येरास्याधिनः पशु | १२।९।१।४ | अथ सरे सादयति | १४।१।२।१७ |
| अनुष्टा इति पुर्णाक्षः | १०।१।१।८ | अथ सरे सादयति | १४।२।२।३० |
| अहमिगा पिप्प्लो मा | १।४।५।२ | अथ गवेषुक्षामिर्दन्वति | १४।१।२।१९ |
| अजेतराभवत् । यस्त | १४।४।२।९ | अथ गाममिश्रति | २।३।४।२७ |
| अतिच्छन्दसा निमीते | ३।३।२।११ | अथ गामभ्येति | २।३।४।२५ |
| अतिधेरातिष्ठममि | ३।४।१।११ | अथ गामभ्येति | २।३।४।३४ |
| अनुर्णो होता तूर्णित्वम्० | १।४।२।१२ | अथ गानादयति | १४।२।१।७ |
| अथ प्रारीरु यन्देव० | १४।१।४।१२ | अथ गाम्ययेति | ४।३।४।२९ |
| अथ ह याजवल्क्यो | १४।७।१।४१ | अथ गार्हपत्य एवोपातिष्ठ० | ७।३।१।८ |
| अथ हेके । अनुडीष | ३।२।१।३६ | अथ गार्हपत्यमभ्येति | २।३।४।२८ |
| अथ हेके । उदपात्रमुत्ति० | ३।३।४।३१ | अथ गार्हपत्यमुत्तिष्ठो | १।९।३।१८ |
| अथ हेके गुनं वा काष्ठं वा | ३।३।२।८ | अथ गार्हपत्यमुत्तिष्ठो | २।४।१।९ |
| अथ कथिदाह | १३।८।३।४ | अथ गृहति | ४।६।९।२५ |
| अथ कर्मणाम् । आत्मे० | १४।४।४।३ | अथ गृह्यति मगापाय | १३।८।४।८ |
| अथ कथ्यदिगम् | ४।५।१।०।७ | अथ गृहति कदाचन | ४।३।५।१० |
| अथ कथ्यमानुदेति | ५।३।३।१२ | अथ गृहति देवस्य त्वा | १।१।२।१७ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|-------------------------|--------------|--------------------------|--------------|
| अथ गृहाति समुद्रस्य | ३।९।३।२७ | अथ चात्वाले मार्जयन्ते | ३।८।२।३० |
| अथ गोधूमानुपस्पृशति | ५।२।१।१२ | अथ चात्वाले मार्जयन्ते | १४।३।१।२७ |
| अथ गोर्विजाममानाया | ५।३।४।१८ | अथ च्छदिरधि निदधाति | ३।६।१।२२ |
| अथ गोः । इमं साहस्रं | ७।५।२।३४ | अथ च्छन्दस्या उपदधाति | ८।२।३।७ |
| अथ गौः प्राणमेवैतया | ४।३।४।२५ | अथ च्छन्दस्या उपदधाति | ८।३।३।१ |
| अथ ग्रहान्गृहाति | ५।५।४।२३ | अथ च्छन्दस्या उपदधाति | ८।५।२।१ |
| अथ ग्रहान्जुहोति | ९।३।२।१० | अथ जघनेन कस्तुम्भी० | १।१।२।१२ |
| अथ ग्रावाणमादधे | ३।९।४।२ | अथ जघनेन कृष्णाजिने | ३।२।१।५ |
| अथ ग्राव्य उपावहरति | ३।५।४।२४ | अथ जघनेन परीत्य | ७।१।१।२७ |
| अथ घृतं गृहाति | ५।३।४।२० | अथ जघनाद्धेनोदक् | ९।१।२।२६ |
| अथ चक्षुरत्यवहत् | १४।४।१।१५ | अथ जघनाद्धेनोदीचीम् | ७।२।२।१० |
| अथ चतस्र ऊर्क्षाः करोति | ६।५।२।१४ | अथ जाग्रति जाग्रति देवाः | २।१।४।७ |
| अथ चतुरुत्तरयति | २।३।१।१७ | अथ जाघन्या पत्नीः | ३।८।५।६ |
| अथ चतुर्गृहीतमाज्यं | ४।४।२।४ | अथ जातेभ्यो जुहोति | ९।१।१।१९ |
| अथ चतुर्गृहीतमाज्यं | ४।४।५।१२ | अथ जिह्वै सा द्वीयं | ३।८।३।७ |
| अथ चतुर्थी । अष्टादश | १०।४।३।१७ | अथ जुहं च सुव च | १।९।२।१९ |
| अथ चतुर्थी जुहोति | ३।१।४।१५ | अथ जुहं चोपमृवं च | १।८।३।२३ |
| अथ चतुर्थे मयाने | १।५।३।१६ | अथ जुह प्रति गृहाति | १।३।४।१४ |
| अथ चतुर्थेऽहन् | १३।४।३।८ | अथ जुहोति । आयुमानमे | १३।८।४।९ |
| अथ चतुर्थेऽहन्गृहति | ४।५।९।२ | अथ जुहोति । उरु विष्णो | ३।६।३।१५ |
| अथ चतुर्थ्या महदध | १३।५।४।१४ | अथ जुहोति । त्वं सोम | ३।६।३।७ |
| अथ चतुर्थ्या महदध | १३।५।४।२३ | अथ जुहोति यया | ३।४।४।२४ |
| अथ चतुर्विंशति० | १०।२।३।१० | अथ जुहोति । यया | ३।४।४।२५ |
| अथ चतुर्विंशत्यहे | ११।५।४।८ | अथ जुहोति यान्युप० | ५।३।५।९ |
| अथ चत्वारो राजासन्दी० | ३।३।४।२६ | अथ जुहा परिवीन्तमनक्ति | १।८।३।७ |
| अथ चपालमुदीक्षते | ३।७।१।१८ | अथ जुहा प्रपदान्यस्यो० | ३।८।३।५ |
| अथ चपालमुभयतः | ३।७।१।१२ | अथ जुहा प्रपदान्यस्यो० | ३।८।३।३३ |
| अथ चातुर्मास्यैर्जयते | ५।२।३।१० | अथ तत्रोपशयाच्च पिष्ट्वा | १४।३।२।२१ |
| अथ चातुर्मास्यमोदनं | २।१।४।४ | अथ तत्राप उपनिनयति | ६।४।३।१ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० प्रा० क० | कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० प्रा० क० |
|---------------------------|----------------|--------------------------|----------------|
| अथ तदर्कवर्णं चात्वाले | ९।१।१।४२ | अथ दक्षिणत उपवाय | ८।१।३।९ |
| अथ तनूनपात यजति ग्रीष्मो | १।५।३।१० | अथ दक्षिणतो गाम् | ७।५।२।१९ |
| अथ तनूनपात यजति रेतो | १।५।४।२ | अथ दक्षिणतोऽजम् | ७।५।२।२१ |
| अथ तमश्मानमुदहरणेऽव० | ९।१।२।९ | अथ दक्षिणत । अथ | ८।१।१।७ |
| अथ तिरश्चीं रास्ना पथ्य० | ६।५।२।११ | अथ दक्षिणत । अथ | ८।६।१।१७ |
| अथ तृणमन्तर्भाय प्रहरति | १।२।४।१५ | अथ दक्षिणत । अम्बा० | ७।३।१।२१ |
| अथ तृणमादायोपाकरोति | ३।७।३।८ | अथ दक्षिणत परिवक्ते | १३।८।४।२ |
| अथ तृणैः परिस्तृणाति | १।१।१।२२ | अथ दक्षिणत प्रोक्षति | ३।५।२।६ |
| अथ तृतीयमम्बाधाय | १४।३।१।७ | अथ दक्षिणत । विराडसि | ८।६।१।६ |
| अथ तृतीय प्रहरति | १।२।४।१९ | अथ दक्षिणत । षोडशी | ८।५।१।१० |
| अथ तृतीयया शकुन्तला | १३।५।४।१३ | अथ दक्षिणत सिकता | १४।२।२।४३ |
| अथ तृतीयया सात्रासाहे | १३।५।४।१८ | अथ दक्षिणत सौर | १३।८।२।५ |
| अथ तृतीयसदन आर्भवे | १२।३।४।५ | अथ दक्षिणं परिदधाति | १।३।४।३ |
| अथ तृतीयाजिर्व्यपति | १३।४।२।१२ | अथ दक्षिणानायच्छति | ५।४।३।१३ |
| अथ तृतीया स्वयमातृणा | १०।४।३।१६ | अथ दक्षिणान्दिशम० | ११।१।६।२२ |
| अथ तृतीयेऽहन् | १३।४।३।७ | अथ दक्षिणान्वाहनन्म० | २।६।२।१८ |
| अथ तेनैव पुन परीत्य | ७।१।१।३० | अथ दक्षिणायुग्ममुपार्षति | ५।४।३।८ |
| अथ ते पवित्रे प्रस्तरेऽपि | १।८।१।४४ | अथ दक्षिणे । इमौ ते | ९।४।४।४ |
| अथ त्रयोदश पादमात्र्य | १३।८।३।६ | अथ दक्षिणे कर्णं आज० | ४।५।८।१० |
| अथ त्रयो वान लोका | १४।४।३।२४ | अथ दक्षिणेन जानुनारोहति | ३।२।१।८ |
| अथ त्रिपुरुषा रज्जु | १०।२।३।१२ | अथ दक्षिणेन जूह मति० | १।३।४।१३ |
| अथ त्रिष्टुभा यजति | १।७।२।१६ | अथ दक्षिणेनाऽवाहार्य० | २।६।१।१० |
| अथ त्रिष्टुभा यजति | ११।२।२।२ | अथ दक्षिणेनौखलमाहरति | १।१।४।६ |
| अथ त्रीण्यहान्युपाति० | १०।२।५।१५ | अथ दधि गृह्णाति | ४।३।५।१३ |
| अथ त्रिशत्पञ्चमाग्निमीते | १०।२।३।९ | अथ दर्भमतरुणकमन्तर्दधाति | ३।१।२।७ |
| अथ त्र्यहे त्रयो वा | ११।५।४।११ | अथ दर्भमतरुणकमन्तर्दधाति | ३।६।४।१० |
| अथ त्वष्टार यजति | १।२।२।१० | अथ दर्भमतरुणके निदधाति | ३।४।१।२१ |
| अथ त्वाष्ट दशकपाल | ५।४।५।८ | अथ दर्भस्तन्वष्टुपदधाति | ७।२।३।१ |
| अथ दक्षिणत उचानेन | १४।१।३।२४ | अथ दशमेऽहन् | १३।४।३।१४ |

| कण्डिकप्रतीकम् | सं०अ०ब्रा०क० | कण्डिकप्रतीकम् | सं०अ०ब्रा०क० |
|---------------------------|--------------|----------------------------|--------------|
| अथ दक्षापवित्रमुपगृह्य | ४।२।२।११ | अथ द्वितीयां जुहोति चित्र | ४।३।४।१० |
| अथ दिशोऽनुवीक्ष्यमाणो | ५।२।१।१५ | अथ द्वितीयाग्निर्ज्वरति | १३।४।२।९ |
| अथ दिशो व्याघातयति | २।४।४।२४ | अथ द्वितीया पञ्चाग्निः | १०।४।३।१५ |
| अथ दिश्या उपदधाति | ८।३।१।११ | अथ द्विपदा । अग्रे त्वलो | २।३।४।३१ |
| अथ दीक्षिष्यमाणा | ४।६।८।३ | अथ द्विपदा । पुरुषच्छन्दसं | २।३।४।३३ |
| अथ दीक्षेत । तं नानीजान | २।६।३१२ | अथ द्वियनुपमुपदधाति | ७।४२।१६ |
| अथ दूर्वेष्टकामुपदधाति | ७।४।२।१० | अथ द्वेधा करोति | १।२।२।४ |
| अथ दृषदमुपदधाति | १।२।१।१५ | अथ द्वे पिशीले वा याज्यौ | २।५।३।६ |
| अथ देवताया आदिशति | १।१।२।१८ | अथ धनुरधितनोति | ५।३५।२७ |
| अथ देवाना पत्नीर्यजति | १।९।२।११ | अथ धनुराल्यां गामुषः | ५।४।३।१० |
| अथ देवाश्च द वा अमुराश्च | ११।५।२।३ | अथ धवित्रैराधूनोति | १४।१।३।३० |
| अथ देवा । अन्योः | ५।१।१।२ | अथ धाना आवपति | ४।४।३।७ |
| अथ देवा । अन्योः | ११।१।८।२ | अथ नदीक्षित । काष्ठेन वा | ३।२।१।३१ |
| अथ देवा । बीजामेन | ३।२।४।६ | अथ नदीपतिं गृह्णाति | ५।३।४।१० |
| अथ चावापृथिव्य | २।५।१।१७ | अथ नराक्षसं द्वितीय | १।८।२।१२ |
| अथ द्रोणकलशम् | ४।५।६।४ | अथ नवमेऽहन् । एवमेवै० | १३।४।३।१३ |
| अथ द्रोणकलशे | ४।५।५।११ | अथ नवमेऽहन्भूदति | ४।५।२।८ |
| अथ द्वन्द्वभ्यो जुहोति | ९।१।१।१७ | अथ नापिताय क्षुर प्रयच्छति | ३।१।२।९ |
| अथ द्वादशकृत्योऽभि० | ४।१।१।१२ | अथ नामिदमे मभ्यमिव | ९।१।१।१२ |
| अथ द्वादशाहे । द्वादश वै | ११।५।४।९ | अथ नामग्राह जुहोति | ९।३।३।८ |
| अथ द्वितीय प्रहरति | १।२।४।१७ | अथ निग्राभ्या आहरति | ३।९।४।७ |
| अथ द्वितीयया त्रयस्त्रिंश | १३।५।४।१२ | अथ निग्राभ्यामिहपृच्छति | ३।९।४।१४ |
| अथ द्वितीयनाग्रावयति | ३।७।४।१० | अथ निग्राभ्यो ग्राहान्वि० | ३।९।४।२५ |
| अथ द्वितीयमुज्ज्वलयति | १४।३।१।५ | अथ नियुक्त । देवस्य त्वा | ३।७।४।३ |
| अथ द्वितीयया श्वेत | १३।५।४।२२ | अथ निर्णामौ पशुयो | १०।२।१।५ |
| अथ द्वितीयया षट् | १३।५।४।१७ | अथ निवेप्य गृह्णाति | ५।३।४।११ |
| अथ द्वितीयया सहस्रमा० | १३।५।४।८ | अथ निश्रयणी निश्रयति | ५।२।१।९ |
| अथ द्वितीया कुशीमा० | ३।६।२।११ | अथ निष्पुनाति परापूत | १।१।४।२१ |
| अथ द्वितीया जुहोति । उषसं | ४।६।२।९ | अथ नीचा पाणिना । | ४।१।२।२३ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०मा०व० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०मा०व० |
|-------------------------------|------------|-----------------------------------|------------|
| अथ नीविमुद्गृह्य नम० | २।४।२।२४ | अथ पवित्रे करोति | ५।३।५।१५ |
| अथ नीविमुद्गृह्य नम० | २।६।१।४२ | अथ पशुं विशास्ति | ३।८।३।३ |
| अथ नीविमुद्गृह्यते । | ३।२।१।१५ | अथ पशुं सम्मृशति | ३।८।३।३६ |
| अथ नेशा पत्नीमुदानेप्यन् | ५।२।१।८ | अथ पश्चात् । अग्रे यथे | ७।३।१।२२ |
| अथ पक्षयोररत्नी उपपाद० | १०।२।२।७ | अथ पश्चात् । अयं पश्चा० | ८।१।२।१ |
| अथ पञ्चचूडा उपदधाति | ८।६।१।११ | अथ पश्चात् । अयं पश्चा० | ८।६।१।१८ |
| अथ पञ्चमीश्रितिमुपपाय | १०।१।३।७ | अथ पश्चात्परिक्रम्य | ३।३।४।१३ |
| अथ पञ्चमीश्रितिमुपपाय | १०।२।१।९ | अथ पश्चात्प्रोक्षति प्रवेतास्त्वा | ३।५।२।५ |
| अथ पञ्चमी दिश्यामुप० | ८।२।१।९ | अथ पश्चात् । सम्प्राडसि | ८।६।१।७ |
| अथ पञ्चमी । पञ्चासपत्ना० | १०।४।३।१८ | अथ पाणी अयनेनिके | १।२।५।२३ |
| अथ पञ्चमेऽहन् । एवमे० | ११।४।३।९ | अथ पात्राणि निर्णोनिजति | १।३।१।२ |
| अथ पञ्चमै चित्तेः | १०।२।५।१३ | अथ पात्रीनिर्णोजनम् | १।२।२।१८ |
| अथ पक्षीभ्यः पत्नीयूपमुच्छ्र० | ३।७।२।८ | अथ पार्थ्यानि जुहोति | ५।३।५।४ |
| अथ पक्षीः संयाजयन्ति | १।९।२।५ | अथ पार्थ्वेन वासिना वा | ३।८।३।२४ |
| अथ पक्षीं सज्जयति | १।३।१।१२ | अथ पितृभ्योऽभिषेचयेभ्यः | २।६।१।६ |
| अथ पक्ष्यै पदं प्रतिपरा० | ३।३।१।१० | अथ पितृभ्यो बर्हिपदभ्यः | २।६।१।५ |
| अथ पक्ष्यै शिरोपावृत्य | १।४।१।४।१६ | अथ पिनाष्टि । प्राणाय | १।२।१।१९ |
| अथ पयो गृह्णाति | ५।३।४।१९ | अथ पिन्वने पिन्वयति | १।४।२।१।११ |
| अथ परस्तादुन्मुकं | २।४।२।१४ | अथ पिन्वमानमनुमन्त्र० | १।४।२।२।२७ |
| अथ पराङ् पर्यावर्तते | २।४।२।२१ | अथ पुच्छे वितस्तिमुपाद० | १०।२।२।८ |
| अथ परिधिमभिपगाऽऽग्रा० | १।८।३।९ | अथ पुत्रस्य नाम गृह्णाति | १।९।३।२१ |
| अथ परिधीननुमहरति | १।८।३।२२ | अथ पुत्रस्य नाम गृह्णाति | २।३।४।४१ |
| अथ परिधीन् परिदधाति | १।३।३।१३ | अथ पुनरेत्य जपन्ति | २।६।२।११ |
| अथ परिधीन्परिदधाति | ३।५।२।१४ | अथ पुनरेत्याऽऽहवनीयम० | ३।८।१।१५ |
| अथ परिज्ययति | ३।७।१।१९ | अथ पुनरेव । याः पुरस्ता० | ८।५।२।११ |
| अथ पर्य्युपति व्रक्ष ङ्द | ३।६।१।१८ | अथ पुनरेव । या प्रथमा | ८।५।२।१५ |
| अथ पर्य्युहति व्रक्षवनि त्वा | ३।६।१।१७ | अथ पुनर्लोहं न्यस्यति | ३।२।२।२१ |
| अथ पवित्रं निदधाति | १।७।१।१२ | अथ पुनश्चित्तिमुपदधाति | ८।६।३।८ |
| अथ पवित्रयोर्गार्ज्जयन्ते | १।८।१।४३ | अथ पुनः प्रपद्य । आग्रय० | ४।३।५।२१ |

| यण्डिकाप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०क० |
|------------------------------|--------------|
| अथ पुनः प्रपद्य । आचिनं | ४२।५।१२ |
| अथ पुनः प्रपद्य । चतुर्गृही० | ३।५।३।१० |
| अथ पुनः प्रयुज्जानस्य | २।६।३।१३ |
| अथ पुनः प्रसलवि | २।६।२।१५ |
| अथ पुरस्तात् । उदीची | ३।५।१।२८ |
| अथ पुरस्तात्परीत्य | २।१।४।२८ |
| अथ पुरा बहिष्पवमानात् | १३।४।१।१६ |
| अथ पुरीषं निवपति । तत्र | ८।५।४।९ |
| अथ पुरीषं निवपति । त० | ७।१।१।३६ |
| अथ पुरीषं निवपति । मांसं | ८।७।३।१ |
| अथ पुरुषमुपवधाति | ७।४।१।१५ |
| अथ पुरुषशीर्षमभिजुहोति | ७।५।२।२३ |
| अथ पुरुषशीर्षमुदगृह्णाति | ७।५।२।१३ |
| अथ पुरोडाशमधिष्ठुणक्ति | १।२।२।७ |
| अथ पुष्करपर्णमुपवधाति | ७।४।१।७ |
| अथ पूर्णपाशान्तस्तमवमु० | ४।४।३।१३ |
| अथ पूर्णोहुतिं जुहोति | ९।२।३।४३ |
| अथ पूर्वमुदिमावधाति | ६।५।२।४ |
| अथ पूर्वयोरुत्तरस्यान् | ३।५।२।१२ |
| अथ पूर्वार्द्धेन दक्षिणा | ९।१।२।२८ |
| अथ पूर्वार्द्धेन दक्षिणाम् | ७।२।२।१२ |
| अथ पूर्वेषुः । अन्वाहार्य० | २।५।२।१४ |
| अथ पूर्वेषुः । द्रौ खरौ | ५।१।२।१५ |
| अथ पूर्वेषुः परिश्रुतः | ५।५।४।२० |
| अथ पृथती विचित्रगर्भा | ५।५।२।९ |
| अथ पृथदाग्न्यं गृह्णाति । | ३।८।४।७ |
| अथ पृथयान्गृह्णाति | ५।१।२।२ |
| अथ पौष्णं चरुं निर्व्वपति | ५।४।५।९ |
| अथ पौष्णम् । पशवो वै | ३।९।१।१० |

| यण्डिकाप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०क० |
|-----------------------------|--------------|
| अथ पौष्णीन्निर्व्वपति | १३।४।१।१४ |
| अथ प्रचरणीति सुग्भवति | ४।४।२।७ |
| अथ प्रचरणीति सुग्भवति | ४।५।२।९ |
| अथ प्रजापतेर्हृदयं गायति | ९।१।२।४० |
| अथ प्रणीता दक्षिणातः | १।९।२।३२ |
| अथ प्रतिपद्यते । इदं | १।९।१।४ |
| अथ प्रतिपद्यते । इदोप० | १।८।१।२४ |
| अथ प्रतिपरेत्य गार्हपत्यम् | ४।३।४।६ |
| अथ प्रतिपरेत्य गार्हपत्यम्० | ५।४।२।९ |
| अथ प्रतिपरेत्य गार्हपत्यमु० | २।६।१।१९ |
| अथ प्रतिपस्थाता । अग्नेः | ३।३।४।२१ |
| अथ प्रतिपस्थाता । उचरं | ३।५।३।२२ |
| अथ प्रतिपस्थाता पर्य्येति | ४।२।१।१७ |
| अथ प्रतिपस्थाताऽभक्षितेन | ४।३।१।२१ |
| अथ प्रतिपस्थाता प्रतिपरेति | २।५।२।२० |
| अथ प्रतीचीन्दिशमप० | ११।१।६।२३ |
| अथ प्रत्यवरोहति । | ९।२।१।१७ |
| अथ प्रत्यवरोहान्जुहोति | ९।१।१।३२ |
| अथ प्रत्येत्य चिप्प्यानां | ९।४।३।१ |
| अथ प्रथमायै स्वयमातृ० | ८।७।१।१० |
| अथ प्रथमायै स्वयमातृ० | ८।७।१।१८ |
| अथ प्रदरात्पूरीषमाहर्त्तवा | १३।८।३।१० |
| अथ प्रयौति । संसृथां | ६।५।१।९ |
| अथ प्रवत्स्यन् । गार्हप० | २।४।१।३ |
| अथ प्र वा व्रजति प्र वा | २।४।१।६ |
| अथ प्र वा व्रजति प्र वा | २।४।१।१२ |
| अथ प्रसृते दक्षिणर्ग्मेण | १४।२।१।२९ |
| अथ प्रस्तरमादधे | १।८।३।११ |
| अथ प्रस्ते निन्दुयते | ३।४।३।९९ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|-------------------------------|--------------|--------------------------------|--------------|
| अथ प्रहरिष्यन् | ३।९।४।१७ | अथ प्रोष्णुते गर्भो वा | ३।२।१।१६ |
| अथ प्राद्विबोदङ्कुक्कामति | ३।१।२।१२ | अथ फेनं जनयित्वा | ६।५।१।३ |
| अथ प्राद्विबोदङ्कुक्कामति | १।४।२।२।२९ | अथ बर्हिर्जुहोति | १।९।२।२९ |
| अथ प्राद्विबोदङ्कुक्कामति | १।४।३।१।२८ | अथ बर्हिर्यजति शरद्वै | १।५।३।१२ |
| अथ प्राङ् प्रेक्षते | १।१।२।२१ | अथ बर्हिर्यजति भूमा वै | १।५।४।४ |
| अथ प्राङ् प्रेक्षते | १।९।३।१३ | अथ बर्हि स्तृणाति । अयं वै | १।३।३।७ |
| अथ प्राणभृत उपदधाति | ८।३।२।१ | अथ बर्हीषि । प्राचीना० | ३।६।१।१४ |
| अथ प्राणभृत उपदधाति | ८।३।२।१४ | अथ बर्हीषि । प्राचीना० | ३।७।१।७ |
| अथ प्राणमत्यवहत् । स | १।४।१।१।१४ | अथ बार्हस्पत्यं चरुं निर्व्वे० | ५।४।५।११ |
| अथ प्रातरुदित आदित्ये | ६।६।४।२ | अथ बार्हस्पत्यं चरुं नैवारं | ५।१।४।१२ |
| अथ प्रातर्गोतमस्य | १।३।५।१।१ | अथ बार्हस्पत्यं चरुमधिभय० | ५।३।२।८ |
| अथ प्रातर्भस्मान्युद्युत्य | १।२।४।४।१ | अथ बार्हस्पत्यम् । ब्रह्म वै | ३।९।१।११ |
| अथ प्रातर्हुते वाऽहुते वा | २।५।३।१७ | अथ बार्हस्पत्येन चरुणा | ५।१।५।२५ |
| अथ प्रातः । अनशित्वा | २।३।१।५ | अथ बाह् उद्धृष्टाति | ५।४।१।१५ |
| अथ प्रातः । आग्नेयः | २।४।४।८ | अथ बृहस्पत्ये वाचे | ५।३।३।५ |
| अथ प्रातः । आग्नेयः | २।४।४।१० | अथ ब्रह्मणे पोतारन्दीक्षयति | १।२।१।१।८ |
| अथ प्रातः । आग्नेयः | २।४।४।१२ | अथ ब्रह्मणे । ब्रह्मा हि यज्ञं | ४।३।४।२३ |
| अथ प्रातः । आग्नेयः | २।४।४।१४ | अथ ब्रह्मणे ब्राह्मणाच्छं० | १।२।१।१।६ |
| अथ प्रातः । आग्नेयः | २।४।४।१८ | अथ ब्रह्मयज्ञः स्वाध्यायो वै | १।१।५।६।३ |
| अथ प्रातः । ज्योतिः | २।३।१।३।५ | अथ ब्रह्माणन्दीक्षयति | १।२।१।१।२ |
| अथ प्रातः प्रातरनुवाकमुपा० | ९।४।४।१ | अथ ब्रह्मानुमन्त्रयते | १।४।२।२।१९ |
| अथ प्रातः सजुह्वेन | २।३।१।३।८ | अथ ब्रह्मा महिषीममिमे० | १।३।५।२।५ |
| अथ प्रातः । सूर्यो | २।३।१।३।३ | अथ ब्रह्मैव परादमगच्छत् | १।१।२।३।३ |
| अथ प्रायणीयं निर्व्वपति | ७।२।२।१ | अथ ब्रह्मोद्गातारमृच्छति | १।३।५।२।१४ |
| अथ प्रायश्चिची करोति | ६।६।४।११ | अथ ब्रह्मोद्गातारमृच्छति | १।३।५।२।१९ |
| अथ प्रायश्चिची करोति | ६।८।२।११ | अथ ब्राह्मणस्य पात्रे | ५।४।२।७ |
| अथ पुष्पा गृह्णाति | ५।३।४।१६ | अथ मदन्तीरुपस्पृश्य | ३।४।३।११ |
| अथ प्रेक्षते । चरु वातयेति | १।१।२।१४ | अथ मध्य आघारयति | ३।५।२।१३ |
| अथ प्रैति । उर्व्वन्तरिक्षम्० | १।१।२।४ | अथ मध्यमं छदिरुपस्पृश्य | ३।५।३।२३ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ०अ०भा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | अ०अ०भा०क० |
|------------------------------|------------|-----------------------------|------------|
| अथ मधु गृह्णाति | ५।३।४।१७ | अथ मिनोति । या ते | ३।७।१।१५ |
| अथ मधुमायै स्वयमा० | ८।७।१।१९ | अथ मुखं विमृष्टे | ३।८।५।५ |
| अथ मध्ये । अग्नेः पुरीष० | ८।५।१।१२ | अथ मुखदक्षे । उपरीव | ९।१।१।१३ |
| अथ मध्ये । अधिपत्यसि | ८।६।१।९ | अथ मुखमुपस्पृशते | १।९।३।७ |
| अथ मध्ये । अयमुपस्पृशती | ८।६।१।२० | अथ मुक्तान्युपस्पृशन्ते | ४।४।१।१५ |
| अथ मध्ये । इयमुपरि मति० | ८।१।२।७ | अथ मुसलमादक्षे | १।१।४।१० |
| अथ मध्ये गन्धामुच्छति | ५।४।१।९ | अथ मृत्पिण्डमवाक्षे | ६।५।२।१ |
| अथ मध्येऽङ्गुल्याकाक्षं | ३।३।२।१९ | अथ मृत्पिण्डमभिमृशति | ६।४।२।१ |
| अथ मनोतायै हविषोऽनु० | ३।८।३।१४ | अथ मृत्पिण्डं परिगृह्णाति | १।४।१।२।९ |
| अथ मनोऽयमवहत् | १।४।४।१।७ | अथ मृत्माहृत्य । उखां | ६।६।४।९ |
| अथ मनो ह वा अङ्गुः | १।१।५।९।२ | अथ मेखलां परिहरते | ३।२।१।१० |
| अथ मन्यन्तं गृह्णाति | ४।२।१।१० | अथ मैत्रावार्हस्पत्यं चर्हं | ५।३।२।४ |
| अथ गन्धिनः पुरोरुचा | ५।४।४।२।१ | अथ मैत्रावरुणचमसेन० | ३।९।३।२६ |
| अथ मरीचीः । अजलिना | ५।३।४।२।१ | अथ मैत्रावरुणीं वशामनू० | ४।५।१।५ |
| अथ मरुज्य उज्जैवेभ्यः | ५।१।३।३ | अथ मैत्रावरुणो जपति | ४।६।६।८ |
| अथ मरुज्यः क्षीदिभ्यः | २।५।३।२० | अथ मैत्रावरुण्या पयस्यया | ९।५।१।५४ |
| अथ मरुज्यः सान्तपनेभ्यः | २।५।३।३ | अथ यं यजुपा युनक्ति | ५।१।५।१५ |
| अथ मरुज्यो गृह्मेधिभ्यः | २।५।३।४ | अथ यः कामयेत क्षत्रं शिवा | २।१।३।७ |
| अथ महावीरावुपयमन्या | १।४।२।२।४० | अथ यः कामयेत बहुप्रजया | २।१।३।८ |
| अथ मातृणामेकां शास्त्रयो० | १।७।१।४ | अथ यः पुरादित्यस्याऽस्त० | २।३।१।८ |
| अथ मातृभिर्वस्तामसमवा० | १।७।१।३ | अथ यः प्रचरण्णां संस्ववः | ४।४।२।१३ |
| अथ माघ्यन्दिने प्रवमाने | १।२।३।४।४ | अथ यः प्रत्यङ्मुदरेति | ५।३।४।६ |
| अथ मारुतम् । विशो वै | ३।९।१।१७ | अथ यः मृशृतेन हविषा | १।१।४।४।७ |
| अथ मारुतान्जुहोति | ९।३।१।७ | अथ यः स्यन्दमानानां | ५।३।४।१२ |
| अथ माहेन्द्रं ग्रहं गृह्णाति | ४।३।३।१५ | अथ य आग्नेयः पुरोदासः | १।१।२।६।५ |
| अथ माहेन्द्रव्यवर्धति | २।५।४।९ | अथ य इच्छेत् । दुहिता मे | १।४।९।४।१६ |
| अथ मित्रस्य चर्पणीपृष्ठ इति | ६।५।४।१० | अथ य इच्छेत् । पुत्रो मे | १।४।९।४।१४ |
| अथ मित्राय सत्याय | ५।३।३।८ | अथ य इच्छेत् । पुत्रो मे | १।४।९।४।१५ |
| अथ मिनोति । युवानस्त्वा | ३।६।१।१६ | अथ य इच्छेत् । पुत्रो मे | १।४।९।४।१७ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | पा० अ० ब्रा० व० | कण्डिकाप्रतीकम् | पा० अ० ब्रा० व० |
|-------------------------------|-----------------|-------------------------------|-----------------|
| अथ य उपरक्तेन हविषा | ११।१।४।५ | अथ यत्र पूर्व्या द्वारा | ५।१।२।१६ |
| अथ य एतान्यकृत्वा | ०।५।२।१३ | अथ यत्र प्रतिपद्यते | १।८।१।४० |
| अथ य एने । सोऽन्तरेण | ११।६।१।१३ | अथ यत्र मेघ्यन्मवति | ३।२।२।२० |
| अथ य एष जानत | ११।७।३।३ | अथ यत्र राजान कीर्णति | ५।१।२।१४ |
| अथ य एष एकोऽतिरिक्तो | २।६।१।१० | अथ यत्र सुप्त्वा | ३।२।२।२३ |
| अथ य एष पेन्द्र एकादश० | ५।५।१।१९ | अथ यत्र रुक्म स्यात् | १२।४।१।७ |
| अथ य एष बाहंस्यत्यक्षरु० | ५।५।१।१७ | अथ यत्रावमित्र स्यात् | १२।४।१।८ |
| अथ य एष मध्यम | ३।८।१।४ | अथ यत्राऽऽक्षिपमाशास्ते | १।८।१।४२ |
| अथ य एष वैश्वदेवव्यर्हर्भ० | ५।५।१।१० | अथ यत्राऽऽहोषहृते | १।८।१।४१ |
| अथ य एष सभायामग्नि | २।३।२।३ | अथ यत्रैतत्प्रतितरामिव | २।३।२।१२ |
| अथ य एष संतवोऽतिरिक्तो | ५।४।२।१० | अथ यत्रैतत्प्रदीप्तरो | २।३।२।१० |
| अथ यच्चतुर्ध्रुवायां गृह्णाति | १।३।२।१० | अथ यत्रैतत्प्रदीप्तो मवति | २।३।२।११ |
| अथ यच्चतुर्विंशतिमात्मनो | १०।४।२।१८ | अथ यत्रैतदन्नाशाऽऽह० | २।३।२।१३ |
| अथ यच्चतुर्विंशतिमिक्रमा | ३।५।१।१० | अथ यत्पञ्चकृत्य पणते | ३।३।३।५ |
| अथ यच्चतुर्विंशतमहृषयन्ति | १२।१।३।१९ | अथ यत्पञ्चकृत्यो गृह्णाति | ३।४।१।१४ |
| अथ यच्छन्दोमानुषयन्ति | १२।१।३।१९ | अथ यत्पञ्चकृत्यो मिमीते | ३।५।४।११ |
| अथ यजमान । यज्ञो वै | १०।२।२।२४ | अथ यत्पत्नी विससयति | १।९।२।२२ |
| अथ यजमानाय घर्मो० | १४।२।२।४२ | अथ यत्पत्न्यक्षस्य सन्ता० | ३।५।३।१६ |
| अथ यजमानाय यद प्रय० | ३।३।१।८ | अथ यत्पत्न्युपस्पृशति | ३।८।२।५ |
| अथ यजुष्मत्य० । दर्भ० | १०।४।३।१४ | अथ यत्पश्चात्तदुपदधाति | १।२।१।१० |
| अथ यज्ञन्तनुते । यज्ञेनै० | ११।१।८।५ | अथ यत्पश्चात्तद्वीर्यती | ३।५।१।११ |
| अथ यज्ञपात्राणि प्रोक्षति | ११।३।१।२ | अथ यत्पुरस्तात्तदुपदधाति | १।२।१।११ |
| अथ यतरो ददाति | २।६।१।४० | अथ यत्पुरोदाद्य । घाना | ४।२।५।१८ |
| अथ यतरो दास्यन्मवति | २।६।१।३४ | अथ यत्पूर्वेषु । अग्नीषो० | २।४।१।७ |
| अथ यत्किञ्चिदमाद्रं | १४।२।२।१३ | अथ यत्पूर्वेषु । अग्नीषो० | २।४।१।११ |
| अथ यत्कुन्तापमासीत् | १३।४।४।८ | अथ यत्पूर्वेषु । अग्नीषो० | २।४।२।१५ |
| अथ यत्केशवस्य पुरपस्य | ५।४।१।२ | अथ यत्पूर्वेषु । अग्नीषो० | २।४।१।१६ |
| अथ यत्क्रयेण चरन्ति | १२।१।३।३ | अथ यत्पूर्वेषु । ऐन्द्रागो | २।४।४।९ |
| अथ यत्त्रिशद्विक्रमा | ३।५।१।७ | अथ यत्पूर्वेषु । ऐन्द्राग्रेण | २।४।४।३ |

| चण्डिकाप्रतीकम् | व्य. सं. ना. सं. क. | चण्डिकाप्रतीकम् | व्य. सं. ना. सं. क. |
|--|---------------------|--|---------------------|
| अथ यत्पूर्वेषु । ऐन्द्राग्नेन २।४।४।१७ | | अथ यथैव पुरा १।६।४।१५ | |
| अथ यत्पूर्वेषु । दुग्ध ११।१।४।३ | | अथ यदक्षय्याज्वयति ३।८।३।२७ | |
| अथ यत्पृष्ठे पडहसु० १२।१।३।११ | | अथ यदग्नये पावकाय २।२।१।११ | |
| अथ यत्सौम्यः । चरुर्भवति ५।२।५।८ | | अथ यदग्नये वैश्वानराय ११।१।५।८ | |
| अथ यत्सौम्यश्चरुर्भवति २।५।४।७ | | अथ यदग्नये शुक्रये २।२।१।१२ | |
| अथ यत्प्रवर्ग्येण यजन्ते १२।१।३।५ | | अथ यदग्नीषोमीयेन १२।१।३।७ | |
| अथ यत्प्रातरनुदिते जुहोति २।३।१।५ | | अथ यदग्नौ होष्यन्ति ३।६।२।२० | |
| अथ यत्प्रातरनुदिते जुहोति २।३।१।१२ | | अथ यदजा । कनिष्ठानि ४।५।५।९ | |
| अथ यत्प्रायणीयमतिरात्रसु० १२।१।३।८ | | अथ यदत्र वहिष्पवमानेन ४।२।५।९ | |
| अथ यत्प्रायणीयेन यजन्ते १२।१।३।२ | | अथ यदध्वर्युश्च प्रतिप्र० ४।२।४।२२ | |
| अथ यत्पद्विंशद्विक्रमा ३।५।१।९ | | अथ यदनुयाजान्वयति १।८।२।८ | |
| अथ यत्ताप्तदक्ष सुराग्र० ५।१।२।१२ | | अथ यदनुयाजान्वयति १।८।२।९ | |
| अथ यत्सन्निधमभ्यादधाति ३।९।३।१० | | अथ यदनुवाक्यामनूच्य ११।४।१।१३ | |
| अथ यत्साकमेधैर्यजते २।६।४।७ | | अथ यदन्तराह्वनीय च ७।१।२।१४ | |
| अथ यत्सारस्वतश्चरुर्भवति २।५।४।६ | | अथ यदन्तर्याम हुत्वा ४।५।५।६ | |
| अथ यत्सारस्वतीषु ५।३।४।२५ | | अथ यदन्यद्दाति ४।३।४।३२ | |
| अथ यत्सारस्वतो भवति ५।५।४।१६ | | अथ यदन्यस्मा अशनायास १।६।३।५ | |
| अथ यत्सायित्रः । द्वादश २।५।४।५ | | अथ यदन्यस्मा अशनायास ५।५।४।६ | |
| अथ यत्सुरापाणमास १।६।३।४ | | अथ यदपुरोऽनुवाक्या ११।४।१।१२ | |
| अथ यत्सुरापाणमास ५।५।४।५ | | अथ यदब्रवीदिन्द्रश्चतुर्वर्ध् १।६।३।१० | |
| अथ यत्सौम्यः । चरुर्भवति ५।२।५।१२ | | अथ यदब्रवीद्वर्धस्तेति १।६।३।११ | |
| अथ यत्सौम्यश्चरुर्भवति २।५।४।४ | | अथ यदभिजितमुपयन्ति १२।१।३।१२ | |
| अथ यत्स्वरसाग्र उप० १२।१।३।१३ | | अथ यदभिषुव पडहसु० १२।१।३।१० | |
| अथ यत्स्वाहा स्वाहेति ३।१।३।२७ | | अथ यदष्टरूपालो भवति ५।२।३।५ | |
| अथ यथाक्रमोऽग्रश्चरुलो० १।४।७।१।१० | | अथ यदष्टौ हुत्व उप० १।३।२।९ | |
| अथ यथादेवतम् । अथाद् १।७।३।११ | | अथ यदस्तमेति । तदग्नेवे २।३।१।३ | |
| अथ यथादेवतम् । देवा १।४।२।१७ | | अथ यदहरेषां प्रयो मयति ४।६।८।६ | |
| अथ यथादेवतम् । देवा १।९।१।१० | | अथ यदहरेषां प्रयो मयति ४।६।८।११ | |
| अथ यथादेवतम् । स्वाहा १।५।३।२३ | | अथ यदहरेषां प्रयो भवति ४।६।८।१६ | |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का० अ० ब्रा० क० | वाण्डिकाप्रतीकम् | का० अ० ब्रा० क० |
|--------------------------------------|-----------------|---------------------------------|-----------------|
| अथ यदहरेषा दीक्षा समैति ४६।८।५ | | अथ यदि षण्यमान | १०।६।१।१० |
| अथ यदहरेषा दीक्षा समैति ४६।८।१० | | अथ यदि पर्युह्यमाण | १२।६।१।१३ |
| अथ यदहरेषा दीक्षा समैति ४६।८।१५ | | अथ यदि पूत | १२।६।१।२४ |
| अथ यदाचार्यवचसङ्करोति ११।३।३।६ | | अथ यदि पूयमान | १२।६।१।२३ |
| अथ यदाज्यहविष ११।४।१।१५ | | अथ यदि प्रतिख्यात | १२।६।१।३१ |
| अथ यदातिथ्येन यजन्ते १२।१।३।४ | | अथ यदि प्रप्लुत | १२।६।१।३६ |
| अथ यदात्मानन्दरिद्रीकृत्येव ११।३।३।५ | | अथ यदि मसुत आहवनी० ६।६।४।१४ | |
| अथ यदापोमयन्तेज १३।४।४।७ | | अथ यदि ब्राह्मणो यजेत १३।६।२।१९ | |
| अथ यदपामन्ते क्रीणाति ३।३।३।१८ | | अथ यदि भक्ष्यमाण | १२।६।१।३२ |
| अथ यदामावात्येनेष्टा ११।१।३।३ | | अथ यदि मन्येत ११।४।४।१० | |
| अथ यदामावात्येनेष्टा ११।१।३।५ | | अथ यदि मन्येत ११।४।४।११ | |
| अथ यदायसा इतरेषाम् १३।२।२।१९ | | अथ यदि मन्येत ११।४।४।१२ | |
| अथ यदाश्विनो गन्ति ५।५।४।१५ | | अथ यदि रथ वा युक्त ४।५।८।१५ | |
| अथ यदासा पाशथ २।५।१।९ | | अथ यदि राजन्यो यजते ५।१।५।३ | |
| अथ यदास्मै त्रय मयच्छन्ति ६।६।४।४ | | अथ यदि राजन्यो यजते ५।१।५।५ | |
| अथ यदि क्रयायोपोत्थित १२।६।१।९ | | अथ यदि राजन्यो यजते ५।१।५।९ | |
| अथ यदि क्रीत १२।६।१।११ | | अथ यदि राजन्यो यजते ५।१।५।१२ | |
| अथ यदि दीरशी १२।६।१।२५ | | अथ यदि षड् षड्वा १०।२।५।७ | |
| अथ यदि गार्हपत्योऽनुग० ६।६।४।१३ | | अथ यदि सक्तुथी १०।६।१।२६ | |
| अथ यदि चतुर्विंशति १०।२।५।५ | | अथ यदि सम्प्रियमाण १२।६।१।२२ | |
| अथ यदि चमसेपूनीत १२।६।१।२७ | | अथ यदि सर्वे सष्टत् १०।५।२।१२ | |
| अथ यदि तिस्र । त्रयो १०।२।५।८ | | अथ यदि सात । किञ्चि० १२।५।१।३ | |
| अथ यदि दीक्षातु १२।६।१।७ | | अथ यदि सोमकथय्याध् १०।६।१।८ | |
| अथ यदि द्वादश १०।२।५।६ | | अथ यदि स्कन्देत् ४।५।७।७ | |
| अथ यदि द्वे कृष्णाजिने ३।३।४।८ | | अथ यदि सामो विन्देत् १३।३।८।२ | |
| अथ यदि नश्येत् १३।३।८।६ | | अथ यदि हविर्दानयत १२।६।१।१७ | |
| अथ यदि नारायणेषु १२।६।१।३३ | | अथ यदि हूयमान १२।६।१।२९ | |
| अथ यदिन्द्राय वृत्रजे ११।१।५।७ | | अथ यदि होमायोयत १०।६।१।२८ | |
| अथ यदिन्द्रे सर्वे देवास्त० १।६।३।२० | | अथ यदुत्तरत आषाद० १४।१।३।१२ | |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० प्रा० क० |
|-------------------------------|----------------|
| अथ यदुदयनीयमति० | १२।१।३।२२ |
| अथ यदुपभृत्याज्यं भवति | ३।४।४।१३ |
| अथ यदुपसद उपयन्ति | १२।१।३।६ |
| अथ यदुपांशुं हुत्वा | ४।५।५।५ |
| अथ यदुभयत आदीप्ता | १४।१।३।१६ |
| अथ यदेकविंशतिर्भवन्ति | १३।४।४।११ |
| अथ यदेकविंशतिर्भवन्ति | १३।५।४।२६ |
| अथ यदेकादश भवन्ति | १३।६।२।१७ |
| अथ यदेतयोरुभयोः | ४।५।५।४ |
| अथ यदेता अपराः | ५।२।४।८ |
| अथ यदेते प्रतीची पात्रे | ४।२।१।३० |
| अथ यदेव प्रजामिच्छेत | १।७।२।४ |
| अथ यदेव घासयेत | १।७।२।५ |
| अथ यदेवाऽनुश्रुवीत | १।७।२।३ |
| अथ यदेव एतेन यजते | २।४।३।१२ |
| अथ यदेव एतेन यजते | २।६।१।३ |
| अथ यदेव एतैर्व्यजते | २।६।२।२ |
| अथ यदेव एतैश्चतुर्थे मासि | २।५।२।४ |
| अथ यदैन्द्रापीणः | ५।२।५।७ |
| अथ यदैन्द्रावैष्णवं द्विर्वि० | ५।५।५।७ |
| अथ यदैन्द्रावैष्णवः | ५।२।५।३ |
| अथ यदैन्द्रासौम्यः | ५।२।५।११ |
| अथ यदैन्द्रेणैकादशकपालेन | ५।५।१।४ |
| अथ यदैन्द्रो भवति | ५।५।४।१७ |
| अथ यदैन्द्रो भवति । | ५।५।४।२२ |
| अथ यद्वातः । नृयिष्ठानि | ४।५।५।१० |
| अथ यद्गो आयुषी उप० | १२।१।३।१६ |
| अथ यदक्षिणस्तदुपदधाति | १२।१।१२ |
| अथ यदक्षकृत्वो सिधीते | ३।३।२।१७ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० प्रा० क० |
|----------------------------|----------------|
| अथ यदक्षममहुरुभवन्ति | १२।१।३।२० |
| अथ यदक्षरात्रमुपयन्ति | १२।१।३।१७ |
| अथ यदाक्षरात्रिकम्पृ० | १२।१।३।१८ |
| अथ यदीक्षितायाऽग्निह० | ३।२।२।२५ |
| अथ यदीक्षितः । अमृत्यं | ३।२।२।२४ |
| अथ यदीक्षितः । अमृतं वा | ३।२।१।३७ |
| अथ यद् द्वादशकपालो | ५।२।५।१५ |
| अथ यद् द्वादशकपालो | ५।५।५।८ |
| अथ यद् द्वादश भवन्ति । | ५।४।५।१४ |
| अथ यदुत्वा हुत्वा गृह्णाति | ५।३।४।२४ |
| अथ यदुत्वा प्रकम्पयामि | ११।५।३।७ |
| अथ यद् भुवामायाज्यं | ३।२।४।८ |
| अथ यद्वाहिं स्तुणाति | ११।४।१।१४ |
| अथ यद्वाहिंस्पत्येन चरुणा | ५।५।१।७ |
| अथ यद्वाहिंस्पत्यो भवति | ५।१।४।१३ |
| अथ यदुशाक्षण इत्याह । | ३।२।१।४० |
| अथ यद्यक्षतामयो विन्देत् | १३।३।८।३ |
| अथ यद्यक्ष्यामयो विन्देत् | १३।३।८।४ |
| अथ यद्यग्नय इन्दुमते | २।२।३।२३ |
| अथ यद्यग्नये पवमानाय | २।२।३।२२ |
| अथ यद्यज्ञस्य हस्ते | ४।५।७।३ |
| अथ यद्यज्ञस्योः । अन्ते० | ५।१।५।१७ |
| अथ यद्यन्वाहार्यपचनः | १२।५।२।११ |
| अथ यद्यभिपूयमाणः | १२।६।१।२१ |
| अथ यद्यवसृयायोद्यतः | १२।१६।१।३४ |
| अथ यद्यभ्यवद्वियमाणः | १२।६।१।३५ |
| अथ यद्यभ्यावृत्तः | १२।६।१।३० |
| अथ यद्यंशुपु न्युप्तः | १२।६।१।१९ |
| अथ यद्यगतः किञ्चिदा० | १२।६।१।१४ |

| वण्डिकाप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०क० |
|--------------------------------|--------------|
| अथ यद्याग्नीदृग्गतः | १२।६।१।१६ |
| अथ यद्याग्नीद्भियोऽनुगच्छेत् | ६।६।४।१५ |
| अथ यद्याप्यायमानः | १२।६।१।२० |
| अथ यद्यासन्वामासन्नः | १२।६।१।१५ |
| अथ यद्याहवतीयः | १२।५।२।१० |
| अथ यद्युदक् आत्मानम् | १४।९।४।६ |
| अथ यद्युदके त्रियेत | १३।३।८।५ |
| अथ यद्युपावद्विद्यमाणः | १२।६।१।१८ |
| अथ यद्युरावासन्नः | १२।६।१।१२ |
| अथ यद्यप् परिशिष्यते । | ३।८।३।२५ |
| अथ यद्येन वाचाभिग्या० | १२।६।१।१४ |
| अथ यद्येप उरुयोऽग्निानु० | ६।६।४।१० |
| अथ यद्वसया प्रचर्य | ३।८।३।२ |
| अथ यद्वरुणप्रघासैर्यजते | २।६।४।६ |
| अथ यद्वपद्भुते जुहोति । | ११।२।२।५ |
| अथ यद्वसाहोमस्य परिशि० | ३।८।३।३५ |
| अथ यद्वसुवने वसुवेयस्येति | १।८।२।१६ |
| अथ यद्वार्चं यच्छति | ३।२।१।३८ |
| अथ यद्वारुणो भवति | ५।५।४।३१ |
| अथ यद्वारुणो यवमयश्चरु० | ५।२।५।१६ |
| अथ यद्विधजितमुपयन्ति | १२।१।३।१५ |
| अथ यद्विपुवन्तमुपयन्ति | १२।१।३।१४ |
| अथ यद्वृष्णोस्तुका भवति | ३।५।२।१८ |
| अथ यद्वैश्वदेवं ग्रहं गृह्णाति | ४।३।१।२६ |
| अथ यद्वैश्वदेवेन चरुणा | ५।५।१।५ |
| अथ यद्वैष्णवः । त्रिकपालो | ५।२।५।४ |
| अथ यन्तृतीयन्दक्षिणतो | ९।३।१।२२ |
| अथ यन्तृतीयमुत्तरतो | ९।३।१।२३ |
| अथ यन्द्बितीयन्दक्षिणतो | ९।३।१।२० |

| वण्डिकाप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०क० |
|----------------------------|--------------|
| अथ यन्द्बितीयमुत्तरतो | ९।३।१।२१ |
| अथ यन्निग्राभमुपैति | ३।९।४।२० |
| अथ यन्नैवारो भवति | ५।१।४।१४ |
| अथ यन्मरीचिषु न जुहोति | ५।३।४।२६ |
| अथ यन्महावतमुपयन्ति | १२।१।३।२१ |
| अथ यन्मुस्तदग्ने । उपरीव | १४।३।१।३ |
| अथ यन्मैत्रावरुण्या पय० | ५।५।१।६ |
| अथ यन्मथममुत्तरतो | ९।३।१।१९ |
| अथ यत्तोहमयाः पर्वज्ञया० | १३।२।२।१८ |
| अथ यवमस्यः प्रोक्षण्यो | ३।६।१।७ |
| अथ यवाग्नैवां रात्रिमग्नि० | १।७।१।१० |
| अथ यश्चितेऽग्निर्निषीयते | ६।१।१।७ |
| अथ यश्चितेऽग्निर्निषीयते । | ६।१।२।२० |
| अथ यश्चितेऽग्निर्निषीयते | १०।४।१।८ |
| अथ यस्माच्छुनासीर्य्येण | २।६।३।२। |
| अथ यस्मात्पुरुषमेवो नाम | १३।६।२।१ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजुर्जु० | १।९।२।२७ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजुर्नाम | १।९।२।२६ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजुं पि | ४।४।४।३ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजुं पि | ४।४।४।४ |
| अथ यस्मात्संस्त्रानानि नाग | १२।८।३।२६ |
| अथ यस्मात्सोमं पवित्रेण | ४।१।२।४ |
| अथ यस्मात्सोमो नाम | ३।९।४।२२ |
| अथ यस्मात्स्वरुग्नाम | ३।७।१।२४ |
| अथ यस्मादन्तर्यामो नाम | ४।१।२।२ |
| अथ यस्मादामायणो नाम | ४।२।२।६ |
| अथ यस्माद्वातिर्य्यं नाम | ३।४।१।२ |
| अथ यस्मादुषांशुर्नाम | ४।१।१।२ |
| अथ यस्मादुषैव तिष्ठेत् | २।३।४।५ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० अ० अ० |
|-----------------------------|-------------|
| अथ यस्मादुपैव तिष्ठेत् | २।३।४।७ |
| अथ यस्माद्यज्ञो नाम | ३।९।४।२३ |
| अथ यस्माज् कृत्तिकास्वा० | २।१।२।४ |
| अथ यस्माज् मृगशीर्ष | २।१।२।९ |
| अथ यस्मान्नोपतिष्ठेत् | २।३।४।४ |
| अथ यस्मान्नोपतिष्ठेत् | २।३।४।६ |
| अथ यस्य जामागर्षे | १।४।९।४।१२ |
| अथ यस्य जामागै जारः | १।४।९।४।११ |
| अथ यस्य राजानमच्छेत्वा | १२।६।१।५ |
| अथ यस्यैतद्वक्षस्य सप्तः | ११।७।३।२ |
| अथ यां पश्चमी मुचा | ३।१।४।१६ |
| अथ यां समिधमादधामि | ११।५।३।६ |
| अथ याः पञ्चोत्तराः | ७।५।२।४२ |
| अथ याः पश्चात् । अयं | ८।५।२।९ |
| अथ याः पश्चात् । दिशस्ता | ८।५।२।१३ |
| अथ याः प्रोक्षण्यः परिक्षि० | १।३।३।४ |
| अथ याः प्रोक्षण्यः परिक्षि० | ३।५।२।८ |
| अथ याः प्रोक्षण्यः परिक्षि० | ३।५।४।१९ |
| अथ याः प्रोक्षण्यः परिक्षि० | ३।६।१।१३ |
| अथ याः प्रोक्षण्यः परिक्षि० | ३।७।१।६ |
| अथ याः सप्त पश्चात् । दशा० | ८।३।४।३ |
| अथ याः सप्त पश्चात् । य | ८।३।४।१५ |
| अथ याः सप्त पश्चात् । सप्त | ८।३।४।५ |
| अथ याः सप्त प्रतीच्यः | ९।३।१।२४ |
| अथ याः स्यन्दमानानो | ५।३।४।८ |
| अथ या अष्टाविष्टका | ८।५।३।७ |
| अथ या आतपति वर्षन्ति | ५।३।४।१३ |
| अथ या आपः परिक्षि० | ३।८।२।७ |
| अथ या उत्तरतः । ग्रीष्म० | ८।५।२।१० |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० अ० अ० |
|--------------------------------|-------------|
| अथ या उत्तरतः । मासास्ते | ८।५।२।१४ |
| अथ या दक्षिणतः । अग्नि० | ८।५।२।८ |
| अथ या दक्षिणतः । एतास्ता | ८।५।२।१२ |
| अथ या दक्षिणतः । यदू० | ८।३।४।१३ |
| अथ यानि दक्ष । सा दक्षा० | ६।२।२।३४ |
| अथ यानीसराणि स्तोत्राणि | १।४।४।१३३ |
| अथ यानेतद्वतीच्यान्दि० | ११।६।१।१० |
| अथ यानेतद्वतीच्यान्दि० | ११।६।१।११ |
| अथ यानेतद्वतीच्यान्दि० | ११।६।१।९ |
| अथ यान्द्वितीयां समिधमग्धा० | १।३।४।७ |
| अथ यान्यमून्मुदीचीना० | १२।५।१।१२ |
| अथ यान्यश्ममयानि च | १२।५।२।१४ |
| अथ यान्याष्यानि गृह्यन्ते | १।३।२।७ |
| अथ यान्युद्यमानि त्रीणि | ४।४।४।६ |
| अथ यान्युत्तराणि त्रीणि | ४।४।४।५ |
| अथ यान्युपभूत्यवदानानि | ३।८।३।३४ |
| अथ यान्युपस्थे सोमानि | १२।९।१।६ |
| अथ या मध्य उपदधाति | ८।१।२।१० |
| अथ या मध्य उपदधाति | ८।४।४।८ |
| अथ यामिच्छेत् । वर्षन्द्० | १।४।९।४।१० |
| अथ यामिच्छेत् । न वर्षन्द्० | १।४।९।४।९ |
| अथ यामेतां समिधम० | २।३।३।१७ |
| अथ यामेतामाहुतिजुहोति | ११।२।२।६ |
| अथ यामेवाऽमून्तृतीयां | १।३।४।९ |
| अथ या लोकगृणाः | १०।४।३।२० |
| अथ यावेतो नधनेनाग्नी | ३।५।३।६ |
| अथ यास्तद्देवाः । जुष्टास्तनूः | ३।४।२।१५ |
| अथ यास्तद्देवाः । जुष्टास्तनूः | ३।४।२।१६ |
| अथ युग्मतो जुहोति | ९।३।३।४ |

| रुण्डिकाप्रतीकम् | अ०अ०मा०क० | रुण्डिकाप्रतीकम् | अ०अ०मा०क० |
|--------------------------|-----------|---------------------------|-----------|
| अथ युनक्ति । उसावेतं | ३।३।४।१२ | अथ योऽयन्दक्षिणेऽश्वन्तु० | १४।८।६।५ |
| अथ यूपशकलमवगूहति | ३।७।१।२२ | अथ योऽयमवाङ् प्राजः | १०।३।१।८ |
| अथ यूपशकलमादत्ते | ३।८।१।५ | अथ योऽयमवाङ् प्राजः | ११।१।६।८ |
| अथ यूपशकलं प्राप्स्यति | ३।७।१।८ | अथ यो लोहितेन हविषा | ११।७।४।६ |
| अथ ये अभितः । तौ बाहू | ८।५।१।१५ | अथ यो निषतितेन हविषा | ११।४।४।३ |
| अथ ये एते द्वे यजुषी | ७।१।२।२० | अथ योऽश्वतेन हविषा | ११।४।४।४ |
| अथ ये एते । स्त्रिया० | ११।६।१।१२ | अथ योऽस्य निष्कःप्रति० | १३।४।१।११ |
| अथ येऽग्निघोमान् | १२।२।१।७ | अथ योऽस्य सोऽयं रसो० | १०।१।१।४ |
| अथ येऽग्निघोमान् | १२।३।५।१३ | अथ यो ह वा अस्मालो० | १४।४।२।२८ |
| अथ येऽत ऊर्ध्वा लोकाः | ११।२।३।२ | अथ यो तृतीयो । इमौ तौ | ९।३।१।१२ |
| अथ येन सत्रेण देवाः | ४।६।८।१८ | अथ यो द्वितीयो । इमौ तौ | ९।३।१।११ |
| अथ ये यज्ञेन दानेन | १४।९।१।१९ | अथ रज्जुमादत्ते । देवस्य | १४।२।१।६ |
| अथ ये शतहर्मदेवाना० | १४।७।१।३५ | अथ रथं युनक्ति | ५।१।४।७ |
| अथ ये शतहर्मन्मर्त्यलोक | १४।७।१।३८ | अथ रथमुपावहरति | ५।१।४।३ |
| अथ ये शतदेवलोक | १४।७।१।३७ | अथ रथमुपावहरति | ५।४।३।३ |
| अथ ये शतमाजानदेवा० | १४।७।१।३६ | अथ रथशीर्षं जुहोति | ९।४।१।१३ |
| अथ ये शतम्पितृणाञ्जित० | १४।७।१।३४ | अथ राट्यामुपस्पृश्य | ३।५।३।२४ |
| अथ ये शतम्प्रापति० | १४।७।१।३९ | अथ राजानं क्रीत्वा | ५।४।५।१५ |
| अथ ये शतम्पुण्याना० | १४।७।१।३३ | अथ राजानमभिपुत्याग्री | ९।४।४।८ |
| अथ येतेषां सप्तानां | ६।१।१।४ | अथ राजानमादत्ते | ३।३।३।१० |
| अथ येषां घर्मदुषा | १४।३।१।३३ | अथ राजानमादायारोह० | ३।३।३।१५ |
| अथ येषां पत्न्यैः शतदुषा | १४।३।१।३५ | अथ राजानमादायोचिष्ठति | ३।३।३।१४ |
| अथ येषां नैश्वरुणी | ५।५।१।११ | अथ राजानमुपावहरति | ३।९।३।२ |
| अथ येषां यजमानस्य | १४।३।१।३४ | अथ राजानमुपावहरति | ४।२।३।४ |
| अथ यो गर्भोऽन्तरासीत् | ६।१।१।११ | अथ रासमम् । उर्वन्तरिंसं | ६।३।२।८ |
| अथ योऽग्नीषोमीयः पुरो० | ११।२।६।६ | अथ रासमम् । युज्यायां | ६।३।२।३ |
| अथ यो दृषदुपले उपदधा | १।२।१।१४ | अथ रासमम् । स्थिरो भव | ६।४।४।३ |
| अथ यो नक्षत्र आधत्ते | ११।१।१।३ | अथ रासमस्य । वृषाणि | ६।४।४।८ |
| अथ योपरिष्ठाङ्गुणा | १।७।२।१९ | अथ रुक्मः शतवितुणो | ५।४।१।१३ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|--------------------------------|--------------|-------------------------------|--------------|
| अथ रुक्ममथस्तादुपास्यति | ५४१११२ | अथ वरं वृणीते | ४१११२१ |
| अथ रुक्ममुपदधाति | ७४१११० | अथ वरं वृणीते | ५४११८ |
| अथ रुक्मतीर्जुहोति | ९४२११२ | अथ वराहविहृतम् | १४११२११ |
| अथ रुद्राय पशुपतये | ५१३१३७ | अथ वरुणपवासैर्यजते | ५२१४२ |
| अथ रूपमुत्तमङ्करोति | १०२११८ | अथ वरुणाय धर्मपतये | ५१३१९ |
| अथ रूपानाम् । चक्षुरित्ये० | १४१४१२ | अथ वस्नीकवपाम् | १४११२१० |
| अथ रेतःसिन्धो उपदधाति | ७४१२२२ | अथ वस्नीकवपा मुपिरा | ६३३१५ |
| अथ रौहिणौ जुहोति | १४१२२४१ | अथ वसाहोमं गृह्णाति | ३८१२० |
| अथ र्षमनूच्यर्चा यजति | १६३३३० | अथ वा अतोद्दामभ्या० | १२२१३१० |
| अथ र्षम्या उपदधाति | ८३२१५ | अथ वा एकशतविधः | १०२१४४ |
| अथ र्षम्ये उपदधाति | ७४१२२९ | अथ वा एतत्पार्थान्यपि | ९३३४६ |
| अथ र्षम्ये उपदधाति | ८२१११६ | अथ वाक्त्रोवाक्ये ब्रह्मोद्यं | ४६१२० |
| अथ र्षम्ये उपदधाति | ८४२११४ | अथ वाचं यच्छति । देवा ह | ३९१४६ |
| अथ र्षमनाह्वयितव्ये ब्रूयात् । | २५३३१८ | अथ वाचं यच्छति । वाचै | १११२२ |
| अथ लस्पृजन्त्या स्पन्धया | ३५३३२५ | अथ वाचयमो भवति | १७१११५ |
| अथ लस्पृजन्त्या स्पन्धवा | ३६११२५ | अथ वाचयति । उरं हि | ४४५४ |
| अथ लोकस्पृजन्त्यामुपदधाति | ७१११३३ | अथ वाचयति । परिमान्ने | ३३३१३ |
| अथ लोकस्पृजन्त्यामुपदधाति | ८७२११ | अथ वाचयति । प्राची | ३५३१३७ |
| अथ लोरोष्टका उपदधाति | ७३१११३ | अथ वाचयति । भद्रो मेऽसि | ३३४१४ |
| अथ वंशः । तदिदं | १४५५२० | अथ वाचयति । रेवति | ३८११२२ |
| अथ वंशः । तदिदं | १४७३२६ | अथ वाजिभ्यो वाजिनं | २४१४२२ |
| अथ वंशः । तदिदं | १४९४३० | अथ वात्सहोमाञ्जुहोति | ९४२११ |
| अथ वंशः । समानमा | १०६५९ | अथ वात्सप्रेणोपतिष्ठते | ६७४१ |
| अथ वक्रौ करोति | १०२११७ | अथ वायव्यं पयो भवति | २६३३६ |
| अथ वत्सजातमाहुः | १४४३३५ | अथ वाराहो उपानहा | ५४३३९ |
| अथ वत्समुपार्जति | १४२११९ | अथ वारुण एककपालः | ४४५१५ |
| अथ वपया चरन्ति यथैव | ४५२१३ | अथ वारुणं यवमयं चरं | ५४५१२ |
| अथ वषासुत्तिदन्ति | ३८२११६ | अथ वारुणमन्तत आल० | ३९११२१ |
| अथ वषासि जुहोति | ९३३३७ | अथ वारुणी जुहोति | ९४२१५ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०आ०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०आ०क० |
|----------------------------|------------|-------------------------------------|------------|
| अथ वासः । त्वचमेवैते० | ४।३।४।२६ | अथ व्रतं व्रतयति । ये देवा ३।२।२।१८ | |
| अथ वासः । द्विगुणं वा | ३।३।२।९ | अथ व्रतं व्रतयित्वा नाभिमु० | ३।२।२।१९ |
| अथ वासः परिणसे | ३।१।२।१३ | अथ शंयोराह । शंयुई वै | १।९।१।२४ |
| अथ वासः प्रत्येति | ४।३।४।३० | अथ अफावादत्ते । गाय० | १।४।२।१।१६ |
| अथ विकर्णो च स्वयमा० | ८।७।३।९ | अथ अमितारं संशस्ति | ३।८।३।४ |
| अथ विकर्णो च स्वयमा० | १०।१।४।९ | अथ अम्याञ्च स्पयञ्चादत्ते | ३।५।१।२६ |
| अथ वितस्तिमाभीग्मिभीते | १०।२।३।१४ | अथ शम्पासुदीचीनाम्नामु० | १।२।१।१६ |
| अथ विप्रयोऽभिमन्त्रयते | १।४।२।१।१४ | अथ शरीरमेवाऽव्यवहन्ति | ३।३।४।१६ |
| अथ विराज उपदधाति | ८।५।१।५ | अथ सर्कराः सम्भरति | २।१।१।८ |
| अथ विश्वज्योतिपमुपद० | ७।४।२।२५ | अथ शार्कलैर्जुहोति | १।४।२।२।३१ |
| अथ विश्वज्योतिपमुपद० | ८।३।२।१ | अथ शिख्यपाशं प्रतिमुञ्चते | ६।७।२।४ |
| अथ विश्वज्योतिपमुपद० | ८।७।१।१५ | अथ शिख्यपाशञ्च रुक्मपाशं | ६।७।३।८ |
| अथ विष्णुकमान्क्रमते | १।९।३।८ | अथ शीर्ष्णां मूपमस्युज्जिही० | ५।२।१।१४ |
| अथ विष्णुकमान्क्रमते | ६।७।२।१० | अथ शुनासीर्येण यजते | ५।२।४।४ |
| अथ विष्णुकमान्क्रान्त्वा | ६।६।४।१ | अथ शुनासीर्यो ह्यादशक० | २।६।३।५ |
| अथ विसंस्त्य ग्रन्थिम् | १।३।३।५ | अथ शूर्पं चाम्निशोऽह० | १।१।२।१ |
| अथ वेदं पत्नी विसंसयति | १।९।२।२१ | अथ शूर्पमादत्ते । वर्षष्ट० | १।१।४।१९ |
| अथ वेदिं मोक्षति । वेदिरति | १।३।३।२ | अथ श्येनीं विचित्रगर्भा० | ५।५।२।८ |
| अथ वेद्यन्तात् । राजन्य | ५।१।५।१३ | अथ श्रोत्रमत्यवहत् | १।४।४।१।१६ |
| अथ वैकङ्कतीमादधाति | ६।६।३।१ | अथ श्वो मृते । अक्षत्वा० | ५।३।१।१० |
| अथ वैकङ्कतीमादधाति | ९।२।३।३९ | अथ श्वो मृते । अग्नीषो० | ५।२।३।७ |
| अथ वैकङ्कतीं शकलौ | १।४।१।३।२६ | अथ श्वो मृते । अनुमत्ये | ५।२।३।२ |
| अथ वैशन्तीर्गृह्णाति | ५।३।४।१४ | अथ श्वो मृते । आप्नावै० | ५।२।३।६ |
| अथ वैश्वकर्मण एककपाल. | २।५।४।१० | अथ श्वो मृते । ऐन्द्रान्नं | ५।२।३।८ |
| अथ वैश्वकर्मणी जुहोति | ९।२।३।४२ | अथ श्वो मृते । क्षत्सुर्गु० | ५।३।१।७ |
| अथ वैश्वदेवं अहं गृह्णाति | ४।३।१।२५ | अथ श्वो मृते । ग्रामण्यो | ५।३।१।६ |
| अथ वैश्वदेवम् । सर्वं वै | ३।९।१।१३ | अथ श्वो मृते द्वितीयेऽह्नौ | १।४।३।६ |
| अथ वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।१ | अथ श्वो मृते । परिवृत्ये | ५।३।१।१३ |
| अथ व्रतं विसृजते । इदमहं | १।९।३।२३ | अथ श्वो मृते । पालागलस्य | ५।३।१।११ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ०अ०आ०क० |
|-------------------------------|-----------|
| अथ श्वो भूते । पुरोहितस्य | ५।३।१।२ |
| अथ श्वो भूते । भागदुषस्य | ५।३।१।९ |
| अथ श्वो भूते । महिष्यै | ६।३।१।४ |
| अथ श्वो भूते । वैश्वानरं | ५।२।५।१३ |
| अथ श्वो भूते । संग्रहीतुर्गृ० | ५।३।१।८ |
| अथ श्वो भूते । सूतस्य | ५।३।१।५ |
| अथ श्वो भूते । सूयमानस्य | ५।३।१।३ |
| अथ पट् कल्लसीजुहोति | ५।२।१।३ |
| अथ पट् त्रिशतप्रक्रमा २७जु | १०।२।३।८ |
| अथ पट्सु मासेषु | ११।५।४।७ |
| अथ पटहे । पट्वा क्रतवः | ११।५।४।१० |
| अथ पठेऽहन् । एवमेवै० | १३।४।३।१० |
| अथ पठेऽहन्मूहति | ४।५।२।४ |
| अथ पोटशगृहीतं गृहीते । | ९।२।२।२ |
| अथ पोटशगृहीत गृहीते । | ९।२।२।६ |
| अथ पोटशिनं गृहाति | ५।१।२।३ |
| अथ संयीति । जनस्यैवा | १।२।२।३ |
| अथ संस्थिते विसृजते | १।१।१।३ |
| अथ संस्थिते विसृजते | १।१।१।६ |
| अथ संस्थितेषु संस्थितेषु | १।२।३।४।६ |
| अथ सकृदाच्छिन्नान्युपमूल | २।४।२।१७ |
| अथ सजातश्च प्रतिप्रस्थाता | ५।४।४।२० |
| अथ सत्यं साम गायति | ७।४।१।३ |
| अथ सदः प्रेक्षते । यतस्व | ४।३।४।१८ |
| अथ सदोऽभ्येति । नि स्वः | ४।३।४।१७ |
| अथ सन्नहनं विसंस्रयति | १।३।३।६ |
| अथ सन्नहनमनुविस्रस्य | २।६।१।१५ |
| अथ सप्तदश दुन्दुभीननु | ५।१।५।६ |
| अथ सप्तदश प्राजापल्यान्पशू० | ५।१।३।७ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ०अ०आ०क० |
|--------------------------------|-----------|
| अथ सप्तदश सोमग्रहान्गृ० | ५।१।२।१० |
| अथ सप्तमं पदं पर्युषविश्रन्ति | ३।३।१।३ |
| अथ सप्तमेऽहन्मूहति | ४।५।२।६ |
| अथ सप्तमेऽहन् । एवमेवै० | १३।४।३।११ |
| अथ समिध आदधाति | ९।२।२।३ |
| अथ समिधमभ्यादधाति | १।३।४।५ |
| अथ समिधमभ्यादधाति | १।८।२।३ |
| अथ समिधमभ्यादधदाह | ३।९।३।८ |
| अथ समिष्टयजुर्जुहोति | १।९।२।२५ |
| अथ समिष्टयजूषि जुहोति | ४।४।५।२ |
| अथ सम्प्रेष्यति । प्रेतु हो० | ४।२।१।२९ |
| अथ सम्प्रेष्यति । मैत्रावर० | ३।९।३।१६ |
| अथ सम्प्रेष्यति । अग्नीषेष्टु० | ४।४।२।१७ |
| अथ सम्प्रेष्यति । सोमोपनह० | ३।३।२।३ |
| अथ सम्प्राष्टि । युनक्त्येवैन० | १।४।४।१४ |
| अथ सम्प्राष्टि । युनक्त्येवैन० | १।८।२।५ |
| अथ सर्पन्तमैरुपतिष्ठते | ७।४।१।२५ |
| अथ सर्पराश्या अग्निमरु० | २।१।४।२९ |
| अथ सर्वसम्पत् । चत्वारः | ६।७।१।२८ |
| अथ सर्वाणि मूतानि | १०।४।२।२१ |
| अथ सर्वोपधं यपति | ११।८।३।१ |
| अथ सर्वोपधं यपति | ७।२।४।१३ |
| अथ सवनीयैः पुरोडाशैः | ४।२।५।१५ |
| अथ सन्न्यायुग्यं युनक्ति | ५।१।४।९ |
| अथ सहसमित्यालिस्तिवा | १०।२।१।१० |
| अथ सहसमित्यालिस्तिवा | १०।२।१।११ |
| अथ साक्रमेभैर्यजते | ५।२।४।३ |
| अथ सादयित्वा सुनौ | २।६।१।४५ |
| अथ साम गायति । एतद्वै | ७।४।१।२२ |

| वण्डिकाप्रतीकम् | व० अ० मा० क० | वण्डिकाप्रतीकम् | व० अ० मा० क० |
|--------------------------------------|--------------|----------------------------|--------------|
| अथ साम गायति । क्षत्रं १२।८।३।२३ | | अथ स्तीर्णायै वेदेः | ४।२।५।३ |
| अथ सारस्वतं चरुं निर्वपति ५।४।५।७ | | अथ स्तुत एतां वानं | ४।२।५।११ |
| अथ सारस्वतम् । वागै सर० ३।९।१।७ | | अथ स्तोत्रमुपाकरोति | ४।२।५।७ |
| अथ सारस्वतश्चरुर्भवति । २।५।१।११ | | अथ स्तोमभाग्य उपदधाति | ८।५।३।१ |
| अथ सार्वं सगुह्य जुहोति ५।२।४।६ | | अथ स्नाति । अमेध्यो वै | ३।१।२।१० |
| अथ सावित्रः । द्वादशकपा० २।५।१।१० | | अथ स्पृत उपदधाति | ८।४।२।१ |
| अथ सावित्रम् । सविता वै ३।९।१।२० | | अथ स्पयमादाय परिलिखति | ३।३।१।५ |
| अथ सावित्री जुहोति ६।६।१।२१ | | अथ स्यन्दमाना गृह्णाति | ५।३।४।७ |
| अथ सावित्रीनिष्ठिर्निर्वपति १३।४।२।६ | | अथ सुचा उपदधाति | ७।४।१।३६ |
| अथ सावित्री । सविता वै २।३।४।३९ | | अथ सुत्रं चाज्यविलापनी | ५।२।१।१ |
| अथ सिकता निवपति ७।१।१।९ | | अथ सुवमादये । तं प्रतपति | १।३।१।४ |
| अथ सुब्रह्मण्यमाहवति ३।३।४।१७ | | अथ सुवेणोपस्पृशति | ३।६।४।९ |
| अथ सुमञ्जलनामानं हवति ५।४।४।१४ | | अथ सुवेणोपहृत्याज्यम् | ३।४।१।२५ |
| अथ सुवर्णरजतौ रुवमौ १२।८।३।११ | | अथ सुवेणोपहृत्याज्यम् | ३।६।१।२१ |
| अथ सुवर्णं हिरण्यमुप० १४।१।३।२९ | | अथ सुवेणोपहृत्याज्यम् | ३।७।१।१० |
| अथ सूर्यमुदीक्षते सैषा १।९।३।१५ | | अथ सुवेणोपहृत्याज्यम् | ३।८।२।२१ |
| अथ सृष्टीरुपदधाति । एतद्वै ८।४।३।१ | | अथ स्वयमातृणांमुपद० | ८।७।३।१३ |
| अथ सोमक्रयणाननुदिशति ३।३।३।११ | | अथ स्वयमातृणांमु सामानि | ८।७।४।१ |
| अथ सोमपर्माणुहनेन पर्माण० ३।३।४।६ | | अथ स्वाहामिमित्याह | २।२।३।२० |
| अथ सोमविक्रयिणमभिप्रक० ३।३।३।७ | | अथ स्वाहा स्वाहेति यजति | १।५।३।१३ |
| अथ सोमातिरिक्तानाम् ४।५।१।०।८ | | अथ स्वाहा स्वाहेति यजति | १।५।४।५ |
| अथ सोमाय यनस्पतये ५।३।३।४ | | अथ ह कोषा धाययन्तः | १०।५।५।८ |
| अथ सोमोपनहनस्य ३।३।२।१८ | | अथ ह चक्षुरुक्षुः । त्वन्न | १४।४।१।५ |
| अथ सोमं यजति । रेतो वै १।९।२।९ | | अथ ह जनकस्य वैदेहस्य | १४।६।१।४ |
| अथ सौम्यम् । अन्नं वै ३।९।१।८ | | अथ ह जनको वैदेहः | १४।६।१।११ |
| अथ सौम्यश्चरुर्भवति २।५।१।९ | | अथ ह प्राण उत्कमिष्यन् | १४।९।२।१३ |
| अथ सौम्यं पृक्कपालः २।६।३।८ | | अथ ह प्राणमूक्षुः । त्वन्न | १४।४।१।४ |
| अथ स्तीर्णां वेदिमुपावर्त० १।३।४।१० | | अथ ह मन जक्षुः । त्वन्न | १४।४।१।७ |
| अथ स्तीर्णायै वेदेः ३।८।१।११ | | अथ ह याज्ञवरुच्यः । स्वमेय | १४।६।१।३ |

| अष्टिवाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|-------------------------------------|--------------|
| अथ ह याज्ञवल्क्य उवाच १४६।१।२९ | |
| अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे १४७।३।१ | |
| अथ हरति । यत्र हरति ३।५।१।३१ | |
| अथ वा एष महासुपर्ण १२।२।३।७ | |
| अथ ह वागुवाच । अहमेव १।४।५।१० | |
| अथ ह वाचकन०युवाच १४६।८।१ | |
| अथ ह हविरभिवपति १।२।१।१८ | |
| अथ हविरावपति । अमेस्तनू० १।१।४।८ | |
| अथ हविर्दानयो । अथ० ३।६।१।२६ | |
| अथ हविर्निर्वपति । प्रति १।१।४।२० | |
| अथ हविष्कृतमुद्रादयति १।१।४।११ | |
| अथ ह वै तर्हि । नमुचै० १२।७।१।१० | |
| अथ ह वै यण्डुवाच १०।३।४।५ | |
| अथ ह शाण्डिल्यायन ९।५।१।६४ | |
| अथ ह श्रोत्रमुचु । खल १४।४।१।६ | |
| अथ ह स देवयाजी ११।२।६।१४ | |
| अथ ह सोम उवाच १।६।३।२१ | |
| अथ ह स्माह साण्ड्य ६।१।२।२५ | |
| अथ ह स्माह नाको १२।५।२।१ | |
| अथ ह स्माह शाण्डिल्य ९।५।२।१५ | |
| अथ ह स्माह स्वर्जिनाश० ८।१।४।१० | |
| अथ हायमीक्षाक्षके । कथम्नु ११।५।१।४ | |
| अथ हायम्परिचून उवाच ११।५।१।८ | |
| अथ हारियोजन गृह्णाति ४।४।३।२ | |
| अथ हासुरा । आसक्त्यनृत ९।५।१।१७ | |
| अथ हिरण्य सम्भरति २।१।१।५ | |
| अथ हिरण्यमपोद्धरति ३।२।४।१३ | |
| अथ हिरण्यमभ्यवरोहति ५।२।१।२० | |
| अथ हिरण्यमादाय शाला० ४।३।४।१४ | |

| अष्टिवाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|--------------------------------------|--------------|
| अथ हिरण्यमादायामी० ४।३।४।१२ | |
| अथ हिरण्ये वाचयति ३।३।३।६ | |
| अथ हुतेऽग्निहोत्र उपतिष्ठ० २।४।१।१ | |
| अथ हुत्वावाञ्च ग्रहमव० ४।१।२।२२ | |
| अथ हुत्वोद्धं ग्रहसु०माष्टि ४।१।२।२४ | |
| अथ हुत्वोद्धंमुत्कम्पयति १४।२।२।१७ | |
| अथ ह्यवशूल प्रयच्छति ३।८।५।९ | |
| अथ ह्यवशूलेनाचमय ३।८।५।८ | |
| अथ हेममासन्त्यग्राणमूचु १४।४।१।८ | |
| अथ हैक आहु । एवगेवा० १२।५।१।२ | |
| अथ हैक उरुमुच्येन १२।५।१।१६ | |
| अथ हैक उवाच । प्राणा वै १०।५।५।९ | |
| अथ हैके दक्षिणत ११।५।४।१४ | |
| अथ हैकेऽनुगमयान्यम् १२।४।३।९ | |
| अथ हैकेऽतरेणाग्नीधिति १२।५।१।१७ | |
| अथ हैकेऽन्यज्ञार्हपत्यम् १२।४।३।८ | |
| अथ हैके प्रत्यक्षाहारन्ति १२।४।३।७ | |
| अथ हैके प्रदव्येन बदन्ति १२।५।१।१५ | |
| अथ हैकेऽरण्यो । गमी १२।५।१।३ | |
| अथ हैतत्कृपणम् । योऽयमगु ११।४।२।९ | |
| अथ हैतर्चियर् । योऽय ११।४।२।७ | |
| अथ हैतदन्त मि । योऽय ११।४।२।११ | |
| अथ हैतद्धर्म । योऽय ११।४।२।८ | |
| अथ हैतद्द्वि मि । योऽय ११।४।२।१० | |
| अथ हैतामिन्द्र ऋषये २।६।१।४१ | |
| अथ हैतेऽरण्ये । ओषवेक्षी १०।६।१।१ | |
| अथ हैन वसत्योपमन्यथा० १४।९।१।५ | |
| अथ हैन वागम्युवाच १३।६।२।१३ | |
| अथ हैन विदग्ध शाकल्य १४।६।२।१ | |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|-------------------------|--------------|----------------------------|--------------|
| अथ हेनं शयदप्यसुरा उप० | २।४।२।५ | अथ होवाचारुणिः | १२।४।१।११ |
| अथ हेनद्रोदः कौपीत० | १।४।६।४।१ | अथ होवाचेन्द्रनुमन्माल० | १०।६।१।८ |
| अथ हेनन्नार्गी वाचक्रवी | १।४।६।६।१ | अथाक्रमते । विष्णुस्त्वा | १।१।२।१३ |
| अथ हेनञ्जारकारव आर्त० | १।४।६।२।१ | अथाक्षान्तिवपति । स्वाहा० | ५।४।४।२३ |
| अथ हेनमसुरा ऊचुः | १।४।८।२।४ | अथाक्ष्यावानक्ति । अर्ह्वं | ३।१।३।१० |
| अथ हेनमुद्गालक आरुणिः | १।४।६।७।१ | अथाक्षुकरिषं सम्भरति | २।१।१।७ |
| अथ हेनमुपस्तश्चात्तायजः | १।४।६।५।१ | अथाक्षये गृहपतये | ५।३।३।३ |
| अथ हेनमुज्युर्होषायनिः | १।४।६।३।१ | अथाक्षये परिदाय स्वपिति | ३।२।२।२२ |
| अथ हेनम्ननुष्या ऊचुः | १।४।८।२।३ | अथाक्षये पावकाय निर्वपति | २।२।१।७ |
| अथ हेनैव बुलायदक्षिणे | १।२।२।७३३ | अथाक्षये शुचये निर्वपति | २।२।१।८ |
| अथ होतारन्दीक्षमति | १।२।१।१।४ | अथाग्निं कल्पयति शिरो वै | १।३।३।१२ |
| अथ होता परिषुक्तमभि० | १।३।५।२।७ | अथाग्निं गृहपतिं यजति | १।२।२।१३ |
| अथ होता सप्त छन्दासि | १०।१।२।९ | अथाग्निमभ्यादृत्य वाचं | ३।२।२।८ |
| अथ होतुः पाणौ समवयति | १।८।१०१७ | अथाग्निमारोहति । नमस्ते | ९।२।१।२ |
| अथ होतुरिह निलिम्पति । | १।८।१।१५ | अथाग्निमारोहन्ति । कमध्व० | ९।२।३।२४ |
| अथ होतृपदन उपविशति | १।५।१।२४ | अथाग्निमीक्षमाणो जपति | १।५।१।२६ |
| अथ होतृपदनमुपावर्षते | १।५।१।२३ | अथाग्निरुत्तमः । गायत्री | १।८।२।१३ |
| अथ होत्रार्णाचमसान्मु० | ४।२।१।३१ | अथाग्नीदाहानुपहरेति | २।५।२।४३ |
| अथ होत्रा संयाजयन्ति | ४।२।१।३२ | अथाग्नीदाहानुपहरेति | २।६।१।४६ |
| अथ होवाच । अन्वा अहं | २।१।२।१६ | अथाग्नीदाहानुपहरेति | १।९।२।१७ |
| अथ होवाच । गेतमो राह० | १।१।१।१८ | अथाग्नीदाहानुपहरेति | १।८।३।१९ |
| अथ होवाच अगं शार्क० | १०।६।१।९ | अथाग्नीद्भः । आहवनीये | १।४।३।१।२ |
| अथ होवाच बुद्धिलमाश्वत० | १०।६।१।७ | अथाग्नीद्भे । द्वे वैका | ४।३।४।११ |
| अथ होवाच महाशालज्जा० | १०।६।१।६ | अथाग्नीपोमीयेण पुरोडा० | ५।३।३।१० |
| अथ होवाच याज्ञवल्क्यः | १।१।६।२।४ | अथाग्नेयी । तदग्रय | २।३।४।४० |
| अथ होवाच याज्ञवल्क्यः | १।३।५।३।६ | अथाग्नेयीमिष्टिर्निर्वपति | १।३।४।१।१२ |
| अथ होवाच सत्ययज्ञम्पौ० | १०।६।१।५ | अथाग्नेर्विधाः । अष्टा० | १०।२।३।११ |
| अथ होवाच सात्ययज्ञिः | १।३।४।२।४ | अथाग्रयणम् । आत्मने | ४।५।६।३ |
| अथ होवाच सोमशुष्मः | १।१।६।२।३ | अथाग्रयणेष्ट्या यजते | ५।२।३।९ |

| पणिकाप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०क० |
|---------------------------------------|--------------|
| अथाप्रेण राजान विचिन्वन्ति ११२।२।५ | |
| अथाज्ञारमास्तौति । अग्ने ११२।१।९ | |
| अथाज्ञारमास्तौति । आ देव० ११२।१।५ | |
| अथाज्ञारमास्तौति । नेदिह ११२।१।८ | |
| अथाज्ञारैरभि सधूहति ४।५।२।१८ | |
| अथाज्ञारैरभ्युहति ११२।१।१३ | |
| अथाङ्गुलीर्गचति । स्वाहा ३।१।३।२५ | |
| अथाजम् । प्रथिव्या ६।३।२।९ | |
| अथाजम् । योगे योगे ६।३।२।४ | |
| अथाजम् । शिवो भव ६।४।४।४ | |
| अथाजर्पमस्याजिनमास्तु० ५।२।१।२४ | |
| अथाजर्पमस्याजिनमुपस्तु० ५।२।१।२१ | |
| अथाजलोमान्वाच्छिद्य ६।४।४।२२ | |
| अथाजलोमै ससृजति ६।५।१।४ | |
| अथाजस्य । अग्नौ ह्यमेरुः ७।५।२।३६ | |
| अथाजस्य । ऋत सत्य० ६।४।४।१० | |
| अथाजाक्षीरमायति १४।२।१।१८ | |
| अथाजाक्षीरम् । यज्ञस्य १४।१।२।१३ | |
| अथाजाया प्रवीचीनमुह्या ३।३।३।८ | |
| अथाज्यमवेक्षते । तद्विके १।३।१।२६ | |
| अथाज्यमवेक्षते । योषा १।३।१।१८ | |
| अथाज्यमादाय प्राहुदाद्व० १।३।१।२० | |
| अथाज्यमुपस्तृणीते ३।८।२।२६ | |
| अथाज्यमुपस्तृणीते ३।८।३।१३ | |
| अथाज्यलिष्टाम्या पवि० १।३।१।२४ | |
| अथाज्यस्पोषस्तीर्क्ष पुरोडा० ४।४।५।१७ | |
| अथात पयस्याया एवा० २।५।१।१२ | |
| अथात पयस्यैव । पयसो २।५।१।१५ | |
| अथात पयोमवतैः । पयो० २।५।१।१ | |

| कण्डिकाप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०क० |
|-----------------------------------|--------------|
| अथात । परिवर्तनस्यैव २।६।३।१४ | |
| अथात पवमानानामेवा० १४।४।१।३० | |
| अथात पश्यनस्यैव ४।६।३।१ | |
| अथात प्रायश्चतीनाम् १३।३।८।१ | |
| अथात श्वतरुद्रिय जुहोति ९।१।१।१ | |
| अथात संस्कृतिरेव ८।३।४।११ | |
| अथात समश्चनपसारणस्यैव ८।१।४।७ | |
| अथात समवमृशन्त्यैव ३।४।२।१३ | |
| अथात समिष्टयजुषामेव ९।५।१।१२ | |
| अथात सम्पदेव । आत्मन्दी ६।७।१।२७ | |
| अथात सम्पदेव । एकविं० ७।१।२।१६ | |
| अथात सम्पदेव । चतस्रो ७।३।१।४७ | |
| अथात सम्पदेव । समिध ६।८।१।१५ | |
| अथात सम्पदेव । पद पुर० ९।७।३।४७ | |
| अथात सम्प्रति । यदा १४।४।३।२५ | |
| अथात सम्प्रेष्यति ९।२।३।१ | |
| अथात सुचोरादानस्य ११।४।२।१ | |
| अथात स्वाध्यायनशला ११।५।७।१ | |
| अथात आग्निसारुतम् १३।५।१।१२ | |
| अथात आदेश । नेति १४।५।३।११ | |
| अथात आवृदेव । अग्नि० ११।८।१।१७ | |
| अथात आवृदेव । नोष० २।५।१।१८ | |
| अथात आश्रावणस्य ११।४।२।५ | |
| अथात आहुतीन्यमेवा० ९।४।२।२७ | |
| अथात इष्टकमात्राण्येव ८।७।२।१७ | |
| अथात इष्टकान्धमेवावपनस्य ८।७।२।१८ | |
| अथातच्य दधि । विनाट ५।३।२।६ | |
| अथातश्चयनस्यैव । अन्त० १०।२।५।१ | |
| अथातश्चित्तिपुरीषाण्येव ८।७।४।२ | |

| कण्डिप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०व० | कण्डिप्रतीकम् | वा०अ०ब्रा०व० |
|---------------------------------|--------------|------------------------------|--------------|
| अथातश्चित्तिपुरीषाणामेव | १०।२।५।९ | अथातो दक्षिणानाम् | १४।३।१।३२ |
| अथातस्तृतीयसवनम् | १३।५।१।११ | अथातो धारणस्य । तदेतदेके | ११।४।२।४ |
| अथात स्तोमायनस्यैव | ४।६।३।३ | अथातोऽधिरोहणस्यैव | ७।१।२।१७ |
| अथातो गृह्णामिगोपचार | २।४।१।१४ | अथातो निरुक्तानिरुक्तानामेव | ७।२।१।२९ |
| अथातो गृह्णात्येव । अग्ने | ४।५।४।९ | अथातो निष्केवस्यम् | १३।५।१।१० |
| अथातो गृह्णात्येव । अय | ४।१।४।७ | अथातो नेर्जतीर्हरन्ति | ७।२।१।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । आतिष्ठ | ४।५।३।९ | अथातोऽन्वावृत्तम् । निवृद्धं | ८।४।४।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । आपत्ये | १४।२।१० | अथातोऽन्वावृत्तम् । पुरस्ता | ८।६।१।२३ |
| अथातो गृह्णात्येव । आ वायो | ४।१।३।१८ | अथातो मत्स्यन एवाभ्यव | ६।८।२।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । उदु त्य | ४।६।२।२ | अथातो भूमिजोपणस्य | ११।८।१।६ |
| अथातो गृह्णात्येव । उपया | ०४।१।२।१५ | अथातो मनसश्चैव वाचश्च | १।४।५।८ |
| अथातो गृह्णात्येव । उपया | ०४।२।३।१० | अथातो मदानतीत्यस्यैव | ४।६।४।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । उपया | ०४।३।१।१४ | अथातो माध्यन्दिन सवनम् | १३।५।१।९ |
| अथातो गृह्णात्येव । उपया | ०४।४।१।१४ | अथातो यज्ञीर्याणामेव | १०।१।५।४ |
| अथातो गृह्णात्येव । उपया | ०४।४।२।१२ | अथातो यज्ञस्य समृद्धिः | ११।४।४।८ |
| अथातो गृह्णात्येव । उपया | ०८।४।३।६ | अथातो राष्ट्रमृतो जुहोति | ९।४।१।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । इन्द्र | ४।३।३।१३ | अथातो रोहिणौ जुहोति | १४।२।१।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । इन्द्राग्नी | ४।३।१।२४ | अथातो वपनां होम | १३।५।३।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । जोमास | ०४।३।१।२७ | अथातो वसोर्दासां जुहोति | ९।३।२।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । महोन्द्रो | ४।३।३।१८ | अथातो वाजपसवीय जुहोति | ९।३।१।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । मूर्धन | ४।२।४।२४ | अथातो वैश्वानरे जुहोति | ९।३।१।१ |
| अथातो गृह्णात्येव । या वा | ४।१।५।१७ | अथातो प्रयसीमांसा | १४।४।३।३० |
| अथातो गृह्णात्येव । ये देवातो | ४।२।२।९ | अथातो प्रनोपसदामेव | ३।४।४।२६ |
| अथातो गृह्णात्येव । वाममय | ४।४।१।६ | अथातोऽशनानशनस्यैव | १।१।१।७ |
| अथातो गृह्णात्येव । हविष्म | ०३।९।२।१० | अथातो हविष समृद्धिः | ११।४।४।१ |
| अथातोऽतिव्रमणस्य | ११।४।२।३ | अथातो होमस्य । तदेत | ०११।४।२।१३ |
| अथातो दक्षिणानाम् | १३।५।४।२४ | अथातो होमस्यैव । आकूयै | ३।१।४।६ |
| अथातो दक्षिणानाम् | १३।६।२।१८ | अथात्मान विवृणति | ७।२।२।१४ |
| अथातो दक्षिणानाम् | १३।७।१।१३ | अथात्मान विवृणति | १३।८।२।८ |

| | |
|----------------------------|--------------------------|
| वर्णिशस्त्रप्रतीकम् | श्री-श्री-श्री-श्री-श्री |
| अथातःनेऽन्तायमगायत् | १४४११८ |
| अथागन्तव्यो समारोहः | १४४१२० |
| अथापुन्यजतिं स यन्त्रात् | १४४१२८ |
| अथात्र प्राचीनवक्त्रा शाला | १४४१२९ |
| अथात्रापोष्ठे । गर्भो वा | १४४१३१ |
| अथाद पूर्वस्मिन्मुदीची | १४४१३२ |
| अथादारान् । इन्द्रस्योज | १४४१३३ |
| अथादिवाश्र ट वा अग्नि | १४४१३४ |
| अथादित्यै चक्र निर्वपति | १४४१३५ |
| अथादेशः कपनिषदात् | १४४१३६ |
| अथाद्विभक्त्युक्ति । एष वा | १४४१३७ |
| अथाथ शयमादधाति | १४४१३८ |
| अथाथरारणि निदधाति | १४४१३९ |
| अथाधिदेवतम् । जलि | १४४१४० |
| अथाधिदेवतम् । या ये सा | १४४१४१ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४२ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४३ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४४ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४५ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४६ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४७ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४८ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१४९ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५० |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५१ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५२ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५३ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५४ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५५ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५६ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५७ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५८ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१५९ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६० |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६१ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६२ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६३ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६४ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६५ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६६ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६७ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६८ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१६९ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७० |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७१ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७२ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७३ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७४ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७५ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७६ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७७ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७८ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१७९ |
| अथाधिपशुम् । यदेतन्मण्ड | १४४१८० |

| | |
|----------------------------------|---------|
| अथाध्यात्मम् । पञ्चमः | १०१२६१४ |
| अथाध्यात्मम् । षष्ठः | ११११६२९ |
| अथाध्यात्मम् । प्रतिष्ठेति | १३६११११ |
| अथाध्यात्मम् । प्राण एव | १०३१५४ |
| अथाध्यात्मम् । प्राणो वा | १०४११२३ |
| अथाध्यात्मम् । प्राणो वा | १०६१२७ |
| अथाध्यात्मम् । प्राणो वा | १०६१२१० |
| अथाध्यात्मम् । मन एवाग्नि | १०११२३ |
| अथाध्यात्मम् । यदेतन्मण्ड० | १०५१२७ |
| अथाध्यात्मम् । यदेव | १०११६१८ |
| अथाध्यात्मम् । यैरेव प्रतिष्ठा | ८७७७१९ |
| अथाध्यात्मम् । शिर एव | ६६११९ |
| अथाध्यात्मम् । नेष्टात्पुनरेव | १२१११९ |
| अथाध्यात्मम् । प्रतिपत्त्याहार | १२१११७ |
| अथाध्यात्मम् । चाग्नीष च | १५११२१ |
| अथाध्यात्मम् । साकमानं वृ० | १३५१२११ |
| अथाध्यात्मम् । कुमारीमभि० | १३५१२४ |
| अथाध्यात्मम् । चतुर्गुहीतमाज्य | ५१११४ |
| अथाध्यात्मम् । चतुर्गुहीतमाज्य | ५१११२२ |
| अथाध्यात्मम् । मोक्षवीरसाधो० | १४११३२ |
| अथाध्यात्मम् । प्रोक्षित | ४१११२१ |
| अथाध्यात्मम् । हिरण्यशारेण | ५११२१९ |
| अथाध्यात्मम् । रातानामुपपत्त्यवि | ३३११९ |
| अथाध्यात्मम् । विमुच्यति | ३३११२५ |
| अथाध्यात्मम् । कायेन | २५१२३९ |
| अथाध्यात्मम् । प्रतिपत्त्येव | २५१२४५ |
| अथाध्यात्मम् । शक्तिव्रतवचति | २५१२४० |
| अथाध्यात्मम् । तन्नामन्या० | २५१२४१ |
| अथाध्यात्मम् । वरुणायान० | २५१२३७ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० मा० क० | कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० मा० क० |
|----------------------------|--------------|-------------------------------|--------------|
| अथाध्वयुरेवाह सोमायानु० | २।५।२।३२ | अथाप उपनिनयति | ३।६।१।१९ |
| अथाध्वयुरेवाहास्येऽनु० | २।५।२।३१ | अथापगृह्य पुनरानयति | ४।१।३।१९ |
| अथाध्वयुर्वेनस्पतिना चरति | ४।५।२।११ | अथापगृह्य पुनरानयति | ४।३।५।१२ |
| अथाध्वयुर्होतारमृच्छति | १३।५।२।१३ | अथापयतीर्गृह्णाति । आपः | ५।३।४।९ |
| अथाध्वयुर्होतारमृच्छति | १३।५।२।१८ | अथापरं चतुर्गृहीतमाज्यं | १।२।४।१५ |
| अथाध्वयुर्मतिप्रस्थाता | १२।१।१।५ | अथापरं चतुर्गृहीतमाज्यं | ३।५।३।१३ |
| अथाध्वयुश्च यजमानश्च | ३।५।४।१६ | अथापरं चतुर्गृहीतमाज्यं | ३।९।३।१५ |
| अथाध्वयो प्रतिगरः | ४।६।९।१९ | अथापरं चतुर्गृहीतमाज्यं | ४।४।२।६ |
| अथानमिचितः । एतदेव | १३।८।४।११ | अथापरं चतुर्गृहीतमाज्यं | ४।४।५।१४ |
| अथानङ्गाहावाजन्ति | ३।३।४।११ | अथापरयोर्दक्षिणेऽध्वयुर्मवति | ३।५।४।१७ |
| अथानङ्गाहौ पुनक्ति | ६।८।१।८ | अथापरशुश्रूष्णमादधाति | ६।६।३।५ |
| अथानङ्गापुरुषमीक्षते | ६।३।३।४ | अथापराणि पञ्चदशैव | ११।१।२।११ |
| अथानङ्गापुरुषमीक्षते | ६।४।४।१४ | अथापरेण त्रिष्युक्तेन यजते | ५।२।५।५ |
| अथानयेत्युपस्पृशति | १।९।१।२९ | अथापरेण त्रिष्युक्तेन यजते | ५।२।५।९ |
| अथानुमन्त्रयते । देवो वः | १।१।४।२३ | अथापविनक्ति । वायुर्वो | १।१।४।२२ |
| अथानुमेद्यन्तम् । प्राची | ३।५।१।२९ | अथापसलवि त्रिष्यन्वन्ति | १४।१।३।११ |
| अथानुयुहति । सिंहासि | ३।५।१।३३ | अथापसलवि त्रिः परियन्ति | २।६।२।१२ |
| अथानुयाजान्यजति | १।८।२।७ | अथापस्या उपदधाति | ८।२।३।४ |
| अथानुसृज्योपतिष्ठते | ३।६।३।१९ | अथापादये । अग्न आ याहि | ६।४।४।९ |
| अथानुसृज्योपतिष्ठते | ३।९।३।७ | अथापादये । तद्यदन्नामेयं | ६।८।२।६ |
| अथानुसृज्योपतिष्ठते | ४।४।५।२१ | अथापामार्गहोमं जुहोति | ५।२।४।१४ |
| अथान्तर्वेद्युपविशति | १।२।२।२ | अथापास्यति । अपहृतं | १।१।२।१५ |
| अथान्तरेणाहवनीयं च | २।३।४।३५ | अथापिधायोपनिष्कामनि | ४।३।५।२० |
| अथान्तरेणोदचमसं निनयति | ७।२।१।१७ | अथापते द्वितीयामाहुति | ३।६।३।८ |
| अथान्तरांसेऽग्निमृश्य अपति | ५।४।४।५ | अथाप्रतीक्षं पुनरायन्ति | ५।२।३।४ |
| अथान्यतरचृणम् । चात्वा० | ४।२।५।५ | अथाप्रतीक्षं पुनरायन्ति | ५।२।४।२० |
| अथान्यतरचृणम् । पुरस्ता० | ४।२।५।६ | अथाप्रोभिश्चरन्ति । तद्यदामी० | ३।८।१।२ |
| अथाप आचामतिथान्तरा० | १।७।४।१७ | अथाशुक्ल । एतावद्वा | १२।७।१।१३ |
| अथाप उपनिनयति | ३।३।१।७ | अथागक्षितेन पात्रेण | ४।४।१।८ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ०ब०वा०क० |
|------------------------------|-----------|
| अथामिपद्यते । यच्छन्ता | १।१।२।१६ |
| अथामिप्रयन्ति । पञ्च दिक्षो | १।२।३।८ |
| अथामिमात्रेव । स्थाली० | १।४।५।४।८ |
| अथामिमन्त्रयते । मुमित्रि० | ३।८।५।११ |
| अथामिमृशति मृताय स्वा | १।१।२।२० |
| अथान्येस्य स्नात | ४।४।५।२३ |
| अथाम्माघाय जपति | १।३।४।८ |
| अथामावास्यायाम् । इन्द्रा० | १।८।३।३ |
| अथामूर्तेम् । प्राक्श्व | १।४।५।३।८ |
| अथामूर्तेम् । बाधुश्चान्तरे० | १।४।५।३।४ |
| अथायमन्यतोमुल पुरुष | २।६।३।१६ |
| अथायुज स्तोनाजुहोति | १।३।१।२ |
| अथारणी पाणौ कृत्वा | १।१।१।११ |
| अथारत्तिमात्रीमिगीते | १०।२।३।१३ |
| अथार्कस्य । अग्निर्वा | १०।६।२।५ |
| अथार्कधमेघयो स्तवती० | १।४।२।१८ |
| अथार्धेन्द्राणि जुहोति | १।३।२।९ |
| अथार्धे मृषणीते । नयिभ्य० | १।४।२।३ |
| अथार्धे मृषणीते । नयिभ्य० | १।५।१।९ |
| अथावट परिलिखति | ३।६।१।५ |
| अथावट परिलिखति | ३।७।१।२ |
| अथावतानान्जुहोति । एतद्वा | १।१।१।२७ |
| अथावरोहति । दहनञ्च | १।१।२।२२ |
| अथावर्तते सूर्यस्यावृत्त० | १।९।३।१७ |
| अथावर्तते सूर्यस्यावृत्त० | १।९।३।२० |
| अथावे । इममूर्णाधुमि० | ७।५।२।३५ |
| अथाव्रश्चनमभिजुहोति | ३।६।४।१५ |
| अथाधिपामारम्भा वाच० | ३।१।३।२४ |
| अथाशुपुनरप्यर्चति | ११।५।९।१२ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ०ब०वा०क० |
|-------------------------------|------------|
| अथाश्वान पृश्निमुपदधाति | १।२।३।१७ |
| अथाश्वान्य न होतार | २।६।१।२३ |
| अथाश्वान्य न होतार | ३।४।४।१० |
| अथाश्वज्याह । प्रात | ४।२।१।२३ |
| अथाश्व शुक्ल पुरस्ताद्ययन्ति | ७।३।२।१० |
| अथाश्व । वज्रो वा अश्वो | ४।३।४।२७ |
| अथाश्वमभिमन्त्रयते । एतद्वै | ६।३।३।७ |
| अथाश्वमाक्रमवति । तमा० | २।१।४।२३ |
| अथाश्वमत्येति । यमाय स्वा | ४।३।४।३१ |
| अथाश्वस्य । इम या हिंसी० | ७।५।२।३३ |
| अथाश्वानद्भिर्भुधति | ५।१।४।५ |
| अथावादासुपदधाति | ७।४।२।३२ |
| अथाष्टमेऽहन् । एवमेवैता० | १।३।३।१२ |
| अथासप्तर्षयन्सुचौ | १।४।५।५ |
| अथासन्दी शिष्यहम्पपा० | ७।२।१।१५ |
| अथासाव लुचः । अथ लप० | ३।६।३।१७ |
| अथासीन । स त्वमग्ने | २।३।४।२४ |
| अथास्मा कर्ध्वर्षिर्निकम्ब० | १।३।४।१।७ |
| अथास्मा आसन्दीमाहरन्ति | ५।२।१।२२ |
| अथास्मिन्समिध आदधाति | १।२।१।३६ |
| अथास्मिन्समिधमादधाति | ३।८।१।१३ |
| अथास्मिन्मय आनयति | १।४।३।१।२३ |
| अथास्मै दण्ट प्रयच्छति | ३।२।१।३२ |
| अथास्मै तिस्र इष्ट प्रयच्छति | ५।३।५।२९ |
| अथास्मै पञ्चाशान्प्राणावावपति | ५।४।४।६ |
| अथास्मै बर्हि प्रयच्छति | १।३।३।३ |
| अथास्मै ब्रह्ममाग पर्याहर० | १।७।४।१८ |
| अथासो ब्राह्मण स्पृश प्रय० | ५।४।४।१५ |
| अथास्मै मय मदास्यजप | ३।२।२।१७ |

| पण्डितप्रतीकम् | सं० अ० प्रा० क० | पण्डितप्रतीकम् | सं० अ० प्रा० क० |
|-----------------------------|-----------------|---------------------------------|-----------------|
| अथास्मै व्रतं प्रयच्छति | ३।२।२।१६ | अथाह मरुद्भयो गृहमेधि० | २।५।३।९ |
| अथास्मै व्रतं श्रययन्ति | ३।२।२।१० | अथाह मरुद्भयो गृहमेधि० | २।५।३।१४ |
| अथास्मै इमं शानङ्कुर्वन्ति | १३।८।१।१ | अथाहवनीय एवाप्यानव० | ७।३।१।१२ |
| अथास्मै सावित्रीमन्वाह | ११।५।४।६ | अथाहवनीयमुपतिष्ठते | १।९।३।२२ |
| अथास्य पुरोडाशस्यानवाय | २।६।१।३५ | अथाहवनीयमुपतिष्ठते | २।४।१।५ |
| अथास्य मातरमभिमन्त्र० | १४।९।४।२७ | अथाहवनीयागारस्य वा | १।७।१।८ |
| अथास्य सप्तसु प्राणायतनेषु | १२।५।२।६ | अथाह वार्पाहरं साम | १४।१।१।२६ |
| अथास्य हस्तं गृह्णाति | ११।५।४।२ | अथाह संवदस्वेति । अगान० | १।९।२।१८ |
| अथास्यां पय आनयति | ७।१।१।४४ | अथाह संवदस्वेति । अगान० | २।५।२।४४ |
| अथास्यां हिरण्यं बद्धं भवति | ४।६।१।६ | अथाह संवदस्वेति । अगान० | २।६।१।४७ |
| अथास्यां हिरण्यं बद्धं भवति | ४।६।१।८ | अथाह संनदस्वेति । संवाद० | १।८।३।२० |
| अथास्मां हिरण्यं बध्नीते | ३।३।२।२ | अथाह । समुत्प्लव्य प्रस्तरम् | ३।४।३।२२ |
| अथास्यां सिक्ता आबपति | ७।१।१।४१ | अथाह । सम्राडयमसौ | ५।२।२।१५ |
| अथास्यां ऊरु विहापयति | १४।९।४।२० | अथाह साम गायेति | ४।४।५।६ |
| अथास्यां एतदेव क्षुरीयं | १४।८।१।५।४ | अथाह साम गायेति | १४।१।१।१० |
| अथास्यामाक्षिप आशास्ते | १४।१।३।१८ | अथाह सोमः पवत इति | ४।२।२।१२ |
| अथास्यायुष्यङ्करोति | १४।९।४।२५ | अथाह सोमायानुब्रूहीति | २।५।३।८ |
| अथास्मै धिरुमभिमप्यते | ६।५।२।२० | अथाह सोमायानुब्रूहीति | २।५।३।१६ |
| अथास्मै मध्यमेवतामिति | १३।२।९।४ | अथाह सोमायानुब्रूहीति | ३।४।४।१२ |
| अथास्मै स्तनमभिमप्यते | १४।२।१।१५ | अथाह स्तोत्रेभ्योऽनुब्रूहीति | ३।८।२।२२ |
| अथाह । इयं ते शग्नित्राय | ९।३।३।१० | अथाह । स्तोमश्च यजुश्च | ९।३।३।१४ |
| अथाह कागधुक्ष इति | १।७।१।१७ | अथाह स्वगा देव्या होतृभ्य | १।८।३।२१ |
| अथाह पर्यग्नयेऽनुब्रूहीति | ३।८।१।६ | अथाहाम्रये कश्यवाहनाया० | २।६।१।३० |
| अथाह पितृभ्यः सोमव० | २।६।१।२६ | अथाहाम्रयेऽनुब्रूहीति । आ० | २।२।३।२१ |
| अथाह पितृभ्योऽमिषावे० | २।६।१।२९ | अथाहाम्रयेऽनुब्रूहीति हविषः | २।२।३।२४ |
| अथाह पितृभ्यो वर्हिष० | २।६।१।२८ | अथाहाम्रये समिष्यमानाया० | ३।७।४।७ |
| अथाह प्रतिप्रस्थाता श्रुता | ३।८।२।२३ | अथाहाम्रये म्विष्टृत्तेऽनुब्रू० | २।५।३।१० |
| अथाह मोक्षणीरासादयेति | १।२।५।२० | अथाहाम्रये स्विष्टृत्तेऽनुब्रू० | २।५।३।१५ |
| अथाह ब्रह्मन्प्रस्थास्यामि | २।६।१।४४ | अथाहाम्रये स्विष्टृत्तेऽनुब्रू० | ५।२।२।१८ |

अष्टिदशप्रतीकम्

का० म० वा० क०

अष्टिदशप्रतीकम्

का० म० वा० क०

अथाहामये स्विष्टकृतेऽनुम० ५।३।३।१५
 अथाहामये स्विष्टकृतेऽनुम० ५।४।४।२४
 अथाहामिभ्यः प्रद्वियमाणे० ७।३।२५
 अथाहामोत्पत्तिवत्तस्य यजे० ४।४।२।१५
 अथाहुतीजुंशेति । यथा ९।२।३.४१
 अथाहेन्द्राय मरुत्वतेऽनुम० ४।३।४।२३
 अथेडा । असायमेवैतया १।१।१६।२८
 अथेडामादधाति । उपहृता० ५।२।२।१९
 अथेडामादधाति । उपहृता० ५।२।२।२१
 अथेडामादधाति । उपहृता० ५।४।४२५
 अथेडामेवावधति न प्राप्ति० २।५।३।१६
 अथेडो यजति । प्रजा वा १।५।४।३
 अथेडो यजति । वर्षा वा १।५।३।११
 अथेतरं वायुर्ज्येश्वर ४।१।३।१०
 अथेतरं विश्वेदेवा अमरी० ४।५।१।१०
 अथेतरौ वेदौ न्यौहत् १०।४।२।२४
 अथेयभ्यमन्थत् । स मु० १।४।४।११
 अथेय स्तोत्रमुपाकरोति ४।५।३।११
 अथे.याहवनीये समिधम० ३।६।३।२१
 अथेदं तृतीयम् । मृदपत्तरे० ४।६।८।१३
 अथेदं द्वितीयम् । अरणिष्वे० ४।६।८।८
 अथेदं द्वितीयम् । आग्नेयमे० २।२।१।२२
 अथेदं द्वितीयम् । तूष्णीमे० २।१।४।२६
 अथेदं द्वितीयम् । सैव स्त्री० २।५।३।११
 अथेधमभ्यादधवाद् २।६।१।२१
 अथेन्द्रतुरीयम् । आग्नेयो० ५।२।४।११
 अथेन्द्राग्नी वा असृज्येतम् १०।४।१।५
 अथेन्द्राय ज्येष्ठाय हायनानां ५।३।३।६
 अथेमं विष्णुं यज्ञन्त्रेण १।४।१।१५

अथेमां प्रत्यवेशमाणो जप० ५।४।३।२०
 अथेमामभिपृश्य जपति १।४।३।२५
 अथेमामुपावेशमाणो जपति ५।२।१।१८
 अथेष्टा अनुयाया भवन्ति ५।१।३।१३
 अथैकं तृणमपगृह्णाति १।८।३।१६
 अथैक आज्यं निर्वपति १।२।१।२२
 अथैक उद्धरति । दीक्षितो० ६।२।१।३९
 अथैकादशकृत्वोऽभिपुणोति ४।१।१।१०
 अथैतं वायवे निपुत्वते ६।२।२।६
 अथैतं विष्णुं यज्ञम् ४।६।७।४
 अथैतं साये भूतेऽथ परितः ७।३।२।१८
 अथैतत्त्रयं विष्टं भवति ६।५।१।६
 अथैतदहराक्ष्यत् । यन्महा० १।२।२।३।३
 अथैतदेव परोक्षं रूपम् २।२।३।८
 अथैतदज्जुसन्दानम् १।४।३।१।२२
 अथैतद्वामेऽक्षिणि पुर्य० १।४।६।११३
 अथैतद्रूपा सोमः । योषा ४।६।७।१२
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।१।१।३३
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।१।२।२६
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।१।३।३४
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।१।४।१७
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।२।१।२२
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।२।२।५५
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।३।१।३६
 अथैतद्वै । आपुरेतज्ज्योतिः १।४।३।२।३१
 अथैतमभिपेकम् । कृष्णविषा० ५।४।२।४
 अथैतस्य निपुत्वतीयस्य ६।२।२।३७
 अथैतस्य मानापत्यस्य ६।२।२।३६
 अथैतस्य प्राणस्थापः १।४।३।३।२०

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० वा० क० |
|-------------------------------------|--------------|
| अथैतस्य मनसः । धौः ॥ ११११११११ | |
| अथैतां याचं वदति ११११११११ | |
| अथैता उत्तराः फलादयो ६६६६६६ | |
| अथैतानि यजुंषि जपति ११११११११ | |
| अथैतानि हवींषि निर्वपति ५५५५५५ | |
| अथैतानि हवींषि निर्वपति ५५५५५५ | |
| अथैतानि हवींषि निर्वपति ५५५५५५ | |
| अथैतानेकविंशत्ये ११११११११ | |
| अथैतान्पञ्च वाजपेयप्रहान् ५५५५५५ | |
| अथैतान्पशूनावर्तयन्ति ६६६६६६ | |
| अथैतान्यजनानोऽजलो २६६६६६ | |
| अथैतान्यशुक्रतूष्णुहोति ११११११ | |
| अथैतान्येव पञ्च हवींषि २५५५५५ | |
| अथैतान्येव पञ्च हवींषि २६६६६६ | |
| अथैताभ्यां जगतीभ्याम् ५५५५५५ | |
| अथैताभ्यां पयस्याभ्यां २५५५५५ | |
| अथैतामाहुतिन्जुहोति ११११११११ | |
| अथैते त्रिष्टुमा उत्तरे भवतः ६६६६६६ | |
| अथैते द्वे यजुषी । सो अनु० ७१११११११ | |
| अथैतेन चतुर्थेन यजुषा ६६६६६६ | |
| अथैतेषां दुन्दुभीनाम् ५५५५५५ | |
| अथैतेषामाजिस्तुतां स्थानाम् ५५५५५५ | |
| अथैतेष्वजिस्तु रथेषु ५५५५५५ | |
| अथैनं कृष्णाग्निनेऽभिषि० ११११११ | |
| अथैनं कृष्णाग्निने सम्मरति ६६६६६६ | |
| अथैनं दक्षिणं वाहुमनुपर्या० ११११११ | |
| अथैनं दक्षिणे वाहवर्गिण्य ५५५५५५ | |
| अथैनं दर्भपत्रिणेण पावयति ३१११११ | |
| अथैनं दिशः समारोहयति ५५५५५५ | |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० वा० क० |
|---|--------------|
| अथैनं देवाः अन्तरात्मन्ना० २१११११११ | |
| अथैनं निदधाति सुपर्णोऽसि ११११११११ | |
| अथैनं परिगृह्णाति ६६६६६६ | |
| अथैनं परिलिखति मायामे० ६६६६६६ | |
| अथैनं पशव उपासीदन् २१११११११ | |
| अथैनं परिशिष्टेनाभिषिञ्चति ५५५५५५ | |
| अथैनं परिशिष्टिः परिश्रयति ७१११११११ | |
| अथैनं पाण्डुं परिषापयति ५५५५५५ | |
| अथैनं पितरः प्राचीनावीतिनः २१११११११ | |
| अथैनं पुष्करपर्णे सम्मरति ६६६६६६ | |
| अथैनं पूर्वाभिषेकेनाभिषृ० ११११११११ | |
| अथैनं पृष्ठतस्तूष्णीमेव ६६६६६६ | |
| अथैनं प्रसलज्यावर्तयति ७१११११११ | |
| अथैनं मनुष्याः प्रावृता उपस्थं २१११११११ | |
| अथैनं यथाशङ्करूपयति ११११११११ | |
| अथैनं वासांसि परिषापयति ५५५५५५ | |
| अथैनं विकृषति । मण्डू० ११११११११ | |
| अथैनं विकृषति । अक्षं वै ७१११११११ | |
| अथैनं निपुरीषङ्कुत्वा ११११११११ | |
| अथैनं विमुञ्चति । बाप्त्वा ११११११११ | |
| अथैनं विप्यति तद्यदेवा० ६६६६६६ | |
| अथैनं शार्दूलचर्मारेहयति ५५५५५५ | |
| अथैनं शालां प्रपादयति ३१११११११ | |
| अथैनं शालां प्रपादयति ३१११११११ | |
| अथैनं शालां प्रपादयति ३१११११११ | |
| अथैनं शिक्येन निमर्ति ६६६६६६ | |
| अथैनं समुहति । दक्षा ११११११११ | |
| अथैनं सामभिः परिगायति ११११११११ | |
| अथैनं हिरण्यशकलैः प्रोहति ८११११११ | |

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० प्रा० क० | कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० प्रा० क० |
|--------------------------------|----------------|------------------------------|----------------|
| अथैनादृक्पाणिनेनास्तु० | १२।८।३।९ | अथैवमभिषय वाचयति | ३।७।१।१७ |
| अथैनादृक्पायति । श्रुतं हि | १४।१।२।२१ | अथैवमुपसद्य । अग्नीधे | ४।३।४।२० |
| अथैनानाच्छृणति । अजायै | १४।१।२।२५ | अथैवमेवोपसद्य । अत्रेयाम | ४।३।४।२१ |
| अथैनानुपदधाति । पुरुषं | ७।५।२।१४ | अथैव वाच यशः । य एष | १४।१।१।३२ |
| अथैनान्धूयति । अक्षस्य | १४।१।२।२० | अथैव श्लोको भवति | १४।४।३।३४ |
| अथैनान्परिश्रिद्धिः परिश्रयति | २।४।३।९ | अथैषा गृह्यसुचमा भवति | ६।४।२।८ |
| अथैनान्मात्र उक्तमयति | ६।३।२।६ | अथैषु पुरीषं निवपति | २।४।३।१० |
| अथैनान्निमुञ्चति । आप्त्वा | ७।२।२।२१ | अथैषु हिरण्यशकलान्प्रत्य | ७।५।२।८ |
| अथैनामभिजुहोति । एतद्वा | ७।५।१।३२ | अथो अपि चतस्रोऽतिरिक्ताः | ११।१।२।८ |
| अथैनामभिषयते । अमो० | १४।२।४।१९ | अथो अपि तिस्रोऽतिरिक्ताः | ११।१।२।७ |
| अथैनामाच्छृणति । स्थेने | ६।५।४।१५ | अथो अपि अर्धशतस्युः | ३।५।१।८ |
| अथैनामुयच्छति । उत्थाय | ६।५।४।१३ | अथो अपि त्रीणि स्युः | १।१।३।३ |
| अथैने अभिमृशति । संज्ञामे० | ६।४।१।१० | अथो अपि त्रीणि स्युः | ३।१।३।२० |
| अथैनौ सजिवपति । संज्ञामे० | ७।१।१।३८ | अथो अपि द्वे अतिरिक्ते | ११।१।२।६ |
| अथैन्द्रमेकादशकपालं | ५।४।५।१० | अथो अपि नव स्युः | ११।१।२।४ |
| अथैन्द्रम् । इन्द्रियं धै | ३।९।१।१५ | अथो अपि सप्त स्युः । सप्त या | ३।१।१।२१ |
| अथैन्द्राम् । तेजो वा | ३।९।१।१९ | अथो अष्टाहुः । ऐन्द्राम् | ११।८।३।३ |
| अथैन्द्रामो । उभा वामि० | २।३।४।१२ | अथो अष्टाहुः । सौर्य | ११।८।३।२ |
| अथैन्द्रामो द्वादशकपालः | २।५।२।८ | अथो अष्टाहुतिरिक्ता स्यात् | ११।१।२।५ |
| अथैन्द्रामो द्वादशकपालः | २।५।४।८ | अथो अष्टाहुतिरिक्ता स्यात् | ४।१।१।१८ |
| अथैन्द्रा मरुत्वती जपति | २।५।२।२६ | अथो अष्टाहुतिरिक्ता स्यात् | ४।६।३।२ |
| अथैन्द्रा । इन्द्रो वै यज्ञस्य | २।३।४।३८ | अथो अष्टाहुतिरिक्ता स्यात् | ४।५।७।८ |
| अथैन्द्र्यः पृथग् स्वस्तिः | ३।२।३।८ | अथो अष्टाहुतिरिक्ता स्यात् | १४।४।२।२९ |
| अथैन्द्र्यः सविता प्रारोचत | ३।२।३।११ | अथो अष्टाहुतिरिक्ता स्यात् | १४।२।१।३ |
| अथैन्द्र्यः सूर्य दक्षिणामा० | ३।५।१।१९ | अथो आहुः । अग्निमेव | ६।१।२।१० |
| अथैन्द्र्यः सोमः प्रारोचत | ३।२।३।१० | अथो आहुः । प्रजापतिरेव | १०।२।३।१६ |
| अथैन्द्र्योऽग्निः प्रारोचत | ३।२।३।९ | अथो आहुः । प्रजापतिरेव | ६।१।२।२१ |
| अथैवमभिषय वाचयति | ३।३।४।२ | अथो आहुः । प्रजापतिरेव | ६।१।२।११ |
| अथैवमभिषय वाचयति | ३।६।१।२० | अथो आहुः । प्रजापतिरेव | २।२।३।५० |

कण्डिकाप्रतीकम् वा०अ०आ०क०
 अथो आहुः । यज्ञस्य १४२।२।४९
 अथो इतरथाहुः । अपस्योरे० ३।५।४।७
 अथो इतरथाहुः । एष एव ११।२।४।२
 अथो इतरथाहुः । दक्षिणमे० ३।७।२।६
 अथो इतरथाहुः । य एव १।७।२।२६
 अथो इमे वै लोका ऋतव्याः ८।७।१।१२
 अथो इमे वै लोकौ रोहिणौ १४।२।१।४
 अथो एक इति ब्रूयात् ६।१।२।३३
 अथो ब्रूयस्य । अग्निर्वा १०।६।२।८
 अथो क्षत्रं वा अश्वः १३।२।२।१७
 अथो खरवाहुः । काममय १४।७।२।७
 अथो खरवाहुः । जागरिः १४।७।१।१६
 अथोस्मां करोति । आत्मानं ६।५।३।५
 अथोस्मां करोति । इमांस्तल्लो० ६।५।३।३
 अथोस्मामवदधाति । देवानां ६।५।४।४
 अथोस्मामादधे । घौरसि १।७।१।११
 अथोस्मानुवदधाति । योनि० ७।५।१।२६
 अथो गीरिति ब्रूयात् ६।१।२।३४
 अथो चक्षुषी वै रोहिणौ १४।२।१।५
 अथो चक्षुर्गृहीतमेवज्यं ४।५।१।१६
 अथोज्जितीः । जुहोति वा ५।२।२।१६
 अथोत्तममनुयात्रमिष्ट्वा १।८।२।१७
 अथोत्तमां दोदमित्वा । येन १।७।१।१८
 अथोत्तरं परिदधाति । मित्रा० १।३।४।४
 अथोत्तरं संवत्सरमृतुषु० १३।५।४।२८
 अथोत्तरतः । अयमुत्तरा० ८।६।१।१९
 अथोत्तरतः । इदमुत्तरात्त्व० ८।१।२।४
 अथोत्तरतः । इषमूर्जमह० ७।३।१।२३
 अथोत्तरतः । चतुश्चत्वारिंश ८।५।१।११

कण्डिकाप्रतीकम् वा०अ०आ०क०
 अथोत्तरतः । परिश्रितम्भ० १४।१।२।१५
 अथोत्तरतः । प्राचीं शम्भां ३।५।१।३०
 अथोत्तरतः प्रोक्षति । मनो० ३।५।२।७
 अथोत्तरतः सिकता उप० १४।१।३।१४
 अथोत्तरतः । स्वराडस्युदीची ८।६।१।८
 अथोत्तरतस्तिष्ठन्वर्षां प्रतप० ३।८।२।१९
 अथोत्तरतोऽबिम् । बरुत्रां ७।५।२।२०
 अथोत्तरतोऽधम् । वातस्य ७।५।२।१८
 अथोत्तरमर्धर्चमनुवृत्त्य ७।५।२।२६
 अथोत्तरमुद्दिमादधाति ६।५।२।५
 अथोत्तरवेदिं निवपति ७।३।१।२७
 अथोत्तरां जुह्वमभ्युदति १।५।३।२०
 अथोत्तराः । त्रिद्विष्यामेव ८।४।४।३
 अथोत्तराणि जपति । द्रावे ९।१।१।२४
 अथोत्तराम् । अयं ते यो० ७।१।१।२८
 अथोत्तरार्धेन प्राक् । उप ९।१।२।२७
 अथोत्तरार्धेन प्राचीम् ७।२।२।११
 अथोत्तरे । इन्दुर्दक्षः श्येनः ९।४।४।५
 अथोत्तरे । इषमूर्जमह० ८।३।२।६
 अथोत्तरेण त्रिचेन जुहोति ५।१।५।२१
 अथोत्तरेण । पर्येत्याध्वर्युः ३।५।३।२१
 अथोत्तरेण शालां परिधयति ३।१।२।२
 अथोत्तरानं यशुं पर्येत्स्थन्ति १।८।२।१२
 अथो त्रया देवा एकाद० १२।८।३।२९
 अथोत्तरैरुपतिष्ठते ७।५।२।२८
 अथोदकवत्तोषणेन पात्रे० १।७।१।२०
 अथोदचमसान्ननिवति ७।२।४।१
 अथोदशं स्पर्शं प्रहरति १।२।५।२२
 अथोदपात्रमादाय । पुनः २।६।१।४१

| ऋषिद्विकानामकाराद्यनुक्रमणिषा | का०श०ब्रा०क० |
|---|--------------|
| अथोदपात्रपादायावनेजयति २।४।२।१६ | |
| अथोदपात्रपादायावनेजयति २।४।२।२३ | |
| अथोदवसानीमयेष्ट्या यजते ४।५।१।१३ | |
| अथोदीचीन्दिशमपश्यन् १।१।१।६।२४ | |
| अथोद्गाता ब्रह्माणस्पृच्छ० १३।५।२।१५ | |
| अथोद्गाता ब्रह्माणस्पृच्छ० १३।५।२।२० | |
| अथोद्गातारन्दीक्षयति १२।१।१।३ | |
| अथोद्गाता वावात्रामभिमेधति १३।५।२।६ | |
| अथोद्गन्तवा आह १३।८।१।२० | |
| अथोद्यच्छन्तीधमम् । उपय० ३।५।२।२ | |
| अथो द्वाविति द्रुयात् ६।१।२।३४ | |
| अथोलयति । धर्माय १४।२।१।१० | |
| अथोनेतारम् । स्नातको १२।१।१।१० | |
| अथोपगृह्णाति । अर्षां पेरुरसीति ३।७।४।६ | |
| अथोपनिष्क्रम्य जुहोति ११।५।९।११ | |
| अथोपनिष्क्रम्यामिमम्रयते ३।२।४।१६ | |
| अथोपनिष्क्रामति । उर्वन्त० ४।१।१।२० | |
| अथोपनिष्क्रामति । क्षत्रस्य १४।३।१।९ | |
| अथोपनिष्क्रामति । स्वाहा ३।६।३।२० | |
| अथोपपश्यत्य जपति २।४।२।२२ | |
| अथोपमृति । ममज्ञस्य ३।८।३।१९ | |
| अथोपमारयति । अवभृथ ४।४।५।२२ | |
| अथोपयमन्या महावीर १४।२।२।१३ | |
| अथोपयमन्योपगृह्णाति १४।२।१।१७ | |
| अथोपलासुपदधाति १।२।१।१७ | |
| अथोपश्रयां पिष्ट्वा । लोकमा० ७।५।१।२८ | |
| अथोपविश्य मृदममिजुहोति ६।३ ३।१५ | |
| अथोपांशुसधनमादत्ते ४।१।१।२८ | |
| अथोपांशुपहृयते । एतद् १।८।१।१८ | |

| ऋषिद्विकानामकाराद्यनुक्रमणिषा | का०श०ब्रा०क० |
|---------------------------------------|--------------|
| अथोपाकृत्य पशुम् । अग्नि ३।७।३।३ | |
| अथोपाकृत्यैतां वाचं वदति ४।३।३।१९ | |
| अथोपातियन्ति । इन्द्रं विष्वा९।२।३।२० | |
| अथो यः सहस्रं वा भूयो ५।५।५।१२ | |
| अथो यया प्रायणीयेऽतिरा० ९।४।४।१६ | |
| अथो ये दीर्घसत्रमासीरन् ४।५।१।१२ | |
| अथो ये दीर्घसत्रमासीरन् ५।५।५।१३ | |
| अथोल्लखलं निदधाति १।१।४।७ | |
| अथोल्लखलमुसले उपदधाति ७।५।१।१२ | |
| अथोल्मुकमादायासीरुरस्ता० ३।८।१।९ | |
| अथोल्लिखति । तद्यदेवास्मै २।१।१।२ | |
| अथोल्लिखति । सुसत्याः ३।२।१।३० | |
| अथो विश्वकर्मेण । विहवं वै ४।६।४।५ | |
| अथो वैक्लव्यी । मजापति० १४।१।२।५ | |
| अथोषान्त्सम्भरति । असौ ह वै २।१।१।६ | |
| अथोषाश्विपति । अयं वै ७।१।१।६ | |
| अथोष्णीषं संहृत्य । पुरस्ता० ५।३।५।२३ | |
| अथो हैनयापि भिषज्येत् ५।५।५।१५ | |
| अथो हैनयाप्यभिचरेत् , ५।५।५।१४ | |
| अथोदुम्बरी शासामुपस्पृश ५।४।३।२६ | |
| अथोदुम्बरीमादधाति ६।६।३।२ | |
| अथोदुम्बरीमादधाति ९।२।३।४० | |
| अथोदुम्बरीमुत्तरत उपदधा० ७।४।१।३८ | |
| अथोदुम्बरीमुत्तरत उपदधा० ७।४।१।४२ | |
| अथोद्भगजानि जुहोति ६।६।१।१२ | |
| अदाद्यमोऽवसानं पृथिव्या इति ७।१।१।३ | |
| अदितिष्टा देवी विषदेभ्यावती ६।५।४।३ | |
| अदित्यास्त्यष्टे सादयामी० ८।२।१।१० | |
| अदित्यै मागोऽसि . ८।४।२।९ | |

अष्टिदशप्रतीकम्

का० अ० भा० क०

| | |
|------------------------------|----------|
| अदित्यै रास्नासीति | ६५१२१३ |
| अदित्यै स्वाहा । अदित्यै | १३११८४ |
| अद्वयस्य केतवः | ४५५४११ |
| अदृष्टो द्रष्टा । अद्वयतः | १४६१७३१ |
| अद्भिः परिपिबति । सान्तिर्वा | ९११२१२ |
| अद्भ्यः स्वाहेति । आपो | १४३१२१३ |
| अद्भ्यश्चैनञ्जन्मसश्च | १४४३१२९ |
| अद्भ्यस्त्यौपचीभ्यः परि० | ११५४१४ |
| अघामायात्येति मन्यमान | १११५११ |
| अभिहित्यैव जुहुयात् | २३१११५ |
| अघोजानु त्वेव कुर्यात् | ११८१३१२ |
| अघ्यात्मम् । प्राणो वा | १०६१२४ |
| अधर्गुश्च प्रतिपस्थाता च | १२१७३१२२ |
| अनर्द्धान्वय इति | ८१२४१९ |
| अनर्द्धा पुरुषं पुरुषात् | ६३१११२४ |
| अनया वा । युक्त्वा हि | ४५५३११० |
| अनर्वा मेहीति । असपत्नेन | ३८१२१३ |
| अनाश्रुता पुरस्तादिति | १४११३१९ |
| अनाश्रुत्या त्वा वाताय | १४१२१२४ |
| अनुत्वा माता मन्यतामनु० | ३७१४५ |
| अनुत्वा प्राथिनी अर्मसा० | १४१२१२६ |
| अनुत्तुभ आपिभ्यो गवन्ति | १२१८१२१९ |
| अनुत्तुभयक्षिणः | १२१२४१४ |
| अनुत्तमेवास्य सामिधेयः | ११२१६३ |
| अनुत्तुम हेक्षाश्चके | ९५५११५ |
| अनेन त्वेवोपचरेत् । देव | ४६६१७ |
| अनेनैव जुहुयात् । सज्जुर्वेन | २३११३७ |
| अनेनैव वाचं विसर्जयेत् | ३२१२१७ |
| अनेनैव वाचं विसृजेत् | ४६९१२४ |

अष्टिदशप्रतीकम्

का० अ० भा० क०

| | |
|---------------------------------|---------|
| अनेनो हैके वाच विसर्जयन्ति | ३२१२१६ |
| अन्तकमु तर्हि पदनात्मत्यस्येत् | ३२११४ |
| अन्तरतो देवानां पत्नीभ्योऽव० | ३८१५७ |
| अन्तरिक्ष गच्छ स्वाहेति | ३८१४१२ |
| अन्तरिक्षं ह त्वेवैषोऽग्निश्चि० | १०५४१२ |
| अन्तरिक्षमेव द्वितीया चितिः | ८७४१३ |
| अन्तरिक्षाय स्वाहेति | १४३१२६ |
| अन्तरेणागाद्रष्टव्यविति | २३१२१७ |
| अन्तरेणार्थर्चा याज्याये | ३८१३३० |
| अन्तरेणेव उपावहरति | ३९१३३ |
| अन्तरेणो हैव पत्नीम् | १६१२४ |
| अन्तर्धायो हैके निवपन्ति | १३८१२१ |
| अन्तर्यामपात्रमेवान्वयः | ४५५५३ |
| अन्तस्ते वावाप्रथिवी वषामि | ४११२१६ |
| अन्वन्तमः प्रविशन्ति | १४७२१६ |
| अर्धं पुरीषवती । स योऽज्यो० | ८५११६ |
| अर्धं सप्तदशवत्यो । ते यत्सप्त० | ८४४१७ |
| अर्धं समिष्टयजुः । स यो ह | ११२१७३१ |
| अन्नपतेऽन्नस्य नो देहीति | ६६४१७ |
| अन्नमेव ग्रहः । अन्नेन | ४६५५४ |
| अन्नमेव यजुः । अन्नेन हि | १०३१५६ |
| अन्नमन्त्रेत्येक आहुः | १४८१३१ |
| अन्नाद्वा अशनाया निव० | १०२१६१९ |
| अन्यतः क्षुत्स्यात् | ६३११३४ |
| अन्वगिरुषसामग्रमस्यदिति | ६३१३६ |
| अन्वञ्च इवाग्निरसः | १२१२११ |
| अपः प्रणीय । आग्रावैष्णवमे० | ३११३१ |
| अप आनीय निनयति | १२१८१८ |
| अप एवाभ्यवेत्य । यत्र | ३८१५१० |

| वर्णिकप्रतीकम् | अ० अ० प्र० अ० | वर्णिकप्रतीकम् | अ० अ० प्र० अ० |
|--------------------------------|---------------|----------------------------|---------------|
| अप एवेनमभ्यवहरेयु | ४।५।२।१४ | अपा त्वेमन्त्सादयामीति | ७।५।२।४६ |
| अपक्रमादु हवैषमेतद्विमया० | ४।३।३।११ | अपा त्वोन्नत्सादयामीति | ७।५।२।४७ |
| अपदे पादा प्रतिघातयेऽकरि० | ४।४।५।५ | अपा घृष्टमसि योनिरग्नेरिति | ६।४।१।८ |
| अप द्वेषो अप हर इति | १४।३।१।१९ | अपा घृष्टमसि योनिरग्नेरिति | ७।४।१।९ |
| अपराहे दीक्षेत । पुरा | ३।१।२।१ | अपा रसमुद्भयसम् । सूर्ये | ५।१।२।७ |
| अप वा एतस्मात् । तेज | १२।७।२।१ | अपातामश्विना घर्ममिति | १४।२।२।२५ |
| अप वा एतस्मात् । तेज | १३।२।६।३ | अपादाय भस्मन प्रत्येत्य | ६।८।२।८ |
| अप वा एतस्मात् । तेजो | १३।२।६।९ | अपामार्गेरपमृजते । अपमेव | १३।८।४।४ |
| अप वा एतस्मात् । श्री राष्ट्र० | १३।१।५।१ | अपि ह वा एतर्हि | ११।२।५।१ |
| अप वा एतस्मात् । श्री राष्ट्र० | १३।२।९।१ | अपि ह स्माह शाय्यायनि | ८।१।४।९ |
| अप वा एतेभ्य प्राणा | १३।१।७।२ | अपि हि न ऋषेर्वच श्रुतम् | १४।९।१।४ |
| अप वा एतेभ्य प्राणा | १३।२।८।५ | अपि होवाच याज्ञवल्क्यः | ४।२।१।७ |
| अप वा एतेभ्य प्राणा | १३।२।९।९ | अपीद्वै कनीषसी सप्त | १।९।१।१९ |
| अप वा एतेभ्य प्राणाः | १४।१।६।३२ | अपेत वीत बि च सर्पतात | ७।१।१।२ |
| अप वा एतेभ्य आधुर्देव० | १३।५।२।१० | अपो अयाम्बचारिपमिति | १२।९।२।९ |
| अपश्यन्नोपामनिषधमानमि० | १४।१।४।९ | अपो देवीरूप सृज मधुम० | ६।४।३।२ |
| अपसरणतो ह वा अग्ने देवा | १।९।३।११ | असोर्धाम सप्तममहर्भरति | १३।७।१।९ |
| अपस्या उपदधाति । आपो वै | ८।२।३।५ | अप्सुषदन्त्वा । घृतसद | ५।१।२।५ |
| अपा गभन्त्सीदेति । एतद्वापा | ७।५।१।८ | अप्स्वग्ने सधिष्टवेति | ६।८।२।४ |
| अपा त्वा क्षये सादयामीति | ७।५।२।५४ | अन्ननीन्म उदह शौरगा० | १४।६।१०।२ |
| अपा त्वा व्योतिषि सादया० | ७।५।२।४९ | अन्नवीन्मे गर्दमीविषी० | १४।६।१०।११ |
| अपा त्वा पायसि सादयामीति | ७।५।२।६० | अन्नवीन्मे जित्वा शैलिन | १४।६।१०।५ |
| अपा त्वा पुरापे सादयामीति | ७।५।२।५९ | अन्नवीन्मे वक्तुं गार्ध | १४।६।१०।८ |
| अपा त्वा भस्मन्त्सादयामी० | ७।५।२।४८ | अन्नवीन्मे विदग्ध शा० | १४।६।१०।१७ |
| अपा त्वायने सादयामीति | ७।५।२।५० | अन्नवीन्मे सत्यक्रामो | १४।६।१०।१४ |
| अपा त्वा योनौ सादयामीति | ७।५।२।५८ | अभिविता स्वरसामान | १२।३।१।४ |
| अपा त्वा सद्ने सादयामीति | ७।५।२।५६ | अभितोऽग्निमसा उन्नयति | १।२।५।१५ |
| अपा त्वा सधस्ये सादयामी० | ७।५।२।५७ | अभितो यूष विष्टतौ जुहुत | ४।२।१।२५ |
| अपा त्वा सधिषि सादयामी० | ७।५।२।५५ | अभिग असीति । तस्माद० | १३।१।२।३ |

| वर्णिकप्रतीकम् | वा०अ०भा०क० |
|--------------------------------|------------|
| अभिष्टव्यपूर्वपुरस्ताद्विपुवत् | १२।२।३४ |
| अभिष्टवा उभयतोऽप्य बाहू | १२।३।१।७ |
| अभिष्टवः पदहः | १२।२।२।१२ |
| अभि शुक्लानि च कृष्णानि | ६।७।१।७ |
| अभिषेचनीयेनेष्टा। केशाञ्च | ५।५।३।१ |
| अभीवर्तः सर्विश् इति | ८।४।१।१५ |
| अमृता इयं प्रतिष्ठेति | ६।१।१।१५ |
| अमृता इयं प्रतिष्ठेति | ६।१।३।७ |
| अम्यात्मं पक्षपुच्छानि | ९।१।२।३० |
| अमृगुरीपम् । चन्द्रमा | १०।५।४।१७ |
| अम्रयो ह वा एता अज्ञा० | २।३।२।१५ |
| अन्निमादये । देवस्य त्वा | ३।७।१।१ |
| अन्निरसीति । अन्निर्येषा | ६।३।१।३९ |
| अभ्या । यज्ञो वा अन्निर्येषा | १४।१।२।३ |
| अमावास्यायां दीक्षते | ६।२।२।२६ |
| अमिमौल वरिमाणं पृथिव्या | ३।३।४।३ |
| अमुपिन्वा एतमहीपीत् | ४।१।१।२३ |
| अमुपिन्वा एतं मण्डलेऽही० | ४।१।१।२५ |
| अमृतमेव सप्तमी चितिः | ८।७।४।१८ |
| अमृतेन ह वा एष देवास्तर्प० | ११।५।७।८ |
| अमृतमयपापी । अस्ति वा | १४।१।१।३० |
| अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके | १३।२।८।३ |
| अयमतेत्यददादिति | १३।१।५।६ |
| अयं ते योनिर्वास्वियः । यतो | २।३।४।१२ |
| अयं वायुः । सर्वेषाम्भूताना० | १४।५।५।५ |
| अयं वाय यजुर्योऽयम्भवते | १०।३।५।१ |
| अयं वाय लोक एषोऽग्निश्चि० | १०।१।२।२ |
| अयं वाय लोक एषोऽग्निश्चि० | १०।५।४।१ |
| अयं वायुः शिशुर्योऽयम्भव्य० | १४।५।२।२ |

| वर्णिकप्रतीकम् | वा०अ०भा०क० |
|--------------------------------|------------|
| अयं वै यज्ञो योऽयं पवते | २।१।४।२१ |
| अयं वै यज्ञो योऽयम्भवते | ११।१।२।३ |
| अयं वै यज्ञो योऽयम्भवते | १२।१।१।१ |
| अयं वै लोकोऽग्निर्मातमः | १४९।१।१४ |
| अयं वै लोको मर्याः | १२।३।४।७ |
| अयं सो अग्निः । यस्मिन्सो० | ७।१।१।२२ |
| अयं स्तनयिन्नुः । सर्वेषाम्भू० | १४।५।५।१० |
| अयं ह वा अस्त्येष प्राणः | ४।२।४।१ |
| अयं ह वा अस्त्येषोऽनिरुक्त | ४।२।३।१ |
| अयश्चन्द्रः । सर्वेषाम्भूताना० | १४।५।५।७ |
| अयन्वर्मः । सर्वेषाम्भूता० | १४।५।५।११ |
| अयमग्निः । सर्वेषाम्भूताना० | १४।५।५।३ |
| अयमग्निर्विरतमो ययोधा | ८।६।३।२१ |
| अयमग्निर्विधानरः । योऽय० | १४।८।१०।१ |
| अयमक्ताशः सर्वेषाम्भूताना० | १४।५।५।४ |
| अयमात्मा । सर्वेषाम्भूता० | १४।५।५।३४ |
| अयमादित्यः । सर्वेषाम्भूता० | १४।५।५।६ |
| अयसिह प्रथमः । धायि | २।३।४।१४ |
| अयमेव दक्षिणः कर्णोऽ० | १२।२।४।१५ |
| अयमेव दक्षिण ऊरुर्वरुण० | ११।५।२।३ |
| अयमेव दक्षिणो बाहुर्अभि० | १२।१।४।२ |
| अयमेव दक्षिणो हस्तोऽभि० | १२२।४।२ |
| अयमेव सुवो योऽयम्भवते | १।३।२।५ |
| अयमेवाकाशो जूः । यदिद० | १०।३।५।२ |
| अयमेवाकाशो जूः । योऽय० | १०।३।५।५ |
| अयमेवावाक् प्राणः स्त्रिय० | ११।१।६।३० |
| अयमेवोत्तरः कर्णो विश्व० | १२।२।४।१६ |
| अयमेवोत्तर ऊरुर्महादिवः | ११।५।२।५ |
| अयमेवोत्तरो बाहुः शुना० | ११।५।२।६ |

| वण्डिमापतीकम् | अ०अ०मा०क० | वण्डिमापतीकम् | अ०अ०मा०क० |
|---|-----------|--|-----------|
| अमरोवोत्तरो बाहुर्विश्रजित् १२।१।४।३ | | अश्वशफमानं कुर्यादित्यु १।२।२।१० | |
| अयस्मयेन चरुणा तृती० १३।३।४।५ | | अश्वशफेन द्वितीयामाहुतिहु० १३।३।४।४ | |
| अयुष्मा अयुष्मा एकधना ३।९।३।३४ | | अश्वशकैर्धूपयति । प्राजापत्यो ६।५।३।९ | |
| अयुष्मेपु सारसरेषु कुर्यात् १३।८।१।३ | | अश्वस्तोमीय हुत्वा द्विपदा १३।३।६।३ | |
| अरुण्योरमी समारोह ५।३।१।१ | | अश्वस्य पदे जुहोति ६।३।३।२२ | |
| अरुणिनामी भवति । बाहुर्वो १।४।१।२।६ | | अश्वस्य वा आलव्वस्य १३।१।१।३ | |
| अरौ२॥ इवाते नेमि० १।४।२।१५ | | अश्वस्य वा आलव्वस्य १३।३।६।१ | |
| अरिष्टो ह्येवानार्तः । स्वस्ति १०।३।५।८ | | अश्विना घर्मयातमिति १।४।२।२।२० | |
| अर्कपर्णेन जुहोति । अश्वम० ९।१।१।४ | | अश्विनौ ह वा इदं भिषज्य० ४।१।५।८ | |
| अर्कपर्णेन जुहोति । षूतस्य ९।२।१।९ | | अश्वो न देववाहन इति १।४।१।३० | |
| अर्कपलाशाभ्याम् । यवम० २।२।३।१३ | | अश्वो न देववाहन इति १।४।३।६ | |
| अर्कपलाशाभ्याम् । मीहि० २।२।३।१२ | | अषाढासि सहमानेति ७।४।२।३९ | |
| अर्जवे त्वा सवने सादया० ७।५।२।५१ | | अष्टकायामुखा सम्मरति ६।२।२।२३ | |
| अर्धमासा हविष्पान्नाणि ११।२।७।४ | | अष्टर्षेणोपतिष्ठेतेत्यु हेक आहु० ९।५।२।९ | |
| अर्यमणं वृहस्पतिम् ५।२।२।९ | | अष्टा तथमानाकभते १३।६।२।७ | |
| अर्वाक्तरा परेभ्योऽविद ३।६।४।६ | | अष्टारुपाला सभे पुरोडा० २।२।१।१७ | |
| अर्वाग्निरुदचमस ऊर्ध्वजुध १।४।५।२।५ | | अष्टाचरत्वारिंशतम्मध्यमे १३।६।२।५ | |
| अवच्छिन्नो हि वै पुरुष ३।१।२।१६ | | अष्टादशात्मनोऽकुरुत १०।४।२।१५ | |
| अवभृथ निचुम्पुण । निचेह० २।५।२।४० | | अष्टारलि परिधासयेत् ३।६।४।२० | |
| अवभृथमिद्धा यन्ति १२।९।२।१ | | अष्टावमूनि भवन्ति ९।५।१।४४ | |
| अवस्पवे रता वाताय स्वाहा १।४।२।२।५ | | अष्टावष्टौकृत्यः । ब्रह्मवर्च० ४।१।१।१४ | |
| अवस्युरसि दुवस्वानिति ९।४।२।७ | | अष्टावात्मनोऽकुरुत १०।४।२।९ | |
| अशनिरेव प्रथमोऽनुया० ११।२।७।२१ | | अष्टाविष्टका उपदधाति ७।१।१।३२ | |
| अहोदोच्छिष्टी । एष वै १।४।१।१।३१ | | अष्टाविष्टका उपदधाति ८।६।३।१२ | |
| अश्मनस्त्रीस्त्रीन्प्रकिरन्ति १३।८।४।३ | | अष्टाभिर्गुणो भवति ५।२।१।५ | |
| अश्मन्मूर्जं पर्वते शिश्रिया० ९।१।२।५ | | अष्टौ भवन्ति । अष्टाक्षरा ९।४।३।१४ | |
| अश्याम त कानमग्ने तवोतीति ९।५।२।७ | | अष्टौ वैधर्म्यगानि जुहोति ९।५।२।५१ | |
| अश्वं चावि चोसरत् ७।५।२।१५ | | अष्टौ ह वै पुत्रा अदिते ३।१।३।३ | |
| अधन्तूपरज्ञोभृगमिति १३।२।२।२ | | असंख्याता सहस्राणि ९।१।१।३० | |

| अग्निप्रकृतीष्टम् | अ०-अ०-अ०-क० |
|--------------------------|-------------|
| असद्वा इदमप्र आसीत् | ६।१।१।१ |
| अमुन्वन्तमयजमानमिच्छेति | ७।२।१।९ |
| अमुरा ह वा अग्रे यमुमा० | २।८।३।२८ |
| अमुर्या नाम ते ओहा | १४।७।२।१४ |
| असौ मानुष इति । तदिम | १।५।१।१३ |
| असौ वा अनुवाक्येय याज्या | १।७।२।११ |
| असौ वा अनुवाक्येय याज्या | १।७।२।१५ |
| असौ वै लोकोऽभिर्गैतम | १४।९।१।१२ |
| अस्तमित आदित्ये याज्ञव० | १४।७।१।३ |
| अस्तमित आदित्ये याज्ञव० | १४।७।१।४ |
| अस्तमित आदित्ये याज्ञव० | १४।७।१।५ |
| अस्तमित आदित्ये याज्ञव० | १४।७।१।६ |
| अस्थिम्य एवास्य खदिर | १३।४।४।९ |
| अस्थिनि वै परिश्रित | ७।१।१।१५ |
| अस्थेयं याज्यानुवाक्याः | ११।१।६।३४ |
| अहिमन्नु हेकेऽवान्तरदेव | ८।४।४।१० |

| अग्निप्रकृतीष्टम् | अ०-अ०-अ०-क० |
|-------------------------------|-------------|
| अस्मै प्रक्षणेऽस्मै सत्रायेति | ४।२।२।१३ |
| अम्य प्रत्याम् । वनुदुत | २।३।४।१५ |
| अस्य हविषस्तन्ना यजेति | ३।८।१।१३ |
| अस्याधृषेद्धोत्राया देवप्रमा० | १।९।१।१२ |
| अह सन्तमुवाद्युम् । रात्रौ | ४।१।२।१३ |
| अहरहरपथान भरन्त इति | ६।६।३।८ |
| अहरहर्भूतेभ्यो बलि हरेत् | ११।५।६।२ |
| अहरहर्वाचि विस्तृष्टामाम् | १३।४।४।३ |
| अहर्ब देवा । मनपदतपाप्मान | २।१।४।९ |
| अहलिकेति होवाच याज्ञ० | १४।६।९।२६ |
| अहोरात्राणि वा उपसद | १०।२।५।४ |
| अहोरात्रे मच्छ स्वादेति | ३।८।४।१५ |
| अहोरात्रे परिवेष्टी | ११।२।७।५ |
| अहोरात्रे वा अभिरर्तवन्ते | ६।६।४।३ |
| अहोरात्रे ह वा अमुदिमलो० | २।३।३।११ |
| अहोरात्रे ह वा अस्पैतौ ग्रहौ | ४।१।२।१२ |

(आ)

| | |
|-----------------------------|-----------|
| आकाश एव यस्यायत० | १४।६।९।१३ |
| आकूयै मयुजेऽग्राये | ३।१।४।१२ |
| आकूयै मयुजेऽग्राये | ३।१।४।११ |
| आपण्य वाजिन् । पृथिवीम० | ६।३।३।११ |
| आरूत्कर एवैनमुपजिरेयु | ४।५।२।१५ |
| आगत्य वाज्यन्तानमिति | ६।३।३।८ |
| आग्नेयैष्णव एकादश० | ६।६।१।२ |
| आग्नेयैष्णवग्रेद्वादशरूपालं | ५।२।५।१ |
| आग्नेयेय सैतवत् | १४।७।३।२७ |
| आग्नेद्वेत्तायान् । अन्त० | ९।२।३।१५ |
| आग्नेयमग्निष्टोम आनभते | ५।१।३।१ |

| | |
|------------------------------|-----------|
| आग्नेयमेव यज्ञकपाल पुरो० | २।२।३।१४ |
| आग्नेयीरन्वाह । अग्निरन्वा० | ७।३।२।९ |
| आग्नेयीरन्वाह । स्वयैवेनमे० | १।३।५।४ |
| आग्नेयोऽय यज्ञ । ज्योति० | २।२।३।६ |
| आग्नेयोऽष्टाकपाल पुरोडाशो | ५।५।१।१ |
| आग्नेयोऽष्टाकपाल पुरोडाशो | ५।५।२।६ |
| आग्नेय्यां गायति । अग्निर्दि | ४।४।५।७ |
| आग्नेय्यां गायति । अग्निर्दि | १४।३।१।११ |
| आग्नेय्यां गृह्णाति । मनो० | ४।४।१।५ |
| आ च परा च यथिमिग्रन्त | १४।१।४।१० |
| आग्निं वा एते पावन्ति | ११।१।२।१० |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०ख०प्रा०क० |
|-----------------------------|--------------|
| आजिघ्न कलशम् | ४।५।८।६ |
| आजुह्वानः सुपतीकः पुर० | ९।२।३।३५ |
| आज्यभागाम्यामेव | १।६।३।२५ |
| आज्याहुतयो ह वा एता | ११।५।६।५ |
| आज्येन जुहोति । तेजो वा | १३।२।१।२ |
| आज्येन जुहोति । तेजो वा | १३।६।२।११ |
| आज्येन जुहोति । तेजो वा | १३।६।२।१४ |
| आज्येन जुहोति । मेधो वा | १३।३।६।२ |
| आज्येन जुहोति । वज्रो वा | ६।९।३।१८ |
| आज्येन जुहोति । वज्रो वा | ७।४।१।३४ |
| आतिथ्येन वै देवा इष्टा | ३।४।२।१ |
| आतिथ्येन वै देवा इष्टा | ३।४।३।१ |
| आत्मानधेद्विजानीयात् | १४।७।२।१६ |
| आत्मानमग्रे विकर्षति | ९।१।२।२९ |
| आत्मानमग्रे सञ्छादयति | ८।७।२।१३ |
| आत्मानमग्रे सञ्छादयति | ८।७।३।५ |
| आरामन्नमि गृह्णीते चेष्यन् | ७।४।१।१ |
| आत्मा ह स्वैवैषोऽग्निश्चितः | १०।५।४।१२ |
| आत्मा ह वा अस्याप्रयणः | ४।२।२।१ |
| आत्मेत्येवोपासीत । अत्र | १४।४।२।१८ |
| आत्मैव जातम् । अद्वा हि | २।३।१।२६ |
| आत्मैव भूतम् । अद्वा हि | २।३।१।२५ |
| आत्मैवागतम् । अद्वा हि | २।३।१।२७ |
| आत्मैवाग्निः । प्राणो महा० | १०।१।२।४ |
| आत्मैवाद्य । अद्वा हि | २।३।१।२८ |
| आत्मैवेदमग्रे आसीत् । | १४।४।२।१ |
| आत्मैवेदमग्रे आसीत् | १४।४।२।३० |
| अत्रियो माण्टेः । माण्डि० | १४।५।५।२२ |
| अत्रियो माण्टेः । माण्डि० | १४।७।३।२८ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०ख०प्रा०क० |
|---------------------------------|--------------|
| आ त्वा जिघर्मि मनसा | ६।३।३।१९ |
| आददते ग्रन्थः । द्रोण० | ३।६।३।१० |
| आददेऽध्वर्युर्दत्तं देवेभ्य इति | १।२।४।५ |
| आददे रावासीति । यदा वा | ३।९।४।४ |
| आदित्यं चरुं प्रायणीयं | ३।२।३।१ |
| आदित्यश्चरुं यक्ष्यमाणो | १२।९।२।११ |
| आदित्यस्त्वेव सर्वं ऋतवः | २।२।३।९ |
| आदित्यानां भागोऽसि | ८।४।२।८ |
| आदित्यानाम्पत्नान्निहीति | १३।१।६।२ |
| आदित्यास्त्वाज्ञन्तु जागतेन | १३।२।६।६ |
| आदि येन चरुणोदयनीयेन | ४।५।१।१ |
| आदित्यो वा अघा | १०।६।२।३ |
| आदित्यो वा अर्कः | १०।६।२।६ |
| आदित्यो वा उष् | १०।६।२।९ |
| आदित्यो ह स्वैवैषोऽग्नि० | १०।५।४।४ |
| आनीते जपति । स्वाहा | १४।२।२।१४ |
| आन्तमग्निष्ठ मनश्चि | ३।७।१।१३ |
| आप एव यस्यायतनम् | १४।६।९।१७ |
| आप एवेदमग्रे आसुः | १४।८।६।१ |
| आपो देवीः । प्रतिगृन्णीत | ६।८।२।३ |
| आपोऽजुवन् क वयं भवामेति | ६।१।३।२ |
| आपो वा अर्कः । तद्यदपां | १०।६।५।२ |
| आपो ह वा इदमग्रे सलिलमे० | ११।१।६।१ |
| आप्यानवतीभ्यामग्निमृश्य | ७।३।२।१ |
| आप्यायध्वमप्या इन्द्राय | १।७।१।६ |
| आप्यायस्व समेतु ते | ७।३।१।४६ |
| आ ब्रह्मन् । ब्राह्मणो | १३।१।९।१ |
| आ यजतामेज्या इष इति | १।७।३।१४ |
| आराममस्य पश्यन्ति | १४।७।१।१५ |

| वण्डिकप्रतीकम् | अ०अ०ब्रा०क० | वण्डिकप्रतीकम् | अ०अ०ब्रा०क० |
|------------------------------|-------------|------------------------------|-------------|
| आ राण्टे राजन्यः शूर | १३।१।९।२ | आश्वमेधिकम्मध्यमम्पञ्च० | १३।७।१।७ |
| आरुहामि जघनेन | ७।५।२।४० | आश्विनं वै वः शस्यमानम् | ११।५।५।९ |
| आरुहामि स्वयमातृणा | ९।२।१।३ | आश्विनमध्वर्यवो भक्षय० | १२।८।२।२२ |
| आर्तमागेति होवाच | १४।६।२।१४ | आश्विनावधोरासौ वाहोः | १३।२।२।५ |
| आलम्बीपुत्रात् । आलम्बी० | १४।९।४।३२ | आश्विनीरजाः । सारस्वती० | १२।७।२।७ |
| आयह देवान्यजमानायेति | १।४।२।१६ | आश्विनेन प्रथमेन यजु० | १२।८।३।१८ |
| आ वाचो मध्यमरुद्दुरण्यु० | ८।६।३।२० | आसन्धा उपनहा उपमुद्यते | ५।५।३।७ |
| आविष्टः पुषा विश्वेवेदा इति | ५।३।५।३५ | आसन्धामभिपिद्यति | १२।८।३।४ |
| आबित इन्द्रो इन्द्रव्रवा इति | ५।३।५।३३ | आसाद्य हवींष्यग्निं मन्यति | २।५।१।१९ |
| आविष्टादितिरुहर्षमेति | ५।३।५।३७ | आसाद्य हवींष्यग्निं मन्यति | २।५।२।१९ |
| आविष्टे यावापृथिवी विश्व० | ५।३।५।३६ | आसाद्य हवींष्यग्निं मन्यति | ३।४।१।१९ |
| आविष्टो अग्निर्गृहपतिरिति | ५।३।५।३२ | आसीदद्विद्वा सुवनानि | ३।३।४।४ |
| आविष्टौ मित्रावरुणौ घृत० | ५।३।५।३४ | आसीनं मृतमभिपिद्येत् | ९।३।४।१४ |
| आ विश्वतः प्रत्यहं जिघ० | ६।३।३।२० | आसीनः कुर्वतिस्यु हैरु | ९।१।२।१४ |
| आशुः शिशानो घृण्यो | ९।२।३।६ | आसीनस्तमाधारयति । यं | १।४।४।७ |
| आशुः सप्तिरिति । अथ | १३।१।९।५ | आसीनस्तमाधारयति । यो | १।४।४।१२ |
| आश्रुतिरुत्तरत इति | १४।१।३।२२ | आसीनो याग्यां यजति | १।४।२।१९ |
| आश्वत्थं भवति । तेन | ५।३।५।१४ | आस्पृष्टं जुह्वेवानामिति | १।४।२।१३ |
| आश्वत्थपात्रमभवति | १२।७।२।१४ | आस्पृष्टं परिश्रितः तद्यत्क० | ९।३।४।१५ |
| आश्वत्थेषु पलाशेषुतद्वा | ५।२।१।१७ | आस्य यजमानस्य धीरो | १३।१।९।९ |
| आश्वत्थालः मस्तरः । यज्ञो | ३।४।१।१७ | आद्वनीय व द्वेकेऽभिषि० | ९।३।४।१२ |

(इ)

इत्यमेव कुर्यात् । अरण्यो० १२।४।३।१०
 इत्यमेव कुर्यात् । उदस्थाली १२।४।१।५
 इत्यमेव कुर्यात् । उगाम्या० ११।४।२।२
 इत्यमेव कुर्यात् । तदेधोप० १२।४।२।८
 इत्यमेव कुर्यात् । तिस एव १२।५।२।३
 इत्यमेव कुर्यात् । पुरोडाशो० ११।७।२।५

इत्यमेव कुर्यात् । निवान्य० १२।५।१।४
 इत्यमेव कुर्यात् । प्राचीमे० ११।४।२।५
 इदं वा अपूपमशित्वा १२।५।१।९
 इदं वै तन्मधु । दध्य० १४।५।५।१६
 इदं वै तन्मधु । दध्य० १४।५।५।१७
 इदं वै तन्मधु । दध्य० १४।५।५।१८

| कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० मा० व० | कण्डिकाप्रतीकम् | अ० अ० मा० व० |
|---------------------------------|--------------|--------------------------------|--------------|
| इदं वै तन्मधु । दध्य० | १४।५।५।१९ | इन्द्राय पिन्वस्वेति । इन्द्रो | १४।२।१।१९ |
| इदं वै पशोः संज्ञप्यमानस्य | ३।७।४।९ | इन्द्रायाध्यक्षयेति । त्वध्य० | ३।२।४।२० |
| इदं सत्यम् । सर्वेषाम्भू० | १४।५।५।१२ | इन्द्राग्निनेति । इन्द्रो वै | १४।२।१।१९ |
| इदञ्च नमो देवेभ्य इति | १।९।१।२३ | इन्द्रो वृत्राय वज्रं भनहार | ४।३।३।५ |
| इदमहन्तं बलमुत्किरामि | ३।५।४।११ | इन्द्रो बलम्बलपतिः । बल० | ११।४।३।१२ |
| इदमहन्तं बलमुत्किरामि | ३।५।४।१२ | इन्द्रो ह यत्र वृत्राय वज्रं | १।२।४।१ |
| इदमहन्तं बलमुत्किरामि | ३।५।४।१३ | इन्द्रो ह यत्र वृत्राय वज्रं | १।६।४।१ |
| इदमेव चतुर्थमहः । तस्येद० | १२।२।४।५ | इन्द्रो ह वा ईक्षाद्यके | १।६।३।७ |
| इदमेव तृतीयमहः । तस्येद० | १२।२।४।४ | इन्द्रो ह वा ईक्षाद्यके | २।१।२।१४ |
| इदमेव द्वितीयमहः । तस्ये० | १२।२।४।३ | इन्द्रो ह वा ईक्षाद्यके | ३।२।१।२६ |
| इदमेव पञ्चममहः । तस्ये० | १२।२।४।६ | इन्द्रो ह वा ईक्षाद्यके | ४।१।३।११ |
| इदमेव षष्ठमहः । तस्येद० | १२।२।४।७ | इन्द्रो ह वा ईक्षाद्यके | ४।५।३।२ |
| इदम्मानुपम् । सर्वेषाम्भू० | १४।५।५।१३ | इन्द्रो ह वा ईक्षाद्यके | ५।५।४।८ |
| इधमभ्यादधति । उपयम० | ३।५।२।१ | इन्द्रो ह वै षोडशी । तं नु | ४।५।३।१ |
| इन्द्रं विश्वा ऋषीवृषजिति | ८।७।३।७ | इन्द्रानास्त्वा शतं हिमा | २।३।४।२१ |
| इन्द्र एतत्ससर्चमपश्यत् | ९।५।२।१ | इन्दे ह वा एतदध्वर्युः | १।३।५।१ |
| इन्द्रस्य पुरोडासः । द्यौः० | ४।२।५।२२ | इमं देवाः । असपत्नं सुव० | ५।३।३।१२ |
| इन्द्रस्य मागोऽसि । बिष्णो० | ८।४।२।४ | इमं देवाः । असपत्नं सुव० | ५।४।२।३ |
| इन्द्रस्य वै यत्र । इन्द्रियाणि | १२।८।१।१ | इमं नो देव सवितर्यक्ष | ६।३।१।२० |
| इन्द्रस्येन्द्रियमन्नस्य रसम् | १२।७।३।१ | इममेव लोकमृचा जयति | ४।६।७।२ |
| इन्द्रस्येन्द्रियाय स्वाहेति | ५।४।३।१८ | इमां त्वेव शुक्रस्य पुरोहचं | ४।२।१।९ |
| इन्द्रागच्छेति । इन्द्रो वै | ३।३।४।१८ | इगा आपः । सर्वेषाम्भूता० | १४।५।५।२ |
| इन्द्रानिम्मान्त्वा जुष्टभ्यो० | १३।१।२।६ | इमा दिक्षः सर्वेषाम्भूता० | १४।५।५।८ |
| इन्द्रानिम्मान्त्वा देवान्यं | ४।२।३।१४ | इमासु हैके शुक्रस्य पुरोहचं | ४।२।१।८ |
| इन्द्राग्नी मन्त्रयमानाम् | ८।३।१।८ | इमानेव गोतममरद्वाजी | १४।५।२।६ |
| इन्द्राय त्वा देवान्यं यज्ञ० | ४।२।३।१३ | इमे वै पाणाः । मनोजाता | ३।२।२।१३ |
| इन्द्राय त्वादित्यवते स्वाहेति | १४।२।२।७ | इमे वै लोकाः प्रवर्ग्यः | १४।३।२।२३ |
| इन्द्राय त्वाभिगमतिप्रै स्वा० | १४।२।२।८ | इयं विद्युत् । सर्वेषाम्भू० | १४।५।५।९ |
| इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते | १४।२।२।६ | इयं ह वा उषांशुः । माणो | ४।१।२।२७ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | पा० अ० प्रा० व० | कण्डिकाप्रतीकम् | पा० अ० प्रा० व० |
|--------------------------|-----------------|-----------------------------|-----------------|
| इयमेव पूर्णमाः । पूर्वेव | ११२।४।३ | इये राये रमस्व सहसे | ७।५।१।३१ |
| इयमेव प्रथमा सामिधेनी | ११२।७।६ | इष्कर्तामघ्नस्य प्रचेतसं | ७।३।१।३३ |
| इयमृथिवी । सर्वेपामृता० | १४।५।५।१ | इष्ट्य विचञ्चेति । ऐषिणुरिव | १।९।१।२० |
| इरज्यन्ते प्रथयस्व | ७।३।१।३२ | इह गतिर्विमत्येति । तन्नदेव | १।९।१।२२ |
| इषिर इति । क्षिप इत्ये० | ९।४।१।१० | इहा३ इहा३ इत्यभिपुणोति | ४।३।३।१ |

(ई)

| | | | |
|--------------------------|----------|-----------------------|----------|
| ईद्वेभ्यो नमस्त्य इति | १।४।३।५ | ईश्वरो वा एषः । पराङ् | १३।१।३।४ |
| ईश्वरो वा एषः । आर्तिमा० | १३।१।२।४ | ईश्वरो वा एषः । पराङ् | १३।२।१।६ |

(उ)

| | | | |
|---------------------------------|-----------|------------------------------|-----------|
| उक्थम् । प्राणो वा | १४।८।१४।१ | उत्तरेऽग्री पयोमहाङ्गुहति | १२।९।३।११ |
| उक्षा वय इति । उक्षाणं | ८।२।४।७ | उत्तरेऽग्री पशुभिः पुरोवा० | १२।९।३।१४ |
| उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्ण | ९।२।३।१८ | उत्तरेणाक्षणीयं पूर्वामिह० | ५।४।३।२४ |
| उक्षां कृणोतु । शक्त्या | ६।५।१।११ | उत्तानमुपदधाति । एतद्वै | ७।४।१।१८ |
| उक्षीरुत्तममनुयाजं यजति | २।२।३।१७ | उक्षिप्रजोऽज्ञसा । सह पीत्वी | ४।५।४।१० |
| उक्ष भैत्रावरुणीति । यदेव | १।८।१।२७ | उदङ् प्राङ् तिष्ठन् । उदङ् | ६।६।२।२ |
| उक्ष स्म । अस्य द्रवतस्तु० | ५।१।५।२० | उदङ् प्राङ् तिष्ठन् । एतद्वै | ६।७।२।१२ |
| उक्षो अनुष्टुभादेव भवतः | १।७।३।१८ | उदङ् प्राङ् तिष्ठन् । पुर० | ९।१।२।१५ |
| उक्षो गार्हपत्य एव शयय० | १।७।३।२७ | उदक्षमसा भवन्ति । आपो | ७।२।४।२ |
| उक्षो पद्यावत्तमेव भवति | १।७।२।८ | उदयनीयायां संस्थिता० | १३।५।४।२५ |
| उक्षो पात्र्यै गृह्णन्ति । अन० | १।१।२।८ | उदयनीयायां संस्थिता० | १३।६।२।१६ |
| उक्षरं वै तत्प्रजापतेरक्षयश्च० | १३।३।१।२ | उदरमविच्छन्द्याः । पशवो | ८।६।२।११ |
| उक्षरत एवैनमभिषिद्येत् | ९।३०।४।१३ | उदरमुष्मा । योनिरुत्सृज० | ७।५।१।३८ |
| उक्षरतोऽग्निम् । तद्धि | १४।३।१।२१ | उदरमेकविंशः । विशतिर्वा | १२।२।४।१२ |
| उक्षरतो वा अग्निशेजस्य | २।३।३।१४ | उदरमेवास्य सद्यः । तस्मा० | ३।५।३।५ |
| उक्षरनाम्ना संस्पृष्टम् | १४।३।१।१६ | उदरमेवास्य सद्यः । तस्मा० | ३।६।१।१ |
| उक्षरवेदी स्वेवोत्सादयेत् | १४।३।१।१५ | उदस्मेवास्येदा । तपधैवाद | ११।२।६।८ |
| उक्षरस्यां देवयज्यायामुपहृत | १।८।१।३० | उदयनीयायां संस्थि० | १३।५।४।२० |
| उक्षरार्धपूर्वांश्चैके । आग्ने० | १।६।३।३९ | उदिते ज्ञोते । प्रपद्या० | १३।५।२।२३ |

अष्टादशप्रतीकम्

अ० अ० अ० अ०

उदीचीमारोह । अनुष्टुप्त्वाव० ५।४।१।६
 उदीचीमेव दिग्भ्यम् । पर्यया ३।२।३।१५
 उद्ग्रामं च निग्रामं च ब्रह्म ९।२।३।२२
 उद्दालको हारुणिः । उदी० ११।४।१।१
 उद्वते प्र उभये फलके भवतः ३।३।४।९
 उद्धृत्याहवनीयं पूर्णाहुतिं २।२।१।१
 उद्बुध्यस्त्वान्ने प्रतिज्ञागृहि ८।६।३।२३
 उषच्छन्तीभ्यम् । उष्यच्छ० ३।६।३।९
 उद्वयन्तमसत्परीति । एता० १३।८।४।७
 उद्वयन्तमसत्परीति । पाप्मा १२।१।२।८
 उपयामगृहीतोऽसि । अह० ४।३।१।२०
 उपयामगृहीतोऽसि । अग्नये ११।५।९।७
 उपयामगृहीतोऽसि । इये ४।३।१।१७
 उपयामगृहीतोऽसि तपसे ४।३।१।१९
 उपयामगृहीतोऽसि । देवे० ४।२।३।१६
 उपयामगृहीतोऽसि । देवे० ४।२।३।१७
 उपयामगृहीतोऽसि नभसे ४।३।१।१६
 उपयामगृहीतोऽसि । शुक्राय ४।३।१।१५
 उपयामगृहीतोऽसि सहसे ४।३।१।१८
 उपरिष्ठादन्ताना सौमारोत्रेण ५।३।२।१
 उपर्युपयैवात्ममध्वर्युः ५।३।२।१८
 उपवसय एवैनमाहरेयुः २।३।२।७
 उपवस्यीमेऽङ्ग्यातरुदित ९।२।१।१
 उपसदो दशम्यो देवताः ५।४।५।१३
 उपस्तृणीत आग्नयम् ११।७।४।४
 उपहृतः सखा भञ्ज इति १।८।१।२३

अष्टादशप्रतीकम्

अ० अ० अ० अ०

उपहृता गावः सहर्षभा इति १।८।१।२०
 उपहृता सप्तहोत्रेति । तदेनां १।८।१।२१
 उपहृतेषां तत्त्वमिति । तदे० १।८।१।२२
 उपहृते चावाप्रयिवी पूर्वजे १।८।१।२९
 उपाशुपानमेवान्वजाः प्रजा० ४।५।५।२
 उपावर्तध्वमिति वा अन्यानि ४।२।५।८
 उभयं हैतदग्ने प्रजापतिरास १०।१।४।१
 उभयं हैतद्वति । पिता च ६।१।२।२७
 उभयतोद्धारं हविर्वानं भवति ३।५।३।७
 उभयतोमुत्साम्यां पात्राम्यां ४।३।१।७
 उभयत्र पर्याये भवतः । पर्यायो २।५।२।९
 उभयानि निर्वपति । अघ्नस्य ६।६।१।४
 उभयीर्गार्ग्यत्रीश्च त्रिष्टुभ्या० ६।२।१।२४
 उभयीर्गार्ग्यत्रीश्च त्रिष्टुभ्या० ६।२।२।५
 उभयीर्गार्ग्यत्रीश्च त्रिष्टुभ्या० ६।२।२।१०
 उभयीर्गार्ग्यत्रीश्च त्रिष्टुभ्या० ८।७।२।१०
 उभयाम्यां यजुष्मत्या च ९।४।३।४
 उरः सप्तदशः । अष्टावन्त्ये १२।२।४।११
 उरस्त्रिष्टुभः । ता रेतःसिचो० ८।६।२।७
 उरुगन्तूरी भगवद्भुताविति १।९।१।६
 उरुशरा पर्यस्तती पुनर्गा० ४।५।८।९
 उर्वद्रीं ह्यप्सरः । पुरु० ११।५।१।१
 उशिबो वह्निमानिति ३।७।३।२०
 उषा वा अश्वस्य मेघस्य १०।६।४।१
 उषित्वा ब्रह्मचर्यन्देवा क० १४।८।२।२

(ऊ)

| कण्डिकाप्रतीकम् | श० अ० प्रा० क० | कण्डिकाप्रतीकम् | श० अ० प्रा० क० |
|------------------------------|----------------|-------------------------|----------------|
| ऊर्जो नपाज्जातयेदः | ७।३।१।३१ | ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रपयेति | १३।२।९।२ |
| ऊर्जि गृहीतायाम् । अस्मा० | ७।५।१।१९ | ऊर्ध्वमेव दिशम् । मदि० | ३।२।३।१९ |
| ऊर्जामूत्रेण कीणाति | १२।७।२।११ | ऊर्जो वा एष एतच्छीमते | १०।५।५।१० |
| ऊर्ध्वमेवोदगुहति । विष्णो० | १।३।१।१७ | ऊपरे करोति । रेतो वा | १३।८।१।१४ |
| ऊर्ध्वमारोह । पङ्क्तिस्त्वा० | ५।४।१।७ | ऊर्मणो म्यधिपदिति | ३।८।३।२३ |

(ऋ)

| | | | |
|-------------------------|-----------|------------------------------|----------|
| ऋग्वेदो वै भर्मः । मनु० | १२।३।४।९ | ऋतव्या उपदधाति । ऋतव | ८।७।१।१ |
| ऋचे त्वेतीह । प्राणो वा | ७।५।२।१२ | ऋतव्या एवोपदधीत | ९।५।१।५९ |
| ऋचो यज्ञं पि सामानीति | १४।८।१।५२ | ऋतस्य एवा प्रेतेति । यो | ४।३।४।१६ |
| ऋणं ह वै पुरुषो जायमान | ३।६।२।१६ | ऋतावानमिति । सत्यावान० | ७।३।१।३४ |
| ऋणं ह वै जायते योऽस्ति | १।७।२।१ | ऋतापादृतधामेति । सत्यसा० | ९।४।१।७ |
| ऋतमेव पूर्णं आधारः | ११।२।७।९ | ऋतुनेति वै देवाः । मनु० | ४।३।१।१२ |
| ऋतव ऋत्विजः । स यो | ११।२।७।२ | ऋतुपात्रमेवान्येकशकं प्रजाप० | ४।५।५।८ |
| ऋतव स्थेति । ऋतवो | ९।१।२।१८ | ऋतुपात्राभ्यां गृह्णाति | ४।३।३।१२ |
| ऋतयो मुग्धा आसन्पञ्च | ३।२।३।१३ | ऋत्विजो ह वै देवयजनम् | ३।१।१।५ |
| ऋतवो वा ऋत्विजः | १२।८।२।२९ | ऋभूनां भागोऽसि । विवचे० | ८।४।२।१२ |
| ऋतवो वै संशरसरो यज्ञः | ४।४।१।२ | ऋभो यम इति । ऋभमं | ८।२।४।८ |
| ऋतवो ह वै प्रयाजाः | १।५।३।१ | ऋभो वैश्वातरस्य दक्षि० | ५।३।५।१७ |
| ऋतवो ह वै देवेषु यज्ञे | १।६।१।१ | ऋषिष्टुत इति । ऋषयो | १।४।२।६ |

(ए)

| | | | |
|--------------------------------|----------|-----------------------------|-----------|
| एकं द्वे त्रीणि चत्वारितीति वा | २।१।२।२ | एकत्रिंशतास्तुवतेति । दश | ८।४।३।१८ |
| एकं ह त्वेव तत्पात्रम् | ४।५।५।१३ | एक्यास्तुवतेति । वाग्वा एका | ८।४।३।३ |
| एक एष भवति । एकदेवस्य | ६।६।१।८ | एकविंशतिं सामिधेनीः | १।३।५।११ |
| एक एष भवति । एकमिव | ६।६।१।१० | एकविंशतिं होत्रोय उपदधाति | ९।४।३।७ |
| एक एष भवति । एकमिव | ९।३।१।८ | एकविंशतिः सवनीयाः | १३।५।१।३ |
| एक एष भवति । एकस्य | ९।३।१।१४ | एकविंशतिः सवनीयाः | १३।५।३।११ |
| एक एष भवति । एकस्य | ९।४।३।२ | एकविंशतिः सन्पद्यन्ते | १३।१।७।३ |

अष्टिशास्त्रीकम्

का० अ० भा० २०

अष्टिशास्त्रीकम्

का० अ० भा० २०

| | | | |
|----------------------------|----------|------------------------------|----------|
| एकविंशतिस्तुर्मास्यदेवता | १२१५ ३१४ | एतद् वै तज्जनको वैदेहः | १४८१५११ |
| एकविंशतिरुक्थ्याः । द्वादश | १२१२ २१६ | एतद् वै देवा अग्नि गरिष्ठे | १४८२११ |
| एकविंशतिर्यूषाः । सर्व | १२१४ ४१५ | एतद् वै न्यक् । योऽयमुच्चैः | ११४२१६ |
| एकविंशतिर्वैव परिश्रितः | ७१११३५ | एतद् वै मनुर्विमयाञ्चकार | १८१११६ |
| एकविंशतिर्वैव परिश्रितः | ७११२१७ | एतद् वै विश्वे देवाः | ३९२१७ |
| एकविंशत्यास्तुवतेति | ८११३१३ | एतद् स्म वै तत्पूर्वं | १४७२२६ |
| एकविंशमध्यममहर्भवति | १३१३१३ | एतद् स्म वै तद्विद्वान्छया | १०११११० |
| एकविंशमध्यममहर्भवति | १३१५११५ | एतद् स्म वै तद्विद्वानाह | ११२१७१२ |
| एकविंशस्तोमेन ऋषभो | १३१५११५ | एतद् स्म वै तद्विद्वानाह | १२१२११९ |
| एकविंशोऽग्निर्भवति | १३१३१७ | एतद् स्म वै तद्विद्वानाह | १२१२१४८ |
| एकस्यै दुग्धेन । प्रथमा | १२८१२११ | एतद् स्म वै तद्विद्वानाह | १२१३२१६ |
| एकस्यैन्द्रं यजमानो मश | १२८१२१२८ | एतद् स्म वै तद्विद्वानाह | १२८१३१७ |
| एकादशकपालेन्द्रो भव | १२७२११८ | एतद् स्म वै तद्विद्वानुदासक | १४९१४४ |
| एकादश दशत आत्मते | १३१२१५४ | एतद् स्म वै तद्विद्वान्प्रिय | १०११५१४ |
| एकादश दशत आत्मते | १३१६१२४ | एतद्वा एनं देवाः । एतेनात्रे | ९१३२१६ |
| एकादशभिरस्तुवतेति | ८११३१८ | एतद्वा एनं देवाः । एतेनात्रे | ९१३१४२ |
| एकादशत्वादधीत । एका | ११७१२४ | एतद्वा एनं देवाः । शतरु | ९१३२११० |
| एकादशाम्नीषोनीयाः पञ्च | १३१६११४ | एतद्वाचयेत् । स्वे गोष्ठयाव | ३१५३१८ |
| एकादशानि परिवासयेत् | ३१६४२२ | एतद्विष्णोः कान्तम् | १३१५१४११ |
| एकादशान्याह । एकादश | १३१५१५ | एतद् वै तदन्नम् । यक्षस्थणा | ८११२११० |
| एकादशैकादशेतेषु | १३१६१२६ | एतद् वै देवा अनुवन् । केने | ९१३२१७ |
| एतं जानाथ । परमे न्यो | ९१५११४७ | एतद् वै देवा अनुवन् । चेतय | ६१२१३११ |
| एतं वा पते गच्छन्ति | ४१६२११ | एतद् वै देवा अनुवन् । चेत | ६१३११११ |
| एतं सधस्यम् । परिते | ९१५११४६ | एतद् वै देवाः । यक्षैर्नान | ६१६१३११ |
| एतदन्निरसानयनम् | ४१४५२० | एतद् वै देवानुपैष्यतः । एतं | ९१२१३१२ |
| एतदादित्यानामयनम् | ४१४५१९ | एतद् वै परमन्तपः । यदद्या | १४८११११ |
| एतद् ह यशे तपः । यदुप | १०१२१५३ | एतद् वै पशोः संज्ञप्यमानस्य | ११७१४३ |
| एतत्पारिलवम् । सर्वाणि | १३१४३१५ | एतद् वै प्रजापतिः । प्राप्य | ९१५११२५ |
| एतद् वै तच्छाण्डिन्यः | १०१४१११ | एतद् वै प्रजापतिम् । विश्व | ८१४१२२ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०मा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०मा०क० |
|-------------------------------|------------|---------------------------------|------------|
| एतद्वै येव प्रथमापौर्णमासी | ६।२।२।३० | एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।७ |
| एतद्वै संवत्सरस्य स्वं पयः | १।५।३।५ | एते सत्तु वा एतस्य | १२।८।२।७ |
| एतमु द्वैव चूडो भागविति | १४।९।३।१८ | एतेन वै देवाः । उपांशुया० | १।६।३।२८ |
| एतमु द्वैव ज्ञानक्रिया० | १४।९।३।१९ | एतेन वै देवाः । यज्ञेनेष्टा | २।५।४।११ |
| एतमु द्वैव मधुकः वेदग्वः | १४।९।३।१७ | एतेन वै देवाः । यज्ञेनेष्टो० | २।४।३।११ |
| एतमु द्वैव वाजसनेयो | १४।९।३।१६ | एतेन वै देवाः । वीर्येणाने० | १२।२।२।८ |
| एतमु द्वैव सत्यकामो | १४।९।३।२० | एतेन वै प्रजापतिः । यज्ञेनेष्टा | २।५।१।२२ |
| एतया सर्वाभिः । एतया | ३।३।२।१३ | एतेन ह स्म वा ऋषयः | २।१।४।२३ |
| एतयोक्तभयोर्गृहीतयोः | ७।५।१।१८ | एते वै ते पञ्चवः । यांस्त० | ८।२।४।१६ |
| एतस्माद्वै यज्ञत्पुरुषो जायते | १२।९।१।१ | एते वै ते हेतयश्च प्रहेतयश्च | ८।६।१।२१ |
| एतस्य वा अक्षरस्य | १४।६।८।९ | एतेन हेन्द्रोऽतो देवापः | १३।५।४।१ |
| एतस्यां संस्थितायाम् | १३।४।२।१५ | एतेषामेकं संवत्सरमुपेत्येत् | २।३।२।१४ |
| एतस्यान्तायगानायाम् | १३।४।२।१ | एतेषु पशुषु । सिंहलोमानि | ५।५।४।१८ |
| एतस्यामाहुष्यां हुतायाम् | ६।३।१।२२ | एते ह वै रात्री । सर्वांश० | ११।१।७।४ |
| एतस्यामुक्तायामुत्थाय | १३।५।२।१६ | एतौ पशुपन्थौ । तदेतावेव | ५।५।२।१० |
| एतां ह वै मुण्डिम औद० | १३।३।५।४ | एयोऽस्थेष्विषीगदीति | १२।९।२।१० |
| एताभिर्वै देवा उपसङ्गिः | ३।४।४।५ | एवं वा एते भवन्ति | ४।६।४।३ |
| एताभिर्वै देवताभिर्वरुण | ५।४।५।५ | एवं वाव सर्वे यज्ञाः | १०।२।६।१३ |
| एतावान्यै सर्वो यज्ञः | ८।६।१।१० | एवमेव माध्यन्दिने सवने | ४।२।३।५ |
| एता वै देवताः प्रवर्यः | १४।३।२।२४ | एवमेवैतद्वैविर्पानं परिधय० | ४।६।७।१० |
| एता ह वै देवता योऽस्ति | २।३।२।१ | एवइन्द्र इति । अन्ये वै | ८।५।२।३ |
| एता ह वै देवताः सवस्येयते | ५।३।३।१३ | एष उ एव प्राणः । एष | १०।५।२।१४ |
| एता ह वै प्राच्यै दिक्षो न | २।१।२।३ | एष उ एव वृद्धस्पतिः | १४।४।१।२२ |
| एते उक्ता । यदग्निगोः | १३।५।२।१ | एष उ एव वृद्धजस्पतिः | १४।४।१।२३ |
| एते उक्त्य । मा नो | १३।५।१।१८ | एष उ एव साम । यमै | १४।४।१।२४ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।३ | एष उ एवान्तकः । एष हि | १०।४।३।२ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।४ | एष उ वा उद्गीयः । प्राणो | १४।४।१।२५ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।५ | एष उ वै प्राणः । सं वै | २।१।४।२० |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।६ | एष उ वै प्राणः । ते वै | २।१।४।२२ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | ख०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | ख०अ०ब्रा०क० |
|-------------------------------------|-------------|---------------------------------------|-------------|
| एष वा अतिव्याधी नाम यज्ञः १३।३।७।९ | | एष वै प्रभूर्नाम यज्ञः १३।३।७।१ | |
| एष वा इदं सर्वम्पचति १०।४।२।१९ | | एष वै ब्रह्मचर्चसी नाम १३।३।७।८ | |
| एष वा ऊर्जस्वान्नाम यज्ञः १३।३।७।६ | | एष वै मृत्युर्यत्संवत्सरः १०।४।३।१ | |
| एष वै बल्लुहिर्नामयज्ञः १३।३।७।११ | | एष वै विभृतिर्नाम यज्ञः १३।३।७।४ | |
| एष वै ग्रहः । य एष तपति ४।६।५।१ | | एष वै विभूर्नाम यज्ञः १३।३।७।२ | |
| एष वै दीर्घो नाम यज्ञः १३।३।७।१० | | एष वै व्यष्टिर्नाम यज्ञः १३।३।७।३ | |
| एष वै पयस्वान्नाम यज्ञः १३।३।७।७ | | एष वै व्यावृत्तिर्नाम यज्ञः १३।३।७।५ | |
| एष वै पूर्णमासः । य एष ११।२।४।१ | | एष वै स यज्ञः । येन १।७।३।२२ | |
| एष वै प्रजापतिः । य एष ४।२।४।१६ | | एष वै सविता य एष ४।४।१।३ | |
| एष वै प्रजापतिः । य एष ४।५।५।१ | | एष स्य सत्यो वृषेति १३।२।७।५ | |
| एष वै प्रजापतिः । य एष ४।५।६।१ | | एषां वै भूतानाम्भृविर्वी १४।९।४।१ | |
| एष प्रजापतिर्षण्डुदयम् १४।८।४।१ | | एषात्रापीतिः । अय्यहैवग्निम् १०।१।१।९ | |
| एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञः १३।३।७।१२ | | एषा वा आशीः । जीवेयं १।८।१।३६ | |
| एषो अत्रापीतिः । न ह १०।१।१।१० | | | |

(दे)

| | |
|--|---------------------------------------|
| देकादशिनाः सुत्यास्तु पशवो १३।६।१।५ | देन्द्रामस्य वपायां हुतायाम् १३।५।३।२ |
| देकादशिनैः संस्थापयति १३।६।२।१५ | देन्द्रामीभिरुपतिष्ठते ९।५।२।१० |
| देक्षन्वो विभृती । नेहर्दिश्व १।४।१।१८ | देन्द्रावैष्णवं द्वादशकपालं ५।५।५।१ |
| देन्द्रं यजमानो भक्षयति १२।८।२।२४ | देन्त्रीभ्यामाहवनीयमुपति० २।६।१।३८ |
| देन्द्रः प्राणः । अञ्जे अञ्जे ३।८।३।३७ | देन्द्राय हस्याज्ञायति १२।८।३।२५ |

(ओ)

| | |
|-----------------------------|------------------------------|
| ओजस्विज इति । न एव ८।४।१।२० | ओ अवयेदिति ये देवाः १।५।२।१८ |
| ओषधयः प्रतिगृणीत ६।४।४।१७ | |

(औ)

| | |
|---------------------------------|-----------------------------------|
| औदुम्बरं भवति । ऊर्ध्वे ७।२।२।३ | औदुम्बरीमुपसंसृज्य याचं ४।६।९।२१ |
| औदुम्बरं भवति । तेन ५।३।५।१२ | औदुम्बरी भवति । अन्नं वा ३।३।४।२७ |
| औदुम्बरीं शालामुपगूढं ५।४।३।२५ | औदुम्बरी भवति । अन्नं वा ५।२।१।२३ |
| औदुम्बरीमन्वारभ्यासते ४।६।९।२२ | औदुम्बरी भवति । ऊर्ध्वं १२।८।३।५ |

कण्डिकाप्रतीक *

अ०अ०अ०क०

कण्डिकाप्रतीक:

अ०अ०अ०क०

औदुम्बरी भवति । ऊर्ध्वं रस ६।७।१।१३

औदुम्बरी भवति । ऊर्ध्वं रस १४।१।२।४

औदुम्बरी भवति । ऊर्ध्वं रस १४।१।३।९

औदुम्बरे पात्रे । अलं वा ५।२।२।२

औदुम्बरे पात्रे । अलं वा ५।३।४।२

औदुम्बरे भवतः । ऊर्ध्वं रस ७।५।१।१५

औदुम्बरो भवति । अलं वा ३।२।१।३३

(क)

कः स्विदेकाकी चरतीति १३।२।६।१०

क उ स्विज्जायते पुनरिति १३।२।६।११

ककुम्भं रूपं वृषमस्य रोचते ११।५।९।१०

कतम आत्मेति । योऽयं १४।७।१।७

कतम आदित्या इति ११।६।३।८

कतम आदित्या इति १४।६।९।६

कतम इन्द्रः कतमः प्रजाप० ११।६।३।९

कतम इन्द्रः कतमः प्रजाप० १४।६।९।७

कतमे ते त्रयो देवा इति ११।६।३।१०

कतमे ते त्रयो देवा इति १४।६।९।९

कतमे रुद्रा इति । वशेमे ११।६।३।७

कतमे रुद्रा इति । वशेमे १४।६।९।५

कतमे वसव इति । अग्निश्च ११।६।३।६

कतमे वसव इति । अग्निश्च १४।६।९।४

कतमे पडिति । अग्निश्च १४।६।९।८

कति त्वेवेति । भष्टेति १२।२।२।१६

कति त्वेवेति । एकमिति १२।२।२।२३

कति त्वेवेति । चत्वारितीति १२।२।२।२०

कति त्वेवेति । त्रीणीति १२।२।२।२१

कति त्वेवेति । द्वे इति १२।२।२।२२

कति त्वेवेति । नवेति १२।२।२।१५

कति त्वेवेति । पञ्चेति १२।२।२।१९

कति त्वेवेति । सप्तेति १२।२।२।१७

कति त्वेवेति । पडिति १२।२।२।१८

कत्येव देवा याज्ञवल्क्येति १४।६।९।२

कम्बति कुर्यात् । कम्बोऽम० १३।८।१।१०

कर्णावस्थाभिर्निद्विधजिष १२।३।१।८

कविशस्त इति । पते वै कवयो १।४।२।८

कस्मिन्नु स्वश्चामा च १४।६।९।२७

कां समिधमादधासि ११।५।३।३

काण्डारकाण्डापरोहन्ती ७।४।२।१४

कामः सङ्कल्पः । विचिकि० १४।४।३।९

काम एव यस्यायतनम् १४।६।९।१४

काममेवैनं स चिन्वीत ९।५।१।६६

काममेवैनं स चिन्वीत ९।५।१।६७

काममेवैनं स चिन्वीत ९।५।१।६८

कायस्य वपायां हुतायाश्च १३।५।३।३

काय स्वाहा । कस्मै स्वाहा १३।१।८।२

कार्प्यर्ममयाः परिधयः ३।४।१।१६

कार्प्यर्ममयी दक्षिणत उप० ७।४।१।३७

कार्प्यर्ममयी वपश्चपण्यौ ३।८।२।१७

काश्यपीवालाक्ष्यामाठरी० १४।९।४।३१

* इतः पूर्वं 'प्रतीकम्' इति पठ प्रजापत्यमिति तत्र 'प्रतीक' इति विग्रहवन्तु संज्ञावन्तः, 'प्रतिपद्ये प्रतीकसि रेचदेसे तु सुंस्वयम्' इत्यभिपुण्ये ।

| अण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०ब्रा०क० | अण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०ब्रा०क० |
|--|-------------|---|-------------|
| का स्वदासीत्पूर्वचिचिरिति १३।२।६।१४ | | कुलायिनी घृतवती पुरन्धरि० ८।२।१।५ | |
| का स्वदासीत्पिलिप्पिलेति १३।२।६।१६ | | कुलायिनी घृतवती पुरन्धि० ८।२ १।१५ | |
| का स्वदासीत्पिश्रिलेति १३।२।६।१७ | | कुविदन्न यवमन्तो यव० १२।७।३।१३ | |
| किं नु तत्राध्वर्योः । यदुन्ना० ४।५।९।१३ | | कुश्रिर्ह वाजश्रवसोऽग्निश्चि० १०।५।५।१ | |
| किं स्वद्धिमस्य गेषजगिति १३।२।६।१२ | | कूर्ममुपदधाति । रसो वै कूर्मो ७।५।१।१ | |
| किं स्वदासीदृढद्वय इति १३।२।६।१५ | | कृतानुकर एव प्रतिपस्याता २।५।२।३४ | |
| किं हुत्वा प्रकम्पयसि ११।५।३।४ | | कृत्तिकास्वग्नी आदधीत । एता २।१।२।१ | |
| किञ्छन्दः । का देवता ग्रीवा १०।३।२।२ | | कृत्वा यवान्वपति । अघ्नमे १३।८।३।१३ | |
| किञ्छन्दः । का देवतानूक० १०।३।२।३ | | कृष्णाग्नीवमाग्नेयं रराटे पुर० ११।२।२।३ | |
| किञ्छन्दः । का देवता पक्षा० १०।३।२।४ | | कृष्णाजिने निप्यूतो भवति ६।७।१।६ | |
| किञ्छन्दः । का देवता प्र० १०।३।२।११ | | कृष्णाजिनेऽग्निपिञ्चति १२।८।३।३ | |
| किञ्छन्दः । का देवता मा० १०।३।२।१२ | | कृष्णाजिने सम्भरति १४।१।२।२ | |
| किञ्छन्दः । का देवता मध्य० १०।३।२।५ | | केवलवर्हिः प्रथमं हविर्भ० २।२।१।१६ | |
| किञ्छन्दः । का देवता यस्मा० १०।३।२।७ | | केशवस्य पुरुषस्य । लोहामस० ५।४।१।१ | |
| किञ्छन्दः । का देवता यो० १०।३।२।८ | | केशिगृहपतीनास्तु ह ११।८।४।१ | |
| किञ्छन्दः । का देवतोना० १०।३।२।१३ | | कौरुपाञ्चालो वा अयम्प्रजा ११।४।१।२ | |
| किञ्छन्दः । का देवतोरु १०।३।२।९ | | कौशिक ब्राह्मण गौतम ब्रुवा० ३।३।४।१९ | |
| किञ्छन्दः । का देवता श्रोणी १०।३।२।६ | | कवुरेकत्रिंश इति । य एवेक० ८।४।१।२१ | |
| किञ्छन्दः । का देवताष्ठी० १०।३।२।१० | | कत्तुक्षौ ह वा अस्य मित्रा० ४।१।४।१ | |
| किन्देवतोऽस्यान्दक्षिणा० १४।६।९।२२ | | क्षत्रं वय इति । प्रजापतिर्वै ८।२।३।११ | |
| किन्देवतोऽस्याम्बुवायां १४।६।९।२५ | | क्षत्रं वा इन्द्राग्नी । विशो २।४।३।६ | |
| किन्देवतोऽस्यामुदीच्या० १४।६।९।२४ | | क्षत्रं वै पयोमहाः । विट् १२।७।३।१५ | |
| किन्देवतोऽस्याग्रतीच्या० १४।६।९।२३ | | क्षत्रमुपांशुयाजः । स यो ११।२।७।१५ | |
| किन्देवतोऽस्याग्राम्या० १४।६।९।२१ | | क्षत्रम् । प्राणो वै क्षत्रं १४।८।१४।४ | |
| किन्वावपनमहदिति १३।२।६।१३ | | क्षीरीवनमांसौदनाभ्यां ११।५ ७।९ | |

(ख)

सदिरेण ह सोममाचखाद ३।६।२।१२

(ग)

अष्टिद्वयपरीक

अ० अ० ब्रा० क०

कण्डिकपरीकः

अ० अ० ब्रा० क०

गणानाम्वा गणवर्ति हवा० १३।२।८।४
गन्धर्वाप्सरोभ्यो जुहोति १।४।१।४
गन्धो हेवास्य सुगन्धिषतेज० ३।५।२।१७
गभीरमिममध्वरं कृषीति ३।९।४।५
गर्तम्बान्यूपोऽस्तीक्ष्णामो भवति ५।२।१।७
गर्भोऽप्यध्वंश्च इति ८।४।१।१९
गर्मो देशानामिति । एष वै १४।१।४।२
गवेधुकासक्तुभिर्जुहोति ९।१।१।८
गां चानं च दक्षिणतः ७।५।२।१६
गात्रं यद्याय गात्रं यत्रपतय १।९।१।२७
गायमेव प्रतिष्ठा चतुर्विंशम० १२।२।१।२
गायमेव प्रतिष्ठाभिहित् १२।२।१।३
गायमेव प्रतिष्ठा महात्मन् १२।२।१।५
गायमेव प्रतिष्ठा विश्वम् १२।२।१।४
गायत्रं पुरस्ताद्व्यति ९।१।२।३५
गायत्री मातःसवनम् १४।१।१।१७
गायत्रीभिः । मायो गायत्री ६।४।२।५
गायत्रीमनुवाक्यामन्याह ११।२।२।१
गायत्री वै प्रातःसवनं ४।२।५।२०
गायत्रेण स्वाच्छन्दसा ७।५।२।६१
गायत्र्येवैकाकिनी प्रातःसव० ४।२।५।२१

ग्रीवा वै यज्ञस्त्वोपसदः शिरः ३।४।४।१

गार्हपत्यं वेपथ्यमष्टाश्वस्तया ७।१।१।१
गार्हपत्यमुपदधाति । एतद्वै ८।६।३।१
गिरौ मारं हरन्निवेति १३।२।९।३
गुवं वेधा करोति । स्यवि० १।८।३।१८
गुदो वै वज्रः । मेधो वै मेघ० १।८।४।६
गुप्त्यै वा एता परिद्विषन्ते ३।९।२।१६
गुहा स्रद्धवतापि स्यात् १३।८।१।११
गुणाति ह वा एतद्वोत्तमं यच्छं० ४।३।२।१
गुणानो हव्यं वातय इति १।४।१।२४
गोपीथाय वा एता गृह्यन्ते ३।९।२।५
गोमृगकण्ठेन प्रथमामाहुति० १३।३।४।३
गोर्वै प्रतिधुक् । तस्यै शृत् ३।३।३।२
गोविन्देन शतानीकः १३।५।४।१९
गोधूमं चषाळं भवति ५।२।१।६
ग्रास्ता देवीः । विश्वदेव्या० ६।५।४।७
ग्राह्यं ऊर्जादुत्तयः । ग्नान्तो ५।१।२।८
ग्राह्यमगृहीत्वा । उपनिष्कम्य ४।२।५।१
ग्राम्या वै पशवः पशोमहाः १२।७।३।१९
ग्राम्यैः संस्मापयति १३।२।४।४
ग्रीवाः पञ्चदशः । चतुर्वेद० १२।२।४।१०
ग्रीवा उष्णिहः । ता भनन्त० ८।६।२।११

(घ)

घृत एष भवति । घृतमाज० ६।६।१।११
घृताच्चेति । विदेयो १।४।१।१०
घृतेन ॥ वा एष देवोत्तर्य० ११।५।७।७
घृते न्युवा भवति । अग्निर्य० ६।६।२।१३

घ्नन्ति वा एतत्पशुम् १३।२।८।२
घ्नन्ति वा एतद्यज्ञम् । यदेनं २।२।२।१
घ्नन्ति वा एतवज्रम् । यदेनं ४।३।४।१
घ्नन्ति वा एतवज्रम् । यदे० ११।१।२।१

(च)

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० न० क० |
|----------------------------------|-------------|
| चक्षुर्गुणमिति । तद्य एव | १०।३।१३ |
| चक्षुरेव पशूनामादत्त | ११।८।३।१० |
| चक्षुर्वा आश्विनौ तेजः | १२।७।२।४ |
| चक्षुर्वा आश्विनो अहः | १२।८।२।२५ |
| चक्षुर्वै प्रहः । स रूपेण प्रतिम | १४।६।२।५ |
| चक्षुर्होचक्राम । तत्संवत्सरं | १४।९।२।९ |
| चक्षुपी एवास्याश्विनो ग्रहौ | १२।९।१।५ |
| चक्षुपी ह वा अस्म शुक्राम | ०४।२।१।१ |
| चक्षुपी ह वा एते यज्ञस्य | १।६।३।३८ |
| चतस्रः सीता यजुषा कृषति | ७।२।२।१३ |
| चतस्रः सीता यजुषा कृषति | ७।२।२।१९ |
| चतस्रः सीता यजुषा कृषति | १३।८।२।७ |
| चतस्रो जाया उपकलृषा भव | ०१३।४।१।८ |
| चतस्रो देवता यजति । चतस्रो | १।९।२।६ |
| चतस्रोऽवान्तरदिशः भवत्य | १।१।६।२७ |
| चतस्रो वै दक्षिणाः । हिरण्यं | ४।३।४।७ |
| चतस्रो वै दक्षिणाः । हिरण्यं | ४।३।४।२४ |
| चतुःसक्तयः पादा भवन्ति | ६।७।१।१५ |
| चतुःसक्तिरिति । एष वै | १४।३।१।१७ |
| चतुःसक्तिः । देवाश्चासुराश्चो | ०१३।८।१।५ |
| चतुर आत्मनोऽकुरुत | १०।४।२।६ |
| चतुरक्षराणि ह वा अग्ने | ४।३।२।७ |
| चतुरौदुम्बरो भवति | १४।९।३।२१ |
| चतुर्गृहीतमाज्यं गृहीत्वा | ३।५।३।१४ |
| चतुर्थी चितिसुपदधाति | ८।४।१।१ |
| चतुर्थी चित्तिधिनोति | १०।१।४।५ |
| चतुर्थेन वै प्रयाजेन देवाः | १।६।१।१० |
| चतुर्दशैतानि यजुर्वि भवन्ति | ९।१।१।१६ |

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० न० क० |
|--------------------------------|-------------|
| चतुर्था मृतानि प्रविशति | ११।३।३।३ |
| चतुर्था विहितो ह वा अग्ने | १।२।३।१ |
| चतुर्थिः सन्निरपति | ७।१।१।३९ |
| चतुर्थिरयादये । तये चतुष्पा | ०६।८।२।७ |
| चतुर्विंशतिं दधात् । चतुर्विंश | ०२।२।२।५ |
| चतुर्विंशत्याङ्गुलिभिर्मिमीते | १०।२।१।३ |
| चतुर्विंशतिमात्मनोऽकुरुत | १०।४।२।१७ |
| चतुर्विंशः एवमानाः | १३।५।४।१० |
| चतुर्होतृन्द्रोवा व्याचष्टे | ४।६।९।१८ |
| चतुष्टोम स्तोमो भवति | १३।३।१।४ |
| चतुर्विंशदग्निष्टोमा मासि | १२।२।२।७ |
| चत्वारि महान्तीर इति | १०।३।४।२ |
| चत्वारो ममेति चतुर्थे प्रया | ०१।५।४।१५ |
| चत्वारो ममेतीन्द्रोऽमवीत् | १।५।४।१० |
| चत्वारो वै वर्णाः । ऋक्षणो | ५।५।४।९ |
| चत्वारो ह वा अमयः | ११।८।२।१ |
| चत्वारो वायु युक्ता भव | ०१।५।५।१३ |
| चन्द्राय स्वाहेति । चन्द्रो | १४।३।२।११ |
| चमसो देवपान इति | १।४।२।१४ |
| चातुर्थास्यानि वै प्रदार्भ्यः | १४।३।२।२८ |
| चित् स्येति । विनोति | ७।१।१।१४ |
| चितो गार्हपत्यो भवति | ७।३।१।१ |
| चितं विज्ञातमग्निं प्रयुजं | ६।६।१।१७ |
| चितमेव पुरुषस्यादत्त | ११।८।३।९ |
| चित्रं देवानामुदगादनीक | ७।५।२।२७ |
| चित्रम्यश्वात् स्यात् | १३।८।१।१३ |
| चित्रायामग्नौ आदधीत | २।१।२।१३ |
| चित्रावसो स्वस्ति ते पारम | ०२।३।४।२२ |
| चेलक उ ह स्माह शण्डि | ०१।४।५।३ |

(छ)

| वर्णिकाप्रतीक | वा०अ०आ०क० | वर्णिकाप्रतीक | वा०अ०आ०क० |
|---------------------------|-----------|----------------------------|-----------|
| छन्दस्या उपदधाति । अत्रैव | ८।६।२।१ | छन्दसि ह त्वेवैषोऽमिश्रितः | १०।५।४।७ |
| छन्दस्या उपदधाति । पञ्चवो | ८।२।३।८ | छाम्येव वा अयं पुरुषः | २।२।३।१० |
| छन्दसि गच्छ स्वाहेति | ३।८।४।१६ | छायामुपसर्पन्ति । एतेनो | ११।१।५।२ |

(ज)

| | | | |
|-----------------------------|-----------|--------------------------------|-----------|
| जपनेनो ह्येव पत्नीम् । एके० | १।९।२।३ | जागता अनुपैषा भवन्ति | १२।८।२।२० |
| जनकं ह वैदेहं याशवस्त्यो | १४।७।१।१ | जातेऽमिमुपसमाधाय | १४।९।४।२३ |
| जनको ह वैदेहः । बहुदक्षिणे० | ११।६।३।१ | जिष्णू रथेष्ठा इति | १३।१।९।७ |
| जनको ह वैदेहः । बहुदक्षिणे० | १४।६।१।१ | जिह्वा वै महः । त रसेनाति० | १४।६।२।३ |
| जनको ह वै वैदेहः । प्राञ्ज० | ११।६।२।१ | जुष्टां नरांसंशयेति । प्रजा | १।५।१।२० |
| जनको ह वैदेह आस छके | १४।६।१०।१ | जुष्टां नराण्य इति । जुष्टम० | १।५।१।१९ |
| जनयस्त्याच्छित्तपया देवीः | ६।५।४।८ | जुष्टमय देव्यो वाचमु० | १।५।१।१८ |
| जमदग्निर्गिरिति । चक्षुर्वै | ८।१।२।३ | जुष्टा विष्णव इति । जुष्टा | ३।२।४।१२ |
| जरायुया सहति । तद्यथा | ४।५।२।५ | ज्येष्ठाय स्वाहा येष्ठाय स्वा० | १४।९।३।४ |
| जर्तिलैर्जुदोति । जायत एव | ९।१।१।२ | ज्योतिष्मन्तं स्वामे ह्युपवी० | ६।४।१।२ |

(त)

| | | | |
|-----------------------------|----------|----------------------------------|----------|
| तं गृहीत्वा न सादयति | ४।४।१।७ | तं चतुर्मुखं युनक्ति स कप० | ५।४।३।६ |
| तं गृहीत्वा न सादयति | ४।५।९।३ | तं छन्दोभिरमित्रः परिगृहा | १।२।५।७ |
| तं गृहीत्वा न सादयति | ४।५।९।५ | तं जपनेन चात्वालमन्तरेण | ३।८।३।१० |
| तं गृहीत्वा न सादयति | ४।५।९।७ | तं जपनेन चात्वालमन्तरेण | ४।५।२।८ |
| तं गृहीत्वा न सादयति | ४।५।९।९ | तं तिष्ठन्प्रतिमुद्यते । असौ वा | ६।७।२।१ |
| तं गृहीत्वा परिमार्ष्टि | ४।१।१।१७ | तं त्वा समिद्धिरग्निर इति | १।४।१।२५ |
| तं गृहीत्वा परिमार्ष्टि | ४।१।२।१७ | तं देवाः पवित्रेणापावयन् | ४।१।२।५ |
| तं गृहीत्वोचरे । हविर्धाने | ४।२।४।१३ | तं देवा अघावाहुतिभिरमि० | ६।१।२।२२ |
| तं गोभिरनुविष्टाप्य समभरन् | १।६।४।६ | तं देवा अगो ग्राह्यन् | ७।१।२।६ |
| तं प्रसित्वोदेति । स न पुर० | १।६।४।१९ | तं धूर्गृहीतमन्तर्वेद्यम्बवत्ते० | ५।१।४।४ |
| तं मामनीः सजाताय मय० | ५।४।४।१९ | तं न दक्षामिर्न पवित्रेणोष० | ४।३।५।१७ |
| तं चतसृणां धाराणामामय० | ४।३।५।२२ | तं न सद्मगृहीतान्वतिष्ठन् | ५।४।३।२३ |

| गणितप्रतीकः | का०अ०शा०क० | गणितप्रतीकः | का०अ०शा०क० |
|-------------------------------|------------|--------------------------------|------------|
| तं न सत्रा पृथुं कुर्यात् | १।२।२।९ | तं रुक्ममुपदधाति | ७।४।१।१७ |
| तं निदधाति । एष ते पृथिव्यां | ३।७।२।३ | तं वा अङ्गुलिभिर्मिमीते | १०।२।१।२ |
| तं निरुहमाणमभिमन्त्रयते | ४।५।२।४ | तं वा अतिरिक्तं गृह्णाति | ४।४।३।३ |
| तं निर्धाय निरस्यति ॥ एष | १।६।४।२० | तं वा अदित्या सनति | ६।५।४।२ |
| तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः | ८।६।३।१९ | तं वा अनुष्टुप्ता गृह्णाति | ४।५।३।५ |
| तं पयसा श्रीणाति । तद्यत्प० | ४।१।४।८ | तं वा अपुरोरुक्तं गृह्णाति | ४।२।३।७ |
| तं परिवासयति । स यावन्त० | ३।६।४।१७ | तं वा अपुरोरुक्तं गृह्णाति | ४।४।१।१३ |
| तं पर्यग्नं करोति । अच्छि० | १।२।२।१३ | तं वा अपुरोरुक्तं गृह्णाति | ४।४।२।११ |
| तं पुष्करपर्णं उपदधाति | ७।४।१।११ | तं वा अपुरोरुक्तं गृह्णाति | ४।४।३।५ |
| तं पौर्णमास्यामालभेत | ६।२।२।१६ | तं वा अष्टाष्ट विक्रमेष्वाद् | १।७।३।२३ |
| तं प्रजापतिरमयीत् । कुमार | ६।१।३।९ | तं वा इति हरन्ति । अनसा | ३।३।३।१७ |
| तं प्रच्यवमानमनुमन्त्रयते | ३।६।४।१३ | तं वा इन्द्रायैव विमृशे | ४।६।४।४ |
| तं प्रत्यञ्चं यन्तम् । एतां | ७।३।२।१२ | तं वा उपांशुपात्रेण गृह्णाति | १०।२।२।६ |
| तं प्रत्याक्रम्य सादयति | ४।१।२।२४ | तं वा उपांशुपात्रेण गृह्णाति | ४।४।१।४ |
| तं प्रथयति । उरु प्रथा उरु | १।२।२।८ | तं वा उपास्तमममादित्यस्य | ७।३।२।१९ |
| तं प्रथयति । वसवस्त्वा | ६।५।२।३ | तं वा एतमग्निं समैन्धिषत् | १।४।४।१ |
| तं प्राञ्चं पातयेत् । प्राची | ३।६।४।१२ | तं वा एतमाहुः । अतिपिता | १।४।९।४।२९ |
| तं प्राञ्चमनुसमस्यति । प्राची | १।८।३।१८ | तं वा एतम् । अत्र पक्षपुच्छ० | ६।७।२।७ |
| तं बहिष्पवित्राद् गृह्णाति | ४।१।१।३ | तं वा एतम् । अत्र पक्षपुच्छ० | ७।१।१।१९ |
| तं मध्यमेन कपालेनाभ्युपद० | १।२।१।६ | तं वा एतम् । अध्वरयन्तं | १।४।१।४० |
| तं यत्प्रथमयज्ञे प्रवृज्जमात् | १।४।२।२।४५ | तं वा एतम् । इत ऊर्ध्वं | ७।५।१।३६ |
| तं यत्र देवाः समस्कुर्वन् | ७।४।२।१३ | तं वा एतम् । पुरोऽनुवा० | ९।३।१।१६ |
| तं यत्र देवाः समस्कुर्वन् | ७।५।१।२४ | तं वा एतम् । मासि | १।१।२।५।५ |
| तं यत्र देवाः समस्कुर्वन् | ८।३।३।१२ | तं वा एतम् । रेतोमृतं | ४।१।२।१० |
| तं यत्र प्राञ्चं हरन्ति | २।१।४।१८ | तं वा एतम् । कृष्णन्तं | १।४।१।३३ |
| तं यदपुरोरुक्तं गृह्णाति | ४।२।३।९ | तं वा औदुम्बरेण पात्रेण | ४।६।१।३ |
| तं यदि गार्हपत्यः पूर्वः | १।२।५।२।९ | तं विगृह्णाति । देवेभ्यस्त्वा० | ४।२।३।११ |
| तं राजधाता सूताय ॥ | ५।४।४।१७ | तं वै चतुःस्रक्षिना पात्रेण | ४।५।३।६ |
| तं राजा राजात्रे मयच्छ० | ५।४।४।१६ | | |

वण्डिवाप्रीकः

का०अ०मा०क०

तं वै चतुःसुकिना पात्रेण ४।६।१।४
 तं वै गोपायन्ति । शिरो वा ४।२।४।२०
 तं वै तथैव हरेयुः । यथैनमेष २।१।४।१९
 तं वै दर्भैर्हृद्वरति । दाह० २।२।३।११
 तं वै नोपयामेन गृहीयात् ४।२।३।१८
 तं वै नोपयामेन गृहीयात् ४।३।५।११
 तं वै पक्षमुच्छ्वन्तमेव ७।१।१।२०
 तं वै परिप्यन्द उत्साद० ९।२।१।१९
 तं वै परिप्यन्द उत्साद० १४।३।१।१४
 तं वै पुरस्तास्तोत्रस्य ९।४।४।११
 तं वै पुराणानां कुर्वदित्याहुः २।४।३।७
 तं वै पूर्वभृतो गृह्णाति ४।४।१।१२
 तं वै पूर्णं गृह्णाति । सर्वं वै ४।२।३।२
 तं वै पूर्णं गृह्णाति । सर्वं वै ४।२।४।३
 तं वै पूर्वार्धं मिनोति । यज्ञो ३।७।१।२६
 तं वै माघं विद्वन्तमगमि० ५।४।२।१
 तं वै माघमासीनमाह्वयते ४।३।२।२
 तं वै माघः सवने गृहीयात् ४।५।३।७
 तं वै मध्ये पार्श्वानामग्नि० ९।३।४।१८
 तं वै माघपन्दिने सबनेऽग्नि० ५।१।४।१
 तं वै गाधपन्दिने सबनेऽग्नि० ५।३।५।१
 तं वै स्वतवोम्य इति कु० २।५।१।१४
 तं वै हरिवत्सर्चा गृह्णाति ४।५।३।४
 तं शस्यमानेऽवनयति ४।२।४।७
 तं शिवयोदुतम् । उर्ण्यु० ५।५।४।२८
 तं ग्रपयति । तस्मिन्क्षपि० २।४।२।१०
 तं ग्रपयति । देवस्तथा १।२।२।१४
 तं सक्तुभिः श्रीणाति । तदेनं ४।२।१।२
 तं सक्तुभिः श्रीणाति । तद्य० ४।२।१।११

वण्डिवाप्रीकः

का०अ०मा०क०

तं सप्तभिः सप्तभिः पावयति ३।१।३।२२
 तं सूतो वा स्थपतिर्वा ५।४।४।१८
 तं ह कश्यपो याजयाञ्च० १३।७।१।१५
 तं हत्वा यज्ञम् । अग्रावेव ११।१।२।२
 तं हविष्मन्त ईदृश इति १।४।१।३१
 तं ह स्मैतं देवा अनुमहर० ३।७।१।२९
 तं हेवरा प्रत्युवाच । किमेता १।५।१।७
 तं हेवरा प्रत्युवाच । पुरुषो ११।५।१।९
 तं हेयं ज्ञात्वोवाच । अयं ११।५।१।५
 तं हैके । एतया विकृत्याभिम० ६।७।२।८
 तं हैके ग्रामाग्निना वहन्ति १२।५।१।१४
 तं हैके त्रिचितं चिन्वन्ति ७।१।२।१५
 तं हैके दक्षिणतोऽग्नेरभि० ९।१।४।११
 तं हैके । प्रायणीय एवा० ९।४।४।१५
 तं हैतमुद्गाहक आरुणिः १४।२।३।१५
 त आदिस्था । चतुर्भिस्तो० १२।२।२।१०
 त आप्यायन्ति । अंशुरंशुष्टे ३।४।३।१८
 त आयन्ति । तं होता ३।२।३।३१
 त आयन्ति । प्रत्युपतिष्ठते ३।२।३।२९
 त आसत । शिष्यश्छेष १४।१।१।३
 त इन्द्रासी अग्नवन् ८।३।१।३
 त इन्वेष सह वैरुः १।२।३।२
 त इदं प्राचीन्दिशमप० ११।१।६।२१
 त उचमे मयावे । स्वाहात्वा १।५।३।२२
 त उचरस्य हनिर्गानस्य ४।६।९।११
 त उदद्यो निष्कामन्ति ३।२।३।१७
 त उदद्यो निष्कामन्ति ४।४।५।९
 त उदद्यो निष्कामन्ति १४।३।१।१३
 त उद्गातारो नापन्याहरेयुः १।५।२।१३

| कण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०आ०क० | कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०आ०क० |
|------------------------------|------------|--------------------------------|------------|
| त उपरुच्यैव पशन् | ३।७।३।५ | ततो देवाः । एतां दर्शपूर्ण० | १।२।३।५ |
| त उपवसथेऽग्नीषोमीयं | ९।५।१।२३ | ततो देवाः । तनीयांस इव | २।२।२।२ |
| त उभये चतुर्विंशद् ब्रह्माः | ५।१।२।१३ | ततो देवाः । सर्वं यज्ञं | १।९।२।३५ |
| त उ ह विश्वे देवा ऊचुः | २।४।३।८ | ततो देवा एतं वज्रं ददद्भ्युः | १।१।१।१७ |
| त उ हापत्या ऊचुः | १।२।३।४ | ततो देवा एतं वज्रं ददद्भ्युः | २।१।४।१६ |
| त उ हैत ऊचुः । ह्यसु | १।३।३।१५ | ततो देवा एतं वज्रं ददद्भ्युः | ३।७।३।२ |
| त उ हैत ऊचुः । उपैवेम | १।२।३।३ | ततो द्वाभ्यां ब्राह्मणा यज्ञे | १।२।४।२ |
| त उ हैत ऊचुः । देवा | ३।१।३।४ | ततो यानि त्रीणि सुवेण | ३।१।४।२ |
| त उ हैत ऊचुः । वयं वै | २।२।४।११ | ततो याद्याचत्वारिंशत् | ६।२।२।१२ |
| त अन्नबोऽग्निमधुवन | १।६।१।८ | ततोऽस्मा एतमग्निनौ च | १।२।८।१।२ |
| त एतस्सर्वं साम पुरस्तादगा० | ७।४।१।४ | ततो हैतामुषिर्निद्राय | १।२।६।१।४० |
| त एतानि सर्पनामान्यपश्यन् | ७।४।१।२६ | तत्कर्माग्निमसृजत | १०।५।१।१० |
| त एते गार्हपत्ये द्वे आहुती | ४।६।९।२ | तत्तदवकलसमेव । यद् ब्राह्मणो | ४।१।४।६ |
| त एते गार्हपत्ये द्वे आहुती | ४।६।९।४ | तत्त्वा यमि ब्रह्मणा यन्दमान | ९।४।२।१७ |
| त एते पशवः । तान्नानोप० | ७।५।२।२२ | तत्परिषधे दीक्षातपसोस्त० | ३।१।२।२० |
| त एते सर्वे एव समाः | १।४।४।३।२१ | तत्परिषधन्ति । परिस्वा | ३।६।१।२४ |
| त एते सर्वे पशवो यदग्निः | ६।२।१।१२ | तत्पर्यस्यति । वासो अग्ने | ६।४।३।८ |
| त एते सर्वे प्राणा यदपादा | ७।४।२।३६ | तत्प्रतिगृह्णाति । देवस्य स्वा | १।७।४।१३ |
| तच्चक्षुः श्रोत्रमसृजत | १०।५।३।७ | तत्पतीचीनग्रीवमुपस्तृणाति | १।१।४।५ |
| तच्चतुर्विंशतिं कृत्वोऽभिपु० | ४।१।१।१५ | तत्पस्तरं स्तृणाति । ऊर्णम् | १।३।४।११ |
| तच्छालां वा विमितं वा | ३।१।१।६ | तत्पातरमिपथ । अभिपु० | ९।५।१।७ |
| तच्छ्रोत्रद्वर्मासृजत | १०।५।३।८ | तत्पातरमिपथ । अभिपु० | ९।५।१।१० |
| ततः संवत्सरे पुरुषः समम० | ११।१।६।२ | तत्पादेशमात्रं भवति | ७।५।१।२३ |
| तत एतच्चष्टा मुनराधेयं | २।२।३।४ | तत्पाश्नाति । अग्नेष्टास्येन | १।७।४।१५ |
| तत एतर्हि । प्राचीनं बहवो | १।४।१।१५ | तत्र जपति । अच्छिन्नस्य ते | ४।२।१।२२ |
| ततो देवाः । अर्चन्तः | १।५।३।३ | तत्र जपति । अत्र पितरो | २।४।२।२० |
| ततो देवाः । अर्चन्तः | ४।२।४।१२ | तत्र जपति । एतं त्वा देव | १।५।१।१५ |
| ततो देवाः । अर्चन्तः | ११।५।९।४ | तत्र जपति । विश्वकर्मास्त० | १।५।१।२५ |
| ततो देवाः । एतच्चष्टस्यावा० | १२।३।३।२ | तत्र जपति । वण्णोर्वर्हि० | १।५।१।२२ |

| कण्डिकाप्रतीक | अ०अ०ब्रा०क० |
|---------------------------------|-------------|
| तत्रापि मेघ च मेघी च | २।५।२।१५ |
| तत्रैतामपि वाचमुवाद | ३।९।४।२४ |
| तत्रैतामपि वाचमूढ | ३।२।१।२४ |
| तत्त्वाय सविता धिय इति | ६।३।१।१३ |
| तत्त्वे देवस्त्वामेव । एतानि | ९।४।३।१२ |
| तत्सीसेनापजघान | ५।४।१।१० |
| तथेति देवा अमुवन् । तवैव | ३।२।३।६ |
| तथेति देवा अमुवन् । यद्वा | १।३।१।१६ |
| तथेति देवा अमुवन् । सोम० | ३।६।२।१९ |
| तथैवैतद्यजमान । आत्मान० | ७।२।१।६ |
| तथैवैतद्यजमान । आत्मान० | १०।४।१।२ |
| तथैवैतद्यजमान । एकशत० | १०।२।४।२ |
| तथैवैतद्यजमान । यत्सत्य सा० | ७।४।१।५ |
| तथो एवैमे सत्रमासते | ४।६।९।३ |
| तथो एवैतस्मात् । एतदन्ना० | ४।६।९।५ |
| तथो एवैष एतत् । इमा | २।१।१।११ |
| तथो एवैष एतत् । उपरुह्यैष | ३।७।३।६ |
| तथो एवैष एतत् । चतुर्थे० | १।६।१।१३ |
| तथो एवैष एतत् । यूपश० | ३।७।१।३२ |
| तथो एवैष एतत् । सहैव | ३।९।३।२२ |
| तदग्निं समाधाय जुहोति | ५।२।३।३ |
| तदग्निं समाधाय जुहोति | ५।२।४।१७ |
| तदग्नेण गार्हपत्यम् । अन्तर्वे० | ७।३।२।२ |
| तदज्जलिना प्रतिगृह्णाति | १।९।३।६ |
| तदन्तरेण । अर्धर्चो याज्यायै | ३।८।३।३१ |
| तदपि श्लोकज्ञायन्ति | ११।५।४।२२ |
| तदप्युपमासिन् । गद् द्वौ | १२।५।१।५ |
| तदप्येते श्लोका । अणु० | १४।७।२।११ |
| तदप्येते श्लोका । स्वि० | ११।३।१।५ |

| कण्डिकाप्रतीक | अ०अ०ब्रा०क० |
|----------------------------|-------------|
| तदप्येते श्लोका । स्वमेन | १४।७।१।१२ |
| तदबज्योत्तयति । श्रुत | २।३।१।१६ |
| तदस्मा एतत्पशूनेव परोक्ष० | १।८।१।३२ |
| तदस्मा एतत्पशूनेव परोक्ष० | १।८।१।३५ |
| तदस्मा एतत्पशूनेव परोक्ष० | १।८।१।३९ |
| तदस्मा एतत्पशूनेव परोक्ष० | १।८।१।३४ |
| तदानीयमानमभिमन्त्रयते | १।७।१।१६ |
| तदायस्तु वाचयति । अग्ने | ३।६।३।११ |
| तदायस्तु वाचयति । एष ते | ३।३।२।६ |
| तदारम्भणवत् । यत्रैत | ४।६।१।२ |
| तदाहु । अक्के निन्दुवीरा३० | ३।४।३।२० |
| तदाहु । अग्नावैतस्ताय | २।३।१।३६ |
| तदाहु । अध्वर्यो यदीक्षि० | ११।७।२।६ |
| तदाहु । अध्वर्यो यदीक्षि० | ११।७।२।७ |
| तदाहु । अनदेवैता | ३।१।४।१० |
| तदाहु । अनवरुद्धो वा | १३।२।५।२ |
| तदाहु । अनाहुतिर्वै रूपाणि | १३।१।३।६ |
| तदाहु । अन्न वा एतद्वाद्य० | १२।७।२।२ |
| तदाहु । अग्नेदेवत्या | १२।७।२।१६ |
| तदाहु । अपशुर्वा एष | १३।२।४।३ |
| तदाहु । अपाह्वैतै | १३।२।२।१२ |
| तदाहु । अघस्तोमीयम्पूर्व | १३।३।६।४ |
| तदाहु । आगूर्ति वा एष | ११।२।४।१० |
| तदाहु । आलयाजी | ११।२।६।१३ |
| तदाहु । आहवनीये हवींषि | १।७।३।२६ |
| तदाहु । इष्टि पशुवन्धा३ | ११।७।२।२ |
| तदाहु । उतस्वेदे प्रत्यद् | ३।५।३।१९ |
| तदाहु । उग्नोर्वा एत० | १२।८।२।१३ |
| तदाहु । एको मृत्युर्बह० | १०।५।२।१६ |

| कण्डिकाप्रतीक | ख०अ०पा०क० |
|--------------------------|-----------|
| तदाहु । एतस्यै वा | १२।७।३।२० |
| तदाहु । एतामेवाहुर्वि | २।२।१।५ |
| तदाहु । एतामेवैका | ३।१।४।२२ |
| तदाहु । एतावदेवोत्तवा | ४।२।२।१४ |
| तदाहु । क प्रातरनुवाकस्य | ३।९।३।११ |
| तदाहु । कतरस इष्टकाया | ६।१।२।३१ |
| तदाहु । कति पञ्चवोऽग्रा | ६।१।२।३२ |
| तदाहु । कवि संवत्सर० | १२।२।१।६ |
| तदाहु । कति संवत्सर० | १२।२।३।१३ |
| तदाहु । कथमस्यैतच्छतर० | ९।१।१।४३ |
| तदाहु । कथमस्यैतच्छतर० | ९।१।१।४४ |
| तदाहु । कथमस्यैतरकर्म | ६।२।२।३१ |
| तदाहु । कथमस्यैता पका | ७।३।१।२६ |
| तदाहु । कथमस्यैता प्रथङ् | ७।३।१।४० |
| तदाहु । कथमस्यैता सर्वा | ८।१।३।२ |
| तदाहु । कथमस्यैता सर्व० | ७।३।१।४१ |
| तदाहु । कथमस्यैता अन० | १०।४।३।२८ |
| तदाहु । कथमस्यैता अहो० | ७।३।१।३८ |
| तदाहु । कथमस्यैता अहो० | ७।३।१।३९ |
| तदाहु । कथमस्यैते | ९।३।१।१७ |
| तदाहु । कथमस्यैतावात्मा० | ७।४।२।२० |
| तदाहु । कथमस्यैता पका | ७।५।१।२९ |
| तदाहु । कथमस्यैता वसो० | ९।३।३।१८ |
| तदाहु । कथमस्यैता वसो० | ९।३।३।१९ |
| तदाहु । कथमस्यैतोऽग्नि | ६।२।१।२० |
| तदाहु । कथमस्यैतोऽग्नि | ८।१।१।५ |
| तदाहु । कथमु ता अत्र | १०।४।३।२३ |
| तदाहु । कथमेत गर्भ | ४।५।२।६ |
| तदाहु । कथमेव पुत्र | ७।४।२।९ |

| कण्डिकाप्रतीक | ख०अ०पा०क० |
|------------------------------|-----------|
| तदाहु । कथमेव सप्तविध | १०।२।३।५ |
| तदाहु । कथमेवा लोकमृ० | ८।७।२।७ |
| तदाहु । कस्मा उ तर्ह्युपभृति | १।३।२।१५ |
| तदाहु । कस्मादमिस्वय० | ७।४।२।४० |
| तदाहु । कस्मादस्या अग्नि० | ६।१।१।२९ |
| तदाहु । कस्मादुभयतोऽयो० | १२।२।२।१ |
| तदाहु । कस्मिन्तावभ्या० | १३।४।१।२ |
| तदाहु । कस्मै कामायामि० | ६।१।२।३५ |
| तदाहु । किं देवत्याग्याज्या० | १।६।१।२० |
| तदाहु । किं प्राणा किं पा० | ८।१।३।१ |
| तदाहु । किं हित किमुप० | ६।१।२।१५ |
| तदाहु । किञ्छन्द का देव० | १०।३।२।१ |
| तदाहु । किन्तदग्नौ क्रियते | १०।१।४।१४ |
| तदाहु । किन्तद्यज्ञे क्रियते | ३।८।४।२ |
| तदाहु । किन्देवस्य एष | ११।८।३।१ |
| तदाहु । किमयनमिति | ११।१।७।३ |
| तदाहु । किमिद आमि | १।६।३।२७ |
| तदाहु । कैतासामसंस्त्या० | ७।३।१।४३ |
| तदाहु । वैज्ञानोऽभृदिति | ४।५।१।७ |
| तदाहु । केत गर्भं कुर्या० | ४।५।२।१३ |
| तदाहु । गायत्राणि वै | ४।३।२।१० |
| तदाहु । दद्यादेतस्मिन्यज्ञे | ६।२।२।४० |
| तदाहु । दक्ष पितामहान्सो० | ५।४।५।४ |
| तदाहु । दशहविषमेवैता० | ९।४।३।११ |
| तदाहु । द्वादशारत्नी रथना | १३।१।२।२ |
| तदाहु । द्विरुपभृति गृही० | २।६।१।१३ |
| तदाहु । न जुहुयाभेदति० | ९।४।२।२८ |
| तदाहु । न देवतामतिदि० | ४।३।४।३३ |
| तदाहु । न ब्रह्मचारी | ११।५।४।१८ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०मा०क० | कण्डिकाप्रतीक | का०अ०मा०क० |
|-----------------------------|------------|--------------------------------|------------|
| तदाहु । न ब्राह्मणभक्षः० | ११।५।४।१६ | तदाहु । यत्पुरस्ताद्विपुवत् | १२।२।३।८ |
| तदाहु । न वयसोऽग्निः० | १०।१।४।१३ | तदाहु । यत्पूर्वस्यामाहुत्या | १२।४।३।१ |
| तदाहु । न वाजपेयेन यनेत् | ५।१।१।९ | तदाहु । यत्पूर्वेण गणेष्वेकैः० | ८।१।४।४ |
| तदाहु । न व्यूहेद् मृदान् | ०४।५।९।० | तदाहु । यत्प्रजा विश्वज्योः० | ७।४।२।३८ |
| तदाहु । न सर्पराज्या | २।१।४।३० | तदाहु । यत्पणीता | १४।२।२।५० |
| तदाहु । न सङ्क्षेऽधि | ४।५।८।१४ | तदाहु । यत्प्रथमामेव चितिं | ७।१।२।४ |
| तदाहु । नान्तर्वेद्यासादये० | १।३।१।२१ | तदाहु । यत्प्रयाजानुया० | १४।२।२।५१ |
| तदाहुः । नासोमयाजी | १।६।४।१० | तदाहु । यत्प्राजापत्योऽ० | १३।१।२।९ |
| तदाहु । नैतस्य पशो | ६।२।२।३८ | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।३ |
| तदाहु । नैतस्य पुरुषस्य | ७।४।१।४५ | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।४ |
| तदाहु । नैतानि हवींषि | ९।४।३।१५ | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।५ |
| तदाहु । नैतानि हवींषि | ९।५।१।४० | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।६ |
| तदाहु । नैतेन पशुनेष्टोपरि | ६।२।२।३९ | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।७ |
| तदाहुः । नैते सर्वे पशवो | १३।३।२।३ | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।८ |
| तदाहुः । नैवैक च न | २।१।१।१४ | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।९ |
| तदाहु । नैव यजमानेना० | ३।८।१।१० | तदाहु । यत्सवत्सराय | १२।३।५।१० |
| तदाहु । नोपव्यासेदति० | ८।७।२।१९ | तदाहु । यत्समे एव चक्रे | १२।२।२।३ |
| तदाहु । नोपाश्रुत्याग्निं | ३।७।३।७ | तदाहु । यत्सर्वैश्चन्द्रोमि | ८।७।३।८ |
| तदाहु । पदे पदेऽध्वस्य | ११।२।५।२ | तदाहु । यदंशुभिरुपाशु | ४।१।१।४ |
| तदाहु । पराङ्मया एतस्मा० | १३।२।६।२ | तदाहु । यदधिश्रितेऽग्निः० | १२।४।२।५ |
| तदाहु । पर्यामृद्वायमेक० | २।४।३।१० | तदाहु । यदपशिरा | १४।२।२।४८ |
| तदाहु । पुनरेतदुत्पृक्त | ३।८।१।७ | तदाहु । यदशुष्मे स्वाहापुष्मे | १३।३।५।२ |
| तदाहु । पूर्वोऽतीत्य गृही० | ३।४।१।३ | तदाहु । यदय पुरो मुवोऽय | ८।१।४।२ |
| तदाहु । म या एतदधो | १३।१।४।३ | तदाहु । यदय लोको गार्ह० | ७।१।२।२३ |
| तदाहु । भेव वा एषोऽ० | १२।८।३।२१ | तदाहु । यदयमेक एव | १४।६।९।१० |
| तदाहु । भेव वा एषोऽ० | १२।९।२।१२ | तदाहु । यदसवेव यजमानो | ७।४।२।१७ |
| तदाहु । यच्चतुर्विंशमद्वरु० | १२।२।३।५ | तदाहु । यदहर्विष्णुकमा | ६।७।४।३३ |
| तदाहु । यजेदाज्यमागौ | ११।७।४।२ | तदाहु । यद्राज्यमागा० | १४।२।२।५२ |
| तदाहु । यत्प्रमोदश | १०।२।३।१५ | तदाहु । यदर्द्ध रेत शु० | ७।३।१।३७ |

कण्डिकाप्रतीकः

का०अ०आ०क०

कण्डिकाप्रतीकः

का०अ०आ०क०

तदाहुः । यदिया आप ७।५।२।४३
 तदाहुः । यदुत्तमान्प्रयाजा १।६।१।९
 तदाहुः । यदुमे दिवा वा १३।२।१।७
 तदाहुः । यदुमौ दिवा १३।१।५।४
 तदाहुः । यदुमौ ब्राह्मणौ १३।१।५।२
 तदाहुः । यदुचा होत्रं ११।५।८।७
 तदाहुः । यदेतस्त्रयं सह ८।१।३।४
 तदाहुः । यदेतत्साम १२।८।३।२७
 तदाहुः । यदेतस्य दीर्घं १२।४।१।२
 तदाहुः । यदेतानि सर्वाणि १०।१।२।६
 तदाहुः । यदेव प्रायणीये ३।२।३।२१
 तदाहुः । यदेवमेकेष्टकोऽथ ६।१।२।३०
 तदाहुः । यदेष्ट दीर्घसं १२।५।१।१
 तदाहुः । यदेष्ट दीर्घसं १२।५।१।१३
 तदाहुः । यद्वमहाय गृहीताय ८।१।३।३
 तदाहुः । यद्वमवभिः १२।८।२।१४
 तदाहुः । यद्वमक्षयिण्या १४।४।२।२०
 तदाहुः । यद्वद्वादश मासाः १२।२।३।६
 तदाहुः । यद्वद्वादशोऽग्निः १३।३।३।९
 तदाहुः । यद्यज्ञमुखे यज्ञमुखे १३।१।३।८
 तदाहुः । यद्यथा पितुः पुत्रमे ८।१।३।५
 तदाहुः । यथावत्य पतस्या ६।२।२।२९
 तदाहुः । यद्योनिः परिधि ७।३।१।११
 तदाहुः । यदेतः सिकृता ७।३।१।३६
 तदाहुः । यद्वानस्पत्यैर्दे १४।२।२।५३
 तदाहुः । यन्न पूर्णमासायेति ११।२।४।८
 तदाहुः । यन्नर्चा न साम्ना २।१।४।१०
 तदाहुः । यन्मिता जुह्वं १३।१।३।२
 तदाहुः । यल्लोकमृषान्ता ८।५।४।८

तदाहुः । यस्मा एतदाप्या ३।४।३।२२
 तदाहुः । यस्य गार्हपत्योऽनु १२।४।३।३
 तदाहुः । यस्य वैद्युतो १२।४।४।४
 तदाहुः । यस्याग्नयः संसृ १२।४।४।२
 तदाहुः । यस्याग्नयोऽग्ने १२।४।४।५
 तदाहुः । यस्याग्नाग्रमिमभ्यु १२।४।३।४
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रं १२।४।२।६
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रं १२।४।२।९
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रं १२।४।२।१०
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रन्दो १२।४।१।६
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रन्दो १२।४।२।२
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रन्दो १२।४।२।३
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्रम १२।४।२।४
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्री १२।४।१।९
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्री १२।४।१।२
 तदाहुः । यस्याग्निहोत्री १२।४।२।१
 तदाहुः । यस्याहवनीय १२।४।३।२
 तदाहुः । यस्याहवनीयमनु १२।४।४।६
 तदाहुः । यस्याहवनीयमनु १२।४।४।७
 तदाहुः । यस्याहवनीयेऽनु १२।४।३।६
 तदाहुः । यां वै तत्प्रजाप ७।५।२।३७
 तदाहुः । याजयितन्यं १२।८।१।१७
 तदाहुः । विष्टेऽथस्येष्टि ११।२।५।३
 तदाहुः । अश्वद्वै नैव चक्रमे ४।१।४।९
 तदाहुः । पदेवर्तव संवत्स २।१।१।१३
 तदाहुः । समेवान्ये यज्ञास्ति २।३।१।१३
 तदाहुः । सर्वगायत्रं वैश्वदेवं ११।५।२।९
 तदिद्वान्तं भवति । न ह्यत्र १।२।२।१४
 तदिद्वान्तं भवति । नानुया ३।४।१।२६

| कण्डिकाप्रतीक | सं०अ०प्रा०क० | कण्डिकाप्रतीक | सं०अ०प्रा०क० |
|----------------------------------|--------------|-----------------------------|--------------|
| तदिदं हर्म्यं सुष्टमाविरजुगु० | १०।५।३।९ | तदु वा आहुः । नानाभि० | १२।३।५।२ |
| तदिदमज्ञातघन्देषा भव० | १०।१।१।११ | तदु वा आहुः । यविष्ठ० | १०।१।३।११ |
| तदिदमनाः सुष्टमाविरजुगुपत् | १०।५।३।३ | तदु वा आहुः । वषामा | ६।२।२।१४ |
| तदिष्टाः प्रयाजा आसुः | १२।९।३।९ | तदु वै यजतैव । य एवमेतं | ५।१।१।१० |
| तदु कथममूदिति । यत्रैव | १।४।१।१९ | तदु व्यूहेदेव । मशानि वै | ४।५।९।११ |
| तदु सख । तन्पुत्रा अग्रेऽसि | २।३।४।१९ | तदु समेव न्येत । नन्वत्रा० | १।६।४।११ |
| तदु घृताच्येति । देवान् | १।४।१।२१ | तदु ह कौकूस्तः । चतुर्विंश० | ४।६।१।१३ |
| तदु सप्तयिष्या विष्णुर्म्यं कन्त | १।९।३।१० | तदु ह चरकाध्वर्यवः । भन्या | ८।१।३।७ |
| तदु तथा न कुर्यात् । नमिष्ठ० | ३।७।२।४ | तदु ह चरकाध्वर्यवः । भन्या | ८।७।१।१४ |
| तदु तथा न कुर्यात् । उक्त्या | ५।५।४।१९ | तदु ह चरकाध्वर्यवः । भन्या | ८।७।१।१४ |
| तदु तथा न कुर्यात् । ओष० | १।२।५।१० | तदु ह चरकाध्वर्यवो विष्टुः | ४।२।३।१५ |
| तदु तथा न कुर्यात् । काम० | ३।२।३।२२ | तदु ह वसिष्ठकः पातिपीयः | १२।९।३।३ |
| तदु तथा न कुर्यात् । यत्रैव | १।५।३।७ | तदु ह भास्त्रेयः । अनुष्टु० | १।७।३।१९ |
| तदु तथा न कुर्यात् । यथा वै | ३।८।१।८ | तदु दापि कुमार्यः वरीयुः | २।६।२।३ |
| तदु तथा न कुर्यात् । विष्टु० | ३।४।१।५ | तदु दाम्पत्यमपीपरोक्ष | २।२।२।७० |
| तदु तथा न कुर्यात् । पठेव० | ५।५।२।३ | तदु दधिनीरनुयुतमास | १।४।१।१२० |
| तदु तथा न कुर्यात् । सार्यमेव | ३।६।३।६ | तदु हैक आहुः । भन्ये | १।३।५।३ |
| तदु तथा न कुर्यात् । इत्थं० | ५।१।३।६ | तदु हैक आहुः । उभयं ता | १।४।१।८ |
| तदु तथा न कुर्यात् । इत्थं० | ५।१।३।१४ | तदु हैक आहुः । उभे च | १।९।१।२१ |
| तदु तथा न कुर्यात् । इत्थं० | ५।४।५।१७ | तदु हैक आहुः । देवेभ्योऽ० | ३।९।३।९ |
| तदु तथा न कुर्यात् । इत्थं० | ५।५।४।३४ | तदु हैक आहुः । वसवचं० | ४।२।२।१६ |
| तदु तद्विषि विष्णुर्म्यं कन्त | १।९।३।१२ | तदु हैक आहुः । विष्टेयां | ५।२।२।१४ |
| तदु चरं कृष्णाजिनदुपस्तृणा० | ६।४।१।९ | तदु हैकेऽन्वाहुः । होता | १।४।१।३५ |
| तदु दीचीनवंशं सदो भवति | ३।६।१।२३ | तदु हैवदेवारुणये । वक्ष० | २।३।१।३१ |
| तदु नैव न्यूहेत् । प्राणा वै | ४।५।९।१२ | तदु हैवर्हि । सेनतमिव | १।४।१।१६ |
| तदु पश्यस्यस्य प्रतिगृणाति | ४।३।२।४ | तदु होवाच कदोहः कौपी० | २।४।३।१ |
| तदु पात्मागितिष्ठति । इदं० | ३।८।२।१५ | तदु होवाच जीवन्मैत्रिकिः | २।३।१।३४ |
| तदु म्यादेव मयः । इष | ४।२।२।१५ | तदु होवाच मुदिन् आधत्त० | ४।६।१।९ |
| तदु वा आहुः । कामनेष | ११।५।४।१७ | तदु होवाच भस्त्रेयः | २।१।५।६ |

| कण्विकाप्रतीक | का०ख०ग्रा०व० | कण्विकाप्रतीक | का०ख०ग्रा०व० |
|-------------------------------|--------------|------------------------------|--------------|
| तदु होवाच भालवेय | १३।४।२।३ | तदेतन्मूर्तम् । यदन्यद्वायो० | १४।५।३।२ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | १।१।१।९ | तदेता वा अस्य ता । पञ्च | ६।१।२।१७ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | २।३।१।२।१ | तदेता वा अस्य ता । पञ्च | १०।१।३।४ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | २।४।३।२ | तदेता वाव पद् देवता | ६।१।३।७ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | ३।१।१।४ | तदेतेऽमि श्लोका | ११।५।५।१२ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | ४।६।१।१० | तदेते सामनिधने अभ्युक्ते | ८।६।२।१९ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | ११।४।२।१७ | तदेव निवर्षति ग्राग्न | ३।६।३।१३ |
| तदु होवाच याज्ञवल्क्य | १२।४।१।१० | तदेव सन्त । तदु तद्ग | १४।७।२।१५ |
| तदु होवाच राम औपतस्यि० | ४।६।१।७ | तदेव श्लोक प्रत्युक्त | १२।३।२।८ |
| तदु होवाच साययज्ञि | १३।५।३।९ | तदेव श्लोको भवति | १०।५।२।४ |
| तदु होवाचासुरि । आज्य० | १।६।३।२६ | तदेव श्लोको भवति | १०।५।२।१८ |
| तदु होवाचासुरि । आश्रा० | २।६।१।२५ | तदेव श्लोको भवति | १०।५।४।१६ |
| तदु होवाचासुरि । किन्नु | २।६।३।१७ | तदेव श्लोको भवति | १४।५।२।४ |
| तदेतज्जयेष्ठमक्ष । तल्ले० | १०।३।५।१० | तदेव श्लोको भवति | १४।७।२।८ |
| तदेतत्मेव पुत्रात् । मेयो | १४।४।२।१९ | तदेव श्लोको भवति | १४।७।२।९ |
| यदेतत्समाहार्य दृष्टव्यम् | २।३।४।१६ | तदेव श्लोकोऽभ्युक्त | ७।५।१।२१ |
| तदेतद्वत्त सृष्टा । पुरस्तात् | ७।५।२।७ | तदेव श्लोकोऽभ्युक्त | १२।३।२।७ |
| तदेतद्वचाभ्युक्तम् । पृथ | १४।७।२।२८ | तदेवा वै सा प्रतिष्ठा | ७।१।२।८ |
| तदेतद्वचाभ्युक्तम् । न मृषा | १०।४।४।५ | तद्वृद्धिर्हति पपात | १४।१।१।१० |
| तदेतद्वचाभ्युक्तम् । विभ० | १०।२।६।६ | तद्वृद्ध्याधिययति | २।३।१।१४ |
| तदेतद्वचाभ्युक्तम् । विभे | १०।५।४।१८ | तद् द्वयमेवैते आहुती | २।३।१।२४ |
| तदेतद्गामयामिगीतम् | १३।५।४।२ | तद् मन उवाच । बहमेव | १।४।५।९ |
| तदेतद्गामयामिगीतम् | १३।५।४।२१ | तद् स्माह आतुद् पित० | १४।८।१३।२ |
| तदेतद्देवव्रत राजन्यबन्ध० | १०।५।२।१० | तद् स्माहाक्काक्ष । य एव | ६।१।२।२४ |
| तदेतद्भय क्षत्र विद् शूद्र | १४।४।२।२७ | तद् स्मैतत्पुरा कुरुपञ्चाला | ५।५।२।५ |
| तदेतद् ब्रह्मापूर्वमपवत् | १०।३।५।११ | तद् स्मैतत्पुरा । जायैव | १।१।४।१३ |
| तदेतद्यजुरुपाश्वनिरुक्तम् | १०।३।५।१५ | तद् स्मैतदारुणिराह | १।३।२।११ |
| तदेतद्यज्ञस्यायातयाम | १२।३।३।३ | तद् स्मैतदारुणिराह | ४।५।७।९ |
| तदेतद्वसुचित्रं राघ । तदे० | १०।२।६।५ | तद् स्मैतदारुणिराह | ११।२।६।१२ |

| वर्णिकप्रतीकः | का०ख०ग्रा०क० |
|---------------------------------|--------------|
| तद्वापि ब्रह्मदत्तैककिता० | १४।४।१।२६ |
| तद्देवं सत्यमीशान्दे | ९।५।१।१४ |
| तद्देदन्तर्ध्व्याकृतमासीत् | १४।४।२।१५ |
| तद्देक आहुः । अत्रैतैः | ६।२।१।१३ |
| तद्देक आहुः । स्वयं वा | ६।८।१।३ |
| तद्देके । आमीप्रिये पुनरा० | ४।४।२।८ |
| तद्देके । आदित्येभ्यश्च | ३।१।३।२ |
| तद्देके । आहवनीय एवे० | १०।४।३।२१ |
| तद्देके । आहवनीयाहुकमुक० | ३।३।४।२२ |
| तद्देके । इत्येवैतानि पशुशी० | ६।२।१।३७ |
| तद्देके । इध्मस्यैवैतान्यपरि | १।३।३।१८ |
| तद्देके । उदयं गृहीत्वाथ | ४।३।३।३ |
| तद्देके । उत्तरा विषा | १०।२।३।६ |
| तद्देके । उभयभैव पलाशशा० | ७।३।१।७ |
| तद्देके । एकविधमथमं | १०।२।३।१७ |
| तद्देके । एतत्कृत्वाभैतत्कुर्व० | ५।२।२।२० |
| तद्देके । एतमेव होत्रे मन्य० | २।६।१।३३ |
| तद्देके । एतेषाम्पर्यग्रा० | १३।२।२।१५ |
| तद्देके । ऐव भैत्रावरुणचम० | ३।९।३।३० |
| तद्देके । ओषरपेदेनूदाय० | ३।५।२।३ |
| तद्देके । ओमामो देववा० | ४।३।२।१३ |
| तद्देके । कर्मणः कर्मण | ९।५।२।११ |
| तद्देके । कृत्वा कुर्वते ता | ९।५।२।१४ |
| तद्देके । चतुर्षा कुर्वन्ति | ३।६।३।५ |
| तद्देके । चरु निर्वपन्ति | ११।२।४।९ |
| तद्देके । अघनार्थे गार्हप० | ८।६।३।१४ |
| तद्देकेऽग्रमुपवसन्ति | २।१।४।३ |
| तद्देके । इष्टोपवसन्ति | १।६।४।१४ |
| तद्देके । इष्टोपवसन्ति | ११।१।४।१ |

| वर्णिकप्रतीकः | का०ख०ग्रा०क० |
|----------------------------------|--------------|
| तद्देके । देवता पूर्वा कुर्व० | १।७।३।१२ |
| तद्देके । देवेभ्यः शुन्धध्वं | १।१।४।२४ |
| तद्देके । नक्षत्र द्वेष्टा वाचं | ३।२।२।५ |
| तद्देके । निदधत्येतानि | ५।३।५।२५ |
| तद्देकेऽनुदिते मथित्वा । तमुदि० | २।१।४।८ |
| तद्देकेऽन्वाहुः । पुरीष्यासो | ७।३।२।८ |
| तद्देकेऽपि । यथेष्टः पशुर्म० | ७।५।२।१० |
| तद्देके । पुरस्तादाप्ये दध० | १।४।१।३७ |
| तद्देके । प्रतिपरेत्य यत्स्था० | १२।४।२।७ |
| तद्देके । प्रथमे व्रत उभौ | ३।२।२।१४ |
| तद्देके । प्रथमे व्रते सर्वा० | ३।२।२।१५ |
| तद्देके । महेन्द्रायेति कुर्व० | १।६।४।२१ |
| तद्देके । यं यथेष्टं पशुमुप० | ७।५।२।२९ |
| तद्देके । यदि चिरमर्चिरारो० | ६।६।२।९ |
| तद्देके । रात्रीरापिषियन्ति | २।६।३।११ |
| तद्देके । यथामां हुवायान्द० | ११।७।२।४ |
| तद्देके । वाच उपवसालम् | ५।१।३।११ |
| तद्देके । वेदे स्तीर्णायै बर्हि० | १।५।१।३ |
| तद्देके । वेपथीः क्षत्राय | ८।५।३।८ |
| तद्देकेषामध्वर्युः । पूर्वणाहव० | १।९।२।२ |
| तद्देके । सप्तदशान्नानि | ५।२।२।३ |
| तद्देके । समन्तं परिवेष्टय० | ५।३।५।२४ |
| तद्देके । सत्ये एव वपन्ते | ३।१।२।३ |
| तद्देके । मुक्षुसमार्जनान्य० | १।३।१।११ |
| तद्देके । दधिरुच्छिष्टमनु | २।६।१।४८ |
| तद्देके । होत्रे द्रोणकलत्रं | ४।४।३।१० |
| तद्देकेऽण्डिहयः । बह्व० | ९।४।४।१७ |
| तद्देकेऽण्डिहयस्य साष्ट० | १०।१।४।१० |
| तद्देकेऽन्नको वेदेहः । याज्ञ० | ११।३।१।२ |

| कण्डिकाप्रतीक | सं० अ० प्रा० व० | कण्डिकाप्रतीक | सं० अ० प्रा० व० |
|----------------------------------|-----------------|--------------------------------|-----------------|
| तद्यदाप्याययन्ति । देवो वै | ३।४।३।१३ | तद्यद्विरण्यशकलावभितो | ३।८।३।२६ |
| तद्यदाहु । साकमेषैर्वै देवा | २।६।४।१ | तद्यद्वाहस्पत्यमनु भवति | ३।९।१।१४ |
| तद्यदितो यताम् । अश्व | ६।४।४।१३ | तद्यद्वाज्यं प्रविष्यति | ५।१।५।१४ |
| तद्यदिदमाहु । अमुं यजायुं | १।४।४।२।१२ | तद्यद्वोहिणी जुहोति । अग्निश्च | १।४।२।१।२ |
| तद्यदिदमाहु । संवत्सरम् | १।४।४।३।६ | तद्यद्वपया चरन्ति । यस्यै | ३।८।२।२९ |
| तद्यदिद्वा पशुनापश्यत् | ६।२।१।१० | तद्यद्वा पुरस्ताज्जुहोति | ६।२।२।१३ |
| तद्यदुपयामेन ग्रहा गृह्यन्ते | ४।१।२।६ | तद्यद्वायम्यं भवति । अयं वै | २।६।३।७ |
| तद्यदुपयामेन ग्रहा गृह्यन्ते | ४।१।२।८ | तद्यद्वैश्वदेवमनु भवति | ३।९।१।१६ |
| तद्यदुपयामेन ग्रहा गृह्यन्ते | ४।१।२।९ | तद्यन्मध्यमं यजुः । स आ० | ९।४।४।६ |
| तद्यदेत एवं यूपा भवन्ति | १३।४।४।६ | तद्यन्मरुत्तवीयान्मृशति पत० | ४।३।३।६ |
| तद्यदेतया राजसूययात्री | ५।५।४।१४ | तद्यन्मेषश्च गोपी न भवतः | २।५।२।१६ |
| तद्यदेतयोपतिष्ठते । यदेवा० | १०।१।३।१० | तद्यन्मैत्रावरुणचमसेन | ३।९।३।२८ |
| तद्यदेता अत्रोपदधाति | ८।३।२।७ | तद्यन्मैत्रावरुणी वशा भवति | ४।५।१।६ |
| तद्यदेतावमी आद्वनी० | १२।९।३।१३ | तद्यन्मैत्रावरुणी वशा भवति | ४।५।१।८ |
| तद्यदेते अत्र । याज्यानुवा० | १।७।३।१६ | तथाः पद्यदश पूर्वाः | ७।५।२।४१ |
| तद्यदेते अत्रोपदधाति । संव० | ७।४।२।३० | तथाः परिश्रितः । रात्रिलो० | १०।४।३।१३ |
| तद्यदेते अत्रोपदधाति । संव० | ८।२।१।१७ | तथाः पुरस्तादुपदधाति | ८।१।३।६ |
| तद्यदेते अत्रोपदधाति । संव० | ८।४।२।१५ | तथाः पुरस्तादुपदधाति | ८।१।४।१२ |
| तद्यदेते अत्रोपदधाति । संव० | ८।७।१।७ | तथाः पुरस्तादुपदधाति | ८।५।२।७ |
| तद्यदेतेन राजसूययात्री यजते | ५।५।१।२ | तथाः पूर्वहोऽनुवायया भवन्ति | ३।४।४।२ |
| तद्यदेतेनोपतिष्ठते । यदेवास्मात् | ९।५।२।३ | तथाः सप्त पुरस्ताद्वाहसि० | ८।३।४।१४ |
| तद्यदेनं दिक्षः समारोहयति | ५।४।१।८ | तथा अमुष्मादादित्यादर्वा० | ९।२।३।१३ |
| तद्यदेनमूर्त्त्याहुमभिषिचति | ५।४।१।१७ | तथा अमुष्मादादित्याद्वर्द्धा० | ९।२।३।२३ |
| तद्यदेनमेवाभिर्देवतामिनु | ५।४।५।३ | तथा अमुष्मिँल्लोके पद्य | ९।२।३।२९ |
| तद्यदेन्द्रमनु भवति । सत्रं वा | ३।९।१।१८ | तथा अमुस्तिस्त्रोऽनुष्टुमः | ९।२।३।४८ |
| तद्यदेवं पितृष्टि । जीवं वै | १।२।१।२० | तथा इमा अर्धेऽहोदिन्यो | १।४।५।२।३ |
| तद्यदेवम्भवति । पृथ वै | ११।१।४।४ | तथा एताः पद्याधिन्यः | ८।२।१।१३ |
| तद्यद्वोष्मानुपस्पृशति | ५।२।१।१३ | तथा एता अष्टादश प्रथमाः | ८।४।१।८ |
| तद्यद्विरण्यशकलावभितो | ३।८।२।२७ | तथा एतास्तिमस्तिस्त्रिंशः | ४।५।८।१२ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०भा०क० | कण्डिकाप्रतीक | का०अ०भा०क० |
|-----------------------------------|------------|-------------------------------|------------|
| तथा दश प्रथमा उपदधा० | ८।३।३।११ | तद्वा अस्यैतत् । आत्मका० | ११।७।१।२१ |
| तथानि तानि भूतानि । ऋत० | ६।१।३।८ | तद्वा अद्वैत स्यात् । यातयाम० | ३।१।२।१९ |
| तथानि । त्रीणि प्रथगानि | ६।३।१।११ | तद्वा अहोरात्रे एव विष्णु० | ६।७।४।१० |
| तथानि पार्थानि । तानि | ९।३।४।७ | तद्वा आत्मैवोक्ता । योनिगु० | ६।६।२।१५ |
| तथानि वर्षिष्ठानि च्छन्दासि | ८।२।४।१९ | तद्वा उच्येति द्वे अक्षरे | ६।७।१।२४ |
| तथात्रेतौ पूर्वौ । तयोर्दक्षि० | ३।५।४।६ | तद्वा उपांशु भवति । एत० | ६।२।२।२० |
| तथास्तिस्र प्रथमा । अथ | ८।५।३।५ | तद्वा ऋषीणामनुश्रुतमास | ३।२।२।१२ |
| तथास्त्रा द्विय । एतानि | ६।२।१।११ | तद्वा ऋषीणामनुश्रुतमास | ३।४।३।१६ |
| तथे एते अभित । पुच्छका० | ४।५।७।५ | तद्वा ऋषीणामनुश्रुतमास | १।९।१।२५ |
| तथेऽर्वाविंशेऽपु वर्षेषु प्रयन्ति | १०।२।६।८ | तद्वा ऋषीणामनुश्रुतमास | ३।१।४।४ |
| तथे सोमेनैजाना । ते पितर | २।६।१।७ | तद्वा ऋषीणामनुश्रुतमास | ३।२।२।३ |
| तथे ह स्म पुरा वाजपेयेन | ५।१।१।५ | तद्वा ऋषीणामनुश्रुतमास | ३।२।२।२९ |
| तथे ह स्म पुरा वाजपेयेन | ५।१।१।७ | तद्वा एक स्यात् । एको | ३।१।३।१९ |
| तथैषा मध्यमा स्वयमावृण्णा | ८।१।१।७ | तद्वा एतत् । अत्रिदीणमेव | १।६।४।१६ |
| तथैषोत्तमा स्वयमावृण्णा | ८।७।३।१७ | तद्वा एतत् । अस्या एवान्य० | ४।२।४।१७ |
| तथोऽस्य पुन प्रियतमो | ५।४।२।८ | तद्वा एतत् । आहवनीये | ४।२।४।१८ |
| तथोऽस्य स्वो भवति । तस्म | ५।४।३।१ | तद्वा एतत् । उभय सद | १।२।२।५ |
| तथौ प्रथमी मातृत्वा जुहोति | ९।३।१।१० | तद्वा एतत् । एव विचिकि० | २।२।४।९ |
| तथौ ह वा इमौ पुरुषा० | १२।९।१।१२ | तद्वा एतत्क्रियते । यद्देवा | ७।२।१।४ |
| तद्वर्ज्यं सारतम स्यात् । तम | ३।१।१।७ | तद्वा एतत्क्रियते । यद्देवा | ७।३।२।६ |
| तद्वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा । एते | २।६।१।७ | तद्वा एतत्क्रियते । यद्देवा | ७।५।२।५ |
| तद्वस्त्येव श्रमनस्त्येव रूप | २।३।१।३२ | तद्वा एतत्क्रियते । यद्देवा | ८।५।१।७ |
| तद्वा अग्नय इति क्रियते | १।७।३।८ | तद्वा एतत्क्रियते । यद्देवा | ९।२।३।४ |
| तद्वा अद अग्नेय्यामिष्टा | ११।२।३।७ | तद्वा एतत् । त्रय सद | १०।३।३।१४ |
| तद्वा अदो नतोपावन | ११।१।७।१ | तद्वा एतत् । दशमेऽद्वन्त० | ४।६।२।७ |
| तद्वा अन्यतर एव विमुक्त | ३।४।१।४ | तद्वा एतत् । मासि माम्येव | २।४।२।७ |
| तद्वा अरण्येऽनूच्ये । वाग्वा | ९।३।२।४ | तद्वा एतत् । वसन्त एव | १।५।३।१४ |
| तद्वा अष्टाचत्वारिंशदिति | ९।३।३।५ | तद्वा एतत्सद परिधयन्ति | ४।६।७।९ |
| तद्वा अस्यैतत् । अतिच्छ० | ११।७।१।२२ | तद्वा एतत् । समान एव | १।८।३।६ |

| ऋषिङ्कामतीकः | अ० अ० अ० अ० |
|----------------------------------|-------------|
| तद्वा एतत् । समानमेव | १।६।४।८ |
| तद्वा एतत् । सहस्रं वाच | ४।६।७।३ |
| तद्वा एतदक्षरमार्गि | १४ ६।८।११ |
| तद्वा एतदुभयं देवेष्वासीत् | ३।२।४।७ |
| तद्वा एतदेकं कुर्वेन्द्वयं | ३।५।२।१० |
| तद्वा एतदेको द्वाभ्यां | ३।८।४।१० |
| तद्वा एतदेव पुरश्चरणम् | ४।६।७।२१ |
| तद्वा एतदेव वार्त्तमम् | १।६।४।१३ |
| तद्वा एतदेवैतासां नाम | २।२।४।१४ |
| तद्वा एतद् वृषा साम | ४।६।७।११ |
| तद्वा एतन्मनोऽध्वर्युः | ४।६।७।२० |
| तद्वा एतां रात्रिम् । देवे० | १।६।४।१७ |
| तद्वा एतां रात्रिम् । मित्रो | २।४।४।१९ |
| तद्वा एतमेतदमे देवानामज० | २।२।४।२ |
| तद्वा एष एष मृत्युः । य एष | २।३।३।७ |
| तद्वा एष एवेन्द्रः । य एष | १।६।४।१८ |
| तद्वा एष एवेन्द्रः । यदादव० | २।३।२।२ |
| तद्विधात् । सर्वालोक्ताना० | १२।३।४।११ |
| तद्विद्वांसः श्रोत्रियाः | १४।९।२।१५ |
| तद्विष्णुः प्रथमः प्राप | १४।१।१।५ |
| तद्वेतदेव सद्विष्यस्तमिव | २।२।१।१३ |
| तद्वैव सत्त इतो घृत्तः | १।६।३।१६ |
| तद्वै चतुरवचं भवति । इदं वा | १।७।२।७ |
| तद्वै तसस्त्यम्बले प्रतिष्ठितम् | १।४।८।१।५।६ |
| तद्वै तदेतदेव तदास | १।४।८।५।१ |
| तद्वै त्रयसिंहादिति । अन्तो | ९।३।३।३ |
| तद्वै देवाः शुश्रुवुः । अनाशके० | २।४।३।३ |
| तद्वै देवाः शुश्रुवुः । विमजन्ते | १।२।५।३ |
| तद्वै देवा अस्पृण्वत । त एता० | ३।४।४।४ |

| ऋषिङ्कामतीकः | अ० अ० अ० अ० |
|-----------------------------------|-------------|
| तद्वै देवा अस्पृण्वत । त एतैः | ३।५।४।३ |
| तद्वै देवा अस्पृण्वत । त एतैः | ३।६।१।९ |
| तद्वै देवा अस्पृण्वत । तेऽस्यै० | ३।९।४।१३ |
| तद्वै देवा त जजुः । त ऋतवो | १।६।१।२ |
| तद्वै देवानामाग आस | १।६।१।४ |
| तद्वै देवानामाग आस | १।७।४।२ |
| तद्वै द्वे वेदी द्वावमी भवतः | २।५।२।५ |
| तद्वै न क्षिप्रकुर्यात् । नेत्रव० | १३।८।१।२ |
| तद्वै न महस्कुर्यात् । नेत्र० | १३।८।१।२८ |
| तद्वै न महस्कुर्यात् । नेत्र० | १३।८।३।११ |
| तद्वै नवनीतं भवति । गृवं वै | ३।१।३।८ |
| तद्वै पश्येव अक्षयन्ति । होता | २।४।४।२५ |
| तद्वै पय एवात्रम् । एतज्जमे | २।५।१।६ |
| तद्वै पौर्णमास्यामेव । असौ | ६।२।२।१७ |
| तद्वै फाल्गुन्यामेव । एषा | ६।२।२।१८ |
| तद्वै गहुलं स्तृणीयादित्याहुः | १।३।३।१० |
| तद्वै योनिः परिश्रितः | ७।१।१।१६ |
| तद्वै सोमेति द्वे अक्षरे | १०।४।१।१७ |
| तद्वैव दधीत । अग्निर्वा एतासां | २।१।२।५ |
| तद्वैव दधीत । य वा एतस्य | २।१।२।१० |
| तद्वै वसन्त एवाभ्यारभेत | १३।४।१।३ |
| तद्वै पद् द्वादसेत्येव हविर्यज्ञे | ४।३।४।३ |
| तद्वै सहस्रयोजन इति | ९।१।१।२८ |
| तन्नूत्मे शाकनायेति | ३।४।२।११ |
| तन्त्रायिण इति । एष वै | १।४।२।२।२२ |
| तन्वा जुषामहे देव वनस्पते | ३।६।४।७ |
| तन्देवा अग्न्यग्न्यन्त | १।४।१।१।१२ |
| तन्देवाः सर्वस्मिन्विजितेऽ० | ४।३।३।१६ |
| तन्न दद्भिः सादेत् । नेत्र | १।७।४।१६ |

| कण्डिकाप्रतीक | अ०-अ०-प्रा०-क० | कण्डिकाप्रतीक | अ०-अ०-प्रा०-क० |
|-----------------------------------|----------------|--------------------------------|----------------|
| तत्र पूर्वेण परिद्वरेत् । पूर्वेण | १।७।४।१२ | तमन्तः पवित्राद्गृह्णाति | ४।१।२।३ |
| तत्र मध्यमये प्रवृञ्ज्यात् | १।४।२।१४४ | तमन्तर्वेद्यम्यववर्त्य युनक्ति | ५।४।३।५ |
| तत्र सर्व इवाभिप्रपेद्येत् | ३।१।१।९ | तमन्वेष्टु दधिरे । अग्निर्देव | १।६।४।२ |
| तत्र सर्वस्मा अनुद्रूयात् | १।४।१।१।२६ | तमपोऽवकमयन्वाचयति | ४।४।५।११ |
| तत्र सर्वस्मा इव प्रवृ० | १।४।२।२।४६ | तमब्रवीत् । उप मेहि प्रति | ८।४।१।७ |
| तत्र साम्युद्रासयेत् । सामि | २।३।३।४ | तमब्रवीत् । उप मेहि प्रति | ८।७।३।१६ |
| तत्र स्तुयमानेऽशनयेत् । न ह | ४।२।४।६ | तमब्रवीत् । कस्मिन्सर्वोप | ६।१।२।१४ |
| तन्निदधाति । बसोः पवि० | १।७।१।१।४ | तमब्रवीत्पशुपतिरसीति | ६।१।३।१२ |
| तन्निदधाति । धौषदिति | १०।४।१।३ | तमब्रवीत्सर्वोऽसीति | ६।१।३।११ |
| तन्वेवानवकलसम् । यो मनु० | १।१।१।१।८ | तमब्रवीदशनिरसीति | ६।१।३।१४ |
| तन्वेवानवकलसम् । यो मनु० | २।१।४।२ | तमब्रवीदीशानोऽसीति | ६।१।३।१७ |
| तन्मध्य औदुम्बरी मिनोति | ३।६।१।२ | तमब्रवीदुदोऽसीति | ६।१।३।१३ |
| तन्मध्येऽग्निं समादधाति | २।६।१।११ | तमब्रवीद्ब्रह्मोऽसीति | ६।१।३।१५ |
| तन्मनो पाचमसृजत | १०।५।३।४ | तमब्रवीद्ब्रह्मोऽसीति | ६।१।३।१० |
| तन्मुहूर्तं धारयित्वा मुमहृशति | १।८।३।१७ | तमब्रवीन्नाह्णान्देवोऽसीति | ६।१।३।१६ |
| तपः स्विष्टकृत् । स यो | १।१।२।७।१८ | तमभि निदधाति । आरवा | १।३।४।१२ |
| तपसा वै लोकं जयन्ति | ३।४।४।२७ | तममिमिमीते । मन्ति वा | ३।९।४।८ |
| तपोजा इति । अग्नेर्वै | ५।३।५।१७ | तममिमृशति । यचे सोम | ३।९।४।१२ |
| तपो नवदश इति । य एव | ८।४।१।१४ | तमभ्यनक्ति । दध्ना मधुना | ७।५।१।३ |
| तप्तमाचामदि । तपस्यनु० | १।४।१।१।२९ | तमभ्यनक्ति । शीर्षतोऽम | ३।१।३।९ |
| तम एव यस्यायतनम् | १।४।६।९।१६ | तमसस्य पद आपचे | २।१।४।२४ |
| तमग्निरब्रवीत् । उपाहमाया० | ६।२।३।२ | तमसस्योपरिष्टात्पशुहृहति | ६।४।४।७ |
| तमग्नीदमिनिदधाति । अररो | १।२।४।१८ | तमशानवधापयति । याजिन | ५।१।४।१५ |
| तमग्निरमिमृशति । सकृद्वा | १।२।२।११ | तमशानवधापयति । याजिन | ५।१।५।२७ |
| तमध्वर्युर्महेण गृह्णाति | १०।१।१।५ | तमसावादित्योऽनवीत | ६।२।३।६ |
| तमध्वर्युर्महेण गृह्णाति | १०।४।१।१३ | तमसो मा ज्योतिर्गमयेति | १।४।१।३२ |
| तमनवरूपेवामन्यत | १०।६।५।८ | तमाच्छिनत्ति । इमे त्वोर्जे | १।७।१।२ |
| तमनस्योपरिष्टात्पशुहृहति | ६।४।४।१५ | तमाजगाम । मुक्ता सार्जयो | २।४।४।४ |
| तमनुविषोचरेण परिग्रहेण | १।२।५।११ | तमातिष्ठति । अन्यथाप्ये त्वा | ५।४।३।७ |

कण्डिकाप्रतीकः

स० अ० ब्रा० क०

तमादत्ते । देवस्य त्वा सवितुः १।२।४।४
 तमादत्ते । देवस्य त्वा सवितुः ३।२।४।३
 तमा वेदेः संस्तृणाति १।२।२।२४
 तमिन्द्राग्नी अनु समतनुताम् ३।६।२।१३
 तमिन्द्राग्नी अनु समतनुताम् ४।३।१।२
 तमिन्द्रो जघान । स हतः पूतिः १।१।३।५
 तमुच्छ्रयति । उच्छ्रयस्व ३।२।१।३५
 तमुचरायेंनाग्नेः । अन्तरेण ७।३।२।११
 तमु त्वा दध्यध्वं ऋषिः ६।४।२।३
 तमु त्वा पाध्यो वृषा ६।४।२।४
 तमुहीष्य समिन्ये । इह बध्म २।२।२।१६
 तमुपरिनामि विभर्ति । असौ ६।७।१।८
 तमुपरिष्ठाच्छीर्णो निदधाति ५।४।१।१४
 तमुपांशुसवनेन मेक्षयति ४।३।५।१६
 तमुमयेषां श्रीहिमवाणां गृह्णाति ५।५।५।९
 तमुग्निर्हविस्तुं दधे । वीति० १।४।१।११
 तमेवं वेदानुवचनेन विवि० १।४।७।२।२५
 तमेवं संवत्सर एन च्छिनुयात् ६।१।३।२०
 तमेतमग्निरित्यध्वर्यव १०।५।२।२०
 तमेतया विहृत्वा । इत ऊर्ध्वं ६।७।२।९
 तमेतामिदेवताभिरनु समसर्पत् ५।४।५।२
 तमेते चत्वार ऋत्विजः १३।४।१।६
 तमेवं मृत्वा समुद्रमभववज्ज० १।८।१।५
 तमेवमभिगृह्य जपति ३।६।४।५
 तम्प्राची दिक् । प्राणेत्यनुपा० ११।८।३।६
 तमा प्रातःसवनमतन्वत ४।३।२।८
 तयार्चञ्जुग्यंश्चचार प्रजा० १।८।१।१०
 तयैव तृतीयसवनगतन्वत ४।३।२।९
 तयोः शयानयोः । अश्वं १३।५।२।३

कण्डिकाप्रतीकः

स० अ० ब्रा० क०

तयोः समवृत्तयोः । छदिरधि ३।५।३।९
 तयोरचैवान्यतरः । आबोऽ० ४।२।१।३
 तयोरचैवान्यतरमनु । आबोऽ० ४।२।१।४
 तयोरन्यतरां कुक्षीमाविच्छेद ३।६।२।१०
 तयोरुभयोरेव ऋरीराण्या० २।५।२।११
 तयोरुभयोरेव शमीपलाशा० २।५।२।१२
 तयोर्बा एतयोः । उभयोरेत० १०।५।२।५
 तयोर्बा एतयोः । पञ्चदश० १०।१।२।८
 तर्हि विदेधो मायव आस १।४।१।१४
 तस्मा उ हैतदुवाच ११।४।१।१०
 तस्मा उ हैतदुवाच ११।८।४।६
 तस्मा उ हैतदुवाच १२।३।४।३
 तस्मा ॥ हैतदुवाच १४।८।१३।३
 तस्मा एतस्मै प्राणाय १०।४।१।८
 तस्मा एतस्मै सप्तदशाय १०।४।१।९
 तस्मास्त्रयमे प्रयाज इष्टे १।५।४।१२
 तस्मादप्येतदपिणाभ्यनुक्तम् १२।५।२।४
 तस्मादाग्नेयमशिष्टोम आळ० ४।२।५।१४
 तस्मादाह । देव सवितः ५।१।१।१६
 तस्मादाहुः । एतमेवाहुतिं २।२।१।९
 तस्मादाहुः । मनो देवा मनु० ३।४।२।६
 तस्मादु कुर्वन्त्येवर्चा हविर्घाने० ४।६।७।७
 तस्मादु कुर्वन्त्येव सदसि ४।६।७।८
 तस्मादु सप्तभिः सप्तभिः १०।२।४।७
 तस्मादु ह न प्रतीचीनशिराः ३।१।१।७
 तस्मादु ह न स्वा ऋतीयेरन् ३।४।२।३
 तस्मादेतस्य यज्ञस्य १२।८।२।६
 तस्मादेतदपिणाभ्यनुक्तम् १।७।४।४
 तस्मादेतदपिणाभ्यनुक्तम् २।३।३।६

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०आ०इ० |
|---------------------------------|-----------|
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | २।५।१।४ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | ३।४।२।७ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | ४।१।३।१७ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | ४।५।३।३ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | १०।२।२।२ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | १०।५।३।२ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | ११।१।६।१० |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | १२।७।३।४ |
| तस्मादेतद्विणिग्भ्यनूक्तम् | १४।१।१।२५ |
| तस्मादेवविस्वम्भ्याम् | १०।५।२।१२ |
| तस्मादीक्षिता राजान गोपा० | ३।६।२।१४ |
| तस्माद् ब्रह्मचारिण आचार्य | ३।६।२।१५ |
| तस्माद्यदि यूपैकादशिनी | ३।९।१।२२ |
| तस्माद्यद्यर्धर्षश्च सत्सेव | ४।३।२।६ |
| तस्मान्निवृत्तदक्षिणा न | ३।५।१।२५ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । उदक् | ३।५।१।३ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । उदक् | ३।५।१।६ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । दक्षि० | ३।५।१।२ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । दक्षि० | ३।५।१।५ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । प्राग् | ३।५।१।८ |
| तस्मिन्नुत्तुमुत्त नीलमाहु | १४।७।२।१२ |
| तस्मिन्नुत्तुमुत्त नीलमाहु | ९।४।३।६ |
| तस्मिन्वाचयति । नमो | ३।३।४।२४ |
| तस्मै क पुनाराज्यमादधीत | २।२।३।५ |
| तस्मै कमागनी उपतिष्ठेत् | २।३।४।३ |
| तस्मै कमेकादशिन्या यनेत् | ३।९।१।५ |
| तस्मै तावन्मात्रीर्या भूयसीर्वा | ५।४।३।१२ |
| तस्मै द स पूर्वदि देवा | १।६।३।१२ |
| तस्य गार्हपत्य एवाय | ७।१।२।१२ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०आ०इ० |
|-----------------------------|-----------|
| तस्य चक्षुर्वैदव्यवसमिति | ८।१।२।२ |
| तस्य तपस्तेषानस्य । एभ्यो | १०।४।४।२ |
| तस्य ते पवित्रपत इति | ३।१।३।२३ |
| तस्य त्रयोविंशतिर्दीक्षा | १३।६।१।२ |
| तस्य त्रिवृद्धिष्णवमानम् | १३।५।३।१० |
| तस्य देवा । वायन्मात्रमिव | ४।१।३।८ |
| तस्य द्वादश प्रथमगर्भा | ४।६।१।११ |
| तस्य द्वादश प्रथमगर्भा | ५।४।५।२० |
| तस्य नपुमको गौर्दक्षिणा | ५।५।४।३५ |
| तस्य परस्तादेवाग्नेरूपश्च | ४।३।९।६ |
| तस्य परिचक्षा । यस्यै वै | २।४।३।९ |
| तस्य पुराणोऽनन्वान्दक्षि० | १३।८।४।१० |
| तस्य प्रथमजो गौर्दक्षिणा | २।४।३।१३ |
| तस्य प्रयाजा एव प्रात स० | ११।७।२।३ |
| तस्य मष्टिवाहनोऽध्वर्यो | ५।२।४।९ |
| तस्य प्राजो भौवायत इति | ८।१।१।५ |
| तस्य प्रात सवनम् । अग्नि० | १३।५।१।८ |
| तस्य मन एव प्रतिष्ठा | ६।७।१।२१ |
| तस्य मनो वैधर्म्यमिति | ८।१।१।८ |
| तस्य यदधर कपालम् | ७।५।१।७ |
| तस्य यज्ञिसातम् । तेन पितृ० | ३।७।१।२५ |
| तस्य यानि शुक्लानि च | १।१।४।२ |
| तस्य यो योनिराशय आस | ५।५।५।६ |
| तस्य रथन्तर पृष्ठ भवति | ५।५।३।५ |
| तस्य रुक्मः पुरस्ताद्भवति | ३।५।१।२० |
| तस्य लोगान्येव श्रवणाणि | १२।९।१।२ |
| तस्य वा एतस्य ग्रहस्य | ४।१।१।२६ |
| तस्य वा एतस्य ज्योतिष्टो० | १०।१।२।७ |
| तस्य वा एतस्य पशो | ९।५।१।४१ |

| कण्डिकाप्रतीकः | वा०ख०पा०ऊ० | कण्डिनाप्रतीकः | ख०ख०पा०ऊ० |
|---------------------------------|------------|---------------------------------|-------------|
| तस्य वा एतस्य पुरुषस्य | १४।६।१।५ | तस्य हैतस्य पुरुषस्य | १४।५।३।१० |
| तस्य वा एतस्य पुरुषस्य | १४।७।१।९ | तस्य हैतस्य साम्नो यः | १४।४।१।२७ |
| तस्य वा एतस्य ब्रह्मयज्ञस्य | ११।५।६।९ | तस्य हैतस्य साम्नो यः | १४।४।१।२८ |
| तस्य वा एतस्य यजुषः | १०।३।५।१२ | तस्य हैतस्य साम्नो यः | १४।४।१।२९ |
| तस्य वा एतस्य वाससः | ३।१।२।१८ | तस्य हैतस्य । हृदयस्याग्र० | १४।७।२।३ |
| तस्य वा एतस्य संवत्सरस्य | १०।४।२।२ | तस्या पवित्रं करोति । वसोः | १।७।१।९ |
| तस्य वा एतस्याग्निहोत्रस्यो० | १२।५।१।६ | तस्या मिथुनमस्ति । योषा | २।५।१।१६ |
| तस्य वा एतस्याग्नौः । वागे० | १०।५।१।१ | तस्या अग्निस्त्राघमादत्त | ११।४।३।३ |
| तस्य वा एतस्यान्याधेयस्य | २२।२।१९ | तस्या अग्निरेव मुखम् | १४।८।१।५।१२ |
| तस्य वा एतस्यानसः । अग्नि० | १।१।२।९ | तस्या अस्त्येवाग्निवम् | १०।१।३।९ |
| तस्य विषा चतुर्विंशः | १३।५।४।२० | तस्या आहुत् । यत्र होता | ५।१।३।४ |
| तस्य विराजो संयज्ये | २।२।१।२० | तस्या उपस्थानम् | १४।८।१।५।१० |
| तस्य शिर एवाहवनीयः | ७।१।२।१३ | तस्या एतस्या अपादां | ६।५।३।१ |
| तस्य शिरो गायत्र्यः । आत्मा | ८।६।२।३ | तस्याक्षिप्यमेव तेजोऽसवत् | १२।७।१।२ |
| तस्य शिरो गायत्र्यः । ता यज्ञा० | ८।६।२।६ | तस्याग्निरेवाग्निर्भवति | १४।९।१।१७ |
| तस्य शिरो निदधति | ४।६।८।४ | तस्याग्निष्टुदग्निष्टोमः प्रथम० | १३।७।१।३ |
| तस्य शिरो निदधति | ४।६।८।९ | तस्याग्निष्टोमः प्रथममहर्षिर्व० | १३।९।१।८ |
| तस्य शिरो निदधति | ४।६।८।१४ | तस्याप एव प्रतिष्ठा | ६।७।१।१७ |
| तस्य श्रौत्रं सौवमिति | ८।१।२।५ | तस्यामाधातयति । तिष्ठति | ३।५।२।११ |
| तस्य सप्तदश सामिधेन्यः | ६।२।२।८ | तस्यायमेव लोकः प्रतिष्ठा | ७।१।२।७ |
| तस्य सप्तदश सामिधेन्यो | ३।१।३।६ | तस्यायमेव लोकः प्रथम० | १३।६।१।१० |
| तस्य सर्पिरासेचनं कृत्वा | २।१।४।५ | तस्यायमेव लोको गार्हपत्य० | १२।४।१।३ |
| तस्य सोमपानमेवैकं मुखमास | १।६।३।२ | तस्यावाद् मेघः पपात | १।८।३।१२ |
| तस्य सोमयानमेवैकं मुखमास | ५।५।४।३ | तस्यावृत् । उपक्रिरन्त्युत्तर० | २।५।४।२ |
| तस्य ह प्रजापतेः । अर्थ० | १०।१।३।२ | तस्यावृत् । नोपक्रिरन्त्युत्तर० | २।६।३।३ |
| तस्य ह यो निरुक्तमावि० | १०।३।५।१६ | तस्यावृत् । या स्वयम्भवीर्णा० | ५।३।२।५ |
| तस्य द्विरण्यं दक्षिणा | २।२।३।२८ | तस्यावृत् । सैव स्तीर्णा | २।५।३।५ |
| तस्य द्विरण्यं दक्षिणा | ४।५।१।१५ | तस्या वेदिरुपस्थः । लोमानि | १४।९।४।३ |
| तस्य हैके । अग्निष्टोमसाम | १३।५।१।२ | तस्याध्व वेतो दक्षिणा | २।६।३।९ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का० अ० वा० प० | कण्डिकाप्रतीकः | का० अ० वा० प० |
|-------------------------------|---------------|-------------------------------|---------------|
| तस्यासावेव चोर्जुहः | १।३।२।४ | तस्यैवाचः पृथिवी शरीरम् | १।४।३।२।८ |
| तस्यासावेव ध्रुव आयुः | ४।२।३।३ | तस्यैवाग्निनेन चरन्ति | ९।५।१।५७ |
| तस्याहोरात्रे एव प्रतिष्ठा | ६।७।१।१९ | तस्यैवा प्रतिष्ठा । य एष | १०।४।२।२८ |
| तस्येयमेव जुहः । इयमुप० | १।३।२।२ | तस्यैवा प्रतिष्ठा । य एष | १०।४।२।३१ |
| तस्यैकविंशं प्रातःसवनम् | ५।५।३।३ | तस्यै सप्तदश सामिधेन्यो | ११।१।५।९ |
| तस्यैकविंशतिः सामिधेन्यः | ६।२।२।३ | तस्यै सप्तदश सामिधेन्यो | १३।४।१।१५ |
| तस्यै गन्धर्वाः । वेदानेव | ३।२।४।५ | तस्यै सप्तदश सामिधेन्यो | १३।४।२।१० |
| तस्यै गौरेवात्मा । ऊच | ९।३।३।१६ | तस्यै सप्तदशैव सामिधेन्यो | १३।४।२।१३ |
| तस्यैतस्य परस्तात्कामप्रो | १०।२।६।४ | तस्यै स्वनानुलयति | ६।५।२।१८ |
| तस्यैतस्य मूर्तस्य । एतस्य | १४।५।३।३ | तस्योन्नेताश्रावयति | ४।४।३।८ |
| तस्यैतस्य मूर्तस्य । एतस्य | १४।५।३।७ | तस्योपपरासुस्य । ज्याम० | १४।१।१।९ |
| तस्यैतस्यामूर्तस्य । एतस्या० | १४।५।३।५ | तां चतुर्मितादधे । चतुर० | ६।३।१।४३ |
| तस्यैतस्यामूर्तस्य । एतस्या० | १४।५।३।९ | तां तिष्ठन्प्रवृणक्ति इमे वै | ६।६।२।१ |
| तस्यैते पशवो भवन्ति | १३।५।१।१३ | तां दर्भैः षावयति | ५।५।४।२२ |
| तस्यैते पुरस्तादक्षितार | १३।४।२।५ | तां देवाः । अक्षुरेभ्योऽन्त० | ३।२।१।२३ |
| तस्यैते प्रतिष्ठे । रुक्मश्च | १०।५।४।१५ | तां न रिक्तामवेक्षेत | ७।१।१।४० |
| तस्यै त्रीणि शतमानानि | ५।५।५।१६ | तां नेष्टा वाचयति । तोतो | ३।३।१।११ |
| तस्यै त्रीणि हवींषि भवन्ति | ११।१।५।५ | तां परिगृह्य निदधाति | ६।५।२।२१ |
| तस्यै धेनुर्दक्षिणा । धेनुरिव | २।२।१।२१ | तां परिगृह्य निदधाति | ६।५।४।१४ |
| तस्यै पञ्चदश सामिधेन्यो | ११।४।३।१९ | तां परिचासयति । तां यशु० | ३।८।२।१८ |
| तस्यै पञ्चदश सामिधेन्यो | १३।४।१।१३ | तां परिहरते । ऊर्गस्या० | ३।२।१।१४ |
| तस्यै पञ्चदश सामिधेन्यो | १३।४।२।७ | तां प्रतिपराश्रयावेष्ट्या० | ३।२।१।२८ |
| तस्यै प्रयाजेषु तायमानेषु | १३।४।२।८ | तां प्रतिपार्ष्टि । देवा ह वै | १।२।५।१८ |
| तस्यै प्रयाजेषु तायमानेषु | १३।४।२।११ | तां मयमेऽदन्तयेत् । बाग्वा | ४।५।८।४ |
| तस्यै प्रयाजेषु तायमानेषु | १३।४।२।१४ | तां प्राचीं तिरश्चीमुपदधाति | ८।५।१।१३ |
| तस्यै यजमान एवात्मा | ९।३।३।१७ | तां प्रादेशमात्रीमेवोर्ध्वा | ६।५।२।८ |
| तस्यै वा एतस्यै वसोर्ध्वास्यै | ९।३।३।१५ | तां यथैवादो देवाः । प्राहि० | ३।२।१।१० |
| तस्यै वा एतस्यै पट्विंश० | १०।५।४।८ | तां यथैवादो देवाः । प्राहि० | ३।२।१।२१ |
| तस्यै बाहुमात्येति | ८।१।२।८ | तां यथैवादो देवाः । व्यह० | ३।२।१।२२ |

कण्डिकाप्रतीकः

का०ख०मा०क०

कण्डिकाप्रतीक

का०ख०मा०क०

तां यदामिः सन्तपति ६।६।२।८
 तां यदचिरारोहति ६।६।२।१०
 तां वा अतिरिक्तां जुहोति १।९।२।३०
 तां वा अनुष्टुभा जुहोति ३।१।४।२१
 तां वा अनुष्टुभा जुहोति ३।१।४।२३
 तां वा अष्टमीमनुव्यात् १।४।१।३६
 तां वा उचानामिष बध्नाति ३।२।१।२९
 तां वा एता परिधयन्ति ३।१।१।८
 तां वा एताम् । एका सती० ६।३।१।३
 तां वा एताम् । यजमाना० १२।५।२।१३
 तां वाचयति । प्रघासिनो २।५।२।२१
 तां वाचयति । नमस्त आता० ३।८।२।२
 तां वै पच्छोऽन्वाह ११।५।४।१५
 तां वै पूर्णां जुहोति । सर्वं वै २।२।१।३
 तां वै प्रजापतिनोपदधाति ७।४।२।५
 तां वै प्राश्नन्त्येव । नाऽमी १।८।१।३८
 तां वै युगमात्री वा सर्वतः ३।५।१।२४
 तां वै युगशम्येन विमिमीते ३।५।१।२४
 तां सन्ततां जुहोति । एतद्वै ६।३।१।५
 तां सन्ततां जुहोति । सन्तता ६।३।१।१०
 तां सविजुर्वरेण्यस्य ९।२।३।३८
 तां सव्ये पाणौ कृत्वा १।४।१।२।८
 तां सावित्रेण यजुषोद्वपति ६।५।४।११
 तां ह मनुष्याच फासीति १।८।१।९
 तां हायं आत्वाभिपरोवाह ११।५।१।६
 तां हेके बध्नार्थं उपदधति ८।६।३।११
 तां हेके द्विस्तर्नां कुर्वन्ति ६।५।२।१९
 तां हेके । सावित्रीमनुष्टु० १४।८।१।५८
 तां हेके हिरण्यमी कुर्वन्ति ६।३।१।४२

तां हेताश्रोतमो राहूगणः ११।४।३।२०
 तां हेतमेके । सावित्री० ११।५।४।१३
 तां होचतुः कासीति १।८।१।८
 तां होतानुमन्त्रयते । एषा १।८।२।४
 ताः पञ्चदश सामिधेन्यः १।३।५।७
 ताः पञ्चदश सामिधेन्यः ११।२।१।५
 ताः पञ्चदशाहुतयः ११।२।१।६
 ताः प्रजापतिमनुबन् । यद्वै ९।१।२।२२
 ताः प्रयच्छति । पातैर्न ५।३।५।३०
 ताः पट् सम्पद्यन्ते । पटुतवः ६।४।२।१०
 ताः पट् सम्पद्यन्ते । पट्वा ३।४।४।१८
 ताः सर्वाः पश्चमिर्न चत्वारि० १०।४।३।१९
 ताः सव्ये पाणौ कृत्वा १।१।३।७
 ताः सहसायुषो जज्ञिरे ११।१।६।१५
 ताः सार्वभौतुः परे पात्रे सम० ५।३।४।२७
 ता अग्नेण भेज्रावरुणस्य ५।३।४।२८
 ता अर्चन्त्यः धाम्यन्तधेरुः ११।१।६।१६
 ता अपादस्यै येळयोपदधाति ८।५।४।१
 ता अस्य सूतदोहस इति ८।७।३।२१
 ता आहृत्य जघनेन गार्हप० ३।९।२।१३
 ता उत्तरवेदो निवपति ७।३।१।२८
 ता उत्तरेणाहवनीयं प्रण० १।१।१।२०
 ता उत्तिष्ठ्योत्तरेण गार्हप० १।१।१।१८
 ता उपसृजति । आपो हि ६।५।१।२
 ता उमद्यः । षोडश सम्पद्यन्ते ७।२।२।१७
 ता उमद्य एकविंशतिः ७।१।१।३४
 ता उमावेव सादयित्वा २।५।२।४२
 ता उवै तिस एव ८।५।४।१२
 ता उवैपथेव । यजुषान्यासु ८।५।४।११

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० प्रा० अ० | कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० प्रा० अ० |
|---------------------------------|----------------|-----------------------------|----------------|
| ता उ वै षडेव । यदि | ८।५।४।१० | ता नामौ प्रकियेयुः । नेदु० | ४।४।३।१२ |
| ता उ ह चरकाः । नानैव | ४।१।२।१९ | ता नाना मन्त्राम्यां निवप० | ७।३।१।१० |
| ता उ हैता देवता ऊचुः | १।६।३।१८ | ता नान्तरेण सद्येयुः | १।१।१।२१ |
| ता एकविंशतिराहुतयः | ११।२।६।१० | तानि ज्ञातुन्दधिरै । अयं वै | १।४।४।३।३२ |
| ता एकविंशतिराहुतयः | ११।२।६।११ | तानि दक्षिणोपःतृणाति | २।४।२।१८ |
| ता एकादशाहुतयः | ११।१।६।२६ | तानि दश भवन्ति । दशा० | ६।८।२।१२ |
| ता एता अष्टलयः । ताः स० | ७।५।२।६२ | तानि नव भवन्ति । नव | ६।८।२।१० |
| ता एता ऊर्ध्वं अस्य | ६।२।१।३१ | तानिन्द्र उपमन्त्रयाश्चक्रे | ४।३।३।७ |
| ता एता एकव्याख्यानाः | ६।२।१।२७ | तानि पशुश्रवणे श्रपयन्ति | ४।५।२।७ |
| ता एता एकव्याख्यानाः | ६।२।१।३३ | तानि मृग्युः शमो भूत्वोप० | १।४।४।३।३१ |
| ता एता एकव्याख्यानाः | ६।७।४।६ | तानि यदा गृह्णाति । अथ | १।४।५।१।१८ |
| ता एता एकव्याख्यानाः | ७।२।४।२८ | तानि वा अनिद्वयमानानि | ४।१।२।२५ |
| ता एता एकादशदधाति | ६।६।३।१२ | तानि वा अनिद्वयमानानि | ४।१।२।२६ |
| ता एता एतस्यै भवन्ति | ६।५।२।१५ | तानि वा एतानि । एकादश | ५।३।१।१२ |
| ता एता दिशः । ताः सर्वत | ७।१।१।२४ | तानि वा एतानि । चत्वारि | १।१।४।१२ |
| ता एता दिशः । ता रेतःसि० | ८।२।१।८ | तानि वा एतानि । चत्वारि | ८।२।३।१४ |
| ता एता यजुष्कृतयै करोति | ६।५।३।६ | तानि वा एतानि । चाहु० | ११।५।२।७ |
| ता एता यजुष्मत्य इष्टकाः | ७।३।१।२५ | तानि वा एतानि । चाहु० | ११।५।२।१० |
| ता एता यजुष्मत्य इष्टकाः | ७।३।१।२४ | तानि वा एतानि । छन्दोभ्य | १।३।२।१६ |
| ता एतेन हविषा प्रजापतिरभि० | २।५।२।३ | तानि वा एतानि । श्रीणि | ८।३।३।८ |
| ता एतेषु पात्रेषु ग्यानयति | ५।३।५।१९ | तानि वा एतानि । नव समिष्ट० | ४।४।४।१ |
| ता दश दशोपदधाति । दश | ८।१।१।२ | तानि वा एतानि । पञ्चाश० | ११।१।६।५ |
| ता दश दशोपदधाति । द० | ८।१।२।११ | तानि वा एतानि । यज्ञा० | १२।२।३।१२ |
| ता दश दशोपदधाति । दशा० | ८।५।२।२ | तानि वा एतानि । श्लक्ष्णा० | ४।१।५।१९ |
| ता द्वादश द्वादशोपदधाति | ८।३।३।३ | तानि वा एतानि । सप्त | ३।९।२।१७ |
| ता न दक्षिः सादेयुः | ४।४।३।११ | तानि वा एतानि । सप्त | १०।३।१।९ |
| तानपराहे षण्णशसयासक० | ११।१।४।२ | तानि वै द्वादश भवन्ति | ५।३।५।५ |
| तानप्रवीत् । उप मेत प्रति | ८।३।१।६ | तानि वै द्वादश भवन्ति | ५।५।२।२ |
| ता न व्यूहेत् । नेदुत्तुन्यूहा० | ८।७।१।११ | तानि वै नाना प्रस्तावानि | ८।७।४।६ |

| वर्णिकाप्रतीक | का०ख०ग्रा०क० | वर्णिकप्रतीक | का०ख०ग्रा०क० |
|-------------------------------|--------------|-------------------------------|--------------|
| तानि वै पञ्च जुहोति | ३।१।४।५ | तान्येतान्यष्टावभिरूपाणि | ६।१।३।१८ |
| तानि वै गूयांसि भवन्ति | ६।६।१।१३ | तान्येतान्यष्टौ सावित्राणि | ६।३।१।२१ |
| तानि वै प्रतिपुरुषम् । याव० | २।५।२।२२ | तान्वा एतान् । पञ्च ब्रह्मन् | ४।३।३।४ |
| तानि वंशे प्रवध्य । दक्षि० | ९।१।२।२५ | तान्वा एतान् । पञ्चर्त्विजो | ४।२।५।४ |
| तानि संवत्सरे । दश च | १०।४।२।२० | तान्वा एतान् । पञ्च याजये० | ५।१।२।९ |
| सानुपनिबपति । यत्ते सो० | ४।१।१।५ | तान्वा एतान् । पञ्च सम्गा० | २।१।१।१२ |
| सानु हामिर्निचक्रमे । तैः सं० | २।३।४।२ | तान्वा एतान्यष्ट सम्भारा० | १४।१।२।१४ |
| सानु हैक उत्तरे ऋहे | ४।५।४।१४ | तान्वायुरमवीत् । उपहृमा० | ६।२।३।४ |
| तानेतयानुवाक्ययान्वयदत् | ११।४।३।६ | तान्वै दक्ष दद्यालमते | १३।६।२।३ |
| तानेतया याजयथा । परस्ता० | ११।४।३।७ | तान्वै द्वादश गृहीयात् | ४।३।१।५ |
| तान्कथमाग्नीषीयादिष्याहु | ११।२।२।१४ | तान्वै न सर्वमिवावकाशयेत् | ४।५।६।५ |
| तान्सम्भयोधयन्ति । तेऽप उ० | ३।९।३।१ | तान्वै पृण्ये पडहे गृहीयात् | ४।५।४।१३ |
| तान्सार्धं पात्रा समुत्तास्य | २।६।२।७ | तान्वै प्रातःसवने गृहीयात् | ४।५।४।६ |
| तान्देवाः प्रतिसमैन्धत | ३।६।१।२९ | तान्वै मध्यमेऽह्नालमते | १३।६।२।२ |
| तान्देवाः । सर्वस्मिन्विजि० | ४।२।२।८ | तान्देवदुपजगौ । महाहि० | ११।५।५।८ |
| तान्द्वयोर्मृतकयोरुपनश | २।६।२।१७ | तान्देवैः श्लोकैः पमच्छ | १४।६।९।३० |
| सानुरस्तामपीच उपदधाति | ७।५।२।४ | तान्होवाच । एते वै | १०।६।१।१० |
| तान्मादेशमात्रं विना परिलि० | ३।५।४।५ | तापश्चितमेव । सदससं० | १२।३।३।१० |
| तान्याहुमात्रान्खनेत् । जन्तो | ३।५।४।१४ | ता ब्रह्मणे ददाति । ब्रह्मा | ५।४।५।२२ |
| तान्यत्र निविध्यन्ति | ३।९।१।२५ | ता ब्रह्मेण जुहुयात् । नाम्ना | १२।६।१।३८ |
| तान्यत्रोदीचो नयन्ति | ३।९।१।२४ | तामिरेतं दिशं यन्ति । एषा | ७।२।१।८ |
| तान्यथास्नातमेवावमर्शयति | ३।५।४।१५ | ताभ्यां वै विपर्यासगोति | ६।७।४।१२ |
| तान्यथास्नातमेवोरिकरति | ३।५।४।१० | ताम्यो धग्नीभ्यो जायमा० | १४।१।१।१४ |
| तान्यथापरिलिखितमेव यथा० | ३।५।४।८ | तामगो प्रवृणक्ति । यथैवेन० | ७।१।२।१० |
| सानुभयान्येकादश सम्भ० | ९।५।१।३२ | तामग्नेण । मैत्रावरुणस्य | ५।४।४।२ |
| सानु हामिर्निचक्रमे । तैः सं० | २।२।३।३ | तामग्निम्युञ्जति । सा यदे० | ३।५।१।३५ |
| सानु हैके । दक्षायामेवैता० | ६।६।१।२२ | तामन्तरेण यूपयामि च | ३।८।२।२० |
| सान्वेतानि ज्योतीषि | ८।७।१।२० | तामग्निमृशति । वरुणस्य | ३।३।४।२९ |
| सान्वेतान्यम्योऽन्येन गृही० | ७।५।१।२० | तामवर्जन्ति । सा यद्यगृह० | ४।५।८।११ |

कण्डिकाप्रतीकः का०ख०मा०क०
तामस्तमिते वाचं विसृजते ३।२।२।४
तामागतामभिदधाति १।४।२।१।८
तामादत्ते । देवस्य त्वा ६।३।१।३।८
तामादत्ते । देवस्य त्वा १।४।१।२।७
तामादधाति । द्रवन्नः सर्पिः ६।६।२।१।४
तामुच्छ्रयति । उद्भिं स्त ३।६।१।१।५
तामुत्तरेण हविर्धाने दक्षि ४।५।८।५
तामुत्तरे विवृतीये पर्थस्यति ६।५।२।१।२
तामुहामिरमिदध्यौ । मिथु २।२।४।१।५
तामुर्ध्वामुबृहन् जुहोति ६।३।१।४
तावनुपिञ्चतः । मनस्त आप्या ३।८।२।९
तावपिधाय निष्कामतः ४।२।१।१।८
तावन्नवीद् । उप मेतं प्रति ७।४।१।४०
तावन्नवीद् । उप मेतं प्रति ८।२।१।१।२
तावरुणो जमाह । तावरुण २।५।२।२
तावधिनौ च सरस्वती च १।२।७।१।१।४
तावधिनौ च सरस्वती च १।२।७।३।३
तावस्यैतादिन्द्राग्नी एव ७।४।१।४।३
ता वा अस्यैताः । हिता नाम १।४।६।१।१।४
ता वा अस्यैताः । हिता १।४।७।१।२०
ता वा आज्यहविषो भवन्ति १।९।२।७
ता वा आज्यहविषो भवन्ति ३।४।४।६
ता वा एताः । अनपोद्वा १।१।१।६।३।६
ता वा एताः । अष्टदश ८।४।१।२।७
ता वा एताः । अस्विजामेव ४।३।४।५
ता वा एताः । एकविंशतिरिष्ट ८।५।३।६
ता वा एताः । एकविंश १०।५।४।६
ता वा एताः । एकविंश १०।५।४।९
ता वा एताः । एकविंश १०।५।४।११

कण्डिकाप्रतीकः का०ख०मा०क०
ता वा एताः । एकविंश १०।५।४।१३
ता वा एताः । एकविंश १०।५।४।१९
ता वा एताः । एकादश १।१।१।६।२।५
ता वा एताः । एकादश १।२।२।१।२
ता वा एताः । पञ्चाशियः १।९।१।१७
ता वा एताः । चतस्र ऋतव्या ८।३।२।९
ता वा एताः । चतस्र ऋत ८।३।२।१३
ता वा एताः । चतस्रो दशतो १।३।६।१।३
ता वा एताः । चतुस्त्रिंश ४।५।७।१
ता वा एताः । चतुस्त्रिंश १।२।६।१।३।७
ता वा एताः । चत्वारिंश ८।५।२।१७
ता वा एताः । दश देवता १।१।४।३।१।८
ता वा एताः । दशैष्टका ८।४।२।१।३
ता वा एताः । दशैष्टका ८।६।१।२।२
ता वा एताः । द्वादश वा ५।४।५।२।३
ता वा एताः । द्वादश वा ५।५।५।१।९
ता वा एताः । नव व्याहृतयो १।५।२।५
ता वा एताः । पञ्च देवता ३।२।३।१।२
ता वा एताः । पञ्च देवता १।१।१।६।२०
ता वा एताः । पञ्च व्याह १।५।२।१।६
ता वा एताः । प्रजापतेरपि १।१।१।६।१।४
ता वा एताः । षड्वाहुतयो ४।४।५।१।८
ता वा एताः । पडिष्टका १०।१।४।८
ता वा एताः । षट् विम २।२।३।२।६
ता वा एताः । षोडशाहु १।१।१।६।३।६
ता वा एताः । सप्तदशापः ५।३।४।२।२
ता वा एताः । सप्तदशैष्टका ८।४।३।२०
ता वा एता देव्यः । दिशो ९।५।१।३।९
ता वा एता नव सप्तयः ६।१।१।१।४

कण्डिकप्रतीकः

का०अ०आ०क०

कण्डिकप्रतीक

का०अ०आ०क०

| | |
|---------------------------------|--------|
| ता वा एतास्तिष्ठोऽनुष्टुभः | ७१२११९ |
| ताविन्द्राग्री उदययताम् | २१४१३५ |
| ता विषमा विषमपदाः | ६२११३४ |
| तावेताविन्द्राग्री एव | १०१४१७ |
| सायेनमुपावदुस्तुः | १६१३१५ |
| ता वै द्विनाग्न्यो भवन्ति | ५१३११४ |
| ता वै द्विनाग्न्यो भवन्ति | ९१४३१३ |
| ता वै षड् दद्यात् । षड् वा | २२२२३ |
| ता वै सन्तता अयवच्छिन्ना | १३१५१६ |
| ता वै सर्वेषु सवनेषु विभज० | ३९२२३ |
| ता वै सायं प्रातरादधाति | ७१२२११ |
| ता वै स्यन्दमानानां गृहीयात् | ३९२२४ |
| साश्चतुर्विंशतिः सम्पद्यन्ते | ३१४१२० |
| तासां द्वादश गर्भाः | ४१६११२ |
| तासां द्वादश गर्भाः | ५१४१२१ |
| तासां सप्तदशाक्षराणि | ११५२१७ |
| तासान्मेषु स्तनानुलयन्ति | ६५२२१६ |
| तासानुतासां मन्त्रोऽस्ति | २६२२१४ |
| तासानेकाग्नये प्राचीमुष० | १३१८३९ |
| तास्योदश सम्पद्यन्ते | ६६३३१६ |
| ता ह वज्रम ऊचुः | १४१११८ |
| ता हैके तिस्रः कुर्वन्ति | ६५२२२२ |
| ता हैकेऽमन्तर्हिताः । त्रिष्टु० | ८१४११९ |
| ता हैके परस्तादर्वाचीरुपद० | ७२१११३ |
| ता हैके पुरुषमुपाप्योपदधाति | ८१११११ |
| ता हैके । यज्ञं तन्व इत्यानयते | ४५१७३ |
| ता हैता अमृतेष्टकाः | ९१२१४३ |
| ता हैता एव संयान्यः | ८७१११३ |
| ता हैता एव संयान्यः | ८७११२३ |

| | |
|-------------------------------|---------|
| ता हैता गतश्रेवानुब्रूयात् | ११३५१२ |
| तिष्ठन्तसिष आदधाति | ९२२३४६ |
| तिसृष्वन्वक्षिणान्दधाति | ११११५१० |
| तिसृभिः कृष्टे नाकृष्टे च | ७२१४१८ |
| तिसृभिः कृष्टे चाकृष्टे च | ७२१४२४ |
| तिसृभिरस्तुवतेति । त्रयो वै | ८१४३४ |
| तिसृभिस्तिसृभिः पाकयन्ति | १२८११११ |
| तिसृभिस्तिसृभिर्ऋग्भिर्मर्यति | ७२१४१५ |
| तिसृभिस्तिसृभिर्ऋग्भिर्मर्यति | ७२१४२१ |
| तिस्र इष्टका उपदधाति | ७२१११४ |
| तिस्र इष्टका भवन्ति | ७२१११६ |
| तिस्रस्तिस्रः सीताः कृषति | ७२२२१५ |
| तिस्रो घेनून्नेत्रे । भूमा वै | ५१५५१७ |
| तिस्रो रात्रीर्वेदधरति | १४१११२८ |
| तुयो यो विश्ववेदा विभज० | ४३१४१५ |
| तुयंशद्वय इति । तुयं० | ८२१४१५ |
| तूष्णीं चतुर्थम् । स यदि० | १२१४२१ |
| तूष्णीं तमाधारयति । यं मनस | १४१४५ |
| तूष्णीं तमाधारयति । यो गूलं | १४१४१० |
| तृतीयसवनस्यैतद्रूपम् | १२१८२१० |
| तृतीया चित्तिमुपदधाति | ८३११११ |
| तृतीया चित्तिमिनोति | १०११४४ |
| तृतिरेवास्य गतिः | १०३१५१३ |
| ते अभिमन्त्रयते । अत्र | ३५३२२० |
| ते इममाविशतः । ते इमा० | ११३२२८ |
| ते एतान्यङ्गान्तेतिरे | १०१४३४ |
| ते कामयन्त । असपत्नमिदं | ८५११३ |
| ते गन्धर्वा अन्वागत्यानुबन् | ३२१४४ |
| तेऽग्निरेव त्वचं विपस्याज्रय० | ३४१३२ |

| कण्डिकाप्रतीक | वा० अ० आ० क० | कण्डिकाप्रतीक | वा० अ० आ० क० |
|--------------------------------------|--------------|---|--------------|
| तेऽग्निमब्रुवन् । न वा इतो० ७।१।२।३ | | ते देवा अग्निमब्रुवन् । परे० १।६।१।७ | |
| ते चेतयमाना । एतस्मा० ७।४।१।२४ | | ते देवा अध्वर्युमब्रुवन् ३।७।१।३० | |
| ते चेतयमाना । एतदपश्य० ८।६।३।३ | | ते देवा अब्रुवन् । अमा ये १।६।४।३ | |
| ते चेतयमाना । एतदपश्य० ६।८।२।२ | | ते देवा अब्रुवन् । अमृतमिमं १०।१।३।६ | |
| ते चेतयमाना । एता पुन० ८।६।३।१० | | ते देवा अब्रुवन् । अधिनौ वा ८।२।२।२ | |
| ते चेतयमाना । एता इष्टका ७।१।१।३ | | ते देवा अब्रुवन् । एताद० १।४।४।१।१९ | |
| ते चेतयमाना । एता इष्टका ८।५।१।४ | | ते देवा अब्रुवन् । गीर्वा ३।१।२।१।४ | |
| ते चेतयमाना । एता इष्टका ८।६।१।३ | | ते देवा अब्रुवन् । न वा १।६।४।५ | |
| ते चेतयमाना । एतानि ८।७।४।३ | | ते देवा अब्रुवन् । न वा ७।१।२।२ | |
| ते चेतयमाना । एतानि ९।१।२।१।४ | | ते देवा अब्रुवन् । महा० १।४।१।१।११ | |
| ते चेतयमाना । एतानि ९।५।१।२० | | ते देवा अब्रुवन् । मा विस्र० १।७।३।४ | |
| तेन एव अस्यामस्तनम् १।४।६।९।१५ | | ते देवा अब्रुवन् । यावन्ति १।७।३।५ | |
| ते दक्षिणतः स्वयमावृण्णाया ८।६।२।१।६ | | ते देवा अब्रुवन् । ये न इ० ९।५।१।२।८ | |
| ते दक्षिणतस्तिष्ठन्ति ६।३।१।२९ | | ते देवा अब्रुवन् । सुत्रा ५।५।४।१।२ | |
| ते दक्षिणस्य हविर्मानस्य ४।६।९।१।३ | | ते देवा अब्रुवन् । हन्तेमा ४।२।३।८ | |
| ते दिवगात्रिंशत् । ते दिव० १।१।६।२।७ | | ते देवा अभ्यसृज्यन्त । यथा ४।१।३।५ | |
| ते दीक्षणीयाक्षिरवण् ९।५।१।१।९ | | ते देवा इन्द्रमब्रुवन् । त्व वै ९।२।३।३ | |
| ते देवा । एतस्मादन्तका० १०।४।३।३ | | ते देवा ईशाक्षिरे । योषा ३।२।१।२।२ | |
| ते देवा । एतान्पत्नीसया० १।१।२।७।३० | | ते देवा तत्सृज्यावृत्तम् ९।५।१।१।२ | |
| ते देवा । जुष्टास्तनू ३।४।२।५ | | ते देवा यशमब्रुवन् । योषा ३।२।१।१।९ | |
| ते देवा । जुष्टास्तनू ३।४।२।८ | | ते देवा यक्षमब्रुवन् । प्राची ४।६।७।६ | |
| ते देवा । जुष्टास्तनू ३।४।२।९ | | तेऽध्वर्युमब्रुवन् । यथापूर्वं १।७।३।६ | |
| ते देवा । प्रजापतिमब्रुवन् १।१।५।८।५ | | तेन देवा अयजन्त ३।६।२।१।७ | |
| ते देवा सत्यमित्युपासते १।४।८।६।२ | | तेन न प्राप्त सवने प्रचरति ४।४।२।२ | |
| ते देवा । सर्व सत्यमब्र० ९।५।१।१।६ | | तेन पुरस्तादनुयाजेषु चरति ३।८।४।९ | |
| ते देवा अक्रामयन्त । कथ १।४।१।२।३ | | तेन प्राचोऽन्नाद्यनुद्वहति १।२।१।४ | |
| ते देवा अक्रामयन्त । कथ १।५।३।२।४ | | तेन हेतेन विश्वकर्मा भौवन १।३।७।१।१।४ | |
| ते देवा अक्रामयन्त । कथ १।७।२।२।३ | | तेनानुयाजेषु चरति । पशवो ३।८।४।८ | |
| ते देवा अक्रामयन्त । कथ ४।६।७।१।५ | | ते निन्दुवते । एषा राय ३।४।३।२।१ | |

कण्डिकाप्रतीकः

अ०अ०मा०क०

कण्डिकाप्रतीक

अ०अ०मा०क०

तेनेन्द्रोऽपजत । इदं ५।१।१।६
 तेनैतेनान्तरतश्च बाह्यतश्च ६।५।२।७
 तेनो अर्बन्तः । हवनश्रुतो ५।१।५।२३
 तेनोपांशु चरन्ति । तिर इव १।९।२।८
 तेनोपांशु चरन्ति । तिर इव २।६।१।१९
 तेनोपांशु चरन्ति । यद्वै २।२।३।१६
 तेनो ह तत ईजे । वक्षः पार्व० २।४।४।६
 तेनो ह तत ईजे । देवभाग २।४।४।५
 तेनो ह तत ईजे । प्रति० २।४।४।३
 तेऽन्यमेव प्रति प्रजिध्युः ३।५।१।१६
 तेऽपराह उपसमेत्य । अप ४।६।९।८
 ते पुनरनु संस्पृश्यन्ति १।८।२।२
 ते पुरुषमाविशतः । तस्य १।१।६।२।९
 ते प्रजापतिं प्रतिप्रक्षभेयतुः १।४।५।११
 ते प्रजापतिमब्रुवन् । अस्माद्वै ९।१।१।७
 ते प्रजापतिमब्रुवन् । हनमे० १।१।४।३।२
 ते प्रयन्ति । अग्निं पुरीष्य० ६।३।३।३
 ते माच्या उपदधाति ८।६।२।१५
 ते माद्यं विष्णुं निपाद्य १।२।५।६
 ते माद्य उपनिष्क्रामन्ति ४।६।९।१०
 ते माद्य उपनिष्क्रामन्ति ४।६।९।१५
 ते माद्यस्तिष्ठन्ति । अश्वः ६।३।१।२८
 ते प्रातःसवन एव । सर्व ४।१।१।७
 ते मन्त्राब्रुवन् । त्वामिदोपद ८।४।१।३
 तेऽब्रुवन् । अग्रयः स्विष्ट० १३।३।४।२
 तेऽब्रुवन् । अन्नमरुं सम्भाराम ९।१।१।२
 तेऽब्रुवन् । अन्नं वा अयं ७।१।२।४
 तेऽब्रुवन् । अध्विनौ वा ८।२।२।३
 तेऽब्रुवन् । अस्तु नोत्राप्य० १२।७।३।२

तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत ७।२।१।२
 तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत ७।४।१।२३
 तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत ८।६।३।२
 तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत ८।६।३।९
 तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत ८।७।४।२
 तेऽब्रुवन् । उप वयमायमेति ६।२।३।८
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति ८।२।१।२
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति ८।३।१।२
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति ८।४।१।२
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति ८।५।१।२
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमेवेति ६।२।३।५
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमेवेति ६।३।३।६
 तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमेवेति ६।२।३।३
 तेऽब्रुवन् । न वा इत्थं सन्तः ६।१।१।३
 तेऽब्रुवन् । न वा इत्थं सन्तः ८।७।१।४
 तेऽब्रुवन् । मध्य एवोषदधा० ८।६।३।४
 तेऽब्रुवन् । यद्यह सर्वैरन्ये० ६।३।१।२३
 तेभ्यो गायत्री सोममच्छाप० १।२।४।२
 तेभ्यो दश प्राचीः ९।१।१।३८
 तेभ्योऽध्वर्युश्चातुष्पादयन्त्र० १।१।४।१।५
 तेभ्यो वाचं वक्षिणामानयन् १।५।१।१८
 तेभ्यो ह वाक्चुम्नोष १।५।१।२१
 ते माहेन्द्रस्यैवानुशोमं ह्यन्ते ४।५।४।८
 ते मौञ्जोगिरिभिधानीभिः ६।३।१।२६
 ते य एवमेतद्विदुः । ये चामी १।४।९।१।८
 ते य एवमेतद्विदुः । ये वै० १०।४।३।१०
 ते यथापिष्यमेवोषविशन्ति ४।६।९।१६
 ते यदब्रुवन् । चेतयध्वमिति ६।२।३।९
 ते यदब्रुवन् । चेतयध्वमिति ६।३।१।२

| कण्डिकाप्रतीकः | अ०॥ध०॥ब्रा०॥क०॥ | कण्डिकाप्रतीकः | अ०॥ध०॥ब्रा०॥क०॥ |
|----------------------------------|-----------------|-----------------------------------|-----------------|
| ते यदा स्तुवते यदानुशंस० | १०।१।१।६ | ते वा एवमेते यज्ञकतवः | १२।३।५।११ |
| ते यदा स्तुवते यदानुशंस० | १०।४।१।१४ | ते वामारम इति । गर्भो | ३।२।१।६ |
| ते यदा स्तुवते यदानुशंस० | १०।४।१।२० | ते वायुमब्रुवन् । अयं वै | ४।१।३।३ |
| ते ये त इमे लोकाः | ९।३।१।४ | तेऽविदुः । अयं वै नो | ३।४।३।८ |
| ते ये ह तथा कुर्वन्ति | १०।२।३।७ | तेऽविदुः । पापीयांसो वै | ३।४।२।२ |
| ते ये ह तथा कुर्वन्ति | १०।४।३।२२ | ते विश्वक्षितमेव सर्वपृष्ठम् | १२।३।३।६ |
| ते रेतःसिचोर्वेलयोषधधाति | ७।५।१।१३ | ते वै त्रिष्टुभौ भवतः | १।७।३।१७ |
| तेऽर्चन्तः ध्याम्यन्तश्चेरुः | १।६।२।३ | ते वै देवास्तन्नाविदुः | १०।१।३।८ |
| तेऽर्चन्तः ध्याम्यन्तश्चेरुः | ४।५।४।२ | ते वै ह्यिनामानो भवन्ति | ३।६।२।२४ |
| तेऽर्चन्तः ध्याम्यन्तश्चेरुः | १०।४।३।६ | ते वै द्वे भवतः । अयं वै | १।१।३।२ |
| तेऽबच्छाय पुरुषम् । गम्येतां | ३।१।२।१५ | ते वै पत्नीः संयाजयिष्यन्तः | १।९।२।१ |
| ते वा अक्ताः स्युः । अक्लं हि | २।६।२।६ | ते वै पात्न्याः स्युः । ब्रह्म वै | १।३।३।१९ |
| ते वा आण्यहविषो भवन्ति | १।५।३।४ | ते वै प्रतिपुरुषम् । वावन्तो | २।६।२।४ |
| ते वा आर्द्राः स्युः । एतज्येषां | १।३।४।१ | ते वै प्राजापत्या भवन्ति | १३।६।२।८ |
| ते वा एत ऋतवः । उभय | २।१।३।९ | ते वै रौद्रा भवन्ति । रुद्रस्य | २।६।२।३ |
| ते वा एत ऋतवः । देवाः | २।१।३।२ | ते वै षड् भूत्वाप्याययन्ति | ३।४।३।१७ |
| ते वा एत एकादश प्रयाजा | ३।८।१।३ | ते वै सर्वे तूषरा भवन्ति | ५।१।३।८ |
| ते वा एत एव त्रयो मुष्ठा | ५।१।४।११ | ते वै सायम्प्रातरादधाति | १०।१।५।२ |
| ते वा एते । अग्नीषोमयोरेव | १।६।३।४१ | ते शवामिष्टोमं सत्रमुपेयुः | ११।५।५।२ |
| ते वा एते आहुती हुते | ११।६।२।६ | ते शवामिष्टोमं सत्रमुपेयुः | ११।५।५।४ |
| ते वा एते । उभे एव | १०।५।२।२२ | ते शवातिरात्रं सत्रमुपेयुः | ११।५।५।६ |
| ते वा एते उरुमुके उद्वहन्ति | १।८।२।१ | तेऽग्निनावब्रुवन् युवं वै | ८।२।१।३ |
| ते वा एते त्रयोऽवकाशा | १४।१।४।७ | तेऽग्निनावब्रुवन् युवं वै | १२।७।१।११ |
| ते वा एते नव यज्ञाः | ९।५।१।३० | तेषां मशः । अग्रे वर्च० | ४।५।४।१२ |
| ते वा एते । पञ्चदश | १३।२।२।१० | तेषां यत्र वषामिः प्रचरन्ति | ३।९।१।२६ |
| ते वा एते । प्राणा एव | २।२।२।१८ | तेषां वा अर्घ्वानुपकिरन्ति | ३।६।२।२२ |
| ते वा एते । न्यामैकादशाः | १०।२।३।२ | तेषां वा उज्जेतोत्तमोदीक्षते | १२।१।१।११ |
| ते वा एते । सर्पन्त एवा० | ४।२।४।१० | तेषां वा उभयतो नमस्कारा | ९।१।१।२० |
| ते वा एते । सोमस्यैव | ३।६।२।२१ | तेषां विपमा रक्षनाः स्युः | ६।२।१।१९ |

| कण्विकाप्रतीकः | का० अ० ब्रा० क० | कण्विकाप्रतीकः | का० अ० ब्रा० क० |
|-------------------------------|-----------------|------------------------------|-----------------|
| ते होचु । हन्तेमा पृथिवी | १।२।५।२ | त्रय पुरोदशा भवन्ति | १२।९।१।८ |
| तैरुपाध्वरात् । आप्याय० | ४।६।७।१७ | त्रयः सारस्वतम् । होता | १२।८।२।२७ |
| तैर्यत्र प्रचरन्ति । आग्नेये० | ३।९।१।२७ | त्रय आग्निग्न्मक्षयन्ति | १२।८।२।२६ |
| तो जघनेन यूरमरली | ४।२।१।१९ | त्रयस्त्रिंशत्तस्तुवतेति | ८।४।३।१९ |
| तो जघनेनाह्वनीयमरली | ४।२।१।१५ | त्रयस्त्रिंशन्नवमहर्मवति | १३।७।१।११ |
| तो प्रजापतिं प्रतिप्रश्नयेत्० | ४।१।३।१४ | त्रयस्त्रिंशत्तोमेन । शोण | १३।५।४।१६ |
| तो यौ साविन्द्राभी । एतौ | १०।४।१।६ | त्रयाः प्राजापत्या । प्रजा० | १४।८।२।१ |
| तो वा ऋतुनेति पट् प्रचर्य | ४।३।१।१३ | त्रया देवा एकादशेति | १२।८।३।२८ |
| तो वा ऋतुनेत्युपरिष्टाद् | ४।३।१।११ | त्रया वै देवा वसरो रुद्रा | ४।३।५।१ |
| तो वा ऋतुनेति पट् प्रचरत | ४।३।१।१० | त्रयी वै विषा । ऋचो यजूषि | ४।६।७।१ |
| तो वै पुरस्ताच्चिप्यन्तौ | ४।२।१।२४ | त्रयोदश यजम नो भक्ष० | १२।८।२।३१ |
| तो वै वपद्वृत्तौ स-तो | ४।२।४।२६ | त्रयोदश भवन्ति । त्रयोदश | १३।८।३।७ |
| तो हृदपम्पाकाशम्रत्य० | १०।५।२।११ | त्रयोदशभिरस्तुवतेति | ८।४।३।९ |
| तो हैत्योचतु । उपरक्षा० | १४।१।१।२१ | त्रयोदश सम्पादयति | १४।१।३।२८ |
| तो होचतुः । आवान्तरा | १४।१।१।२३ | त्रयोदशारत्निं परिवासयेत् | ३।६।४।२४ |
| तो होचतुः । उपनौ द्वय० | ४।१।५।१४ | त्रयोदशैता अ हुतयो | १४।३।०।१६ |
| तो होचतु । एतं हृदम० | ४।१।५।१२ | त्रयोदशैतानि नागानि | ९।३।३।९ |
| तो होचतु । क्रिमावयो० | १।६।३।१४ | त्रयोदशेता व्याहृतयो भवन्ति | ७।२।३।९ |
| तो होचतुः । क्रिमावयो० | १।६।३।१९ | त्रयोऽनुवाजाः । इम एवास्य | ११।२।६।९ |
| तो होचतुः । मुख्यो वा | ४।१।५।१६ | त्रयो भमेति तृतीये प्रयाजे | १।५।४।१४ |
| तो होचतु । श्रद्धादेवो वै | १।१।४।१५ | त्रयो भमेतीन्द्रोऽथवीत् | १।५।४।९ |
| तो होचतु । विशीर्णावै | ४।१।५।१५ | त्रयो लोका एत एव | १४।४।३।११ |
| तो होचतुः । सुकन्ये कमिम | ४।१।५।९ | त्रयोऽतिशत्वास्तुवतेति | ८।४।३।१४ |
| तो होचतु । सुकन्ये केना० | ४।१।५।१३ | त्रयो वेदा एत एव | १४।४।३।२२ |
| तो होचतु । यदो० | १४।१।१।२४ | त्रयो ह त्वाव पशवोऽमेध्या | १२।४।१।४ |
| त्रयं वा हृदलाय रूपधर्म | १४।४।४।१ | त्रयो ह वै समुद्राः । अग्नि० | ९।५।२।१२ |
| त्रय पशवो भवन्ति | १२।८।०।३२ | त्रयः सृच्यो भवन्ति | १३।२।१०।३ |
| त्रयः पशवो भवन्ति | १२।९।१।७ | त्रिंशत्तमौद्गमगानि जुडोति | १३।१।७।४ |
| त्रय पुरोदशा भवन्ति | १२।८।२।३३ | त्रिंशत्तमौद्गमगानि जुडोति | ५।१।५।४ |

| कण्डिकाप्रतीक | का० अ० ब्रा० क० | कण्डिकाप्रतीक | का० अ० ब्रा० क० |
|---------------------------------|-----------------|-----------------------------------|-----------------|
| त्रिवान्मुपदधाति । त्रिवृद्धै | ८६।२।२ | त्रिवृद्वाचन्तर सन्निर्भवति | ५।५।३।४ |
| त्रिणवमष्टममहर्भवति | १३।७।१।१० | त्रिष्टुत्व प्रत्यवरोहति | ९।१।१।४० |
| त्रिभिः पवित्रैः पावयन्ति | १२।८।१।९ | त्रींस्त्रीनुदचमसात्रिनयति | ७।२।४।३ |
| त्रिभिः प्रयौति । त्रिवृद्धि० | ६।५।१।१२ | त्रींस्त्रीनुदचमसात्रिनयति | ७।२।४।८ |
| त्रिभिः सम्भरति । त्रिवृद्ध० | ६।४।४।११ | त्रीणि च वै शतानि पष्टिश्च | १०।३।२।३ |
| त्रिभिरन्निच्छति । त्रिवृद्ध० | ६।३।१।२५ | त्रीणि वा इमानि पष्टयि० | १०।२।६।१६ |
| त्रिभिरन्विच्छति । त्रिवृद्ध० | ६।३।२।१० | त्रीणि वासास्यध्वर्ववे | ५।५।५।१८ |
| त्रिभिरमिमन्त्रयते । त्रिवृद्ध० | ६।३।२।५ | त्रीणि शिक्षानि । त एव | ११।१।६।३१ |
| त्रिभिरमिमन्त्रयते । त्रिवृद्ध० | ६।४।४।५ | त्रीणि समिष्टयजुषि जुडोति | २।५।२।४६ |
| त्रिभिरभ्यवहरति । त्रिवृद्धि० | ६।८।२।५ | त्रीणि समिष्टयजुषि भवन्ति | २।५।१।२१ |
| त्रिभिरावृत्ते । त्रिवृद्धि० | ६।३।१।४० | त्रीणि ह वै पशोरेकादशानि | ६।८।२।१ |
| त्रिभिरुपतिष्ठते । त्रय इमे | ६।७।३।१६ | त्रीष्यात्मनऽकुर्वतेति । मनो | १०।४।३।८ |
| त्रिभिरुपतिष्ठते । त्रय इमे | ७।४।१।३१ | त्रीणात्मनोऽकुर्वन् । तिस्र० | १०।४।२।५ |
| त्रिभिरुपदधाति । त्रय इमे | ७।५।१।११ | त्रीन्कृष्टे चाकृष्टे च नितयति | ७।२।४।६ |
| त्रिभिर्जुनेति । त्रय इमे | ९।४।२।८ | त्रीन्कृष्टे चाकृष्टे च नितयति | ७।२।४।११ |
| त्रिभिर्मुक्कि । त्रिवृद्धि० | ९।४।४।७ | त्रीकुर्वन् भवति । यत्र वा | ३।१।३।१० |
| त्रिरेव प्रथमा त्रिरुत्तमा० | १।३।५।१३ | त्रयविर्य इति । त्रयि | ८।७।२।११ |
| त्रिर्विषययते । त्रिर्हि कृत्वः | ९।१।२।८ | त्वं त्रिषु दाशुप इति | ७।५।२।२० |
| त्रिर्विषययते । त्रिर्विषययते | ११।२।७।८ | त्वयै ग्रहः । रा स्पष्टेना० | १४।६।२।९ |
| त्रिर्वै वै पुरषो जयते | ११।२।१।१ | त्वच एमास्य रुधिरम्रम्य० | १४।६।९।३१ |
| त्रिर्वै वै पुरषो जायते | ११।२।१।४ | त्वष्टा रूमाणा रूमावृष्ट० | ११।४।३।१७ |
| त्रिवत्सो बय इति । त्रिवि० | ८।२।४।१४ | त्वष्टा हतपुत्रः । अमिचर० | १२।८।३।१ |
| त्रिवृत्ता पश्विषयति । त्रिवृ० | ३।७।१।२० | त्वष्टुर्ह वै पुत्रः । त्रिशीर्षा | ५।५।४।७ |
| त्रिवृत्तो भवन्ति । त्रिवृ० | ६।३।१।७७ | त्वष्टुर्ह वै पुत्रः त्रिशीर्षा | १।६।३।१ |
| त्रिवृत्तायाः । सप्तदश० | १२।३।१।५ | त्वष्ट्रे स्वाहा । त्वष्ट्रे । | १३।१।८।७ |
| त्रिवृद्धिमिष्टोमः । पञ्चदश | १३।५।४।९ | त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थो | १३।२।२।८ |

त्रिपिरेव प्रथमः प्रथाजः ११।२।७।१०

(द)

| कथितकामाकराद्यनुक्तगणिका | का० प्र० मा० क० | कथितकामाकराद्यनुक्तगणिका | का० प्र० मा० क० |
|--|-----------------|--|-----------------|
| दक्षिणत आहवनीयो भवति ६।३।१।३० | | दिवि वै सोम आसीत् ३।२।४।१ | |
| दक्षिणत उ हैक उपदधति ८।४।४।११ | | दिवि वै सोम आसीत् ३।६।२।२ | |
| दक्षिणाप्रवणस्य प्रत्यर्घं १३।८।१।८ | | दिमे स्वा सूर्याय त्वेनि ३।९।३।५ | |
| दक्षिणाप्रवणे कुर्यादित्याहु १३।८।१।७ | | दिवे स्वाहेति योर्वै १४।३।२।८ | |
| दक्षिणामारोः । त्रिष्टुप्त्वा० ५।४।१।४ | | दिव्य धामाशस्त इति १।९।१।९ | |
| दक्षिणामैव दिशम् । सोमेन ३।२।३।१७ | | दिव्य नभो गन्ध स्वाहेति ३।८।५।३ | |
| दक्षिणार्धे हैक सादयन्ति ४।१।१।२७ | | दिशो मुग्धा आस पथ ३।२।३।१४ | |
| दक्षिणेऽग्नौ सुगमहास्तु० १२।९।३।१२ | | दीक्षणीयाया सस्मितायाम् १३।४।४।२ | |
| दक्षिणेऽग्नौ सुगमहास्तु० १२।९।३।१५ | | दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहेति ३।१।४।८ | |
| दक्षिणेनाहवनीय प्राचीन० ३।२।१।१ | | दीर्घसत्र वा एष उपैति ११।३।३।२ | |
| दक्षिणदक्षिणान्दधाति ११।१।५।११ | | दीर्घमन्त्र वा एष उपयति १२।४।१।१ | |
| दध्यङ् ह वा आधर्वण १४।१।१।१८ | | दीर्घायुत्वमाश्नास्त इति १।९।१।१३ | |
| दध्यङ् ह वा आभ्यामाधर्व० ४।१।५।१८ | | दुष्टरीतुर्ह पौन यन १२।९।३।१ | |
| दर्भमयी रक्षणा भवति १३।१।१।२ | | दृष्ट्व देनि पृथिनि स्वस्त्य ६।६।२।६ | |
| दर्शपूर्णमासौ वै प्रवर्ग्य १४।३।२।२७ | | दृष्टवासाभिर्हानुनानो मार्ग्य १४।५।१।१ | |
| दशरुणो वारुणो भवति १२।७।२।२० | | दृष्टानो स्वम उर्या व्यबौ० ६।७।२।२ | |
| दश ग्राम्याणि धान्यानि १४।५।३।२२ | | देव सवितार गन्ध स्वाहेति ३।८।४।१३ | |
| दश च वै सप्त दशष्टौ च १२।३।२।५ | | देवचक्रे वा वसे पृष्ठप्रति० १२।२।२।२ | |
| दशात्मनोऽनुन्त । द्वासे० १०।४।२।११ | | देवत्वपुर्वसु रमेति । त्वष्टा ३।७।३।११ | |
| दशेति द्वेव च । दश वा १२।५।२।१७ | | देववात्र वा एष यद्वपुष्कार १।७।२।१३ | |
| दशैतामस्तान अनुगेति ९।१।१।३१ | | देवयजन जोषयन्ते । स यदेव ३।१।१।११ | |
| दिक्षुपदधाति । दिशो वै ८।६।१।१ | | देवयुग विश्ववारासमिति १।५।२।३ | |
| दिग्भ्यः स्व हेनि । दिशो १२।३।२।१० | | देवयोनिर्वा एष यदाहव० १२।९।३।१० | |
| दित्यवाह उय इति । दित्यवाह ८।२।४।१२ | | देव सवित प्रमुव यज्ञ ६।३।१।१० | |
| दिवश्चनगादित्य च १४।४।३।२८ | | देवस्य सवितुर्भागोऽसि ८।४।२।१० | |
| दिवस्पति प्रथम अने अग्नि० ६।७।४।३ | | देवा पितरो मनुष्या एत १४।४।३।१३ | |
| दिवस्पृष्टे न्यचस्वतीग्रम्य० ८।७।३।१८ | | देवा गातुविद इति ४।४।४।१३ | |
| दिवा गृहीयात् । पश्य यन० ३।९।२।६ | | देवनामु ह सा दीक्षितायाम् ३।४।३।२ | |

| कण्डिकाप्रतीक. | का०अ०भा०क० | कण्डिकाप्रतीक. | का०अ०भा०क० |
|------------------------------|------------|--------------------------------|------------|
| द्वयानि वै फाञ्जुनानि | ४१०१०१२ | द्वाभ्या स्वनति । द्विषाणज० | ६१४११३ |
| द्वया वै देवा देवाः । अहैव | २१२१२६ | द्वाभ्या द्वाभ्यां तृताभ्याम् | ८१७१४२ |
| द्वया वै देवा देवाः । अहैव | २१४१३१४ | द्वाभ्या प्रवृणक्ति द्विर वज० | ६१६२१७ |
| द्वया वै देवा देवाः । अहैव | ४१३१४१४ | द्वभ्या विमुञ्चति । द्विषा० | ९१४१४१४ |
| द्वया ह प्रजापत्याः | १४४११११ | द्वाभ्यां समुक्षति । द्विषा० | ९१२१११६ |
| द्वयो ह या इदमग्रे प्रजा | ३१५१११३ | द्वाभ्या संसृजति । द्विषा० | ६१५११८ |
| द्वादश दध्यात् । द्वादश वै | २१२१२४ | द्वाभ्यामक्षराभ्याम् । द्विषा० | ६१७१३१२ |
| द्वादश एवाग्नाः स्यात् | १३१३१३८ | द्वाभ्यामभिजुहोति । द्विषा० | ६१३१३२१ |
| द्वादशकपालः पावित्र्यो | १२१७२१२९ | द्वाभ्यामभिजुहोति । द्विषा० | ९१३१३३३ |
| द्वादश कक्षः, भुजोति | ९१३१३१३ | द्वाभ्यामभिगृह्णति । द्विषा० | ६१४१११२ |
| द्वादश क्षत्रियस्य वा पुरो० | ६१६१३१३ | द्वाभ्यामुपवधाति । द्विषा० | ७१४११२१ |
| द्वादश ब्रह्मोदनानुत्थाय | १३१३१६६ | द्वाभ्यामुपवधाति । द्विषा० | ९१२१३१२९ |
| द्वादश भक्षा भवन्ति | १२१८१२३० | द्वाभ्यामुपावहरति । द्विषा० | ६१४१४१८ |
| द्वादशभिर्भगिभिः कृष्टे वपति | ७१२१२१६ | द्वाभ्यामुपवहरति । द्विषा० | ५१५१४२१ |
| द्वादशभिर्भगिभिः कृष्टे वपति | ७१२१४२२ | द्वितीया चित्तिमुपवधाति | ८१२१११ |
| द्वादश वा त्रयोदश वाक्ष० | २१२१२२७ | द्वितीयाश्चित्तिश्चिनोति | १०११४१३ |
| द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य | १२१२११८ | द्वे अग्नेर्जुहोति । द्विषाण० | ९१५११३१ |
| द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य | १२१३१२२ | द्वे देवानभाजयति | १४१४१३३ |
| द्वादश सीतास्तूष्णीं कृणति | ७१२१२१६ | द्वेध तण्डुला-कुर्वन्ति | ५१३१२७ |
| द्वादश कक्षयति । द्वादश | ९१३१२८ | द्वेधावट नानि श्रवयन्ति | ५१११३५ |
| द्वादशस्व वधीन । द्वादशा० | १०७१३२५ | द्वे वाव प्रसणो रूपे | १४१५३११ |
| द्वादश त्वनोऽपुरन | १०४१२१२ | द्वे वेदी भवन । द्वौ वाव | १२१७३१७ |
| द्वादशाप्रिय । द्वादश | ६१२११२८ | द्वौ मोक्षितौ यूयसकलौ | ४१२१११३ |
| द्वादशारलि परिव सयेत् | ३१६१४२३ | द्वौ नाह द्वा ऊरू । त एव | ११११६१३३ |
| द्वादशाहमेव । संवत्सर० | १२१३१३८ | द्वौ ममेति द्वितीये प्रजाजे | ११५१४१३ |
| द्वादशैतानि नामानि | ४१२१२१२ | द्वौ ममेती द्रोऽननीन् | ११५१४८ |
| द्वादशैव ब्रह्मोदन नु वाय | १३१३१६७ | द्वौ वोक्तेतारौ दुर्वीत | ४१५८१३३ |
| द्वादशोदचमसान्कृष्टे नितयति | ७१२१४४ | द्वादशो वपट्कार । द्विषाद्वै | १११२१२३ |
| द्वादशोदचमसान्कृष्टे नितयति | ७१२१४० | द्वादशो वपट्कारः । म एव | १२१३१४ |

(ध)

| कण्विकामतीकः | का०श्र०ना०च० | कण्विकामतीकः | का०श्र०ना०फ० |
|------------------------------------|--------------|------------------------------------|--------------|
| धरुण एकविंश इति | ८४१११२ | धियो यो नः प्रचोदयात् १४१२३ १३ | |
| धर्ता दिवो विभाति तपस० १४११४८ | | धिषणाम्स्वा देवी । मिथदे० ६५५४५ | |
| धर्त्रे चतुष्टोम इति । य एव ८४११२६ | | धीरो ह ज्ञातवर्णेय १०१३३१ | |
| धर्षा मानुष इति । न वा ३७४१२ | | धेनुर्वय इति । धेनुं वय० ८१२४१० | |
| धाता सतिः सवितेदं ४४४४९ | | धुवसितिर्धुम्योनिर्धुवासीति ८१२११४ | |
| धानाभिर्जुडोति । अग्नेश० १३२११४ | | धुवामि धरणेति । तम्योक्तो ७५१३० | |

(न)

| | |
|--|------------------------------------|
| नक्षत्रं वरुणः । ऋते व्रक्षणो ४११४३ | नक्षत्रयाज्ञं भवति । नवा० २१५११२० |
| नक्षत्राणि ह त्वेवैषोऽग्नि० १०१५४५ | नव प्रसवम्य द्याहृतयः ११२११३ |
| नक्षत्रेभ्यः स्वाहेति १४३२१२ | नवभि वावयन्ति । नन १२८११२ |
| न नत्र रथा न रथयोगा १४७१११ | नवभिरस्तुवतेति । नव वै ८४३३७ |
| न तस्मिन्कुर्यात् । यत्ये० १३८११२ | नवविंशत्यास्तुवतेति ८४३१७ |
| न पुरस्ताद्देवमजन्ममाप्नोति० ३१११३ | न वा उ एतन्मिषसे १३२१७१२ |
| न प्रत्यक्षमक्षमध्वर्युः ५११२१७ | नवाग्निष्टोमा मासि सम्प० १२१२१५ |
| न भिक्षा न कृन्नाणुषव० ८४२११६ | नवाहनोऽकुरुत । अग्नी० १०४२१० |
| न भूमिपाशमभिबिदध्यत् १३८१११ | नवाग्निं परिवासयेत् ३६४१२१ |
| नमः सु तेनिर्ऋतेस्तिग्मतेज ७२१११० | नवावसिते वैनमाहरेयुः २३२१८ |
| नमस्ते रद्र मन्यव इति ९११११४ | न वै तदवकुरुते । यच्छ० ३४११८ |
| नमो द्यावापृथिवीभ्यामिति १४२१२२३ | न वै तदवकुरुते । यदेका ४५२१२ |
| नमो वा किरिकेभ्य इति ९१११२३ | न म्वयमातृशत्रायामावपेदित्यु ८४३१३ |
| नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवीति ९१११३५ | न ह वै म्नात्वा भिक्षेत ११३३३७ |
| नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्ष ९१११३६ | नाकः पृथ्विश्च इति । य एष ८४११२४ |
| नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिवी ९१११३७ | नाकमद उपवधति । देवा ८६१११ |
| नमोऽस्तु सप्रेभ्य । ये के च ७४११२८ | नाक रेव्यधिग्रयति १२१११७ |
| नमो हिरेण्यमहवे ९११११८ | नाजो गृयसीः कुर्यात् १११११८ |
| नवक्रपालः पुरेन्डाशो भवति ३४१११५ | नाना ह वा एतान्यग्ने २११२१८ |
| नवदशभिरम्बुवतेति ८४३१२ | नाना हि बान्देवद्वितं १२१७३१४ |

कण्डिकाप्रतीकः

का०ख०ग्रा०क०

कण्डिकाप्रतीकः

का०ख०ग्रा०क०

नानुवाक्यामन्वाह । सकृदु १४२।२।१५
 नानुवाक्यामन्वाह । ह्यसति ४।३।१।८
 नानैव चरेयुः । इतीन्द्रोतः १३।५।३।५
 नानोपदधाति । नाना हि ८।७।३।२०
 नानोपदधाति । ये नाना ७।१।१।२६
 नान्येषाम्पशुनान्तेदम्या १३।५।३।८
 नाभा पृथिव्याः समिधाने ६।६।३।९
 नाभिदशा भवति । अत्र वा ३।३।४।२८
 नाभिर्गदस्य सप्रथा इति १४।३।१।१८
 नाभ्या एवास्य शूषोऽस्रवत् १२।७।१।७
 नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वा० १४।३।२।१५
 नाम कृत्वाथैनमुपतिष्ठते ९।५।१।५३
 नामैव ग्रहः । नाम्ना हीदं ४।६।५।३
 नावज्योतयति नापः प्रत्या० १२।५।१।८
 नासिकाभ्यामेवास्य वीर्यं० १२।७।१।३
 नासिका ह वा एषा यज्ञस्य ३।५।१।१२
 निकामे निकामे, नः पर्जं० १३।१।९।१०
 नियुक्तान्मुखान् । ब्रह्मा १३।६।२।१२
 नियुक्तेषु पशुषु । प्रोक्षणी० १३।२।७।१
 निरुक्त एष भवति । निरु० ९।३।१।९
 निरुक्त एष भवति । निरु० ९।३।१।१५
 निरेवान्यतरः कामति ४।३।१।९
 निवेशनः सन्नमनो वसूना० ७।२।१।२०
 न्यग्रोधद्वनमसैरिति । यत्र वै १३।२।७।३

निष्ठितेषु पञ्चनेपु १३।५।२।२
 नि होता होतृपदने विद्वान् ६।४।२।७
 नीळे कृष्णाजिनमास्तृणाति ३।३।४।१
 नृचक्षसां भागोऽसि ८।४।२।५
 नृपदे वेदिति । प्राणो वै ९।२।१।८
 नेति होवाच । सम्राट्दुर्धा ११।८।४।४
 नेव वा इदमग्रेऽसदासीमेव १०।५।३।१
 नेतेनोदगृह्णीमात् । मित्रो० ५।४।१।१६
 नैनमन्यत्र चरन्त्वमभ्यस्त० ३।२।२।२७
 नैयग्रोधपावं भवति । तेन ५।३।५।१३
 नैव देवा अतिक्रामन्ति २।४।२।६
 नैवेह किञ्चनाम आसीत् १०।६।५।१
 नो एव निष्ठीवेत् । तस्मा० ४।१।३।९
 नोचरेण गार्हपत्यमेति १२।५।१।११
 नोक्षेप्यामीत्याह । न चतु० १२।५।१।९
 नोपरिष्ठास्तमिधमभ्यस्य १२।५।१।१०
 नोपस्पृशति । पाप्मा वै ७।२।१।१२
 नो ह वा इदमम इन्द्र जोष ४।५।४।४
 नो ह वा इदमग्रेऽग्नौ वर्षं ४।५।४।३
 नो ह वा इदमग्रे सूर्ये आज ४।५।४।५
 नो हान्ते गोर्वमः स्वात् ३।१।२।१७
 नोर्ह वा एषा स्वर्ग्या २।३।३।१५
 नोर्ह वा एषा स्वर्ग्या ४।२।५।१०

(प)

पक्षौ पङ्क्तयः । ता यत्प० ८।६।२।१२
 पङ्क्तिश्छन्दः । उष्णिच्छन्दो ८।३।३।६
 पञ्चचितिक एष भवति ९।४।३।३
 पञ्चदश पञ्चदशो पक्षेतेषु १३।२।२।११

पञ्चदशभिरस्तुक्तेति ८।४।३।१०
 पञ्चदश वा अर्धमासस्य १।३।५।८
 पञ्चदशात्मनोऽकुरुत् १०।४।२।१३
 पञ्चदशानाम् गायत्रीणाम् १।३।५।९

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० अ० अ० | कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० अ० अ० |
|--------------------------------|-------------|-------------------------------|-------------|
| पञ्चदशारतिं परिवासयेत् | ३।६।४।२५ | परमेष्ठी त्वा सादयत्विति | ८।७।३।१४ |
| पञ्चदशोदचमसाजिनयति | ७।२।४।१२ | परस्तादर्वाक् प्रवृणीते | १।४।२।४ |
| पञ्चदशोदचमसाजिनयति | ७।२।४।२५ | परस्तादर्वाक् प्रवृणीते | १।५।१।१० |
| पञ्च पञ्चकृत्यः । पशुकाम० | ४।१।१।१६ | परिधिषु युनक्ति । अग्नय | ९।४।४।२ |
| पञ्च प्रयाजाः । इय एनास्य | ११।२।६।४ | परिधिषु विमुञ्चति । परि० | ९।४।४।१२ |
| पञ्च भवन्ति । पञ्च धेते० | ६।२।१।१६ | परिवाजपतिः कविः | ६।३।३।२५ |
| पञ्चभिरस्तुवतेति । य एवेमे | ८।४।३।५ | परिहृते चरन्ति । तिर इव | २।६।१।२० |
| पञ्च ममेति पञ्चमे प्रयाजे | १।५।४।१६ | परिधितं भवति । एतद्वै | ६।४।४।१९ |
| पञ्च ममेतीन्द्रोऽमवीत् | १।५।४।११ | परिधितम्भवति । एतद्वै | १४।१।२।१६ |
| पञ्चमी चितिशुपदधाति | ८।५।१।१ | परिमिश्रं जुहोति । अग्नय | ९।१।१।५ |
| पञ्चमी चितिशिनोति | १०।१।४।६ | परिमिश्रं जुहोति । लोमानि | ९।१।१।१० |
| पञ्चविंशत्यास्तुवतेति | ८।४।३।१५ | परिश्रिद्धिरेवास्य रात्री० | १०।४।३।१२ |
| पञ्च ह त्वेव तानि पात्राणि | ४।५।५।१२ | परिहिते प्रातरनुवाके | ११।५।५।११ |
| पञ्चात्मनोऽकुरुत । चतुर्व्य० | १०।४।२।७ | परीतो पिश्रता सुतमिति | १२।८।२।१२ |
| पञ्चाध्वरस्य जुहोति | ६।६।१।१४ | पर्जन्योऽथा अग्निर्गीतम | १४।९।१।१३ |
| पञ्चारतिं परिवासयेत् | ३।६।४।१८ | पर्जन्यपायनिष्पका एता | ६।५।१।१ |
| पञ्चाविर्यप इति । पञ्चावि | ८।१।४।१३ | पर्शवो वृहत्यः । कीकसाः | ८।६।२।१० |
| पञ्चैवा आहुतीर्जुहोति | ९।२।१।१० | पलाशशस्तया प्राजति | ३।३।४।१० |
| पञ्चैवा आहुतीर्जुहोति | ९।४।२।२४ | पलाशशाम्बया व्युहति | ७।१।१।५ |
| पञ्चैवा आहुतीर्जुहोति | ९।४।२।२६ | पलाशस्य पलाशेन मध्यमेन | २।६।२।८ |
| पञ्चैव महायज्ञाः । तान्येव | ११।५।६।१ | पवित्रशक्तिं संवपति । पाण्यां | १।२।२।१ |
| पल्ल्योऽभ्यङ्गन्ति । श्रिये वा | १३।२।६।७ | पवित्रे करोति । पवित्रे स्थो | १।१।३।१ |
| पदं समुत्पपाणी अवनेनिके | ३।३।२।१ | पवित्रेण पावयन्ति | १२।८।१।१३ |
| पयमाहुतयो ह वा एता | ११।५।६।४ | पशवो वै देवानां उन्दासि | ४।४।३।१ |
| पयस्य मुरा च भवतः | १२।७।३।८ | पशवो वै पयोमृदाः | १२।७।३।८ |
| पयसि पुरपशुपदधाति | ७।५।२।१७ | पशुपन्थेन यज्जने । पशवो | ११।७।१।१ |
| परमस्याः परावत इति | ६।६।३।४ | पशुपन्थो वै प्रवर्ग्यः | १४।३।२।२९ |
| परमेण वा पय स्तोमेन | १३।३।२।१ | पशुम्य एकमायच्छदिति | १४।४।३।४ |
| परमेष्ठी त्वा सादयत्विति | ८।७।१।२१ | पशुरेव यदग्निः । सोऽदेव | ७।५।१।३५ |

| कण्डिकाप्रतीक. | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---------------------------------------|--------------|--|--------------|
| पशुशीर्षाण्युपदधाति | ७५२११ | पुत्रवती दक्षिणत इति | १४११३२० |
| पशुश्च वै यूपश्च । वा ऋते ३७३१ | | पुनरुर्जा निवर्तस्वेति | ४५८८७ |
| पशुधपण एवैनं मरुद्भ्यो ४५२११६ | | पुनश्चित्तिमेवोपदधीत | ९५११६१ |
| पशूना वसवाभिषिञ्चति १२८१३१२ | | पुनाति ते परिसुतम् १२७३१११ | |
| पश्चादग्नेः प्राडासीनः ७४११३५ | | पुरन्विर्येषेति । योषित्येव १३११९१६ | |
| पश्चादग्नेः प्राङ् तिष्ठन् ८७४११० | | पुरस्तात्प्रत्यङ्मिषिञ्चति १२८१३१७ | |
| पश्यंस्तत्र हिरण्यं व्याधाययति ९१२११६ | | पुरस्तात्स्विष्टकृतोऽभिषि० १२८१३१९ | |
| पश्यन्ती वाग्बदति १०२१६१७ | | पुरस्तादुपशयाम्मृदम् १४१११२० | |
| पष्ठबाह्वय इति । पष्ठबाह्वं ८१२१४६ | | पुरा यज्ञपुराहुतिभ्यो २५२१२४ | |
| पाणावेष्टं प्रतिप्रस्थाता २५२१२५ | | पुरास्तमवादाह । दीक्षित ३२१२१२६ | |
| पात्राणि भवन्ति । पात्रेषु २५२१२३ | | पुरीष्यासो अग्रय इति ७१११२५ | |
| पादमात्री भवति । प्रतिष्ठा वै ६५२१२ | | पुरुदस्मो विपुरुष इन्दुरिति ४५२१२२ | |
| पादमाज्यो भवन्ति । अणस्प० ७२११७ | | पुरुष प्रथममालभते । पुरुषो ६२१११८ | |
| पादमाज्यो भवन्ति । प्रतिष्ठा १३८१३८ | | पुरुषं ह नारायणम्ब्राह्मण० १२१३११ | |
| पार्थुगदमन्त्रक्षत्तम भवति १३१३१५ | | पुरुषं ह वै देवाः । अग्ने पशु० १२१३१६ | |
| पार्श्वत उ हैके । सुचमु० १११४२११४ | | पुरुषमात्रन्वेव कुर्यात् १३८१११९ | |
| पात्रे त्रिणवः । त्रयोद० १२२१४१३ | | पुरुषस्य प्रथममुत्सृजति ७५२१३२ | |
| पालाशं भवति । तेन ५११५११ | | पुरुषो बय इति । पुरुष बय० ८१२१४३ | |
| पालाद्यान्युपशयानि १२७२१५ | | पुरुषो वा अक्षितिः । स ही० १४१३१७ | |
| पावकवर्चाः शुक्रवर्चा इति ७३११३० | | पुरुषो वा अग्निर्वीरता १४१११५ | |
| पावमानीभिः पावयन्ति १२८१११० | | पुरुषो वै यज्ञः । पुरुषस्तेन १३२११ | |
| पाशं कृत्वा प्रतिमुञ्चति ३७४११ | | पुरुषो वै यज्ञः । पुरुषस्तेन ३५२११ | |
| पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपति० ४२२११० | | पुरुषो वै संवत्सरः । तस्य १२११४१ | |
| पिता नोऽसि पिता नो १४११४१५ | | पुरुषो वै संवत्सरः । तस्य १२२१४१ | |
| पिता मनीनामिति १४११४३ | | पुरुषो वै संवत्सरः । पुरुष १२१३२१ | |
| पिता माता प्रजेत एव १४११४३ | | पुरुषोऽसौ गौरविरजो भव० ६२१११५ | |
| पितृभ्यः स्वभाविभ्यः १२८११८ | | पुरुषो ह नारायणोऽकामयत् १३११११ | |
| पितृलोकं वा एतेऽन्वय० १२८११८ | | पूर्णं गृह्णाति । सर्वं वै पूर्णं ४२१२१२ | |
| पुमे पूर्वस्मै जुहोति ९१११६ | | पूर्णं निनयति । सर्वं वै पूर्णं १९१३१३ | |

| कण्डिकाप्रतीकः | सं० अ० ब्रा० अ० | कण्डिकाप्रतीकः | सं० अ० ब्रा० अ० |
|-----------------------------------|-----------------|--------------------------------|-----------------|
| पूर्णं निनयति । सर्वं वै पूर्णं | १।९।३।५ | प्रजापतिः प्रजा असृजत | १०।१।३।१ |
| पूर्णमदः पूर्णमिदम्पूर्णत्पू० | १।४।८।१।१ | प्रजापतिः प्रथमा चितिम० | ६।२।३।१० |
| पूर्णाहुतिञ्जुहोति । सर्वं वै | ५।२।३।१ | प्रजापतिः स्वर्गस्तोकमजि० | १०।२।१।१ |
| पूर्णाहुतिञ्जुहोति । सर्वं वै | १।४।३।२।२ | प्रजापतिना मृत्यासु | १३।४।४।४ |
| पूर्वेया द्वारा स्थूणाग्निर्हृत्य | १।४।१।३।७ | प्रजापतिरकामयत । अश्व० | १३।१।७।१ |
| पूर्वार्धं च जघनार्धं चाणिष्ठौ | ८।२।४।२० | प्रजापतिरकामयत । उभौ | १३।२।४।१ |
| पूर्वेणाहवनीयं परीत्य | २।३।३।१।३ | प्रजापतिरकामयत । महा० | १३।२।१।१।१ |
| पूषाध्वनस्पतिविति । इयं वै | ३।२।४।१९ | प्रजापतिरकामयत । सर्वा० | १३।४।१।१ |
| पूषा भगम्भगपतिः | ११।४।३।१५ | प्रजापतिरग्निरूपाण्यभ्यध्यायत् | ६।२।१।१ |
| पूष्णे स्वाहा । पूष्णे | १३।१।८।६ | प्रजापतिरश्वमेधमसृजत | १३।१।४।१ |
| पूष्णो रक्षा इति । एष वै | ३।८।३।२२ | प्रजापतिरश्वमेधमसृजत | १३।१।८।१ |
| पृथिविसदं त्वान्तरिक्षसदं | ५।१।२।६ | प्रजापतिरश्वमेधमसृजत | १३।२।५।१ |
| पृथिव्याः पुरीषमसीति | ८।२।१।७ | प्रजापतिरिमांस्तुक्रानैस्तत् | १०।१।२।१ |
| पृथिव्या बहम् । उदन्तरि० | ९।२।३।२६ | प्रजापतिरेपोऽग्निः । उभय० | ६।५।३।७ |
| पृथिव्येव यस्यायतनम् | १।४।६।९।११ | प्रजापतिरेपोऽग्निः । उभय० | ६।८।१।४ |
| पृथिव्यै चैनमग्नेश्च । देवी | १।४।४।३।२७ | प्रजापतिरेपोऽग्निः । उभय० | ७।२।४।३० |
| पृथिव्यै स्वाहेति । अग्नौ | १।४।९।३।६ | प्रजापतिर्देवेभ्यो यज्ञान्या० | १३।२।१।१ |
| पृथिव्यै स्वाहेति । पृथिवी | १।४।३।२।४ | प्रजापतिर्व्यज्ञमसृजत । समा० | १२।८।२।१ |
| पृथमेव पठहम् । द्वाद० | १२।३।३।७ | प्रजापतिर्व्यज्ञमसृजत । तस्य | १३।१।१।४ |
| पृथग्नाभिष्ठयी तन्त्रे कुर्वीति० | १२।२।२।४ | प्रजापतिर्वा अग्निः । संव० | २।३।३।१८ |
| पौरुषमेधिकम्पथ्यं पथम० | १३।७।१।८ | प्रजापतिर्वा इदमग्र आसीत् | ६।१।३।१ |
| पौर्णमासेन वै देवाः | ११।१।३।७ | प्रजापतिर्वा इदमग्र आसीत् | ११।५।८।१ |
| पौर्णमासेनेष्टा । इन्द्राय | ११।१।३।१ | प्रजापतिर्वा उद्गाता । योप० | ४।३।२।३ |
| प्रच्छिद्योदपात्रे प्रास्यति | ३।१।२।८ | प्रजापतिर्वा एष मृत्वा | २।३।४।८ |
| प्रजापतये मनवे स्वाहेति | ६।६।१।१९ | प्रजापतिर्वा एष यज्ञो | १।४।१।२।१८ |
| प्रजापतिं विस्तृतम् । यत्र | १०।४।१।१ | प्रजापतिर्वा एष यदंशुः | ४।६।१।१ |
| प्रजापतिं वै प्रजाः सृजमा० | १०।४।४।१ | प्रजापतिर्विर्विधकमेति | ९।४।१।१२ |
| प्रजापतिं वै भूतान्युपसीदन् | २।४।२।१ | प्रजापतिर्विराजमसृजत | १३।२।५।३ |
| प्रजापतिः प्रजा असृजत | ७।१।२।१ | प्रजापतिर्वै प्रजाः ससृजानी | ३।९।१।१ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|--------------------------------|--------------|--------------------------------|--------------|
| प्राणेन वा अग्निर्दीप्यते | १०।६।२।११ | प्रादेशमात्रे भवत । प्रादे० | ७।५।१।१४ |
| प्राणेन वै देवा अन्नमद० | १०।१।४।१२ | प्रादेशमात्र्यूर्ध्वं भवति | ६।७।१।१४ |
| प्राणेष्वेव ह्यते । होतरि | १।८।१।३९ | प्रादेशमात्र्यो भवन्ति | ६।६।३।१७ |
| प्राणो गायत्री । चसुरुष्वि० | १०।३।१।१ | प्रायणीयोऽतिशत्र । चतु० | १२।३।१।३ |
| प्राणो गायत्रीति । तद्य एव | १०।३।१।२ | प्राशित्रचेडा च । यच्चा० | ११।४।१।११ |
| प्राणोदानौ ह वा अस्येतौ | ४।१।२।११ | प्राश्वीपुत्रात् । आसुरिबा० | १४।९।४।३३ |
| प्राणोऽपानो ध्यान इति | १४।८।१।५।३ | प्रेदमे ज्योतिष्मान्याहि | ६।८।१।९ |
| प्राणो वै ग्रहः सोऽपाने० | १४।६।२।२ | प्राक्षणीरध्वर्युरादये । स इ० | १।३।३।१ |
| प्राणो ह वा अस्वोपाशु | ४।१।१।१ | प्राक्षणीरध्वर्युरादये । त इ० | २।६।१।१४ |
| प्राणो ह वा अस्वोपाशुः | ४।१।२।१ | प्राक्षणीरध्वर्युरादये । स इ० | ३।६।३।१४ |
| प्रातःसयनस्यैतदूष्म् | १२।८।२।८ | प्राक्षणीरध्वर्युरादये । स पु० | ३।५।२।४ |
| प्रातरादित्यमुपनिष्ठते | १४।९।३।१४ | प्राक्षणीषु पवित्रे भवतः | १।३।१।२२ |
| प्रातराहुत्या हुतायाम् | १३।४।१।१० | प्राक्षिता स्थेति । तदेताभ्यो | १।१।३।१० |
| प्रादेशमात्री भवति । प्रादे० | ६।६।२।१२ | पोतिर्ह कौशाम्बेयः | १२।२।२।१३ |
| प्रादेशमात्री स्यात् । प्रादे० | ६।३।१।३३ | प्रोयदश्वो न यवसे | ८।७।३।१२ |

(फ)

फेनोऽजवीत् । काहं भवानीति ६।१।३।३

(ब)

| | | | |
|----------------------------------|-----------|----------------------------------|-----------|
| वस्तो वय इति । वस्तं | ८।२।४।१ | वाक्षेनाग्निं हरति । इमे वै | ९।१।२।११ |
| वह्निर्वेदेरियं वै वेदिः । आप्ता | ७।३।१।१५ | वाक्षेनाग्निमाहरति । आप्ता | ७।३।१।१४ |
| वह्निर्वेदेरियं वै वेदि । आप्तो | ७।३।१।१८ | वाक्षेनाग्निमाहरति । आप्तो | ७।३।१।१७ |
| वह्निर्वेदेरियं वै वेदिः । आतो | ९।४।२।३ | वाक्षेनाग्निमाहरति । आतो | ९।४।२।२ |
| वहुमिहं वै यज्ञे । एक० | १०।२।६।९ | वाक्षेनाग्निमुत्त्यजेत् । इमे वै | ७।५।२।३१ |
| वहु वा इदं सुप्तस्य वा | १४।१।४।५ | वाक्षोक्षा भवति । अन्तरे | ६।६।२।१६ |
| वार्हस्पत्येन चरुणा प्रचरति | ५।२।२।१ | वृहच्छेवा यविप्स्येति | १।४।१।२६ |
| वाक्त्रजीभी रज्जुमिर्जुता | १४।१।३।११ | वृहत्याज्जायति । वृहत्या | १२।८।३।२४ |
| वाह् अस्येते । ते नानोप० | ७।१।१।३१ | वृहदमे सुवीर्यमिति | १।४।१।२८ |
| वाह् पयदशवत्सौ । ते य० | ८।४।४।६ | वृहदुचरे पशे । द्यौर्वै | ९।१।२।३७ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०आ०इ० | कण्डिकाप्रतीक | का०अ०आ०इ० |
|-----------------------------------|-----------|------------------------------------|-----------|
| वृद्धस्पतये स्वा विश्वदेव्या० | १४२।२।१० | ब्रह्मज्ञित्येव तृतीयमामन्त्रयते | ५।४।४।११ |
| वृद्धस्पतिर्मेघ ब्रह्मपतिः | ११।४।३।१३ | ब्रह्मज्ञित्येव द्वितीयमामन्त्र० | ५।४।४।१० |
| वृद्धस्पतिसबो वा एष यज्ञा० | ५।२।१।१९ | ब्रह्मज्ञित्येव पञ्चममामन्त्रयते | ५।४।४।१३ |
| बोधा मे अस्य वचसो नवि० | ६।८।२।९ | ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् | ११।२।३।१ |
| अग्नस्य निष्ठपं चतुस्त्रिंश | ८।४।१।२३ | ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् | १४।४।२।२१ |
| ब्रह्मचर्यमागामिर्याह | ११।५।४।१ | ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् | १४।४।२।२३ |
| ब्रह्मचार्यसीत्याह । ब्रह्म | ११।५।४।५ | ब्रह्म वै सृ यवे प्रजाः प्राय० | ११।३।३।१ |
| ब्रह्म ज्ञान प्रथमं पुरस्ता० | ७।४।१।१४ | ब्रह्म वै स्वयम्भु तपोऽवप्यत | १३।७।१।१ |
| ब्रह्म अज्ञानप्रथमपुरस्ता० | १४।१।३।३ | ब्रह्मसंक्षित इति । ब्रह्मसंक्षितो | १।४।२।९ |
| ब्रह्म क्षत्रम्भवत इति प्रथः | १२।७।३।१२ | ब्रह्मदत्तायै स्वाहेति द्वितीया० | ११।३।५।३ |
| ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते | १३।६।२।१० | ब्रह्मकृष्णश्च नोऽवत्विति | १३।२।७।७ |
| ब्रह्म तम्परादात् । योऽन्य० | १४।५।४।६ | ब्रह्मक्षेमः पुरोडाश | ११।२।७।११ |
| ब्रह्म तम्परादात् । योऽन्य० | १४।७।३।७ | ब्रह्मैव वसन्तः क्षत्रं ग्रीष्मो | २।१।३।५ |
| ब्रह्मज्ञित्येव चतुर्थमामन्त्रयते | ५।४।४।१२ | ब्रह्मादनम्पयति । रेत एव | १३।१।१।१ |
| ब्राह्मणा अस्य यज्ञस्य | १।५।१।१२ | | |

(भ)

| | | | |
|-----------------------------|-----------|-----------------------------|------------|
| भक्षयित्वा समुपहृत्वा । स्म | ४।३।१।१ | भूमा वा अतः । भूमा हि वा | १।१।२।६ |
| भरतवदिति । एष हि देवेभ्यो | १।५।१।८ | भूमिस्तस्मिन्धौरिति | १४।८।१।५।१ |
| भरद्वाज ऋषिरिति । मनो वै | ८।१।१।९ | भूयसि हविष्करण उपहृत | १।८।१।३३ |
| भर्गो देवस्य धीमहि | १४।९।३।१२ | भूयसि हवीषि भवन्ति | ६।६।१।१ |
| भान्तः पञ्चदश इति | ८।४।१।१० | भूयो हविष्करणमाद्यस्त | १।९।१।१५ |
| भामेव चन्द्रमस आदत्त | ११।८।३।११ | भूसीति । भूर्ध्वं भूमिरसीति | ७।४।२।७ |
| मुज्युः स्रुपर्ण इति | ९।४।१।११ | भूरिति वै प्रजापतिः | २।१।४।११ |
| भू स्वाहेति । अग्नौ हुत्वा | १४।९।३।७ | भूरिति वै प्रजापतिः | २।१।४।१२ |
| गृत्मेव पूर्व आज्यमामः | ११।२।७।१३ | भूरिति वै प्रजापतिः | २।१।४।१३ |
| मृताय स्वाहेति । अग्नौ | १४।९।३।५ | भूर्गृहं वै वारुणिः । वरुणं | ११।६।१।१ |

(म)

| | | | |
|-------------------------|----------|--------------------------|-----------|
| मरवाय त्वेति । एष वै | १४।१।३।५ | मधुक्रो ह स्माह पैद्म्यः | ११।७।२।८ |
| मण्डूकेन पशवन् । तस्मा० | ९।१।२।२४ | मधुनः सारपत्येति | १४।२।१।२० |

| कण्डिकाप्रतीक | अ० अ० ब्रा० क० | कण्डिकाप्रतीक | अ० अ० ब्रा० क० |
|---------------------------------------|----------------|--|----------------|
| मधुना ह वा एष देवास्तर्प० ११।५।७।६ | | मर्त्या ह वा अग्ने देवा ११।१।२।१२ | |
| मधु माध्वीभ्याम्मधु माधू० १४।१।४।१३ | | मर्त्या ह वा अग्ने देवा ब्राह्म ११।२।३।६ | |
| मधु वाता ऋतायत इति ७।५।१४ | | मर्यादाया एव लोष्टमाहृत्य १३।८।४।१२ | |
| मधु सारधमिति वा आहु ३।४।३।१४ | | महद् तस्यो भुवनेष्वन्तरिति २।५।१।५ | |
| मधु ह वा ऋच । घृतं ह ११।५।७।५ | | महाहविषा ह वै देवा वृत्र २।५।४।१ | |
| मध्यमेव तृतीया चिति ८।७।४।२१ | | महाहविषा ॥ वै देवा वृत्र २।६।१।१ | |
| मध्वाहुमयो ह वा पत्ता ११।५।६।८ | | महाहविषा ह वै देवा वृत्र २।६।२।१ | |
| मन एव पुर । मनो हि १०।३।५।७ | | महि त्रीणामवोऽस्तु । शुक्ल २।३।४।३७ | |
| मन एव पूर्णमा । पूर्णमिव ११।२।४।७ | | मही द्यौ पृथिवी च न इति ७।५।१।१० | |
| मन एवास्यात्मा । वाक्त्राया १४।४।२।३१ | | महो ज्यायोऽकतेति १।९।१।११ | |
| मन एवेन्द्र । वाक्सरस्वती १२।९।१।१३ | | मांस हैवास्य शुक्ल २।५।२।१६ | |
| मनत्रे ॥ वै मात । अग्ने० १।८।१।१ | | मासान्वस्य शक्राणि १४।६।७।१२ | |
| मनस काममाकृतिमिति १४।३।२।१९ | | मासेभ्य एवास्य पलाश १३।४।४।१० | |
| मनुर्बेवस्वतो राजेत्याह १३।४।३।३ | | मा च्छन्द इति । अय वै ८।३।३।५ | |
| मनुष्वद्वस्त्वदिति । मनुर्ह १।५।१।७ | | मा त इन्द्र ते वयम् ५।४।३।१४ | |
| मनो जूतिर्जुपतामाज्यस्येति १।७।४।२२ | | माता च ते पिता च त इति १३।२।९।७ | |
| मनो बृहतीति । तद्य एव १०।३।१।५ | | मातेव पुत्र पृथिवी पुरीव्य० ७।१।१।४३ | |
| मनोमयोऽयम्पुरुष । आ १४।८।८।१ | | माध्यन्दिनस्यैतत्सवनस्य १२।८।२।९ | |
| मनो मेषामग्निं प्रयुज स्वा० ६।६।१।१६ | | माध्यन्दिने वै न सवने गृही० ४।५।३।८ | |
| मनोर्ह ॥ ऋषभ आस १।१।४।१४ | | माध्यन्दिने वै नान्तसवने ४।५।४।७ | |
| मनो वै ग्रह । स कामे० १४।६।२।७ | | मानवी घृतपदीति । मनु० १।८।१।२६ | |
| मनो ह वा षस्य सविता ४।४।१।१ | | मारुतोऽसि मरुतां गण इति ९।४।२।६ | |
| मनो ह वै देवा मनुष्यस्या० २।४।१।२१ | | मास षष्ठी । मासपुरीष० १०।२।५।१४ | |
| मनो होचक्राम । तर्सेव० १४।९।७।११ | | मासश्चतुर्थी । मासपुरी० १०।२।५।१२ | |
| मन्त्रेण तमाघारयति । य वाच १।४।४।६ | | मासन्तृतीया । मासपुरी० १०।२।५।११ | |
| मन्त्रेण तमाघारयति । य १।४।४।११ | | मासन्दितीया । मासपुरी० १०।२।५।१० | |
| मरुतामोजसे स्वादेति ५।४।३।१७ | | मासा हवीषि । स यो ह वै ११।२।७।३ | |
| मरुत्वन्त वृषमम् । वावृषा० ४।३।३।१४ | | मासु भित्था मासुरिष इति ६।६।२।५ | |
| मरुद्भि परिधीयस्वेति १४।१।३।२७ | | माहिर्मूर्मां वृदाकुरिति ४।४।५।३ | |

| कविटकापटीकः | का० प्र० पा० क० | कविटकापटीकः | का० प्र० पा० क० |
|-------------------------------|-----------------|--------------------------------|-----------------|
| मित्र क्षत्रं क्षत्रपतिः | ११।४।३।११ | मुञ्जवृक्षो नान्वस्ता भवति | ३।१।१।१३ |
| मित्रः संसृज्य । पृथिवी | ६।५।१।५ | मूत्र देवास्त्योजोऽस्तवत् | १२।७।१।८ |
| मित्रस्त्वा यदि चप्नीतामिति | ३।२।४।१८ | मूर्द्धा वय इति । प्रजापतिर्वि | ८।२।३।१० |
| मित्रस्य भागोऽस्ति । वरुण० | ८।४।२।६ | मूर्द्धासि राट् । भुवसि | ८।३।४।६ |
| मित्रावरुणाभ्यास्त्वा । देवा० | ४।२।३।१२ | मूर्द्धासि राट् इति मं लोहमरो० | ८।३।४।८ |
| मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहेति | ३।८।४।१४ | मृगशीर्षेऽसी भादधीन । एतद्वै | २।१।२।८ |
| मिथुनादिद्वापगमेतत्प्रज० | २।४।४।२१ | मृग्यो स मृ सुपाप्नोति | १४।७।२।२२ |
| मिथुनानि जुहोति । मिथुना० | ०।१।४।१।५ | मृद्वन्वीत् । काहं भवानीति | ६।१।३।४ |
| मुखमेवास्यामीकवतीष्टि | ११।५।२।४ | मृन्मयान्यु हेके कुर्वन्ति | ६।२।१।१९ |
| मुखमेवास्याहवनीयः | ३।५।३।३ | मेदभाहुण्यो ह या एता | ११।५।६।७ |
| मूर्ध्निनिधिशाय्याश्चावयति | ४।४।३।० | मेवायै मनसेऽमये स्वाहेति | ३।१।४।७ |
| मुखसन्मितो भवति । एतावद्वै | ३।२।१।०४ | मेवायै मनसेऽमये स्वाहेति | ३।१।४।१३ |
| मुखादेवास्य बलमसत् | १२।७।१।४ | मैत्रावरुणा वयस्यया प्रचरति | ५।४।४।१ |
| मुखे प्रथमं प्रत्यस्यति | ७।५।२।११ | मैत्रेयीति होर च य जनस्त्वय | १४।५।४।१ |
| मुञ्जकुलयेनावस्तीर्णा भवति | ६।६।१।२३ | मो पू ण । इन्द्रात्र पृष्ठ | २।५।२।२८ |

(य)

| | | | |
|---------------------------------|-----------|-------------------------|-----------|
| यः कश्च शब्दो वागेव | १४।४।३।१० | य उ हैवन्दिदम् । स्वेपु | १०।३।५।९ |
| य पृथिन्यान्तिष्ठन् । पृथि० | १४।६।७।७ | य उ हैवन्दिदम् । म्येपु | १४।४।१।२० |
| यः प्राणे तिष्ठन् । प्राणा० | १४।६।७।२१ | य एवायम्प्रजननः प्राण | १०।३।१।७ |
| यः श्रोत्रे तिष्ठन् । श्रोत्रा० | १४।६।७।२४ | य एष एतस्मिन्मण्डले | १४।८।६।४ |
| य सर्वेषु भूनेषु तिष्ठन् | १४।६।७।२० | य एषोऽमुराणामासीत् | १।७।२।२४ |
| यः सर्वेषु यज्ञेषु तिष्ठन् | १४।६।७।१९ | यकासकौ शकुन्तिकेति | १३।२।९।६ |
| य सर्वेषु लोकेषु तिष्ठन् | १४।६।७।१७ | यक्षत्सवं महिमानमिति | १।७।३।१३ |
| यः सर्वेषु वेदेषु तिष्ठन् | १४।६।७।१८ | यजमान एव जुह्वन् | १।३।२।११ |
| य आकाशे तिष्ठन् | १४।६।७।१० | यजमान एव जुह्वन् | १।५।२।२ |
| य आत्मनि तिष्ठन् | १४।६।७।३० | यजमान एव जुह्वन् | १।५।३।१८ |
| य आदित्ये तिष्ठन् | १४।६।७।१२ | यजमान एव जुह्वन् | १।८।३।५ |
| य इमं यज्ञमवाऽये च | १।८।१।२८ | यजमान एव भुवामनु | १।४।५।६ |
| य उ एव यजमानायासती० | १।२।४।१४ | यजमान एव पशमी जिति | ८।७।४।१६ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का० प्र० वा० क० | कण्डिकाप्रतीकः | का० प्र० वा० क० |
|---|-----------------|---------------------------------------|-----------------|
| यजमानदेवत्यो वै गार्हपत्यः २।३।२।६ | | यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति १०।२।२।३ | |
| यजमानो वै प्रवर्यः १।३।३।२।२५ | | यत्र वा अन्यदिव स्यात् १।३।३।२।२४ | |
| यजुः । प्राणो वै यजुः १।४।८।१।४।२ | | यत्र वै देवाः अमुररक्षसा० ३।१।३।१।१ | |
| यजुषा ह वै देवाः । अग्ने ३।६।७।१।३ | | यत्र वै देवाः । अमुररक्षसा० ४।२।१।१ | |
| यज्ञं वा एष जनयति १।९।१।२ | | यत्र वै देवाः । इमा विद्याः ४।६।७।१।४ | |
| यज्ञ एव चतुर्थी चितिः ८।७।४।१।५ | | यत्र वै देवाः । साकमेधैर्ज्यं ५।२।४।७ | |
| यज्ञा यज्ञं गच्छ । यज्ञगति ४।४।४।१।४ | | यत्र वै देवा अग्ने वशुमाले० ३।८।३।१।१ | |
| यज्ञायज्ञियं पुच्छे । चन्द्रमा ९।१।२।३।९ | | यत्र वै प्रजापति प्रजाः ससृजे २।३।३।१ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति १।६।२।१ | | यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छिद्यत ३।९।२।१ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति ३।१।४।३ | | यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छि० ३।१।३।१।२ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति ३।२।२।२ | | यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छि० ३।९।३।१।८ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति ३।२।२।२।१ | | यत्र हि द्वैनमिव भवति १।४।४।४।५ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति ३।२।२।२।८ | | यत्रोदकम्भवति तस्मान्ति १।३।८।४।५ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति ३।४।३।१।५ | | यत्स दुग्धरेत्य । अथ तत्र १।१।३।१।७ | |
| यज्ञेन वै देवाः । इमा जिति ३।७।१।२।७ | | यत्ससात्तानि मेधया तपसा० १।४।४।३।१ | |
| यज्ञेन वै देवाः । दिवमुपोद० १।७।३।१ | | यत्ससात्तानि मेधया तपसा० १।४।४।३।२ | |
| यज्ञेन ह वै देवाः । इमा जिति १।६।२।२ | | यथा वा इयोस्तीकम् । एवं २।३।३।१।० | |
| यज्ञो वा अन । यज्ञो हि वा १।१।२।७ | | यथा वै हविषोऽहुतस्य १।३।१।३।१ | |
| यज्ञो ह वै देव्योऽपचक्राम १।५।२।६ | | यथा वै हविषोऽहुतस्य १।३।१।३।५ | |
| यत्कर्मणास्यरीरिचम् १।४।९।४।२४ | | यथा वै हविषोऽहुतस्य १।३।२।६।८ | |
| यत्किञ्च विजिज्ञास्यम् १।४।४।३।१।६ | | यदक्रन्दः प्रथमज्ञायमान १।३।५।१।१।७ | |
| यत्किञ्चाविज्ञातम् । प्राणस्य १।४।४।३।१।७ | | यदमिषधान्धक्कयन्ति १।३।२।१।०।१ | |
| यत्तिष्ठोऽनुष्टुभो भवन्ति : १।३।३।३।१ | | यदहरस्य इषोऽभ्याधेयं स्यात् २।१।४।१ | |
| यत्पयो न स्यात् । केन १।१।३।१।३ | | यदहरेवैपः । ॥ पुरस्तात् १।१।१।१।४ | |
| यत्र त्रिष्टुमः शस्यन्ते ३।३।२।१।१ | | यदाकृतं । सममुत्सोदृष्टो ९।५।१।४।५ | |
| यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत् १।४।४।५।१।६ | | यदाज्यं परिशिष्टं भवति ३।६।४।४ | |
| यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत् १।४।७।३।२।५ | | यदा पिष्टान्वथ लेमानि १।२।३।८ | |
| यत्र द्यावापृथिव्यं शस्यते ४।३।२।१।२ | | यदापो अघ्न्या इति १।२।९।२।४ | |
| यत्र धारा ननुषेताः । मयो० ९।५।१।५।० | | यदा प्राह संज्ञस्य पञ्चुरिति ३।८।२।१ | |

| कविकानामकाराद्यनुक्रमणिका | का० प्र० वा० क० | कविकानामकाराद्यनुक्रमणिका | का० प्र० वा० क० |
|---------------------------------|-----------------|--------------------------------|-----------------|
| यदा वा अग्निरनुगच्छति | १०।३।३।८ | यद्धरिणो यवमजीति | १३।२।१।८ |
| यदा वै पुरुषः । अस्मा० | १४।८।१२।१ | यद्ध वा अत्राग्निद्वेष्टं | २।३।४।१८ |
| यदा श्रुतोऽथाभिवासयति | १।२।२।१६ | यद्ध वा अत्राग्निद्वेष्टं | २।३।४।२० |
| यदि चतुर्थ्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।१४ | यद्ध लके । इदन्निवृदेति | १२।३।१।१ |
| यदि तृतीयांमनुग्राहरेत् | १।४।३।१३ | यद्ध वा अयञ्जन्तम् | ११।५।७।३ |
| यदि वक्ष्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।२० | यद्यन्ततो यजम्यानुग्राहरेत् | १।६।१।१८ |
| यदि द्वितीयांमनुग्राहरेत् | १।४।३।१२ | यद्यरुणदूर्वा न विन्देयुः | ४।५।१०।६ |
| यदि नवम्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।१९ | यद्यरुणपुष्पाणि न विन्देयुः | ४।५।१०।३ |
| यदि पञ्चम्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।१५ | यद्यष्टम्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।१८ |
| यदि पालाशान्नं विन्देत् | १।३।३।२० | अयहेनग्राह्यमचैवी | १०।५।५।२ |
| यदि मध्यतो यजम्यानुग्राहरेत् | १।६।१।१७ | यद्य दाराज विन्देयुः | ४।५।१०।५ |
| यदि इयेन हृतं न विन्देयुः | ४।५।१०।४ | यद्यु मध्यं । अग्नीषोमयो | १।८।३।२ |
| यदि षष्ठ्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।१६ | यद्यु मध्यं । इन्द्राग्राह्यं | १।८।३।४ |
| यदि सप्तम्यामनुग्राहरेत् | १।४।३।१७ | यद्यु अन्य हृदय ज्येष्ठ | २।४।३।५ |
| यदि सोममनुग्राहरेत् | ४।५।१०।१ | यद्यु एकं भवति । तदेव | ३।२।१।३ |
| यदि ह वा अग्रभक्तः | ११।५।७।४ | यद्यु एतदुभयं न विन्देत् | ३।९।२।९ |
| यदुत्तम्य हविर्धानम्य | ४।६।९।२ | यद्यु एतदुभयं न विन्देत् | ३।९।२।९ |
| यदुद्गातोद्गायेत् । यथाश्रेष्ठं | १।३।२।३।२ | यद्यु एतदुभयं न विन्देत् | ३।९।२।९ |
| यदुग्धी नक्तम् । अपाम्मा० | १।३।१।५।५ | यद्यु ऐन्द्राग्राह्यं | ४।६।४।६ |
| यदुग्धी राजन्वी । अग्राग्मा० | १।३।१।५।३ | यद्यु स्थः स्यात् । मध्यमं | ३।९।३।३ |
| यदूर्ध्वं प्रतिष्ठाया अवाचीर्न | ८।७।४।२० | यद्यु स्थः स्यात् । सोमं | ४।४।२।८ |
| यदूर्ध्वं स्तोमा अनुवन्ति | १२।३।१।२ | यद्यु द्वादशोपसद उपेयात् | ३।४।४।९ |
| यदेतन्मण्डलन्तपति | १०।५।२।१ | यद्यु पञ्चेकादक्षिणी स्यात् | ३।९।१।२३ |
| यदेव गुदं भेषा करोति | ३।८।४।३ | यद्यु वा एतमुत्तममचैवीः | १०।५।५।५ |
| यदेतमनुपश्यति । आत्मा० | १।४।७।२।१८ | यद्यु वा एतन्मध्यममचैवीः | १०।५।५।४ |
| यद्वामे यदग्रय इति | १२।९।२।३ | यद्यु वा एतन्मध्यममचैवीः | १०।५।५।३ |
| यदत्तं यत्परादानम् | ९।५।१।४९ | यद्युष्णीषं विन्देत् । उष्णीषः | ३।३।२।४ |
| यदेवत्यः पशुर्भवति । तदेवत्यं | ३।८।३।१ | यद्येकादशमनुग्राहरेत् | १।४।३।१ |
| यदेवा देवहेतुमिति | १२।९।२।२ | यद्येषोत्ता मिषेन । यामित्रा | ६।६।४।८ |
| | | यद्वास्या पञ्च पुरस्तादुप० | ७।४।२।३७ |

| कण्डिकापरीकः | का० प्र० मा० क० | कण्डिकापरीकः | का० प्र० मा० क० |
|----------------------------------|-----------------|----------------------------------|-----------------|
| यद्वयमितो ददन्नभीयात् | १२।४।४।३ | यद्वेव दर्भस्तम्बमुपदधाति | ७।२।२।२ |
| यद्वा अतो दीर्घमन्युपस्थानम् | २।४।१।२ | यद्वेव दिव्या उपदधाति | ८।३।१।१२ |
| यद्वा अस्यावाचीनं नामे | ४।२।४।२ | यद्वेव दिव्या उपदधाति | ८।३।१।१३ |
| यद्वा अस्यावाचीनं न मे. | ४।२।४।८ | यद्वेव दूर्ध्वेष्टका मुपदधाति | ७।४।२।११ |
| यद्वा अस्यावाचीनं नामे | ४।२।४।१५ | यद्वेव देवताया आदिशति | १।१।२।१९ |
| यद्वा अस्त्योर्ध्वं नामे । तद० | ४।२।४।१४ | यद्वेव द्वादश द्वादश | ८।३।३।४ |
| यद्वा आहवनीयमुपतिष्ठते | २।३।४।३२ | यद्वेव द्वादश । द्वादशाक्षरा | ६।२।१।२९ |
| यद्वा आहवनीयमुपतिष्ठते | २।३।४।३६ | यद्वेव द्वादश । द्वादशाक्षरा | ६।२।१।३० |
| यद्वाह । यत्र देवासो | ३।१।१।१२ | यद्वेव नाकसत्पञ्चचूडा उप० | ८।६।१।१२ |
| यद्विष्णोचाम् । मर्त्ये० | ११।५।१।१० | यद्वेव नाकसत्पञ्चचूडा उप० | ८।६।१।१३ |
| यद्वृषो वृक्षो रोहति | १४।६।९।३३ | यद्वेव नाकसत्पञ्चचूडा उपद० | ८।६।१।१४ |
| यद्वेव कूर्ममुपदधाति । प्राणो | ७।५।१।७ | यद्वेव नाकसद उपदधाति | ८।६।१।२ |
| यद्वेव गार्हपत्यं च पुनश्चिति | ८।६।३।१५ | यद्वेव पञ्चचूडा उपदधाति | ८।६।१।१५ |
| यद्वेव गार्हपत्यमुपदधाति | ८।६।३।५ | यद्वेव परमेष्ठिनोपदधाति | ८।७।३।१५ |
| यद्वेव गार्हपत्यमुपदधाति | ८।६।३।६ | यद्वेव पञ्चशीर्षमुपदधाति | ७।५।२।३ |
| यद्वेव गार्हपत्यमुपदधाति | ८।६।३।७ | यद्वेव पञ्चशीर्षमुपदधाति | ७।५।२।६ |
| यद्वेव चतस्रः । चतुरक्षरं | ८।३।२।११ | यद्वेव पुनश्चितिमुपदधाति | ८।६।३।१३ |
| यद्वेव चतस्रः । सप्तपदा | ८।३।२।१० | यद्वेव पुनश्चितिमुपदधाति | ८।६।३।१६ |
| यद्वेव चतस्रः । पशुरेव | ८।३।२।१२ | यद्वेव पुनश्चितिमुपदधाति | ८।६।३।१७ |
| यद्वेव चतुर्भिः । चतस्रो वै | ६।३।१।४४ | यद्वेव पुरीषेण । अन्नं वै | ८।५।४।५ |
| यद्वेव चतुर्विंशतिः । चतु० | ६।२।१।२२ | यद्वेव पुरीषेण । संवत्सर | ८।५।४।७ |
| यद्वेव चतुर्विंशतिः । चतु० | ६।२।१।२३ | यद्वेव पुरीषेण । हृदयं वै | ८।५।४।६ |
| यद्वेव चित्ते गार्हपत्ये । अचित् | ७।३।१।२ | यद्वेव पुरुषमुपदधाति | ७।४।१।१६ |
| यद्वेव चित्ते गार्हपत्ये । अचिन् | ७।३।१।३ | यद्वेव पूर्णपात्रं निनयति | १।९।३।४ |
| यद्वेव छन्दस्या उपदधाति | ८।२।३।९ | यद्वेव पुष्करपर्ण उपदधाति | ७।४।१।१२ |
| यद्वेव छन्दस्या उपदधाति | ८।३।३।२ | यद्वेव पुष्करपर्ण उपदधाति | ७।४।१।१३ |
| यद्वेव छन्दस्या उपदधाति | ८।६।२।५ | यद्वेव पुष्करपर्णमुपदधाति | ७।४।१।८ |
| यद्वेव त्रिष्टुत्वं प्रत्यवरोहति | ९।१।१।४१ | यद्वेव प्रजासु च प्रजापतौ | ९।१।२।४२ |
| यद्वेव दधि गृह्णाति । हुतो० | ४।३।५।१४ | यद्वेव प्रतिप्रस्थावा प्रतिनिगृ० | ४।३।५।८ |

| करिहकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० | करिहकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|----------------------------------|--------------|--------------------------------|--------------|
| यद्वेव प्रतिप्रस्थाता सखवौ | ४।३।५।२४ | यद्वेव विश्वज्योतिषमुपदधाति | ८।७।१।१६ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ६।७।३।४ | यद्वेव विष्णुकमवात्सप्रे भवत | ६।७।४।७ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ६।७।३।५ | यद्वेव विष्णुकमवात्सप्रे भवत | ६।७।४।८ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ९।१।१।३३ | यद्वेव विष्णुकमान्कमते । यज्ञो | १।९।३।९ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ९।१।१।३४ | यद्वेव वैश्वकर्मणानि जुहोति | ०।५।१।४३ |
| यद्वेव प्राणाभृत उपदधाति | ८।१।१।३ | यद्वेव वैश्वदेव ग्रह गृह्णाति | ४।४।१।९ |
| यद्वेव प्राणाभृत उपदधाति | ८।२।३।३ | यद्वेव वैश्वदेवं ग्रह गृह्णाति | ४।४।१।१० |
| यद्वेव प्रोक्षति । हरिर्वा | ७।३।२।३ | यद्वेव वैश्वदेव ग्रह गृह्णाति | ४।४।१।११ |
| यद्वेव माहेन्द्रं ग्रह गृह्णाति | ४।३।१।१७ | यद्वेव वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।४ |
| यद्वेव रथशीर्षे जुहोति | ९।४।१।१५ | यद्वेव वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।५ |
| यद्वेव रुक्म प्रतिमुच्य विभर्ति | ६।७।१।३ | यद्वेव वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।७ |
| यद्वेव रुक्म प्रतिमुच्य विभर्ति | ६।७।१।४ | यद्वेव वैश्वानर । ऋतवो | ६।२।१।६६ |
| यद्वेव रुक्मं प्रतिमुच्य विभर्ति | ६।७।१।५ | यद्वेव वैश्वानरमारुताब्जु० | ९।३।१।१३ |
| यद्वेव रुद्रमतीजुहोति | ९।४।२।१३ | यद्वेव वैष्णव्यर्चा जुहोति | ३।६।३।१६ |
| यद्वेव रेत सिचा उपदधाति | ७।४।२।२४ | यद्वेव वैष्णव्या जुहोति | ३।६।४।२ |
| यद्वेव रेतव्या उपदधाति । क्षत्र | ८।७।१।२ | यद्वेव वैसर्गिनानि जुहोति | ३।६।३।३ |
| यद्वेव रेतव्या उपदधाति । सप्त० | ८।७।१।३ | यद्वेव व्यतिपजति । आत्मा | ७।३।१।५ |
| यद्वेव लोकम्पृगानुपदधाति | ८।७।२।२ | यद्वेव व्यतिपजति । आत्मा | ७।३।१।६ |
| यद्वेव लोरोष्ठका उपदधाति | ७।३।१।१६ | यद्वेव सत्तेऽच्छायाके । ऋतु० | ४।३।१।४ |
| यद्वेव दातहोमाब्जुहोति | ९।४।२।९ | यद्वेव सप्तदश सप्तदशो वै | ६।२।२।९ |
| यद्वेव वायव्य पशुर्भवति | ६।२।२।११ | यद्वेव सप्त पुरस्तादुपदधाति | ८।३।४।४ |
| यद्वेव वायव्य पशुर्भवति | ६।२।२।१२ | यद्वेव सर्पनामैरुपतिष्ठते | ७।४।१।२७ |
| यद्वेव वाहणी जुहोति | ९।४।२।१६ | यद्वेव सर्व आधिना भव० | १।२।८।२।१७ |
| यद्वेव वारसिन्धवा उपदधाति | ८।३।४।७ | यद्वेव सर्वौघं वपति | ७।२।४।१९ |
| यद्वेव विकर्णी च मयमा० | ८।७।३।११ | यद्वेव सिक्ता निवपति | ७।१।१।१० |
| यद्वेव विकर्णीमुपदधाति | ८।७।३।१० | यद्वेव सिक्ता निवपति | ७।३।१।४२ |
| यद्वेव विप्रस्ययते । एतद्वा | ९।१।२।७ | यद्वेव स्तोममगा उपदधाति | ८।५।३।४ |
| यद्वेव विश्वज्योतिषमुपदधाति | ७।४।२।२६ | यद्वेव स्तोमानुपदधाति । एतद्वा | ८।४।१।४ |
| यद्वेव विश्वज्योतिषमुपदधाति | ८।३।२।२ | यद्वेव स्तोमानुपदधाति । मज्जा० | ८।४।१।६ |

| कण्विकान्तोक्तः | का० प्र० वा० न० | कण्विकान्तोक्तः | का० प्र० वा० न० |
|-------------------------------|-----------------|-------------------------------|-----------------|
| यद्देव स्तोममुपदधाति । ये वै | ८।४।१।५ | यद्देवाह दश दशेति | ९।१।१।३९ |
| यद्देव सुवा उपदधाति | ७।४।१।३९ | यद्देवाह । नृपदे वेदप्सुपदे | ०।२।१।२ |
| यद्देव सुवश्च सुक्च । यो वै | ६।३।१।९ | यद्देवाह मखम्य शिरोऽसीति | ६।५।२।२ |
| यद्देव स्वयमातृशृणा न्यावारय० | ९।२।१।५ | यद्देवाह सहस्रयोजन इति | ९।१।१।२९ |
| यद्देव स्वयमातृशृणामुपदधाति | ७।४।२।२ | यद्देवाह । स्वर्ण धर्म स्वा० | ९।४।२।२५ |
| यद्देव स्वयमातृशृणामुपदधाति | ७।४।२।३ | यद्देवेति च प्रेति चान्वाह | १।४।१।५ |
| यद्देव हिङ्करोति ॥ प्राणो वै | १।४।१।२ | यद्देवेति च प्रेति चान्वाह | १।४।१।६ |
| यद्देवाक्रमयति । एतद्वै | ६।३।१।१० | यद्देवेन्द्राग्निभ्यामुपदधाति | ८।३।१।५ |
| यद्देवामा उत्सादयति । इमे० | ९।२।१।२१ | यद्देवेष्टका घेनू कुरुते | ९।१।२।१७ |
| यद्देवामा उत्सादयति । शिर | ९।२।१।२२ | यद्देवैकविंशतिः एकविंशो | ६।२।२।४ |
| यद्देवात्मानं विकृपति | ७।२।२।२० | यद्देवैकविंशम् । एकविंशो | १३।५।१।६ |
| यद्देवान्तरोपसदौ चिनोति | १०।२।५।२ | यद्देवैकविंशम् । एकविंशो | १३।५।१।७ |
| यद्देवापः प्रणयति । अग्नि० | १।१।१।१४ | यद्देवैकशतविधः । सप्तविध० | १०।२।४।५ |
| यद्देवापः प्रणयति । देवान्ह | १।१।१।१६ | यद्देवैकशतविधः । सप्तविध० | १०।२।४।६ |
| यद्देवापस्य उपदधाति । एव्ये० | ८।२।३।६ | यद्देवैकादश । एकादशाक्ष० | ९।५।१।३३ |
| यद्देवापस्या उपदधाति । प्रजा० | ७।५।२।४४ | यद्देवैकादशाना भवन्ति | १३।६।१।६ |
| यद्देवानावात्मायाम् । रेतो | ६।२।२।२७ | यद्देवैतं पशुपालभते | ६।२।२।१५ |
| यद्देवावप्रायति । अग्निदेवे० | ७।३।२।१४ | यद्देवैतं वायवे नियुवते | ६।२।२।७ |
| यद्देवावप्रायति । अमौ वा | ७।३।२।१३ | यद्देवैतं गैश्वानरं जुहोति | ९।३।१।२ |
| यद्देवापाद उपदधाति | ७।४।२।३४ | यद्देवैतं गैश्वानरं निरपति | ६।६।१।६ |
| यद्देवाप दायै । इयं वा अपा० | ८।५।४।२ | यद्देवैतच्छतरुद्रियं जुहोति | ९।१।१।६ |
| यद्देवापाद दायै । इयं वा अपा० | ८।५।४।३ | यद्देवैतच्छतरुद्रियं जुहोति | ९।१।१।६ |
| यद्देवाष्टकायाम् । अष्टका | ६।२।२।२५ | यद्देवैतच्छतरुद्रियं जुहोति | ९।३।१।१ |
| यद्देवाष्टकायाम् । पर्वतत्सं० | ६।२।२।२४ | यद्देवैतच्छतरुद्रियं जुहोति | ९।३।१।५ |
| यद्देवाष्टाचत्वारिंशत् | ६।२।२।३३ | यद्देवैतमग्नहरन्ति । यान्नौ | ९।२।३।५१ |
| यद्देवाष्टादश । अष्टादशो वै | ८।४।१।२८ | यद्देवैतया मौत्रावरुण्या पय० | ९।५।१।५५ |
| यद्देवाष्टावमिहृपाणि | ६।१।३।१९ | यद्देवैता वसोर्द्धा जुहोति | ९।३।२।२ |
| यद्देवास्यात्र । होता वाग्र० | १।१।१।१५ | यद्देवैताः समिध आदधाति | ९।२।२।७ |
| यद्देवाह । इयं ते राष्मि० | ९।३।३।११ | यद्देवैता अत्रोपदधाति | ८।३।२।८ |

| कारणकार्यतीक | का० प्र० मा० क० | कण्डिकापत्रोक्तं | का० प्र० मा० क० |
|-------------------------------|-----------------|---------------------------------|-----------------|
| यद्वेवेता असगता उपदधाति | ८११११६ | यद्वेवेनदमिजुगेति । शीर्ष० | ७५१२१२४ |
| यद्वेवेता आशिरीरुपदधाति | ८१२११११ | यद्वेवेनममिजुगेति । एतद्वे | ७२१३१५ |
| यद्वेवेता आहुतीजुगेति | ९१२२१४ | यद्वेवेनममिजुगेति । एतद्वे | ७२१३१६ |
| यद्वेवेता इष्टरा उपदधाति | ८१३१३९ | यद्वेवेनममिजुहोति । एतद्वे | ७२१३१७ |
| यद्वेवेतानि हवीषि निर्वपति | ९१५११३६ | यद्वेवेनममिजुहोति । एतद्वे | ७४११३३ |
| यद्वेवेता नैऋतीरन्ति | ७२१११५ | यद्वेवेनममिजुहोति । इतर | ९२१३३१ |
| यद्वेवेतामपशूनाळभते | ६२११११४ | यद्वेवेनमिष्टवाभ्या परिगृ० | ६७११२६ |
| यद्वेवेताम हुनि जुहोति | ११९१३१३ | यद्वेवेन्द्राग्र ग्रहं गृह्णाति | ४१३१२२ |
| यद्वेवेतामाहुति जुहोति | ११९१३२४ | यद्वेवेन्द्रं ग्रहं गृह्णाति | ४१३१२३ |
| यद्वेवेतामाहुति जुहोति | ६१३११६ | यद्वेवोवामुपदधाति | ७५११२७ |
| यद्वेवेतामाहुति जुहोति | ६१३११७ | यद्वेवोवायाम् । योनिर्वा | ७५१२१२ |
| यद्वेवेता राष्ट्रभूतो जुहोति | ९१४११२ | यद्वेवोदृष्टं प्रष्टुं तिष्ठन् | ६६१२१३ |
| यद्वेवेते अत्रोपदधाति | ७१४२१३१ | यद्वेवोदृष्टं प्राष्टुं तिष्ठन् | ६६१२१४ |
| यद्वेवेते अत्रोपदधाति | ८१२१११८ | यद्वेवोदचमसा अनयति | ७२१४१७ |
| यद्वेवेते अत्रोपदधाति | ८१४२११६ | यद्वेवोदचमन्याच विमीते | ३३१२१५ |
| यद्वेवेते अत्रोपदधाति | ८१७११८ | यद्वेवोदचमन्याच विमीते | ३३१२१६ |
| यद्वेवेते आहुती जुहोति | ६१३१३१७ | यद्वेवोपतिष्ठते । अथ वे | ७२१११९ |
| यद्वेवेते हवीषी निर्वपति | ६६१११७ | यद्वेवोपतिष्ठते । एतद्वे | ६७१३१४ |
| यद्वेवेन परिक्रियति । एतद्वे | ६१३१३२४ | यद्वेवोपरिनाभि । अवाप्तौ | ६७१११९ |
| यद्वेवेन परिभ्रिञ्चि परिश्र० | ७११११३३ | यद्वेवोपरिनाभि । एतद्वे | ६७१११० |
| यद्वेवेन परिपिच्छति । इमे वे | ९११२१३ | यद्वेवोपरिनाभि । यद्वे | ६७११११ |
| यद्वेवेन विकर्षति । एतद्वे | ९११२१२१ | यद्वेवोपशु । प्रजापत्य वा | ६२१२११ |
| यद्वेवेन विकर्षति । जायत | ९११२१२३ | यद्वेवोपशु । रेतो वा अत्र | ६२१२१२२ |
| यद्वेवेन विटपति । एतद्वे | ७२१२११८ | यद्वेवोभयत क्षण्ण । अतो | ६३११३५ |
| यद्वेवेन शिन्वेन विमर्ति | ६७११११८ | यद्वेवोभयत क्षण्ण । एतद्वे | ६३११३६ |
| यद्वेवेन समुक्षति । अत्रैष | ९२११११२ | यद्वेवोद्वल्लमुसले उपदधा | ७५१११६ |
| यद्वेवेन समुक्षति । एतद्वे | ९२११११३ | यद्वेवोपान्निवपति । प्रजापति | ७११११७ |
| यद्वेवेन सामभिः परिणयति | ९११२१३३ | यद्वे किद्यानुक्तम् । तस्य | १४१४३२६ |
| यद्वेवेन दिरण्यकलैः प्रोक्षति | ८७१११८ | यद्वे चतुर्विंशमह । दश० | १०१२३२ |

| कण्विकप्रतीक | का० प्र० ब्रा० क० | कण्विकप्रतीकः | का० प्र० ब्रा० क० |
|--|-------------------|--------------------------------------|-------------------|
| यद्वै तन्न जिघ्रति । जिघ्रन्वै १४।७।१।२४ | | यस्त्वचि तिष्ठन् । त्वचो० १४।६।७।२१ | |
| यद्वै तन्न जिघ्रति । जिघ्रन्वै १४।७।३।१७ | | यस्माद्वर्वाक्संवत्सर १४।७।२।२० | |
| यद्वै तन्न पश्यति । पश्यन्वै १४।७।१।२३ | | यस्मिन्पञ्च पञ्चजना १४।७।२।१९ | |
| यद्वै तन्न पश्यति । पश्यन्वै १४।७।३।१६ | | यस्य प्रयागमन्वन्य इद्ययु० ६।३।१।१० | |
| यद्वै तन्न मनुते । मन्वानो १४।७।१।२८ | | यस्यानुविचः प्रतिबुद्ध १४।७।२।१४ | |
| यद्वै तन्न मनुते । मन्वानो १४।७।३।२१ | | यस्यास्ते घोर आसुञ्जुही० ७।२।१।११ | |
| यद्वै तन्न रसयति १४।७।१।२५ | | यस्यैते यज्ञियो गर्भ इति ४।५।२।१० | |
| यद्वै तन्न रसयति १४।७।३।१८ | | यस्यैव समस्य सत १३।८।१।१० | |
| यद्वै तन्न वदति । वदन्वै १४।७।१।२६ | | यार आबहः । तशतो देव ४।४।४।११ | |
| यद्वै तन्न वदति । वदन्वै १४।७।३।१९ | | या वै प्रजापति । प्रथममाहु० २।१।१।१४ | |
| यद्वै तन्न विजानाति १४।७।१।३० | | या सेना अभीस्वरीः ६।६।३।१० | |
| यद्वै तन्न विजानाति १४।७।३।२३ | | या इषवो याजुष नानामिति ७।४।१।२९ | |
| यद्वै तन्न शृणोति १४।७।१।२७ | | या ओषवीः पूर्वा जाता ७।२।४।२६ | |
| यद्वै तन्न शृणोति १४।७।३।२० | | याज्ञरुक्प्य किञ्ज्योतिरय० १४।७।१।१० | |
| यद्वै तन्न स्पृशति १४।७।१।२० | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।१५ | |
| यद्वै तन्न स्पृशति १४।७।३।२२ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।१६ | |
| यद्वै दीकन्ते । अन्नाविष्णू १२।१।३।१ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।१७ | |
| यद्वैमर्जिनानि जुगेति ३।६।३।१० | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।१८ | |
| यन्ति वा आप १ एवा० ११।५।७।१० | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।१९ | |
| यन्त्री राहित्यमु लोकमरो० ८।३।४।१० | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।२० | |
| यमाय त्वाङ्गिरस्यते पितृ० १४।२।२०११ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।२१ | |
| यमो ददात्यनसानमम्मा १३।८।२।४ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।१।२२ | |
| यवमध्यः पञ्चरात्रो भवति १३।६।१।९ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।२।१० | |
| ययाना मागोऽसि ८।४।२।११ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।२।११ | |
| यय्यसुसि तिष्ठन् । चक्षु० १४।६।७।२३ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।२।१२ | |
| यश्चन्द्रतारके तिष्ठन् १४।६।७।१३ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।२।१३ | |
| यस्तमसि तिष्ठन् । तम० १४।६।७।२८ | | याज्ञवल्क्येति होवाच १४।६।२।२० | |
| य स्तनयितौ तिष्ठन् १४।६।७।१६ | | याज्ञवल्क्यो भेजेवीति १४।७।१।२ | |
| यस्तेजसि तिष्ठन् । तेजसो० १४।६।७।२७ | | यातयामानि वै देवैश्छदासि १।३।२।५ | |

| कण्डिकापटीः | का० अ० ब्रा० क० | कण्डिकापटीक | का० अ० ब्रा० क० |
|----------------------------------|-----------------|-----------------------------------|-----------------|
| या तिरश्चो निरयसे | १४।९।३।३ | ये देवा देवेषु । अधि देव० | ९।२।१।१५ |
| या ते धर्म दिव्या शुभिति | १४।३।१।४ | येन ऋषयस्तपसा सन्नमाय० | ८।६।३।१८ |
| या ते धर्म पृथिव्या शुभिति | १४।३।१।८ | येन बहसि सदसम् | ८।६।३।२४ |
| या ते धर्म-तरिक्षे शुभिति | १४।३।१।६ | ये वामी रोचने दिव | ७।४।१।३० |
| यान्यै सान्सस पुरुष न | १०।२।१ | ये ह वै के च यमा | ११।५।७।२ |
| यावती वै वेदिः । तावती | १।३।३।९ | योक्त्रेण सन्नद्यति । योक्त्रेण | १।३।१।१३ |
| यावती वै वेदिस्तावती पृथिवी | ३।७।२।१ | यो गायत्री हरिणीम् | ११।४।१।८ |
| यावन्तो देवास्तस्य जात० | १४।९।३।२ | योऽमौ तिष्ठन् । अमेरन्तरो | १४।६।७।९ |
| या वा ह्यै वेदि सप्तविधम् | १०।२।३।१ | यो जविष्ठो मुक्नेषु | ११।३।१।६ |
| या वै दीक्षा सा निषत् | ४।६।८।१ | यो जागर मुक्नेषु | ११।३।१।८ |
| या वै प्रजा यज्ञेऽनन्वाभक्ता | १।५।२।४ | यो विष्णु तिष्ठन् । दिग्भ्यो० | १४।६।७।१४ |
| या वै प्रजा यज्ञेऽनन्वाभक्ता | २।३।१।२० | योनिः पुरीषवती । ते संस्पृष्टे | ८।६।२।१४ |
| या वै प्रजा यज्ञेऽनन्वाभक्ता | ३।६।२।२६ | यो निरेव वरुण । रेत इन्द्र० | १२।९।१।१७ |
| या व्याघ्रं विष्वकिा | १२।७।३।२१ | यो निश्चतुर्विंश दति | ८।४।१।१८ |
| या छत्तेन प्रतनोषि | ७।४।२।१५ | योऽप्सु तिष्ठन् । अद्भ्यो० | १४।६।७।८ |
| यासौ वैशाखस्यामावास्या | ११।१।१।७ | यो मनसि तिष्ठन् । मन० | १४।६।७।२५ |
| यास्ते अग्ने सूर्ये रुच | ७।४।२।२१ | यो रेतसि तिष्ठन् । रेत० | १४।६।७।२९ |
| यास्ते अग्ने सूर्ये रुच | ९।४।२।१४ | यो वा एतदधरमदिक्त्वा | १४।६।८।१० |
| या ह दीक्षा सा निषत् | ४।६।८।२ | यो वाचि तिष्ठन् । वाच्ये० | १४।६।७।२२ |
| युक्तेन मनसा वयमिति | ६।३।१।१४ | यो वायु तिष्ठन् । वायोर० | १४।६।७।११ |
| युक्त्वाय सत्रिता देवानिति | ६।३।१।१५ | यो विद्युति तिष्ठन् । विद्यु० | १४।६।७।१५ |
| युजे वा ब्रह्म पूर्ये नमोभि० | ६।३।१।१७ | यो वै स संवत्सर० | १४।४।३।२३ |
| युजो ह वा एते यज्ञस्य | १।८।३।२७ | योपा वा अग्निर्गोतम | १४।९।१।१६ |
| युजते मन उत युजते धिय | ६।३।१।१६ | योपा वा आप० वृषामिर्मिथु० | २।१।१।४ |
| युजन्ति ब्रह्मनरूपश्चरन्त० | १३।२।६।१ | योपा वै वेदिः । तामेतद्देवाश्च | १।३।३।८ |
| युष्मा इन्द्रो वृणीत वृत्रतूर्य | १।१।३।८ | यो ह वा अग्नि सामिघेनीभिः | १।४।३।१ |
| यूपं वृद्धयन्विष्णव्यर्चा जुहोति | ३।६।४।१ | यो ह वा अग्निहोत्रे | ११।३।२।१ |
| युयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्य | १।१।३।९ | यो ह वा आयतनं वेद | १४।९।२।५ |
| ये देवा देवानाम् । यजिषा | ९।२।१।१४ | यो ह वै ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च वेद | १४।९।२।१ |

| कण्विकापठोक्तः | का०अ०भा०५० | कण्विकाप्रतीकः | का०अ०भा०५० |
|---------------------------------|------------|-----------------------|------------|
| यो ह वै प्रजातिं वेद | १४।९।२।६ | यो ह वै वसिष्ठा वेद | १४।९।२।२ |
| यो ह वै प्रतिष्ठा वेद । प्रति । | १४।९।२।३ | यो ह वै शिशुम् । साधन | १४।९।२।१ |
| यो ह वै सम्पदं वेद । स हान्मै | १४।९।२।४ | | |

(२)

| | | | |
|-----------------------------|----------|-------------------------------|------------|
| रक्षोभ्यो वै ता भीषा वाच० | ४।२।२।७ | रात्रिरेव पूर्णया । पूर्णव | ११।२।४।४ |
| रक्षोहणं यत्नगहनमिति | ४।५।४।९ | राधासीत्सम्पृञ्जानावसम्पृ० | ३।७।४।११ |
| रथन्तरं वक्षिणे पक्षे | ९।१।२।३६ | गष्ट वा अश्वमेधः । रथ् | ११।१।२।३ |
| रथीरध्वराणामिति । एतेन | १।४।२।११ | राष्ट्रया आसन्दी । अपरि० | १२।८।३।६ |
| रहिमना सत्याय सत्यज्ञि-वेति | ८।५।३।३ | राष्ट्रं साम्राज्यम् । सयो ह | १।१।२।७।१७ |
| राजानं श्री वा पर्युष | ७।३।१।४ | रुम प्रतिमुञ्च विभर्ति | ६।७।१।१ |
| राजानं प्रणयति । उघत | ४।६।८।७ | रुद्रा. संसृज् । पृथिर्वि | ६।५।१।७ |
| राजानं प्रणयति । उघत | ४।६।८।१२ | रुद्राम्वाजं तु । त्रैन्दुमेन | १३।२।३।५ |
| राजानं प्रणयति । उघत | ४।६।८।१७ | रुमेव य.योरादत् | ११।८।३।८ |
| राजन्तमध्वराणा गोशमूनस्य | २।३।४।२९ | रु. योरेव यस्यायतनम् | १४।६।९।१२ |
| राजानमुन्नीय । आदिस्थाना | ४।३।५।१९ | रेत एव यस्यायतनम् | १४।६।९।१८ |
| राजा वा एष यज्ञानां | १३।२।२।१ | रेत इति मा बोचत | १४।६।९।३४ |
| राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा | ४।१।१।१३ | रेतो होचक्रम । तस्य० | १४।२।२।१२ |
| राज्ञ एव राजसूयम् | ५।१।१।१२ | रेवती रमभमिति । रेन्तो | २।३।४।२६ |
| राज्ञश्चि प्राची दिक् | ८।३।१।१४ | रेवती रमभमिति । रेन्तो | ३।७।३।१२ |
| रात्रि सन्तमन्तर्गमम् | ४।१।२।१४ | रोहिषवामग्री आदर्धत | २।१।२।६ |
| रोहिषयामु ह वै पशवः | २।१।२।७ | | |

(३)

| | | | |
|----------------------------|----------|---------------------------|-----------|
| राजैर्जुनोति । नक्षत्राणां | १३।२।१।५ | लोक. प्राशिप्रम् । स यो ह | ११।२।७।१९ |
| लोकं पृण छिद्रं पृणेति | ८।७।२।६ | लोभभ्य एवाम्य चित्तमस० | १२।७।१।९ |

(४)

| | | | |
|--------------------------|-----------|------------------------------|----------|
| यद्वानुशिशुर्दक्षिणा भव० | १२।७।२।२१ | वनीवाद्येताभि विभ्रदिस्थाहुः | ६।८।१।१ |
| यद्वानुशिशुर्भवति । यज्ञ | १२।७।२।८ | वषा पञ्चुरोडाश. । तत्पष्टिः | ६।२।२।१३ |
| यद्वेतराभयत् । अश्ववृष | १४।४।२।८ | वषामगितो जुनेति | १३।२।१।२ |
| वत्सो वा एष । एतस्यै | ४।२।४।२१ | वयं हि त्वा । प्रयति यज्ञे | ४।४।४।१२ |

| कण्डिकाप्रताक | का० प्र० वा० क० | कण्डिकाप्रतीक० | का० प्र० वा० क० |
|-----------------------------------|-----------------|------------------------------|-----------------|
| वयश्छन्द इति । अज वै | ८।५।२।६ | वाच यच्छति । स वाचवम | ३।२।२।१ |
| वरुण सम्राट् सम्राट्पति ११।४।३।१० | | वाचः सत्यमशीयेति | १४।३।२।२० |
| वरुणप्रयासैर्वै प्रजापतिः | २।५।३।१ | वाचवेनुमुपासीत । तस्या० | १४।८।९।१ |
| वरुणसवो वा एष यज्ञाज० | ५।४।३।०१ | वाचे स्वाहेति । मुखमेवा० | १४।३।२।१७ |
| वरुणाद् वा अभिपिपिचाना० | ५।४।३।२ | वाचो विष्टुस्तिमग्निं प्रयुज | ६।६।१।१८ |
| वरुणं वा अभिपिपिचाना० | ५।४।५।१ | वाजस्य जु । प्रसव आवभू० | ५।२।२।७ |
| वरुणाय स्वाहेति । वरुणो | १४।३।२।१४ | वाजस्य ना प्रसवः । उव्म मे० | १२।३।२।१२ |
| वरुणो ह्येनद्राज्यकाम आवधे | २।२।३।१ | वाजस्येवाम् । प्रसर शिथिये | ५।२।२।६ |
| वरुणीधृवा देवी । विश्वदे० | ४।५।४।६ | वाजे वाजेऽवत । वाजिनो | ५।१।५।२४ |
| वर्चो द्व विंश इति । व एष | ८।४।१।१६ | वासस्य स्वा भ्राज्या इति | ३।८।३।२१ |
| वशामाख्यते । तामारम्भ | ४।५।२।१ | वातशोभैर्युनक्ति । प्राणा वै | ९।४।२।१० |
| वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा | ०।१।३।१ | वामदेव्यमात्मन् । प्राणो वै | ९।१।२।३८ |
| वसन्त्वाष्ट्रचन्द्रस्तु | ६।५।४।१७ | वामदेव्यमैत्रावसुयसाम | १३।३।३।४ |
| वसवस्वाज्जस्तु । गायत्रेण | १३।२।६।४ | वामनो विष्णुगस । तदेवा | १।२।५।५ |
| वसवस्वा धूपयन्तु । गाय० | ६।५।३।१० | वायवे स्वा जुष्टमोक्षामीति | १३।१।२।७ |
| वसिष्ठ ऋषिरिति । प्राणो वै | ८।१।१।६ | वायवे स्वाहेति । वायुर्वै | १४।३।२।७ |
| वसुधने वसुधेयस्येति | १।८।२।१४ | वायव्य इवेतन्मुच्छे | १३।२।२।१ |
| वसूना भागोऽसि । रुद्राणा० | ८।४।२।७ | वायु पशुगसीत् | १३।२।७।१४ |
| वसूना रातो ह्यम । रुद्राणा० | १।५।१।१७ | वायुरनिलममृमममान्त | १४।८।३।१ |
| वागनुष्टुमिति । तय एष | १०।३।१।४ | वायुः सि तिमतेजा इति | १।२।४।७ |
| वाग्निन्द्रो बलम् । यदैन्द्रो | १२।७।२।६ | वायुर्वै गौतम तत्सूत्रम् | १४।६।७।६ |
| वागेव ग्रह । वावा हीद | ४।६।५।२ | वायुह्या पचतैरवात्विति | १३।२।७।२ |
| वागेवर्चस्य सामानि च | ४।६।७।५ | वायो पूत पवित्रेण | १२।७।३।९ |
| वागेवर्चस्य सामानि च | ४।६।७।९ | वायोः पूतः पवित्रेण | १०।७।३।१० |
| वाग्ध वा अस्यैन्द्रवायवः | ४।१।३।१ | वास्त्ययुचरा भवति । वरुणो | २।५।२।१० |
| वाग्ध वा एतस्याग्निहोत्रस्या० | ११।३।१।१ | वर्ज्जन् वै पौर्णमासम् | १।६।४।१२ |
| वाग्पोक्षकाम । सा सवत्सर० | १४।९।२।८ | वार्हत्स्याय श्रवसे । सहदानु | ९।५।२।४ |
| वाम्ने ग्रहः । स नाम्नाति० | १४।६।२।४ | वालेन पावयन्ति । गोऽश्व० | १२।८।१।१४ |
| वायै भर्ग । प्राणो मह० | १२।३।४।१० | विंशतिमात्मनोऽवुरुत् | १०।४।२।१६ |

| कविडकापनीक | का०अ०बा०क० | कविडकापनीक | का०अ०बा०क० |
|-------------------------------------|------------|------------------------------|------------|
| विजामानो हेवास्य विष्णुषा | ३६।२।१ | विधा आशा दक्षिणसदिति | १४।२।२६ |
| विज्ञ तं विजिज्ञास्यम् | १४।४।३।१५ | विश्वामित्र ऋषिरिति | ८।१।२।६ |
| विदुषः पुरोडाशः | ११।२।७।१६ | विश्वसाम्बुधाम्पते | १४।१।४।११ |
| विद्या ते अग्ने भेधा त्रया० | ६।७।४।४ | विश्वेत्तानि वरणस्य | ३।३।४।५ |
| विद्युद्गन्धेत्याहुः। विद्याना० | १४।८।७।१ | विश्वेभ्यस्तथा देवेभ्यो | १३।१।२।८ |
| विधृतिरुपरिष्ठादिति | १४।१।३।२३ | विश्वेभ्यो देवेभ्यो गृह्णाति | ४।२।२।३ |
| वि न इन्द्र सृष्टो जहि | ९।५।२।५ | विष्टम्भो वय इति। प्रजाप० | ८।२।३।१२ |
| विपश्चिन्तासु हेतु उपतिष्ठ० | ७।५।२।३० | विष्णवे स्वाहा। विष्णवे | १३।१।८।८ |
| वि पाजसा पृथुना ज्ञोशु० | ६।४।४।२१ | विष्णोः कर्माणि पश्येति | ७।५।१।२५ |
| विप्रानुमदित इति। एते ये | १।४।२।७ | विष्णोः क्रमोऽसीति | ६।७।२।१३ |
| विप्रा विप्रस्य सृष्टो विप० | ३।५।३।१२ | विष्णोः क्रमोऽसीति | ६।७।२।१४ |
| विभूर्मात्रा प्रभू पित्रेति | १३।१।६।१ | विष्णोः क्रमोऽसीति | ६।७।२।१५ |
| विरजः पर आकाशात् | १४।७।२।२३ | विष्णोः क्रमोऽसीति | ६।७।२।१६ |
| विद्यापो नामेति। एतद्वै | ९।१।२।१९ | विष्णोः स्थानमसीति। यज्ञो | १।४।५।३ |
| विद्याह्वयोतिरधारयदिति | ७।४।२।२३ | वीत हविः शमित समिना | ०।२।३।११ |
| वितर्तोऽष्टाचत्वारिंश इति | ८।४।१।२५ | वृत्रो ह वा इद सर्वं वृत्वा | १।१।३।४ |
| विश्वकर्म ऋषिरिति | ८।१।२।९ | वृषण त्या वय वृषन्वृषणः | १।४।१।२२ |
| विश्वकर्मा त्या सादयत्विति | ८।३।१।९ | वृष्टिर्बध इति। वृष्टि | ८।२।४।२ |
| विश्वकर्मा त्या सादयत्विति | ८।३।२।३ | वेत्थ यतिव्यामाहुत्या | १४।९।१।३ |
| विश्वकर्मा वय इति | ८।२।३।१३ | वेत्थ यथेमाः प्रजा | १४।९।१।७ |
| विश्वजि सबृष्टोऽतिरात्रो | १३।७।१।१२ | वेत्थाग्निमिति होवाच | १०।३।३।२ |
| विश्वज्योतिष एकोपदधीत | ९।५।१।६० | वेत्थाग्निमिति होवाच | १०।३।३।३ |
| विश्वरूप वै त्वाष्ट्रमिन्द्रोऽष्टन् | १२।७।१।१ | वेत्थाग्निमिति होवाच | १०।३।३।४ |
| विश्वस्मै प्राणायपानाय | ७।४।२।८ | वेत्थाग्निमिति होवाच | १०।३।३।५ |
| विश्वस्मै प्राणायपानाय | ७।४।२।२८ | वेत्थार्कमिति। अथ वै | १०।३।४।३ |
| विश्वस्मै प्राणायपानाय | ८।३।१।१० | वेद वा अहङ्गात्म | १४।६।७।५ |
| विश्वस्मै प्राणायपानाय | ८।३।२।४ | वेदिरेव गायत्री। तस्यै | ११।४।१।१६ |
| विश्वस्मै प्राणायपानाय | ८।७।१।२२ | वैतसः कटो भवति | १३।३।१।३ |
| विश्वस्मै प्राणायपानाय | ८।७।३।१९ | वैतसः सतो भवति | १२।८।३।१५ |

| कश्चिद्व्यापटीकः | का० प्र० ब्रा० क० | कश्चिद्व्यापटीकः | का० प्र० ब्रा० क० |
|------------------------------|-------------------|--------------------------------|-------------------|
| वैश्वकर्माणः हुत्वा नाम | १५५१५२ | बोद्धान्नानिति । अनहुषेव | १३११९४ |
| वैश्वदेवश्चतुर्थमहमवति | १३१७११६ | व्याघ्रो वय इति । व्याघ्रं | ८२१४४ |
| वैश्वदेवेन यजते । वैश्वदेवेन | ५२१४१ | व्याममात्री पश्चात् स्यादि० | १२१५६४ |
| वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः | २५२११ | व्याममात्री भवति । व्याम० | ७१११३७ |
| वैश्वानरं हुत्वा । शिरो वै | ९२१२१३ | वृद्धश्च वा एतच्चतस्रस्य | १३१२११ |
| वैश्वानरः पशुपुरोडाशः | ६२११३५ | व्योमा सप्तदश इति | ८४११११ |
| वैश्वानराय गृह्णाति । संव० | ४२१४४ | मत्तमुपैष्यन् । अन्तरेणाहवनीयं | ११११११ |
| वैश्वानरो न ऊनये । पृथो | ९५२१६ | ग्रीह्यथ श्यामाकाश्च सवन्ति | १२७१२९ |

(३)

| | | | |
|-----------------------------|---------|--------------------------------|---------|
| शं नो भस्तु द्विपदे | १५५१२८ | आध्यायनिक ह स्माह | १०४५५२ |
| शकन ओजिष्ठायेति | ३४२११२ | शार्दूलचर्मणो जघनार्धे | ५४११९ |
| शकर्षः पृष्ठमभवन्ति | १३२१२२ | क्षिर एव योः । नक्षत्राणि | ९२११६ |
| शकर्षः पृष्ठमभवन्ति | १३११३२ | क्षिर एवाग्निः । प्राणो | १०१२१५ |
| शाल्वी जीवदानू इति | १९११५ | क्षिर एवास्य त्रिषुत् | १२२१४९ |
| शणकुषायमन्तरं भवति | ६६११२४ | क्षिर एवाम्य हविर्धानम् | ३५२१२ |
| शतं वो अग्न्य धामानि | ७२१४२७ | क्षिरस्तिष्ठत् । पश्चदशोऽग्न्य | १२१११६ |
| शतावृष्णा शुग्मी भवति | १२१७२१३ | क्षिरो वा पतयज्ञस्य | १३१३११० |
| शकमहा भवन्ति | १२१८३१३ | क्षिरो वै यज्ञस्यातिथ्यम् | ३२१३२० |
| शफेन ते क्रीणानीति | ३२१३३ | क्षिरो वै यज्ञस्यातिथ्यम् | ३४१११ |
| शम्भुवो मयोधुशक्ति | १९११७ | क्षिरो ह वा एतच्चतस्रस्य | १२११२ |
| शदि कुपति । स्वषा वै | १३१८१४ | क्षिरो ह वा एतच्चतस्रस्य | १२१२६१ |
| शरीरं द्वैवाग्न्य । पीतुदाह | २५२११५ | क्षीते वाते पुनन्निवेति | १३२१९५ |
| शरीरीकयानन्ति । वज्रो | ३२१३१३ | क्षीरितः । क्षीरितो वा | ९४१११४ |
| शर्यातो ह वा इदं मानवो | ४११५२ | शुक्लन्ता शुक्ल आपूलोमीति | ११५६१९ |
| शर्यातो ह वा ईश षके | ४११५४ | शुक्लशक्नेवानु मनुष्याः | ४१५५७ |
| शरुनल्लिह्येति । शरुमलौ | १२२१७४ | शृतसु वषासु । स्वाहाक० | १२१५२११ |
| शशध्वान्द्रमस इति | ११११५३ | शोचिष्केतस्त्वमीमह इति | १४१३९ |
| शशद शप वास । स हि | १८११४ | शौचियो जप्तः । इमानि | ११५३१३ |
| शशरुपेति शोशान पाश० | १४६११९ | शौचियो जप्तः । प्रदमाणि | १२१११८ |

कण्डिकापतीकः का० प्र० मा० क०
 शौचेयो जसः । प्रदयामि ११५३१९
 शौचेयो जसः । प्रदयामि ११५३१९
 शौचेयो जसः । प्रदयामि ११५३१९
 शौचेयो जसः । प्रदयामि ११५३१९
 शौचेयो ह प्राचीनयोग्यः ११५३१९
 इयामो भवति । ह्ययानि वै ६२२२२
 इयेत आश्विनो भवति ५५५५१
 इयेनाय त्वा सोमभूत इति ३९५४१०
 इयेनाय त्वा सोमभूते ३२२११२
 इयेनो भूत्वा परापतेति ३३३४१५
 अद्याया वै देवाः । दीक्षा० १२११२११

कण्डिकापतीकः का० प्र० मा० क०
 श्रद्धेया । स यो ह वै ११२१७२०
 श्रीर्ह वा एषा स्त्रीणाम् १४९१४७
 श्रेष्ठमाय मर्मण इति १७११५
 श्रोणी जगत्पः । स यावती ८६१२८
 श्रोत्रं वै ग्रहः । स गन्धेना० १४१६२६
 श्रोत्रं ह वा अम्याश्विनः ४११५१
 श्रोत्रं होचकाम । तस्मै० १४९१२१०
 श्रोत्रमृद्धिकरिति । तच्च एव १०३११६
 श्रोत्रादेवास्त्य यशोऽस्तवत् १२७११५
 श्वेतकेतुर्ह वा आरुणेपः १४९१११
 श्वेतकेतुर्हार्णवेनः । यक्ष्य० १०३१४१

(प)

पट् पुरस्तादभिषेकस्य जुहोति ५३१५६
 पट्परिनि परिवासयेत् ३६१४१९
 पट्तात्मनोऽकुरुत । निशनि० १०४१२८
 पट्बोत्तराणि द्वौपि निर्व० ५५५२४
 पट्बोत्तरे चरवः । सारम्भत० ५५५२७
 पट्गवम्भवति । पट्गवः १३८२२६
 पट्ग्राहा गवन्ति । पट्ग्रा १२८२२४

पट्ग्राहा गवन्ति । पट्ग्रा १२८२२४
 पट्मिग्याद्विभिः । पूर्व १२१५१३
 पट्मार्जालीये । पट्वा अत्रव ९४३८
 पट्मार्गमन्तर्मे चिन्वीतेत्या० ९५११६३
 पट्मिचित्तिचिनेति । सा हा० १०११४७
 पोटक्ष वा मापो या ५११४२३
 पोटक्षालनोऽकुरुत १०४१२१४

पोटक्षालनोऽकुरुत १०४१२१४

(स)

संज्ञानमसीति । समजानत ७१११८
 संपच्छन्द इति । रात्रिर्वै ८५२१५
 संवत्सरं न वपते । संवत्सर० ५५५३२
 संवत्सरं ह वै प्रयाजैर्जयं १६१११९
 संवत्सरमेव । तापश्वित० १२३३३९
 संवत्सरवासिनेऽनुकृपात् १४१११२७
 संवत्सरस्य समता वेदि० १२३५१२
 संवत्सराच्चतुर्विंशमहः १२११२२

संवत्सराच्चतुर्विंशमहः १२११२२
 संवत्सरे पर्यवेते दीक्षा १३४१४१
 संवत्सरो यजमानः । तय० ११२१७३२
 संवत्सरो यजः । स यो ह ११२१७१
 संवत्सरो यजः । एतेन वै ३४१४१६
 संवत्सरो वै प्रजापतिः १०२१४१
 संवत्सरो वै प्रजापतिरिति १०४१२१
 संवत्सरो वै प्रजापतिरेकदात० १०२१६१

कण्डिकामनीकः का० प्र० ना० क०
 स इमां पृथिवीं प्रविवेश १।२।३।७
 स इमोऽस्त्रीलोकान्सृष्ट्वा कामयत ६।१।२।५
 स इमोऽस्त्रीलोकानभितताप ११।५।८।२
 स इमोऽस्त्रीन्प्रेदानभितताप ११।५।८।४
 स इमानि त्रीणि ज्योतीं ११।५।८।३
 स उ एव प्राणतेजाः १०।२।६।१५
 स उ एव मनः स बिष्णुः १०।१।१।१३
 स उ एव यजुस्तेजाः १०।२।६।१२
 स उद्भूयति । धाममेणा० ३।७।१।१४
 स उत्तरस्यामेव ष्यस्याया २।५।२।१७
 स उत्तरस्यामेव वेदौ । उत्तर० २।५।२।६
 स उत्तरेण निष्कानति ३।९।२।१५
 स उत्पुनाति । सवितुर्वः १।१।१।१६
 स उत्पुनाति । सवितुर्वः ५।३।५।१६
 स उत्पुनाति । सवितुस्स्या १।३।१।२३
 स उवीक्षते स्वयम्भूरसि १।९।३।१६
 स उद्भूयति । क्रजये १०।१।२।२२
 स उद्वास्यामौ द्वे बाहुती २।४।२।११
 स उपतिष्ठते अमे गृहपते १।९।३।१९
 स उपदधाति । तपश्च तप० ८।७।१।५
 स उपदधाति । तथा देवत० ६।१।२।२८
 स उपदधाति । ध्रुवक्षिति० ८।२।१।१४
 स उपदधाति । ध्रुवमसि १।२।१।७
 स उपदधाति । विमान एष ९।२।३।१७
 स उपयजति । समुद्रं ३।८।४।११
 स उपसृजति । दवात्रा स्थ ३।९।४।१६
 स उपसृजति । आज्यम् २।६।१।२७
 स उपसृजति । आज्यम् २।६।१।२१
 स उपसृजति । आ मा ५।१।५।२६

कण्डिकामनीकः का० प्र० ना० क०
 स उपहवमिष्ट्वा मशयति १।४।३।३१
 स उपहृत्यते । उपहृतं रथ० १।८।१।१९
 स उपांशुमेव प्रथममवकाश० ४।५।६।२
 स उपावहरति । इन्द्रस्य ५।४।३।४
 स उपावहरति । एषा वः ५।१।५।११
 स उपावहरति । हृदे स्वा ३।९।३।४
 स उपैति । प्रागपागुदग० ३।९।४।२७
 स उन्मुकमादत्ते । अमे ५।२।४।१६
 स उ वा इष्टकैकशतविधः १०।२।६।११
 स ऊचो न्यौहत् १०।४।२।२३
 स ऊचुभिरेव सप्तविधः १०।२।६।२
 स एतमाश्विनन्धूममालमेत १२।७।२।३
 स एता अपश्यत् । ऊर्द्धा ६।२।१।३२
 स एषा अपश्यत् । समा० ६।२।१।२६
 स एतान्यथ पश्यतपश्यत् ६।२।१।२
 स एतान्यथ पश्यतपश्यत् ६।२।१।४
 स एतान्यथ प न्याविशत् ६।२।१।३
 स एतेन यजुषा । सङ्गज्जु० १।३।२।१८
 स एतामेन्द्रा मरुत्वतीमज० २।५।२।२७
 स एतास्तिस्सस्तनूरेषु लोकेषु २।२।१।१४
 स एतेन यज्ञेन । देवेभ्य ११।१।८।४
 स एतेनाग्नेन शान्तः २।२।१।२
 स एतैः सुतः । न कस्य १०।५।२।१५
 स एष पुरुषः प्रजापतिरभवत् ६।१।१।५
 स एष इह प्रविष्टः १४।४।२।१६
 स एष एव मृत्युः १०।५।२।३
 स एष एव मृत्युः १०।५।२।१३
 स एष एव मृत्युः १०।५।२।२३
 स एष एव मृत्युः १०।५।२।२३
 स एष एव लोकमृणा १०।५।२।८

| अण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०ब्रा०क० |
|------------------------------|-------------|
| स एष एवार्कः । यमेत० | १०११११४ |
| स एष एवार्कः । योऽय० | १०११११५ |
| स एष एवार्कः । योऽय० | १०११११२१ |
| स एष एवार्को य एष | १०११११२२ |
| स एष पवेन्द्रः । योऽय० | १०१५२२९ |
| स एष क्षत्रं देवः । तस्मा | ९११११२५ |
| स एष क्षत्रं देवः । यः स | ९१११११५ |
| स एष त्रीष्टकोऽग्निः | १०१५२२२१ |
| स एष देवयानो वा पितृवा० | १०१३३२ |
| स एष नेति नेत्यात्मा | १११६१२८ |
| स एष नेति नेत्यात्मा | १११६११६ |
| स एष नेति नेत्यात्मा | १११७२२७ |
| स एष पिता पुत्रः । यदेवो० | ६११२२२६ |
| स एष पशुर्यदग्निः । सोऽत्रैव | ८११११३ |
| स एष पशुर्यदग्निः । सोऽत्रैव | ८२१११७ |
| स एष पशुर्यदग्निः । सोऽत्रैव | ८११११४ |
| स एष प्राणः प्राणमेवैतदा० | ९२२३११६ |
| स एष प्राण एव यपुरीषम् | ८११३३६ |
| स एष प्राण एव यल्लोक० | ८११२११४ |
| स एष मिथुनोऽग्निः | १०११११७ |
| स एष यमस्तयमानः | ११३२२६ |
| स एष यज्ञायुधो यजमानः | १११५२२८ |
| स एष यज्ञो हतो न ददक्षे | २२२२२२ |
| स एष यज्ञो हतो न ददक्षे | ४११११२ |
| स एष संवत्सरः प्रजाप० | १०१११११६ |
| स एष संवत्सरः प्रजाप० | १११११२२ |
| स एष संवत्सरस्त्रिमहा० | १२१११२२३ |
| स एष सप्तदशोऽग्निष्टोमो | ५११५११९ |
| स एष सर्वायुषोऽग्निः | ८११११६ |

| अण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०ब्रा०क० |
|---------------------------------|-------------|
| स एषामापूर्वत् । स एना० | ४११३१६ |
| स एष त्रिषु लोकेषूवायाम् | १०११२२६ |
| स एषोऽग्निः प्रजापतिरेव | १०११११२ |
| स एषोऽग्निरेव वैश्वानरः | ७१११३५ |
| स एषस्त । अदास्य दान्त० | ११७३३३ |
| स एषस्त । इमे वा । अग्नि० | ६२२११५ |
| स एषस्त । नाना वा इदं | ६२२११६ |
| स एषस्त प्रजापतिः । अन्नार्द | २२२११३ |
| स एषस्त प्रजापतिः । इमं | १११११६१३ |
| स एषस्त प्रजापतिः । कथं नु | ३११११३ |
| स एषस्त प्रजापतिः । त्रय्यां | १०११२२२ |
| स एषस्त प्रजापतिः । परा | २११११३ |
| स एषस्त प्रजापतिः । यथा | २११११२ |
| स एषस्त प्रजापतिः । सर्वे | १११११६१२ |
| स एषस्त । यदि वा इदमि० | ६२२११९ |
| स एषस्त । यदि वा इम० | १०१११५५ |
| स एषस्त । यमिममात्मानमप्सु | ६२२११८ |
| स एषस्त । या वै श्रीरभ्य० | ६२२११७ |
| स एषस्तारिक्षमहम् । यस्मा | ३११११२ |
| स काष्प्यर्यमयी दक्षिणत | ७११११४ |
| स कृमिर्जुहोति । देवानां वा | ११२२११३ |
| स कथ्यावनुपुडुमः । ता अनन्त० | ८११२१९ |
| स कथ्यावर्यैते । ते नानोप० | ७११११२९ |
| स क्षत्रं वरुणः । ब्रह्म मित्र० | ४११११४ |
| स गायति । अग्निष्टपति | ४११५१८ |
| स गायति । अग्निष्टपति | १११३११२ |
| स गार्हपत्यमुपतिष्ठते | २११११४ |
| स गृह्णाति । अमेत्वनृसि | ३११११९ |
| स गृह्णाति । कुनिदक्ष | ५११११२४ |

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० मा० क० | कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० मा० क० |
|-----------------------------|--------------|-----------------------------------|--------------|
| स गृह्णाति । देवो देवेभ्यः० | ४।१।१।११ | स जुहोति । देवीरापो | ३।९।३।२५ |
| स गृह्णाति । धाम नामासि | १।३।२।१७ | स जुहोति । देहि मे ददामि | २।५।३।१६ |
| स गृह्णाति । मधुमतीर्न | ४।१।१।१३ | स जुहोति । द्वे सती | १।२।८।१।२६ |
| स गृह्णाति । यज्ञो देवानां | ४।३।५।१५ | स जुहोति । यथा द्विरेक० | ३।४।४।२३ |
| स गृह्णाति वाचस्पतये पव० | ४।१।१।१९ | स जुहोति । यस्ते द्रव्य० | ४।२।५।१५ |
| सङ्कृत्यच्छावाकसाम भवति | ११।३।३।६ | स जुहोति । यस्ते रसः | १।२।८।१।६ |
| सद्दामो वा एष सन्निधीयते | १।५।३।१७ | स जुहोति । यानि पुरस्ताद० | ५।३।५।१८ |
| स चतस्रः पूर्वा उपदधाति | ७।१।१।२१ | स जुहोति । युज्जते मन | ३।५।३।१६ |
| स चतस्रः प्राचीरुपदधाति | ७।१।१।१८ | स जुहोति । युज्जानः मथमं | ६।३।१।१३ |
| स चतुरङ्गुलमेवोभयतोऽन्त० | १०।२।१।१४ | स जुहोति । ये समानाः | १।२।८।१।१९ |
| स जघनेन गार्हपत्यम् | २।४।२।९ | स जुहोति । ये समानाः | १।२।८।१।२० |
| स जघनेन गार्हपत्यम् | २।६।१।८ | स जुहोति । वाजस्येमं | ५।२।२।५ |
| स जघनेन गार्हपत्यम् | २।६।२।५ | स जुहोति । विष्णो देवस्य | ३।१।४।१८ |
| स जपति । इन्द्रस्य बाहुरसि | १।२।४।६ | स जुहोति । सं बर्हिस्त्वा | १।९।२।३१ |
| स जुहोति । अग्नये कन्य० | २।४।२।१३ | स जुहोति । शुक्रज्योतिश्च | ९।३।१।२६ |
| स जुहोति । अग्नये गृहपतये | ५।४।३।१५ | स जुहोति । शृणोत्वग्निः | ३।९।३।१४ |
| ॥ जुहोति । अग्निर्ज्योति० | २।३।१।३० | स जुहोति । समिन्द्र णो | ४।४।४।७ |
| स जुहोति । अग्ने नय सुपथा | ४।३।४।१२ | ॥ जुहोति । सा प्रथमा | ४।२।१।२७ |
| स जुहोति । अतस्त्वं देव | ३।६।४।१६ | स जुहोति । सुरावन्तन्वर्हि० | १।२।८।१।२ |
| स जुहोति । अदित्यास्त्वा | ३।३।१।४ | स जुहोति । स्वाङ्कृतोऽसी० | ४।१।१।२२ |
| स जुहोति । अयं नो अग्नि० | ४।३।४।१३ | सज्जूरब्द इति चितिः । अययो० | ७।२।३।८ |
| स जुहोति । आकृतिमग्निं | ६।६।१।१५ | सज्जूरब्दुमिरिति । तद्वत्तूष्मा० | ८।१।२।८ |
| स जुहोति । आपये स्वाहा | ५।२।१।२ | सज्जूरदेवेन त्वष्ट्रेति । स्वष्टा | ४।४।२।१६ |
| स जुहोति । उदु त्वं जात० | ४।३।४।९ | सज्जूरवसुमिरिति । दक्षिणतः | ८।२।२।९ |
| ॥ जुहोति । एष ते रुद्र गागः | २।६।२।९ | स तव एव प्राक् स्तम्भयजु० | २।६।१।१२ |
| स जुहोति । एष स्य वाजी | ५।१।५।१९ | स तत्र जुह्मगासादयति | २।६।१।१७ |
| स जुहोति । घृतं घृतपावा० | ३।८।३।३२ | स तस्मिन्निगमि । एकामि० | १०।२।१।६ |
| स जुहोति । जरुसीत्येतद् | ३।२।४।११ | स तिसृषन्वमादायापंचक्राम | १।४।१।१७ |
| स जुहोति । देवा गात्रुविद | १।९।२।२८ | स तृणमादधे । उपावीरसी० | ३।७।३।९ |

अष्टिदशप्रतीकः

का०अ०मा०क०

सत्यम्नश्चेत्युपासीत १०।६।३।१
 स त्रीनस्तनानुपैति । सत्परा० ९।५।१।९
 स त्रेधात्मानं व्यकुरुत १०।६।५।३
 स त्वष्टा चुकोष । कुविन्मे १।६।३।६
 स त्वष्टा चुकोष । कुविन्मे० १।६।३।८
 स त्वष्टा चुकोष । कुविन्मे ५।५।४।७
 स दक्षिणं सकृद्यजुपानक्ति ३।१।३।१६
 स दक्षिणमेवाम आनक्ति ३।१।३।१४
 स दक्षिणमेवाग्ने गोदानं ३।१।२।५
 स दक्षिणमेवाग्ने गोदानमभ्यु० ३।१।२।६
 स दक्षिणमेवाग्ने युनक्ति ७।२।२।६
 स दक्षिणस्य हविर्धानस्य ३।६।३।१८
 स दक्षिणाभ्युग्यमेवाग्ने युनक्ति ९।४।२।११
 स दक्षिणार्धेनाग्नेः । अन्तरेण ७।२।२।९
 स दक्षिणेन निष्प्रममति ३।९।२।१४
 स दक्षिणैव दपदुपले उपद्र० २।६।१।९
 स दक्षिणैव परिधीन्यरिद० २।६।१।१६
 स ददाति । असावेतच्च २।४।२।१९
 स दिग्निरेव सप्तविधः १०।२।६।३
 स देवानमवीत् । सुप्ताभिः ८।४।२।२
 स देवेभ्य आत्मानमपदाम १।१।१।८।३
 स द्वेषात्मानं व्योहत् १०।४।२।४
 स धुरमभिवृद्धति । धुरसि १।१।२।१०
 स नः पितेव सूनवेऽग्ने २।३।४।३०
 स नः पृथु यवायमिति १।४।१।२७
 स नः पृथु यवायमिति १।४।३।४
 स न पोर्णमासं हविः १।६।२।६
 स न पतिशुभान् । उदग्ने १।४।१।१२
 स निदधाति । ये रूपाणि २।४।२।१५

कण्डिदशप्रतीकः

का०अ०मा०क०

स निनयति । कस्त्वा विधु० १।९।२।३३
 स निहिते जुहोति । अयं ३।६।३।१२
 स नैव व्यभवत् । तच्छ्वे० १।४।४।२।२६
 स नैव व्यभवत् । स वि० १।४।४।२।२४
 स नैव व्यभवत् । स शौ० १।४।४।२।२५
 स नो मुवनस्य पते प्रजा० ९।४।१।१६
 सन्तता याज्यापुरोऽनुवा० १२।८।२।१८
 सन्तता याज्यापुरोऽनुवा० १२।८।२।३५
 सन्तता याज्यापुरोऽनुवा० १२।९।१।१०
 सन्ते वायुर्मातरिषा दधास्वि० ६।४।३।४
 सन्देवो देवेन सवित्रागतेति १।४।१।४।४
 स परिलिखति । अस्ये रम० ३।३।१।६
 स परमेष्ठी प्रजापतिम्वि० १।१।१।६।१७
 स परिव्ययति । परिवीरसि ३।७।१।२१
 स पर्याणहति । वनेषु व्यन्त० ३।३।४।७
 स पाशाशे वा सुवे वैकृते ५।२।४।१५
 स पितृभ्यः सोमबद्धभ्यः २।६।१।४
 स पुस्ततास्त्वयमातृणायै ८।७।१।९
 स पुस्ततास्त्वयमातृणायै ८।७।१।१७
 स पुस्ततादाहरति । मा मा ७।३।१।२०
 स पुस्ततादुपदधाति । अग्ने ८।५।१।८
 स पुस्ततादुपदधाति । अयं ८।१।१।४
 स पुस्ततादुपदधाति । अयं ८।६।१।१६
 स पुस्ततादुपदधाति । आशु० ८।४।१।९
 स पुस्ततादुपदधाति । यद्व० ८।६।१।५
 स पुरोहितस्मादधाति ६।६।३।१४
 स पूर्वाप्ये जुहोति । अग्निने० ५।२।४।५
 स पूर्वेषुः । अग्नयेऽजीकृते २।५।२।२
 स च वै क्षतानि विंशति० १२।३।२।४

| वर्णिकप्रतीकः | का०अ०आ०क० |
|-------------------------------|-----------|
| समभिरभिनागतेति | १४११४५ |
| स मध्यमे परिधिमुपस्पृश्य | ९४१४३ |
| ॥ मध्यमेवाग्रे परिधि | १३१४२ |
| स मनसा वाचं मिथुनं | ६११२६ |
| स मनसैव । वाचं मिथुनं | ६११२७ |
| स मनसैव । वाचं मिथुनं | ६११२८ |
| ॥ मनसैव । वाचं मिथुनं | ६११२९ |
| स मन्यति । गायत्रेण त्वा | ३१४१२३ |
| स मह इति व्याहरत् | ११८११३ |
| समिद्धो अग्नौ आहुतेति | ९२१३९ |
| समिद्धो अग्नौ आहुतेति | ११४११० |
| समिधामिं ब्रुवस्मतेति | ६८११६ |
| समिधमानो अक्षर इति | १४११३८ |
| स मिमीते । अग्निं त्यन्देवं | ३३२१२२ |
| स मिमीते । इन्द्राय त्वा | ३९१४१९ |
| समिष्टयजुंषि हुत्वावमृयं | ९५११३४ |
| समुद्रं वा एते प्रतरन्ति | १२२१११ |
| समुद्राय त्वा वाताय स्वाहेति | १४२१२२ |
| समुद्रे ते हृदयमपस्वन्तरिति | १२१९२५ |
| समुद्रे त्वा नृमणा अपस्वन्त० | ६१७४५ |
| समुद्रे त्वा सदाने सादया० | ७५२१५२ |
| समुद्रोऽसि नभस्वानिति | ९४२१५ |
| समुपनिष्टेऽवृक्ष्युः सग्नेयसि | १३४१३२ |
| समूले समूलं हि पितृणां | १३८११५ |
| ॥ मृत्युर्देवानमवीत् | १०११३३ |
| स मृत्युर्देवानमवीत् | १०४३३९ |
| स मेधयति । नियस्वत्तादि० | ४३१५१८ |
| सम्प्रत्यवध्वमुप सम्प्रयातेति | ८६३२२२ |
| सम्प्रत्यग्निमग्निं मित्रोति | ३७१११६ |

| वर्णिकप्रतीकः | का०अ०आ०क० |
|---------------------------------|-----------|
| सग्नेय्याध्वयुः प्रक्रमानुहोति | १३४१३४ |
| सम्प्रदान्ते भवतः । सम्प्रदा० | ३२११२ |
| सम्प्रत्यस्तयोर्विश इति | ८४१११७ |
| स यं पुरुषमात्मन्त | १२१३९ |
| स यं प्रथमं शकसमपच्छि० | ३६४१११ |
| स यः कपालान्युपदधाति | १२११३ |
| स यः कामयेत । ब्रह्मवर्चसी | २११३६ |
| स यः कामयेत । महत्या० | १४९३३९ |
| स यः पुरादिस्थस्यास्तम० | २३११७ |
| स यः प्रजाकामः । एतेन | २५११७ |
| स यः प्रादुर्देति । तं गृह्णाति | ५३१४५ |
| स यः स इन्द्रः । एष | ९२१३५ |
| स यः स कूर्मोऽसौ स | ७५११६ |
| स यः स वातायमेव स | ९५११३८ |
| स यः स वातासौ ॥ | ९५११३७ |
| स यः स प्रजापतिः । अय० | १०११३५ |
| स यः स प्रजापतिः । अय० | ८५१३२ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ६११२१८ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ७११२९ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ७४१२४ |
| स यः ॥ प्रजापतिर्व्यसंसत् | ७५१२४५ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ८२१२६ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ८३१३१० |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ९४११३ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | ९५११५६ |
| स यः स प्रजापतिर्व्यसंसत् | १०१११२ |
| स यः स विष्णुर्वज्रः सः | ६७२१११ |
| स यः स विष्णुर्वज्रः सः | १४१११६ |
| स यः स वैश्वानरः । अग्नौ | ९३११२५ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०ख०ग्रा०क० |
|-----------------------------|--------------|
| स यः स वैश्वानरः । इमे | ९।३।१।३ |
| ■ यः स संवत्सरः प्रजाप० | ६।१।२।१९ |
| स यः स संवत्सरः प्रजा० | १०।१।१।३ |
| स यः स संवत्सरोऽसौ स | १०।२।४।३ |
| स यः सद्भसं वा भूयो वा | ४।५।१।११ |
| स यः स्यन्दमानानां | ४।४।५।१० |
| स य इच्छेत् । पुत्रो मे | १४।९।४।१३ |
| स य इमांस्त्रील्लोकांश्च | १४।८।१।५९ |
| स य उत्तरोऽग्निष्ठात्स्यात् | ३।७।२।५ |
| स य उपदग्धेन हविषा | ११।४।४।२ |
| स य उपांशु यजुर्भिश्चरति | ४।६।७।१८ |
| स य एष आग्नावैष्णवः | ६।६।१।५ |
| ■ य एष आग्नेयोऽष्टाकपालः | ५।२।४।१३ |
| स य एष आग्नेयोऽष्टाकपालः | ५।५।१।८ |
| स य एष क्षिप्रमिच्छति | ११।२।०।२३ |
| स य एष बहुसारः | ११।७।३।१ |
| स य एष सोमग्रहः | ४।६।५।५ |
| स यच्चतुर्जुह्वां गृह्णात् | १।३।२।१४ |
| स यच्चतुर्जुह्वां गृह्णाति | १।३।२।८ |
| ■ यच्चतुर्जुह्वां गृह्णाति | १।३।२।१२ |
| स यजति । अग्न आज्यस्य | २।२।३।१९ |
| स यजति । अग्नेर्वसुवने | २।२।३।२५ |
| स यजति । पुत्रमिव | ५।५।४।२६ |
| स यज्जुहोति । सा प्रथमा | ४।२।१।२८ |
| स यज्जुह्वामाज्यं परिशिष्ट० | १।५।३।२५ |
| स यत्कनीयः संवत्सरादींश्चि० | ६।२।२।२८ |
| स यत्कनीय इव पूर्वमाहुति | २।३।२।१८ |
| स यत्कुर्मो नाम । एतद्वै | ७।५।१।५ |
| स यत्तूष्णीमुपस्पृशति | २।१।४।२७ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०ख०ग्रा०क० |
|-------------------------------------|--------------|
| ■ यत्पशुना यक्ष्यमाणः | ११।७।४।१ |
| स यत्पशुबन्धेन यजते | ११।७।१।२ |
| स यत्पशुबन्धेन यजते | ११।७।१।३ |
| स यत्पशुमालभते । रसमेवा० | ४।२।५।१६ |
| स यत्पूर्वोऽस्मात् सर्वस्मात् | १४।४।२।२ |
| स यत्पूर्वोर्णमासेनेष्टा । अया० | ११।१।३।६ |
| स यत्पूर्वोर्णमासेनेष्टा । इन्द्राय | ११।१।३।२ |
| स यत्पूर्वोर्णमासेनेष्टा । इन्द्राय | ११।१।३।४ |
| स यत्प्रचरति । तद्युध्यत्यय० | ३।४।४।२२ |
| स यत्प्रादुपोदेति । सदेनां | २।३।३।१६ |
| ■ यत्प्रादुपुरुषमुपदधाति | १०।५।५।७ |
| स यत्प्रातःसवन उपावत्स्यत् | ४।४।१।१८ |
| स यत्प्रातःसवने वा प्रचरेत् | ४।४।२।३ |
| स यत्प्राशिप्रमवधति । यथैव | ११।२।६।७ |
| स यत्प्राशिप्रमवधति । यदेवा० | १।७।४।९ |
| स यत्र देवानां पत्नीर्यजति | १।९।२।१२ |
| स यत्र प्रातःसवने । द्विदेव० | ४।३।५।६ |
| स यत्र मिषते । यत्रैनममा० | २।२।४।८ |
| स यत्र मिषते । यत्रैनममा० | २।३।३।५ |
| स यत्र संयोराह । तदमि० | ११।२।३।९ |
| स यत्राच्छयति । यत | ३।८।२।१४ |
| स यत्राध्वर्युः । शालाकैर्भिष्य्या० | ४।४।२।९ |
| स यत्राम्याप्रोति । तदमि० | ९।२।२।१६ |
| स यत्रायं शरीर आत्मा० | १४।७।२।१ |
| स यत्रावभृथमभ्यवेति | ५।३।५।२६ |
| स यत्राह । इषिता दैन्या | १।९।१।१ |
| स यत्राह । ब्रह्मन्स्तोप्यामः | ४।६।६।६ |
| स यत्राह ब्रह्मन्प्रस्थास्या० | १।७।४।२१ |
| स यत्रैतत्त्वप्न्ययाचरति | १४।५।१।१९ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०वा०क० | कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०वा०क० |
|-----------------------------------|------------|-----------------------------|------------|
| स यत्रैतां होतान्वाह | १४११३१३ | स यथा दुन्दुभेर्हन्यमानस्व | १४१७३१८ |
| स यत्रैतां होतान्वाह | १४११३१५ | स यथा महाराजो जानप० | १४१७३१२० |
| स यत्रैतां होतान्वाह | १४११३३३ | स यथा रथोपस्थे तिष्ठन् | २३३३१२२ |
| स यत्रैतां होतान्वाह | १४१२१२१ | स यथाद्रैवाग्नेरभ्याहितस्य | १४१५४१० |
| स यत्रैतां होता शंसति | १४११११५ | स यथाद्रैवाग्नेरभ्याहितस्य | १४१७३१११ |
| स यत्रैव तिष्ठन् प्रयाजेभ्य | १५१३१६ | स यथा वीणायै वाद्यमानायै | १४१५४१८ |
| स यत्रैव साकमेवेर्यजते | २३६३१० | स यथा वीणायै वाद्यमानायै | १४१७३१९ |
| स यत्रैव चाक्षुषः । पुरुषः | १४१७२१२ | स यथा शङ्खस्य ध्मायमान० | १४१५४१९ |
| स यत्रोदङ्कावर्तते । तर्हन्मी | २३१३१४ | स यथा शङ्खस्य ध्मायमान० | १४१७३११० |
| स यत्रोदङ्कावर्तते । देवेषु | २३१३३३ | स यथा सर्वासामर्पां समु० | १४१५४१११ |
| स यत्संवत्सरन्दीक्षाभिरेति | १२३३३१२ | स यथा सर्वासामर्पां समु० | १४१७३११२ |
| स यत्सप्तदश । सोमग्रहा० | ५११२३११ | स यथा सैन्धववधनः | १४१७३११३ |
| स यत्समानत्र तिष्ठन्जुहोति | १४१४११४ | स यथा सैन्धववधिस्यः | १४१५४११२ |
| स यत्सन्मार्ष्टि । निर्णेनेवत्ये० | १३१११३ | स यथाहिस्त्वचो निर्मुच्येत | २३३११६ |
| स यत्सामिधेनीषु घृतवत् | १४११२० | स यथा हैशमिः । सामिधेनी० | १४१३३१२ |
| स यत्सायमस्तमिते जुहोति | २३१११२ | स यथा हैशमिः । सामिधेनी० | १४१३३१२२ |
| स यत्सायमस्तमिते जुहोति | २३३११४ | स यथोर्णवाभिस्त्वन्नुनो० | १४१५११२३ |
| ■ यत्सायमस्तमिते जुहोति | २३३११९ | स यदग्नये पथिकृते निर्व० | ११११५१६ |
| स यत्सायमस्तमिते जुहोति | २३३११११ | स यदग्नये पथमानाय निर्व० | २३२३११० |
| स यत्सायमस्तमिते द्वे आहुती | २३३३१९ | स यदग्नये पथमानाय निर्व० | २३२३११५ |
| स यत्सायमस्तमिते प्रचरति | ३३१४२१ | स यदग्नये समिधमाहरति | ११३३३१४ |
| स यत्सावित्रो भवति | ५५१४३० | ■ यदग्निं यजति । अग्नि० | ५३१५१८ |
| स यत्सोमपानमास । ततः | १६३३३३ | स यदग्निश्चिनुते । एतमेव | १०१४३१११ |
| स यत्सोमपानमास । ततः | ५५१४३४ | स यदग्निश्चेप्यमाणो दीक्षते | १०१४२३२९ |
| स यत्सोमपानमास । ततः | १२३४३३ | स यदग्नी आवचे । तदेनं | २३३३३३३ |
| स यत्सोमपानमास । ततः | १६३४३९ | स यदग्नीषोमीयः । एका० | ५३१५११० |
| ■ यथाशुश्राव्यायेत | १४१५११२२ | स यदग्नी जुहोति । तद्देवेषु | २३३१११९ |
| स यथा कुमारो वा | ११११८६ | स यदग्नी जुहोति । तद्देवेषु | ३६३२३२५ |
| स यथाप्रदक्षीर्णो वृक्षः | ११११८६ | स यदतिरेनयाश्चकुः | ११२३३३८ |
| ■ यथा दुन्दुभेर्हन्यमानस्य | १४१५४१० | | |

| रुण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०ब्रा०क० |
|--|-------------|
| स यददित्यै चरुं निर्वपति २।२।१।१९ | |
| स यदनुयाजान्तो यज्ञः ११।२।७।२५ | |
| स यदमुत्र राजानं क्रेप्यन्नुष० ४।५।१।२ | |
| स यदभूगेपोदध्यात् ७।४।२।१८ | |
| स यदस्मै देवान्ससृजा० ११।१।६।११ | |
| स यदहः प्रयास्यन्तस्यात् ६।८।१।५ | |
| स यदहः सन्निवत्स्यन्तस्यात् ६।७।४।१४ | |
| स यदाक्ष तत्सर्जत् ६।८।१।१० | |
| स यदाग्नापौष्णः । एकादश० ५।२।५।६ | |
| स यदाग्नावैष्णवः । एकादश० ५।२।५।२ | |
| स यदाग्नावैष्णवेव निर्वपेत् ६।६।१।३ | |
| स यदाग्नेयमाज्यमार्गं १।६।१।१४ | |
| स यदाग्नेयनाष्टाकपालेन ५।५।१।३ | |
| स यदाग्नेयोऽष्टाकपालः पुरो० २।५।४।३ | |
| स यदादित्यं चरुं प्राथणीयं ३।२।३।७ | |
| स यदामावास्येन यजते ११।२।५।४ | |
| स यदाश्वावयति । यज्ञमेवैत० १।५।२।७ | |
| स यदाह । ते वामारभ इति ३।२।१।७ | |
| स यदाह । घाम्मा लेस्तीरिति ३।६।४।१४ | |
| स यदाह । पाणायत्वोदा० १।२।१।२१ | |
| स यदाह स्वाहा यज्ञं ३।१।३।२६ | |
| स यदाहासतो मा सद्रुम० १४।४।१।३१ | |
| स यदि ग्राम्या ओषधीर० ११।१।७।२ | |
| स यदिति खनति । तदेन० ६।३।१।३७ | |
| स यदि पालाशः क्षुत्रो मत्र० ५।२।३।१८ | |
| स यदिदं पुरा मानुषी वार्षं १।१।४।९ | |
| स यदि पुरा मानुषी वार्षं १।७।४।२० | |
| स यदि पुरा वसत्यै विमु० ६।८।१।१२ | |
| स यदि मत्तरस्य रूपं १।९।२।१५ | |

| रुण्डिकाप्रतीकः | अ०अ०ब्रा०क० |
|---|-------------|
| स यदि मत्तरस्य रूपं १।९।२।१६ | |
| स यदि पादित्वा जुहोति ५।२।४।१९ | |
| स यदि मन्येत । न्यूनमे ११।४।४।९ | |
| स यदिमांछोक्तमृण्यैव चिनो० ९।४।३।५ | |
| स यदि राजोपदस्येत् । तमत् ४।२।२।५ | |
| स यदि विष्णुकर्मियमहः ६।७।४।१५ | |
| स यदि वृष्टिकामः स्यात् १।८।३।१२ | |
| स यदि संवत्सरभृतः स्यात् ७।५।१।३४ | |
| स यदि स्थावरा आपो १३।८।४।६ | |
| स यदि क्षुचा जुहोति ३।६।४।३ | |
| स यदि हेतयापि सोमादि० ५।५।४।३३ | |
| स यदीष्टि कुर्वीत । सत्त० १।६।२।१२ | |
| स यदुपांशु क्रियते । तन्मनो १।४।४।२ | |
| स यदूर्ध्वः पिबते । तद्य० १४।२।२।२८ | |
| स यदेव गुदं त्रेधा करोति । ३।८।४।४ | |
| स यदेव यजेत । तेन देवे० १।७।२।२। | |
| स यदैतदध्वर्यु । उपोतिष्ठ० १४।१।४।१ | |
| स यदैतदातिथ्येन प्रचरति १४।१।३।१ | |
| स यद् गार्हपत्ये सादयति १।१।१।१९ | |
| स यद् ग्राम्यैः संस्थापयेत् १३।२।४।२ | |
| स यद् द्वाभ्यामूनन्तवृत्तम् ११।१।२।९ | |
| स यद् वा एवंवित्राणि ८।५।१।१७ | |
| स यद् सोऽपत्र्याहरेत् १।५।२।१५ | |
| स यद्द्वार्यमाणेऽग्नौ । उत्तर० ३।५।१।२३ | |
| स यद्द्वार्यमाणेऽग्नौ । उत्तर० ३।५।२।९ | |
| स यद्यग्निष्टोमः स्यात् ३।९।३।३२ | |
| स यद्यज्ञस्यार्चेत् १२।६।१।२ | |
| स यद्यत्रैव पथमे उपदधाति ८।७।२।५ | |
| स यदुपांशु सादयेत् ४।१।२।१८ | |

| कण्विकप्रतीकः | सू० अ० मा० प० | कण्विकप्रतीकः | सू० अ० मा० प० |
|----------------------------|---------------|---------------------------------------|---------------|
| स यथेकः पशुः स्यात् | ६।५।२।१० | स यानुपविशन्ति । तेना० | ३।६।२।२३ |
| स यथेतन्नोदाशंसेत | १।३।५।१५ | स यामिच्छेत् । कामयेत | १७।९।४।८ |
| स यथेनं पुरस्तात् । असुर० | १।६।१।१५ | स यावदस्य वशः स्यात् | १।३।५।१४ |
| स यथेनं पुरस्तात् । यज्ञ० | १।६।१।१६ | स युनक्ति । जवो यस्ते | ५।१।४।१० |
| स यथेनं प्रथगायां सामि० | १।४।३।११ | स युनक्ति । वातो वा | ५।१।४।८ |
| स यथेनम्यनसामिध्यातः | १।२।६।१।३ | स येन देवेभ्य ऋजं जायते | १।७।२।६ |
| स यथेनानुरस्तात् । असुर० | १।६।१।१२ | स येनैव देवा दिवमुषोदक्र० | १।७।३।२ |
| स यत्तर्तमानः समभवत् | १।६।३।९ | स येनैव चात्रेणांशुद्रुहति | १।१।५।९।६ |
| स यद्वसतीधरीरच्छेति | ३।९।२।२ | स येनैवोपाशुं मन्त्रेण जुहोति१।१।२।२१ | |
| स यद्वा इतश्चेतश्च सम्भरति | २।१।१।१ | स ये मामवान्तरदिशमनु० | २।६।१३६ |
| स यद्वा उपाशुं मन्त्रेण | ४।१।२।२० | स ये ह्यग्र ईजिरे । ते ह | १।२।५।२४ |
| स यद्वाचा प्रतमुपैति | १।२।८।२।५ | स यो गर्मोऽन्तरासीत् | ६।१।२।२ |
| स यद्वा नस्पत्यः स्यात् | १।४।२।२।५४ | स यो देवानामासीत् | १।७।२।२५ |
| स यद्वैश्वदेवेन यजते | २।६।४।५ | स यो मनुष्याणां राक्षः | १।४।७।१।३२ |
| स यद्वैश्वदेवेन यजते | २।६।४।८ | स योऽमावास्यायामग्नी | १।१।१।१।२ |
| स यद्वैश्वानरो भवति | ५।२।५।१४ | स योऽयं मध्ये प्राणः | ६।१।१।२ |
| स यक्ष सम्भरति । तस्यो० | ५।२।२।४ | स यो वनीवाधते । देवा० | ६।८।१।२ |
| स यक्षस्तोऽद्रवत् । तवः | ५।५।४।१० | स यो वर्षिष्ठः स दक्षिणार्घ्यः | ३।७।२।७ |
| स यक्षानुपदध्यात् । नहैतं | ७।४।२।१९ | स यो वाजपेयेन यजते | ५।१।१।८ |
| स यक्षातिक्रामति । इत | २।६।१।३२ | स यो वाजपेयेनेष्टा सम्राट् | ५।१।१।१४ |
| स यवानावपति । यवोऽसि | ३।६।१।११ | स योऽसावग्नीदुषरतः पर्येति | १।२।४।१३ |
| स यवानावपति । यवोऽसि | ३।७।१।४ | स योऽस्मात्प्राणो मध्यत | ७।१।२।५ |
| स यस्मिन्हर्तावमुं लोकमेति | २।६।४।९ | स रयं युवत्वा । सुकन्या | ४।१।५।६ |
| स यस्य कामयते । तस्य | २।३।३।८ | सरस्वती पुष्टिपुष्टिपतिः | १।१।४।३।१६ |
| स यस्य गार्हपत्ये हवीषि | १।१।२।२३ | सरस्वत्यै पिन्वस्वेति | १।४।२।१।१२ |
| स यस्यागृहीता अम्यस्त० | ३।९।२।८ | सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहेति | ३।१।४।१ |
| स यस्यानसो हविर्गृह्णन्ति | १।८।३।२६ | सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहेति | ३।१।४।१४ |
| स यस्यां सवर्मा प्रथमे | ८।७।२।१२ | सरस्वत्यै स्वाहा । सरस्वत्यै | १३।१।८।५ |
| स यानि पुरस्तादभिषेकस्य | ५।३।५।७ | सरिराय स्वा वाताय स्वा० | १।४।२।२।३ |

कण्डिकाप्रतीकः

का०अ०आ०इ०

कण्डिकाप्रतीकः

का०अ०आ०इ०

सरिरे त्वा सदने सादयामी० ७५२।५३
 स रोक्ष्यन् जायामामन्त्रयते ५२।१।१०
 स रोहति । प्रजापतेः ५२।१।११
 सर्पराश्या ऋक्षु स्तुवते ४।६।९।१७
 सर्व वा एषोऽभि दीक्षते ३।६।३।१
 सर्व आग्नेयो भवति । एवं २।२।३।१५
 सर्व आश्विना भवन्ति १२।८।२।१६
 सर्व ऐन्द्रा भवन्ति । इन्द्रो ४ २।५।१७
 सर्वतोमुखोऽयमग्निः । यतो २।६।३।१५
 सर्वसुरभ्युम्मर्दनम्भवति १२।८।३।१६
 सर्वा एवैवा इष्टकाः साह० १०।४।४।४
 सर्वाणि वा एष भूतानि ९।५।१।६२
 सर्वाणि ह त्वेव भूतानि १०।५।४।१४
 सर्वाणि ह वै दीक्षाया ३।१।४।१
 सर्वान्वा एष यज्ञकतुनवरु० ५।५।५।१०
 सर्वान्वा एष यज्ञकतुनवरु० ५।५।५।११
 सर्वातिर्वा एषा वाचः १३।५।२।९
 सर्वातिर्वा एषा वाचः १३।५।२।२२
 सर्वाभ्यो वै देवताभ्योऽष्ट १३।३।४।१
 सर्वे देवा वसन्ति । सर्वाणि ११।१।१।५
 सर्वे यस्यस्वन्तो भवन्ति १२।८।२।१५
 सर्वे सुप्कराः । प्रजननं वै ५।१।३।१०
 सर्वे श्यामाः । द्वे वै श्यामस्य ५।१।३।२
 सर्वेषां वा एष भूतानां १४।३।२।१
 सर्वेषु वै लोकेषु । मृत्यवो० १३।३।५।१
 सर्वेषु सवनेषु गृह्णाति । सर्व ४।२।२।४
 सर्वेषु ह वा अस्य देवेषु ११।१।१।६
 सर्वे ह स्म वा एते पुरा ३।६।१।२८
 सर्वे ह वै देवा । अमे सदृशा ४।५।४।१

सर्वे हैते यज्ञा योऽयमग्नि० १०।१।५।१
 सर्वौषधं भवति । सर्वमेत० ७।२।४।२०
 सर्वौषधं भवति । सर्वमेतदन्नं ७।२।४।१४
 सर्वौषधं भवति । सर्वमेतदन्नं ९।३।४ ४
 स ललाटे समनक्ति । सं ते ३।७।४।८
 सलिलं एको द्रष्टा द्वैतो १४।७।१।३१
 स वा अग्नये च सोमाय २।४।२।१२
 स वा अग्नये एवमानाय निर्व० २।२।१।६
 स वा अग्नये सम्प्रगृह्णाति १।९।२।२०
 स वा अग्निष्टोमसद्भवति ४।२।४।९
 स वा अर्त्रं जुहामनक्ति १।८।३।१३
 स वा अर्द्धयन्निवैवानुवा० १।७।२।१७
 स वा अनवमृशन्समानयति १।५।३।१९
 स वा अनस एव गृहीयात् १।१।२।५
 स वा अनेनैवाशां प्रयच्छति ३।३।३।९
 स वा अन्तरेव सन्स्थाद्येति ४।१।१।१९
 स वा अन्येनैव सतो यजुषा ३।४।१।७
 स वा अष्यः सम्भरति । तद्यद० ५।३।४।१
 स वा अपरं ह्ये ददाति २।४।२।८
 स वा अभिवासः सन्नहति १।३।१।१४
 स वा अभ्यर्द्धं ह्येतराम्य १।७।३।२१
 स वा अग्र्या सनन् ६।४।१।५
 स वा अवमात्मा । ब्रह्म १४।७।२।६
 स वा अवमात्मा । सर्वे० १४।७।२।२४
 स वा अवमात्मा । सर्वेषां १४।५।५।१५
 स वा अवम्पुरुषो जायमा० १४।७।१।८
 स वा अर्धमेव संवत्सरस्य ६।७।४।११
 स वा अर्धर्धमनुदृत्य ७।५।२।२५
 स वा अवमृयमम्यवैति ४।४।५।१

वण्डिकाप्रतीक

वा०अ०प्र०क०

कण्डिकाप्रतीक

वा०अ०प्र०क०

स वा अशीत्यां च स्वाहा० १।१।१२१
 स वा अष्टावेव कृत्वो जुह्वा ३।४।४।८
 स वा अष्टाधिर्भवति ३।६।४।२७
 स वा अष्टाधिर्भवति ३।७।१।२८
 स वा अष्टौ कृत्वो जुह्वा गृह्णाति ३।४।४।७
 स वा अष्टौ हस्तोऽभिपुणोति ४।१।१।८
 स वा अस्या सक्त्या प्रथमे ८।७।२।४
 स वा आग्नेयोऽष्टाकपाल २।५।१।८
 स वा आत्मन एवाधि पक्षपु० ८।७।२।१५
 स वा आत्मानमेव विकृण्वति ७।२।२।८
 स वा आत्मन्नेव । यजुष्मती० ८।७।२।९
 स वा अपरप्यमेवाक्षीयात् १।१।१।१०
 स वा इत्यम्रेन्तरत सम्मा० १।३।१।६
 स वा इत्यम्रेन्तरत सम्मा० १।३।१।७
 स वा इन्द्रस्तथैव नुचक्ष्वन् १।६।३।१३
 स वा इन्द्रामिन्मागुश्वधाति ८।३।१।४
 स वा इन्द्रायैव मरुक्ते ४।३।३।१०
 स वा इष्टेयं पूर्णिमासेन ६।२।२।१९
 स वा उत्तरामेवोपवसेत् १।६।३।३३
 स वा उत्तरार्धादवधति १।७।३।२०
 स वा उवाच न्याच निमीते ३।३।२।१४
 स वा उपरि जुह्वा सादयति १।३।१।५
 स वा उपवत्या पतिपद्यते २।३।४।९
 स वा उपाशु हिङ्गरोति । अथ १।४।१।३
 स वा ऋचमनूज्य जुषा० १।६।३।२९
 स वा ऋचमनूज्य जुषागेन १।६।३।४०
 स वा एकाक्षरद्वयक्षराण्येव १।१।१।६।४
 स वा पति न मेति चान्वाह १।४।१।४
 स वा पृथक्स्तपुरोऽदाशयत् १।६।२।५

स वा एष आत्मैव यत्सो० १।२।९।१।११
 स वा एष आत्मैव यत्सो० १।२।९।३।१६
 स वा एष एतस्मिन्त्वग्र० १।४।७।१।४०
 स वा एष एतस्मिन्त्व० १।४।७।१।१७
 स वा एष न सर्वस्येव प्रदी० ४।६।१।१४
 स वा एष पुरुषमेव १।३।६।१।७
 स वा एष प्रत्यक्षात्सोम० १।२।८।२।२१
 स वा एष ब्राह्मणस्यैव यज्ञ ५।१।१।११
 स वा एष महानज १।४।७।२।२९
 स वा एष महानज १।४।७।२।३०
 स वा एष महानज १।४।७।२।३१
 स वा एष सत्तर एव १।२।८।२।३६
 स वा एष सक्तसरो बृह० १।२।२।३।१
 स वा एष सर्वमेवो दक्ष० १।३।७।१।२
 स वाचयति । अग्निरेकाक्ष० ५।२।२।१७
 स वाचयति । आशुषेणेन ५।२।१।४
 सविता ते श्रीराशि १।३।८।३।३
 सविता सप्द्र राप्द्रपति १।१।४।३।१४
 सवित्रे त्व ऋधुमते विभु० १।४।२।२।९
 सवित्रे सत्यमसवाय । द्वादश० ५।३।३।२
 स विद्यस्ते पर्वणि । न शशाक १।६।३।३६
 स वेदेर्दक्षिणाया श्रोणौ ९।१।२।१२
 स वेद्यन्तात् । उदीची श्रम्या ३।५।१।२७
 स वेद्यन्तात् । पर्द्भिश्चत्प० १०।२।३।४
 स वै कनीय इव पूर्वामाहुति २।३।२।१७
 स वै कपालान्येवान्यतर १।२।१।१
 स वै कृष्टे निनयति । तस्मा० ७।२।४।५
 स वै कृष्टे निनयति । प्राणेषु ७।२।४।१०
 स वै कृष्टे वपति । तस्मा० ७।२।४।१७

कण्डिकप्रतीकः

का०अ०आ०इ०

स वै कुपे वपति । प्राणास्त ७।२।४।२३
 स वै खनत्येकेन । अवदधा ० ६।५।४।९
 स वै खनामि खनाम इति ६।४।१।४
 स वै खलु तूष्णीमेवोपति ० २।४।१।१०
 स वै खलु बहिः प्रथमं १।८।२।१०
 स वै खलु बहिः प्रथमं १।८।२।११
 स वै गौतमस्य पुत्र बृतो ११।४।१।४
 स वै गौतमस्य पुत्र बृतो ११।४।१।५
 स वै गौतमस्य पुत्र बृतो ११।४।१।६
 स वै गौतमस्य पुत्र बृतो ११।४।१।७
 स वै ब्रह्म गृहीत्वान्त्वयुः १।५।२।१२
 स वै चतुरुपह्वयमानः १।८।१।२५
 स वै चतुर्जुह्वा गृह्णन् १।१।२।१३
 स वै जघनार्ध इवैवाग्र १।२।१।९
 स वै जानुदध्ने प्रथमं ९।१।१।११
 स वै सधैव सम्पृज्यात् १।६।१।१०
 स वै तिष्ठन्नन्वाह । अन्याह १।४।२।१८
 स वै तिस्र उपसद उपेयात् ३।४।४।१७
 स वै तूष्णीमेव आवाणमा ० ४।६।१।५
 स वै तूष्णीमेवाग्र उपसृष्ट ० २।१।४।२५
 स वै तृतीयेऽहन् । षष्ठे वा १।४।३।१।१
 स वै त्रिः पूर्वं परिमहं १।२।५।१२
 स वै त्रिः प्रथमं जपति २।३।४।१७
 स वै त्रिः प्रथमामन्वाह १।३।५।६
 स वै त्रिः प्रथमामन्वाह ११।२।७।७
 स वै त्रिरभिपुणोति ३।९।४।१९
 स वै त्रिर्यजुषा हरति । त्रयो १।२।४।२०
 स वै दक्षिणा नयन् ४।५।८।१६
 स वै दक्षो नाम । तद्यदेनेन २।४।४।२

कण्डिकप्रतीकः

का०अ०आ०इ०

स वै दीक्षते । ॥ उपवसथे ० ५।३।३।१
 स वै द्वादश मासान्दी ० १२।३।३।१३
 स वै द्विरग्नौ जुहोति २।३।१।१८
 स वै द्विरूपो भवति ३।३।४।२३
 स वै धीक्षते । वाचे हि ३।२।२।३०
 स वै नखान्येवाग्ने निकृन्तते ३।१।२।४
 स वै न अग्न्यं कुर्यात् १।३।१।१६
 स वै न सर्वमिवानयेत् १।४।३।१।२४
 स वै न सर्वेण संबदेत् ३।१।१।१०
 स वै निरुक्तानि चानिरुक्तानि ८।३।३।७
 स वै नैव रेमे तस्मादेकाकी १।४।४।२।४
 स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य १।४।६।१०।३
 स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य १।४।६।१०।६
 स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य १।४।६।१०।९
 स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य १।४।६।१०।१२
 स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य १।४।६।१०।१५
 स वै नो ब्रूहि याज्ञवल्क्य १।४।६।१०।१८
 स वै न्यन्नयादेव । देवो वा ६।६।४।५
 स वै न्येव वर्तयते । केशाक्ष ५।५।३।६
 स वै पञ्चगृहीतं गृहीते ९।२।२।५
 स वै पञ्च प्रायणीये देवता ३।२।३।२३
 स वै पथ्यामेवाग्ने स्वर्ति ४।५।१।३
 स वै पर्णशाखया वत्सानपा ० १।७।१।१
 स वै पशुनुपाकरिष्यन् १३।६।२।९
 स वै पश्चादिव यज्ञस्य २।४।४।२३
 स वै पुरस्तादुपधाय । पश्चादु ० ८।१।३।८
 स वै पुरस्तादेवाग्र उपद ० ८।२।४।१८
 स वै पूर्ववाद् स्यात् २।१।४।१७
 स वै पौर्णमासेनोपवस्यन् १।६।३।३१

कण्डिकप्रतीकः

अ० अ० अ० अ०

स वै प्रयुजो हविर्भियजते ५५५२११
 स वै प्रवरायाश्रयति १५५१११
 स वै प्रातरप एव । अथमेन १११११२
 स वै भूर्भुव इति । एतावतैव २११११४
 स वै भूर्भुवः स्वरिति ८७७४५
 स वै मन्त्रमिधोरसि ११७४२१२
 स वै यः सोऽष्टमिरेव सः १०६१२२
 स वै यजुष्मतीरुषाय ८७२१८
 स वै यावन्मात्रमिबैवावधेत् १७२१९
 स वै यावन्मात्रमिबैवावधेत् १७४१०
 स वै राजसूयस्य पूर्वाणि ९३३४८
 स वै राजानं पणते । स यज्ञा० ३३३३१
 स वै वर्षास्वादपीत । वर्षा २२२३७
 स वै चरिष्यः पुरोडाशो ११५२२
 स वै वाचंयम एव स्यात् १७४१९
 स वै वाच एव खपेनात् ३३३१२
 स वै वाचमेव प्रथमाम० १४४११३
 स वै विश्वेभ्यो देवेभ्यः १८३२४
 स वै त्रिष्टुक्मान्मान्वा ६७४१९
 स वै दौगिति करोति १७२२१
 स वै इयन्तु वेष्टिति यजति १५३१५
 स वै शमीमयीं प्रथमामाद० ९२३३३७
 स वै संवत्सरन्दीक्षाभिरिति १२३३३११
 स वै सफुदवान्यात् ११११६३२
 स वै सत्यमेव वदेत् ११११५
 स वै सन्वरमाण इव गृहीयात् ३४११६
 स वै सजेऽच्छावाके । ऋतु० ४३११३
 स वै सप्त पुस्तादुपदधाति ८३३४२
 स वै सप्तपुरुषो भवति ६१११६

कण्डिकप्रतीकः

अ० अ० अ० अ०

स वै सप्तपुरुषो भवति १०२२५
 स वै समिधमाघायाय व्रतयति ६६४६
 स वै समिधो यजति । प्राणा १५४१
 स वै समिधो यजति । वस० १५३९
 स वै सम्प्रत्येवोपवसेत् १६३३२
 स वै सम्प्रत्येवोपवसेत् १६३३४
 स वै सम्प्रारान्तम्भरति १४१२१
 स वै सम्पूज्य सम्पूज्य प्रतप्य १३१८
 स वै सुचः सम्मार्ष्टि १३११
 स वै सुचौ न्यूहति । अग्नीषो० १८३१६
 स वै सुबमेवाग्ने सम्मार्ष्टि १३१९
 स वै स्वयमातृणां लोक० ८७२११
 स वै स्वयमातृणां यमावपति ८७३२
 स वै पाणावध्वर्युः सुचौ २५२३८
 स खर्वातेभ्यश्चुकोच ४१५३
 स शुक्रानम्भिनौ प्रथमौ गृह्णाति ४३३२
 स शुक्लः स्यात् । सद्भये० ७३२१६
 स श्रीणाति । अहं परस्ता० ४४२१४
 स श्रीणाति । मनो न येषु ४२११२
 स श्रीणाति । राया वयं ४१४१०
 स संख्यापयति । समरुये ३३११२
 स संवत्सरम्भसुतः स्यात् १०२५१६
 स संवत्सरे व्याजिहीर्षत् ११११६३
 स संहितैः पर्वभिः । इदमन्त्रा० १६३३७
 स संहितैः पर्वभिः । इदमन्त्रा० ४६४१२
 स सन्व्योरूपस्तस्य । पत्ते ९४४१३
 स सज्जाति । अदित्यै १३११५
 स स पराड्वि रोहः । इयमु ८३४९
 स स पराड्वि रोहः । इयमु ८५२१६

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० आ० अ० | कण्डिकाप्रतीकः | का० अ० आ० अ० |
|-------------------------------|-------------|-------------------------------|--------------|
| स समनक्ति । वसुभ्यस्त्वा | १।८।३।८ | सह पित्रा वैश्वानरेणेति | १।५।१।१६ |
| स समनक्ति । सञ्ज्योतिषा | १।४।५।७ | स ह प्रजापतिरग्निमुवाच | ११।८।३।५ |
| स समवदायेदाम् । पूर्वार्धे | १।८।१।१३ | स ह प्रजापतिरिक्षाध्वके | ११।८।१।२ |
| स समादन्ति । कुक्कुटोऽसि | १।१।४।१८ | स ह प्रजापतिरिक्षाध्वके | १४।९।४।२ |
| स समिवनभ्यादधाति । अग्ने | ३।४।३।९ | सहस्रे प्रवृज्यात् । सर्वे वै | १४।२।२।४७ |
| स समिषाज्यस्योपहृत्य | ६।६।४।१२ | स ह युक्त्वा यथावाजगाम | ११।८।४।३ |
| स सम्प्रगृह्णाति । संखव० | १।८।१।२५ | ॥ हरति मरुतां पृषतीर्ग० | १।८।३।१५ |
| स सम्मार्द्धि । अग्ने वाज० | १।८।२।६ | स ह विष्णुमुवाच । वृत्राय | ५।५।५।२ |
| स सम्मार्द्धि । अग्ने वाज० | १।४।४।१५ | स ह वै यत्तदुवाच । वेत्य | १०।३।४।४ |
| स सर्वाण्येव हवींष्यध्वर्युः | २।५।२।१८ | ॥ ह संवत्सरे जायमान | ३।२।१।२७ |
| स सहस्रतमे संवत्सरे | १०।४।४।३ | स ह स्म बाहू बन्धवेक्ष्याह | ३।८।२।२५ |
| स सहस्रायुर्ब्रजे । स यथा | ११।१।६।६ | सहस्रस्य प्रमासि । सहस्रस्य | ८।७।४।११ |
| ॥ सारस्वतीरेव प्रथमा गृह्णाति | ५।३।४।३ | सहस्रे प्रहीतस्य । सर्वे वै | ४।६।१।१५ |
| स सोमातिपूतो मङ्कुरिव | ५।५।४।११ | स हामिरुवाच । अथ यन्मां | १।६।१।६ |
| स स्कन्धमभिदृशति | १।३।३।१७ | स हामिरुवाच । अहमुत्त० | १।२।४।११ |
| स स्तृणाति । ऊर्गम्रदसं त्वा | १।३।३।११ | स हामिरुवाच । उदञ्चो | १।२।४।१० |
| ॥ स्नाति । आपो अस्मा० | ३।१।२।११ | ॥ हामिरुवाच । तयो मम | ५।२।४।१२ |
| स क्षुचोऽरमायारमाधारयिष्यन् | १।४।५।१ | स हामिरुवाच । मय्येव वः | १।६।३।२० |
| स क्षुत्रेण पूर्वमायारमाया० | १।४।४।१३ | स हास्मै वाचमुवाद । बिम्बुहि | १।८।१।२ |
| स स्वयनातृष्णा । एवोपदधीत | ९।५।१।५८ | स हिरण्यं प्रत्येति । अग्नये | ४।३।४।२८ |
| स ह गवां सहस्रमवक्रोष | १।४।६।१२ | स हिरण्यमवदधाति । एषा | ३।२।४।९ |
| स ह तत एव दक्षिणा | ११।६।१।४ | ॥ हुत्वा न्यमृष्ट । ततो | २।२।४।१० |
| स ह तत एव प्रत्यङ् | ११।६।१।५ | स हुत्वा प्रवापतिः । प्रचा० | २।२।४।७ |
| स ह तत एव प्राङ् | ११।६।१।३ | स हुत्वैव समिष्टयज्जूपि | ४।५।२।१७ |
| स ह तत एवोदङ् प्रवक्राज | ११।६।१।६ | स हृदयमेवाग्नेऽभिषारयति | ३।८।३।८ |
| स ह तत एवैतयोः पूर्वयोः | ११।६।१।७ | स हृदयस्यैवाग्नेऽवयति | ३।८।३।१५ |
| स ह त्वेव पशुमालमेत | ३।८।४।५ | स हेक्षाध्वके । कथन्बहमि० | १०।४।२।३ |
| सह देवेभ्यः पशुभिश्च० | ४।४।१।१६ | स हेन्द्रेणोक्त आस | १४।१।१।१९ |
| स ह नैव प्रति शुधाव | १।४।१।१३ | स दैतयापि सोमातिपूतं | ५।५।४।१३ |

अग्निव्याप्रीकः

का० अ० मा० क०

| | |
|---------------------------|---------|
| स हैतेनापि भिषज्येत् | ५१२४१० |
| स हैतेनापि यजेत् । योऽलं | ५१२४१३ |
| स हैप दाक्षायणदस्तः | ६१७४१२ |
| स हैप यज्ञ उवाच । नमः | ११७३२८ |
| स होताध्वर्युमृच्छति | १२१५२१२ |
| स होताध्वर्युमृच्छति | १२१५२१७ |
| स होता नापन्यादरेत् | ११५२११ |
| स होता नापन्यादरेत् | ११५२१४ |
| स होतुरिह निक्षिपति | १८१११४ |
| स होवायनकीर्त्ता उवाच | १४१२१११ |
| स होवाकल्यन्नुवाच । यद्वा | ४१४११२७ |
| स होवाच । अमयेऽग्निः | २२२४१७ |
| स होवाच । अध्वर्यवा वै | ११४२११९ |
| स होवाच । अमसिपन्न्याः | ११६३१११ |
| स होवाच । अनिन्ध्या वै | ३१५१११७ |
| स होवाच । अवीरै वै त्वा | १८१११६ |
| स होवाच । असर्वकतुभ्यां | ११५१५५ |
| स होवाच । अस्ति वा | ५१५५५३ |
| स होवाच । अस्ति वा | ५१५५५४ |
| स होवाच । अस्ति वा | ५१५५५५ |
| स होवाच । जामन्त्रणीयाः | ११८१४५ |
| स होवाच । इदैव मे | ११५३१५ |
| स होवाच । इदमहेदं | ११४२११८ |
| स होवाच । इन्द्रेण वा | १४११२२ |
| स होवाच । इन्द्रो वै | १४६११२ |
| स होवाच । उप त्वयानीति | ११४२१२० |
| स होवाच । उवाच वै | १४६३१२ |
| स होवाच । ऋपे नमस्ते | ४११५७ |
| स होवाच । ऋपे विराजं | १२६११२९ |

अग्निव्याप्रीकः

का० अ० मा० क०

| | |
|-----------------------------|---------|
| स होवाच । एतद्वै तद्वरं | १४६१८८ |
| स होवाच । कति देवा | ११६३१४ |
| स होवाच । कयं हि | १२१२३७ |
| स होवाच । कामं ग्वा | ९१५२१६५ |
| स होवाच । किं नु लोक्यं | ९१५२१६६ |
| स होवाच । किं मे ततः | ४११३४ |
| स होवाच । किं मे ततः | ४६६५५ |
| स होवाच । को वोऽवेह | ४११५५ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१२ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१३ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१४ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१५ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१६ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१७ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१८ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१९ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५११० |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५१११ |
| स होवाच गार्ग्यः | १४१५११२ |
| स होवाच । गौतम का | ११५३१२ |
| स होवाच । तथा नस्तव | १४१२६ |
| स होवाच । तन्वा अहन्त | १२१२३४ |
| स होवाच । तुरीयं तुरीयं | ४११३१६ |
| स होवाच । दुष्टीक्षुर्गौतमः | १२१२३२ |
| स होवाच । देवेषु वै गौतम | १४१२१९ |
| स होवाच । न वा महमिदं | २३३३२ |
| स होवाच । न वा इह तर्हि | ११३३१४ |
| स होवाच । गह्वनीये | १२१२३६ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का० अ० वा० क० | कण्डिकाप्रतीकः | का० अ० वा० क० |
|------------------------------|---------------|----------------------------|---------------|
| स होवाच । प्राङ् पुत्रक | ११।६।१।२ | स होवाच । विज्ञायते | १४।९।१।१० |
| स होवाच । प्राञ्चमेनमचै० | १०।५।५।६ | स होवाच । विदेधो माधवः | १।४।१।१७ |
| स होवाच । प्राणो वाव | १०।३।३।६ | स होवाच । शाण्डिन्यः | १०।१।४।११ |
| स होवाच । विमेमि वै | १२।९।३।८ | स होवाच । शिरो वा | १२।८।२।४ |
| स होवाच । वृहस्पतिराजि० | ११।५।२।६ | स होवाच । श्वेतकेतुरा० | ११।६।२।२ |
| स होवाच । महिमान एवै० | ११।६।३।५ | स होवाच । पट्टिष्ठ ओणि च | १०।४।३।८ |
| स होवाच । महिमान एवै० | ११।६।९।३ | स होवाच । सङ्घहीतयु० | ११।८।४।२ |
| स होवाच । मा नु मे | १।६।३।१७ | स होवाच । सहैव मौजसो० | ४।३।३।९ |
| स होवाच । मूर्खानमुप० | १०।६।१।११ | स होवाच । सुकन्ये किं | ४।१।५।१० |
| स होवाच । यजस्वैवाहं वै | १२।३।४।२ | स होवाच । स्थपते चाक्र | १२।९।३।५ |
| स होवाच । यथा ब्रह्मा | ११।४।१।९ | स होवाच । हन्ताहमिमाम० | २।१।२।१५ |
| स होवाच । यदुर्ध्वगार्गि | १४।६।८।४ | स होवाचाजातशत्रुः | १४।५।१।१४ |
| स होवाच । यदुर्ध्वगार्गि | १४।६।८।७ | स होवाचाजातशत्रुः | १४।५।१।१५ |
| स होवाच । यदृक्को भूरिति | ११।५।८।६ | स होवाचाजातशत्रुः | १४।५।१।१६ |
| स होवाच । यन्नु भगवन्तो | १०।६।१।१३ | स होवाचाजातशत्रुः | १४।५।१।१७ |
| स होवाच । यस्त्वानेन | ७।३।२।१५ | स होवाचारुणमौपवेशिम् | १०।६।१।४ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | ११।६।३।२ | सा कल्माषी स्यात् | ६।३।१।३२ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | १४।५।४।४ | सा कार्मुकी स्यात् | ६।६।२।११ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | १४।५।४।५ | सा गौरमवत् । वृषभ | १४।४।२।७ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | १४।५।४।१४ | सा देवानुपावत्स्यन्त्युवाच | ३।५।१।२२ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | १४।७।३।५ | राघवे त्वेति । वयं वै | १४।१।२।२३ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | १४।७।३।६ | सा नः सहस्रं घुस्वेति | ४।५।८।८ |
| स होवाच । याज्ञवल्क्यः | १४।७।३।१५ | सा नः सुभाची सुप्रतीत्ये० | ३।२।४।१७ |
| स होवाच । यान्यै त्प्रा० | ११।६।१।८ | साल्वायभाजना वा अमावास्या | २।४।४।२० |
| स होवाच । यावद्दे सुल्लुक्का | १।८।१।३ | सा प्रजापतिमब्रवीत् | ११।४।३।४ |
| स होवाच । राघ्नवान्मे | ३।१।३।५ | साम । प्राणो वै साम | १४।८।१।४३ |
| स होवाच । बज्रो वै | १।३।३।१४ | सा मनोरेव जायां मनावी | १।१।४।१६ |
| स होवाच । वरम्भवते गौ० | ४।९।१।१ | सा यज्ञमेव यज्ञपात्राणि | १।१।४।१७ |
| स होवाच । वायवा मा० | ४।१।३।१२ | सा यत्पुण्युवाच । अस्य | ३।६।२।५ |

| ऋषिदिकप्रतीक | का०अ०प्रा०पृ० |
|-------------------------------|---------------|
| सा यदपादा नाम | ७११२३३ |
| सा यदि धर्मदुषा हलेत् | ४१५१७४ |
| सा यदि वर्षीयसी प्रादेशा० | ६१५२१९ |
| सा यदुस्ता नाम । पसह्ने | ६१७१२३ |
| सायमाहुस्त्यो हुतायाम् | १३१४१९ |
| सा या पुरस्तात्पाण सा | ८१५११४ |
| सा या पुरस्तादग्नि सा | ८१५११९ |
| सा या पुरस्ताल्लक्षणा | ११७२१८ |
| सा या पूर्वाहुति । ते देवा | २१३२१६ |
| सा या पूर्वाहुति । सामिहो० | २१३२१२३ |
| सा या पूर्वाहुति । सामा० | २१३११२९ |
| सा या यमु पित्राक्षी | ३१३११३ |
| सा या यमुः पित्राक्षी | ३१३११४ |
| सा या यमु पित्राक्षी | ३१३११५ |
| सा या महाताम्रिः । तयामि० | ३१८२१३ |
| सा या सा बागसौ स आदित्य | १०१५११४ |
| सा यासौ फासुनी पोर्ण० | १३१४१४ |
| सारस्वतं सप्तदशाय इतोत्रा० | ५११३२ |
| सारस्वतं होता ब्रह्मा मैत्रा० | १२१८२२३ |
| सारस्वतोऽग्नेर्षीमपस्तादग्ने० | १३२२२४ |
| सा या एषा देवता | १४१४११० |
| सा वा एषा देवता | १४१४१११ |
| सा वा एषा देवता | १४१४११२ |
| सा वा एषा वाक्त्रेधाविदिता | १०१५१२ |
| सा वा एषा वाक्त्रेधाविदिता | १०१५१५ |
| सा वाक्त्रेधाविदिता | १०१५३५ |
| सावित्र ह स्मेत्पूर्वे यमु० | १२३३५३ |
| सावित्रः पुरोडाशो भवति | १२३७२१७ |
| सावित्र्या एवेष्टे । पुरस्ता० | १३११३७ |

| ऋषिदिकप्रतीक | का०अ०प्रा०पृ० |
|--------------------------------|---------------|
| सावित्र्या एवेष्टे । पुरस्ता० | १३१४३५ |
| सावित्र्या मिमीते । सविता | २१३२११० |
| सावित्र्यो भवन्ति । इयं वै | १३११४२ |
| सा विस्वस्यति । वेदोऽसि | १९२२२३ |
| सावेक्षते । अदग्नेन त्वा | ११३११२९ |
| सा वैष्णवी स्यात् । मसि० | ६१३१३१ |
| सा वै त्रिष्वा स्यादित्याहु | ४१५८२ |
| सा वै त्रिष्ट्वरति । त्रिष्टु० | ३२२११२ |
| सा वै पञ्चाश भवति | १८१११२ |
| सा वै पञ्चाद्वरीयसी स्यात् | १२२५१६ |
| सा वै प्राक् प्रवणा स्यात् | १२२५१७ |
| सा वै क्षाणी भवति | ३२२१११ |
| सा स्यादभवीता । वाक्त्रा | ३१३११६ |
| सा स्यादभवीता । वाक्त्रा | ४१५८३ |
| सा ह रुद्ररुवाच । आत्मान | १६२२८ |
| सा ह न्वेव सप्तदशानुवाक्या | ११७२२० |
| सा ह बाक् परोक्षा विसि० | ११४५१२ |
| सा ह बागुवाच । यद्वा | १४१२१४ |
| सा ॥ सुपर्णी पपात । तद्ध | १६२२७ |
| सा ह सुपर्णुवाच । मय्य | १६२२४ |
| सा ह सुपर्णुवाच । पक्षीदं | १६२२६ |
| सा हास्मिन्योगुवाच | ११५११२ |
| सा हैनं नाभिराधयाद्यचार | २२२१५ |
| सा हैनमभिराधयाद्यचार | २२२१६ |
| सा हैना गयाम्त्रे । माया | १४८१५७ |
| सा होवाच । अन्यतरामेशा० | २८१३२९ |
| सा होवाच । अवीर इव | ११५११३ |
| सा होवाच । अह वै त्वा | १४६८२ |
| सा होवाच । गन्धर्वा वै | ११५११२ |

| कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० अ० अ० | कण्डिकाप्रतीकः | अ० अ० अ० अ० |
|--|-------------|---|-------------|
| सा होवाच । नमस्ते याज्ञ० १४६।८।५ | | सुपुष्ण इति । सुयज्ञिय ९।४।१।२ | |
| सा होवाच । न वै सुस० ४।१।५।११ | | सूचीभिः कस्ययन्ति १३।२।१०।२ | |
| सा होवाच । ब्राह्मणा १४।६।८।१२ | | सुपचरणा च स्वधिचरणा १।९।१।८ | |
| सा होवाच मय्येव यज्ञ ३।२।३।५ | | सूर्यः पशुरासीत् । तेना० १३।२।७।१५ | |
| सा होवाच मैत्रेयी । अत्रैव १४।५।४।१३ | | सूर्य एवाग्नेयश्चन्द्रमाः १।६।३।२४ | |
| सा होवाच मैत्रेयी । अत्रैव १४।७।३।१४ | | सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् ९।२।३।१२ | |
| सा होवाच मैत्रेयी । यन्तु १४।७।३।३ | | सूर्यस्तुदुक्थ्यस्तृतीयमहर्भ० १३।७।१।५ | |
| सा होवाच मैत्रेयी । यन्म १४।५।४।२ | | सूर्यस्य स्वा तपस इति १४।१।३।६ | |
| सा होवाच मैत्रेयी । येना० १४।५।४।३ | | सूर्याय स्वाहेति । सूर्यो वै १४।३।२।९ | |
| सा होवाच मैत्रेयी । येना० १४।७।३।४ | | सूर्यो ह या अग्निहोत्रम् २।३।१।१ | |
| सा होवाच । यदुर्द्ध याज्ञ० १४।६।८।३ | | सूर्यं वामभृत् । प्राणा वै ७।४।२।१५ | |
| सा होवाच । यदुर्द्ध याज्ञ० १४।६।८।६ | | सैतानुपहोमानपश्यत् ११।४।३।८ | |
| सा होवाच । संवत्सरत० ११।५।१।११ | | सैतान्दशहविषमिष्टिमपश्यत् ११।४।३।५ | |
| सिंहो वय इति । सिंहं ८।२।४।५ | | सैषा कामदुषेवेन्द्रस्योद्धारः ४।२।३।६ | |
| सिकताभ्यः शर्करामसृजत ६।१।३।५ | | सैषा गायत्री । एतस्मि० १४।८।१।५।५ | |
| सिनीबालीसुकपर्दासुकुरीरा ६।५।१।१० | | सैषा गौरेव । इमे वै लोका ६।५।२।१७ | |
| सिन्धुवृद्धन्द इति । माणो ८।५।२।४ | | सैषा त्रयस्य समृद्धिः । अग्ने० ९।५।२।२ | |
| सीतासमरे । बावै सीता ७।२।३।३ | | सैषा त्रयी विद्या यज्ञः । तस्या १।१।४।३ | |
| सीद त्वं मातुः । अस्या ६।७।३।१५ | | सैषा अग्न्येव विद्या तपति १०।५।२।२ | |
| सीसेन सन्त्रममसा मनी० १२।८।३।१४ | | सैषा त्रेधाविदिता बागनुष्टुप् ७।१।२।२१ | |
| सीसेन क्षण्णाणि क्रीणाति १२।७।२।१० | | सैषा देवताभिः पङ्क्तिर्भवति ३।१।४।१९ | |
| सुखित्यै त्वेति । अयं वै १४।१।२।२४ | | सैषा देवताभिः पङ्क्तिर्भवति ३।१।४।२० | |
| सुगावो देवाः । सदना अकर्म ४।४।४।१० | | सैषा निदानेन यदिद्धा १।८।१।११ | |
| सुपर्णो अरु सवितुर्गुरुत्मान् १०।२।२।४ | | सैषा बृहत्येव । ये वै द्वे ७।१।१।१ | |
| सुपर्णोऽसि गरुत्मानिति ६।७।२।६ | | सैषा ब्रह्मचितिः । यद्भस्मो० ८।४।१ | |
| सुपर्णास्त्वमाशास्त इति १।९।१।१४ | | सैषा ब्रह्मणोऽतिसृष्टिः १४।४ | |
| सुमित्रिया न आप ओष० १२।९।२।६ | | सैषा यज्ञमेनिः । एतया ११।२।२ | |
| सुरया पावयन्ति । सुरा हि १२।८।१।१६ | | सैषा वेदेर्योनिः । एतस्यै वै १०।१ | |
| सुपदा पश्चादिति । नात्र १४।१।३।२१ | | सैषा काहुतिरेवमे । यामे० | |

| कण्डिकाप्रतीक | वा०अ०ब्रा०क० |
|--------------------------------|--------------|
| सैवैकैर भवति । एकस्थ | ८।७।२।३ |
| सो अध्वरा जातवेदा जुषता | १।७।३।१५ |
| सो एव पुरोधा । तस्मान्न | ४।१।४।५ |
| सोऽकामयत । आभ्यो० | ६।१।१।१० |
| सोऽकामयत । आभ्यो० | ६।१।१।१२ |
| सोऽकामयत । द्वितीयो | १०।६।५।४ |
| सोऽकामयत प्रजापतिः | ६।१।२।१ |
| सोऽकामयत । भूय एव | ६।१।१।१३ |
| सोऽकामयत । भूय एव | ६।१।२।३ |
| सोऽकामयत । भूय एव | ६।१।२।४ |
| सोऽकामयत । भूयसा यजेन | १०।६।५।६ |
| सोऽकामयत । मेघम | १०।६।५।७ |
| सोऽग्निनेव त्वच विपश्यन्नयते | ३।४।३।३ |
| सोऽग्निनेव त्वच विपश्यन्नयते | ३।४।३।५ |
| सोऽग्निमब्रवीत् । त्व मा | ६।१।२।१३ |
| सोऽग्निमब्रवीत् । त्वान्न० | ९।२।३।४९ |
| सोऽग्निमेव प्रथम यजति | ४।५।१।४ |
| सोऽग्निमेवाभीक्ष्माणो अतमुपैति | १।१।१।२ |
| सोऽग्निरुत्तरत् पर्येत । अथेम | १।२।४।१२ |
| सोऽग्नीनापन्वाहरेत् । आपत्वा० | १।५।२।९ |
| सोऽग्निर्दक्षिणा श्रोणिम् | ७।२।२।४ |
| सोऽज्युपयजति । यज्ञ गच्छ | ३।८।५।१ |
| सोऽपामावाप्तेति मन्यमान | १।१।१।५।४ |
| सोऽग्निमन्यम शकलमादत्ते | ३।४।१।२० |
| सोऽध्वर्यु । अप्रोक्षित | ४।२।१।२० |
| सोऽध्वर्यु । अप्रोक्षितेन | ४।२।१।१४ |
| सोऽध्वर्यु पर्येति । सुवीरो | ४।२।१।१६ |
| सोऽध्वर्यु । यथापूर्वं हवीष्य० | १।७।३।७ |
| सोऽध्वर्यु । यूपशकलमेवा० | ३।७।१।३१ |

| कण्डिकाप्रतीक | वा०अ०ब्रा०क० |
|--------------------------------|--------------|
| सोऽध्वर्युर्नपन्वाहरेत् | १।५।२।१० |
| सोऽनक्ति । देवत्त्वा सविता | ३।७।१।११ |
| सोऽनक्ति । ज्यन्तु वयोऽक्त | १।८।३।१४ |
| सोऽनुप्रहरति । भवत न | ३।४।१।२४ |
| सोऽनुब्रूहीत्येवोक्त्वाध्वर्यु | १।५।८।२ |
| सोऽनुमन्त्रयते । शशो भवन्तु | ५।१।५।२२ |
| सोऽनुवाक्यामनूच्य याज्या० | १।७।२।१२ |
| सोऽनुवास्यामनूच्य सम्प० | १।७।३।१० |
| सोऽनुविमृष्टे । प्र पर्येतस्य | ५।४।२।५ |
| सोऽन्वाह । अग्निं ब्रूत | १।४।१।३४ |
| सोऽन्वाह । ईडेन्यो नमस्य | १।४।१।२९ |
| सोऽन्वाह । उषान्तस्त्वा | २।६।१।२२ |
| सोऽन्वाह । प्रव इति प्राणो वै | १।४।३।३ |
| सोऽन्वाह । प्रवो वाजा | १।४।१।७ |
| सोऽन्वाह । प्रवो वाजा | १।४।१।९ |
| सोऽन्वाह । युव सुराम० | ५।५।४।२५ |
| सोऽन्वाह । समास्तवाम | ६।२।१।२५ |
| सोऽपराहे वेदिं स्तीर्त्वा | ३।६।३।४ |
| सोऽपस्पृशति । वाच ते | ३।८।२।६ |
| सोऽपिदधाति । विष्णो हव्य | २।७।१।११ |
| सोऽपोद्धरति । शुक्रमसि | ३।२।४।१४ |
| सोऽपोऽभिजुहोति । एतां | ३।९।३।२३ |
| सोऽपोऽसृजत । वाच एव | ६।१।१।९ |
| सोऽविमेत् । तस्मादेकाकी | १।४।४।२।३ |
| सोऽब्रवीत् । अय वाच माधू० | ७।४।२।१२ |
| सोऽब्रवीत् । अय वाच मा | ७।५।१।२२ |
| सोऽब्रवीत् । चिनोत्येव मेद | १।६।४।७ |
| सोऽब्रवीत् । पतच्चलद्वाप्य | १।४।६।७।२ |
| सोऽब्रवीत् । पतच्चलद्वाप्य | १।४।६।७।३ |

कण्डिकाप्रतीकः

अ० अ० अ० अ०

सोऽब्रवीत् । पतञ्जलह्वाप्यं १४६।७४
 सोऽब्रवीत् । यावद्यावद्वै ६।१।२।२३
 सोऽभिघारयति । सन्ते मनो ३।८।३।९
 सोऽभिमृशति । अभिष्टे स्वचं १।२।२।१२
 सोऽभिमृशति । आस्माकोऽसीति ३।३।२।७
 सोऽभिमृशति । ध्रुवा अस० १।३।४।१६
 सोऽभिमृशति । मा भेर्मा १।२।२।१५
 सोऽभिवासयति । अतयेरु० १।२।२।१७
 सोऽभिपिच्छति । देवस्य स्वा ५।२।२।१३
 सोऽभ्यादधाति । वीतिहोत्र १।३।४।६
 सोऽभ्युक्षति । सिंशसि ३।५।१।३६
 सोऽभिमादधे । देवस्य स्वा ३।५।४।४
 सोऽभिमादधे । देवस्य स्वा ३।६।१।४
 सोमं गच्छ स्वाहेति । रेतो ३।८।५।२
 सोमं राजानम् । अवसेऽभि० ५।२।२।८
 सोम राजन्विश्यास्त्वं प्रजा ३।९।३।६
 सोमस्य तनूंसि विष्णवे ३।४।१।१०
 सोमस्य स्वा धुन्नेनाभिमि० ५।४।२।२
 सोमस्य दात्रमसीति ५।३।५।१८
 सोमाय वगस्पतये स्वाहेति ५।४।३।१६
 सोमाहुतयो ह वा एता १।१।५।६६
 सोमेनेष्टा सौत्रामण्या यजेत १।२।८।२।२
 सोमो राजा राजपतिः १।१।४।३।९
 सोमो वै पयोमहाः १।२।७।३।१७
 सोमो वै प्रवर्ग्यः । सर्व १।४।३।२।३०
 सोमो वै राजा यज्ञः प्रजा० १।२।६।१।१
 सोमोऽस्यश्चिम्याम्यच्यस्व १।२।७।३।६
 सोऽयं गुरुषः प्रजापतिरका० ६।१।१।८
 सोऽयं यज्ञो यन्ममभिदध्यौ ३।२।१।२५

कण्डिकाप्रतीकः

का० अ० अ० अ०

सोऽयं विष्णुर्जनः । छन्दो० १।२।५।८
 सोऽयन्दिपात्पुरुषः । पशुपु १।१।२।२।४
 सोऽयमग्निः सृष्ट आविर० १०।५।३।११
 सोऽयमात्मा त्रेधाविहित एव १०।५।१।३
 सोऽयास्य आग्निरसः १।४।४।१।२१
 सोऽर्चञ्छ्रम्यंश्चचार प्रजाकामः १।८।१।७
 सोऽर्चञ्छ्रम्यंश्चचार प्रजाकामः ३।९।१।४
 सोऽर्चञ्छ्रम्यंश्चचार प्रजा० १।१।१।६।७
 सोऽर्चञ्छ्रम्यंश्चचार प्रजापतिरीक्षा० २।५।१।३
 सोऽजतिष्ठति । हंसः शुचि० ५।४।३।२२
 सोऽवनयति । भुवं भ्रुवेण ४।२।४।२३
 सोऽवनयति । रक्षोहणो वो ३।५।४।२०
 सोऽवस्तृणति । रक्षोहणो वो ३।५।४।२१
 सोऽवेक्षते । सैजोऽसि शुक्र० १।३।१।२८
 सोऽवेक्षते । सत्यं वै चक्षुः १।३।१।२७
 सोऽवेत् । बहं वाव सृष्टि० १।४।४।२।१०
 सोऽवेत् । पाप्मानं वा १।१।१।६।९
 सोऽश्वममिमन्त्रयते । वातो ६।४।४।२
 सोऽश्वममिमन्त्रयते । प्रतूर्त ६।३।२।२
 सोऽश्वमुत्क्रमयति । प्रतूर्त० ६।३।२।७
 सोऽप्यन्तीमद्विरभ्युक्षति १।४।९।४।२२
 सोऽसावाज्यमधिश्चयति १।२।२।६
 सोऽत्येष चित्य आसीत् ६।१।२।१६
 सोऽत्येष सुकृतः आत्मा ८।६।२।१८
 सो हेममीक्षास्त्रके । कथन्तु १।४।४।२।६
 सोमापीष्णं श्यामजाम्याम् १।३।२।२।६
 सौम्येन चरुणा प्रचरति ४।४।२।१
 सौम्योऽध्वरः प्रथमा चितिः १०।१।५।३
 सौरीम्याम्यां जुहोति ४।३।४।८

| कण्डिकाप्रतीकः | ख०अ०ब्रा०व० |
|-------------------------------|-------------|
| सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च | १३।२।२।७ |
| स्वनाभ्यामेवास्य शुक्रमस्रवत् | १२।७।१।६ |
| स्तुप एवाप्त्य युपः । बाहू | ३।५।३।४ |
| स्मयेनाहरति । वज्रो वै | ७।३।१।१९ |
| हुना समाधारयति । यं वाच | १।४।४।४ |
| सुवश्वात्र सुवच प्रयुज्येते | ६।३।१।८ |
| क्षुवेण समाधारयति । यं मनस | १।४।४।३ |
| क्षुवेण समाधारयति । यो मूलं | १।४।४।९ |
| स्वप्नान्त उच्चावचमीय० | १४।७।१।१४ |
| स्वयं वाजिस्तन्वक्कृष्य० | १३।२।७।११ |
| स्वयनातृणया संस्पृष्टं प्रथमं | ९।२।१।२३ |
| स्वयमातृणां व्यापारयति | ९।२।१।४ |
| स्वयमातृणामुपदधाति । इयं | ७।४।२।१ |
| स्वयनातृण्यायामोष्य । अनू० | ८।७।३।४ |
| स्वयमातृणास्तु गायति | ८।७।४।४ |
| स्वर्ग एव लोकः पृथी चितिः | ८।७।४।१७ |
| स्वर्गस्यो ह्येव लोकस्य समा० | ३।७।१।२३ |
| स्वर्ण धर्मः स्वाहेति । असौ | ९।४।२।१९ |
| स्वर्ण ज्योतिः स्वाहेति | ९।४।२।२२ |
| स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीदेति | |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०व० |
|-----------------------------------|--------------|
| स्वर्ण शुक्रः स्वाहेति | ९।४।२।२१ |
| स्वर्ण सूर्यः स्वाहेति | ९।४।२।२३ |
| स्वर्णाकः स्वाहेति । अय० | ९।४।२।२० |
| स्वर्मानुर्ह वा आसुरः । सूर्य | ५।३।२।२ |
| स्वर्यन्तो नापेक्षन्ते । आ यां | ९।२।३।२७ |
| स्वाद्दीन्त्वा स्वादुनेति । सुरां | १२।७।३।५ |
| स्वाहाकारेण तां व्याधारयति | ९।२।१।७ |
| स्वाहाग्नये यज्ञियायेति | १४।२।२।१८ |
| स्वाहा प्रावम्य इति | १४।२।२।३३ |
| स्वाहा वावापुषिवीभ्या० | १४।२।२।३६ |
| स्वाहाविमाधीताय स्वाहा | १४।१।८।३ |
| स्वाहा पितृभ्य ऊर्ध्ववर्हि० | १४।२।२।३५ |
| स्वाहा पूज्यो शरस इति | १४।२।२।३२ |
| स्वाहा प्रतिरवेभ्य इति | १४।२।२।३४ |
| स्वाहा प्राणेभ्यः साविपति० | १४।३।२।३ |
| स्वाहा रुद्राय रुद्रहृदय | १४।२।२।३८ |
| स्वाहा दिशेभ्यो देवेभ्य | १४।२।२।३७ |
| स्वाहा सममिस्तपसागतेति | १४।१।४।६ |
| स्वाहा सूर्यस्य रश्मये | १४।२।१।२१ |

(ह)

हंसः शुचिपदिति । असौ वा ६।७।३।११
हविर्पञ्चविधो वा अन्यः ११।७।२।१
हविर्ज्मोरे अस्तु सूर्य इति ३।९।२।१२
हविर्मान्देवो अध्वर इति ३।९।२।११
हव्या ते स्वदन्तामिति ३।७।३।१२
हस्त आधाय समितेति ६।३।१।४१
हस्त एष भवत्येष पशूनमिम० ६।४।४।१

हस्त एषाधिर्मवत्यय पशूनमि० ६।३।२।१
हस्तेऽग्नी आदधीत । य इच्छे० २।१।२।१२
हस्तो वै महः । ॥ कर्म० १४।६।२।८
हार्दान महर्दिवामिरुति० १४।२।२।२१
हिङ्गास् स्तोत्रियाणां दशमः ४।४।४।२
हिङ्गुत्यान्वाह । नासामा १।४।१।१
हिरण्योऽध्वस आसौ १३।२।२।१६

| अष्टाश्वप्रतीक- | का०ख०पा०क० | अष्टाश्वप्रतीक- | का०ख०पा०क० |
|---------------------------------------|------------|--------------------------------------|------------|
| हिरण्ययोर्द्वे कुशयोन्तरवह्नि ३।६।२।९ | | हुत्वा वपां समीच्यौ । वपा० ३।८।२।२८ | |
| हिरण्यगर्भः समवर्ततत्र ७।४।१।१९ | | हुत्वा वपागेवाग्नेऽभिषारयति ३।८।२।२४ | |
| हिरण्यमयान्धु हेके कुर्वन्ति ६।२।१।३८ | | हृदयमु वै पशु । तदस्या० ३।८।३।१६ | |
| हिरण्यवी अरणी । याभ्यां १४।९।४।२१ | | हृदयमेवास्मैन्द्र पुरोडाशः १२।९।१।३ | |
| हिरण्येन पावयन्ति १२।८।१।१५ | | हृदयमेवेन्द्र । यकृतसविता १२।९।१।१५ | |
| हुतासु वपासु । प्रपचाध्वयू १३।५।३।७ | | हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे १४।१।४।१४ | |



* त्रुटिपरिमार्जनम् *

स्वरया प्रकाशनमुपगतायामस्यामनुक्रमणिकायां दृष्टिदोषात्
तत्तत्स्थानस्थलिताः काण्डिकाप्रतीका इह निर्दिश्यन्ते—

(अ)

अंशुं गृह्णाति । सर्वस्वायैव ५।१।२।१
अंशनेवाधूतेति । श्रेष्ठी० १।१।५।९।८
अंसदग्ना भवति । अंस० १।१।१।३।१०
अग्ने तव श्रवो वय इति ७।३।१।२९
अजायै पयसाच्छृणुति ६।५।४।१६
अजलिना । न खेतस्येतीवा० ९।४।२।४
अथ पशोः प्राणानद्भिः ३।८।२।४
अथ वाहू विमार्ष्टि । निग्र० ५।१।५।२।८
अथ यदा सुपुतो भवति १।४।५।१।२१
अथ यद् भ्रुवाभामाज्यं परि० ३।१।४।१७
अथ वा अतोऽद्वाजिवाहः १२।२।३।११
अथ बालखिरुषा उपदधाति ८।१।४।१
अथाम्रेण शालां तिष्ठन्नभ्यङ्गे ३।१।३।७
अथाध्यात्मन् । प्राणो वा १।०।६।२।४
अथाहवनीय एव पुष्करपर्णमुप० ७।३।१।९
अथैनम्लङ्कुभिः परिणिहन्ति १।३।८।१।१
अष्टौ वसवः । एकादश ४।५।७।२

(इ)

इदमेवान्तरिक्षम् । तस्मादे० ९।३।१।५
इन्द्रस्तु दुन्धुयो द्वितीयमह० १३।७।१।४

(ओ)

ओ ध्रावयेति वै देवाः १।५।२।२०

(त)

तदाहुः । अन्तिके मृष्युर्दूरा १।०।५।२।१७
तस्य वा एतस्य ग्रहस्य ४।१।३।१५
तेऽग्निनैव स्वर्चं विस्फपाङ्मयन्त ३।४।३।४
ते देवा वायुममुवन् । वायविमं ४।१।३।७

(न)

निधायोदहरणं त्रिर्दिश्यते ९।१।२।६

(प)

पद्मिश्चतुर्भिरङ्गलिति १।३।२।७।६

(फ)

फस्गुनीन्वमी आदधीत २।१।२।११

(य)

युनक्त सीरा विषुगा तनुध्व० ७।२।२।५

(स)

स गृह्णाति । मयि गृह्णाम्यग्ने ७।४।१।२
स यदि घृष्टिकामः स्थात् १।५।२।१९
स वै दक्षिणेऽग्नौ जुहोति २।५।२।२५

| वर्णिकप्रतीक. | का०अ०आ०क० | वर्णिकप्रतीक. | का०अ०आ०क० |
|---|-----------|---------------------------------------|-----------|
| हिरण्ययोर्द्वे कुशयोन्तरवदित ३।६।२।९ | | हुत्वा वपां समीच्यौ । वपा० ३।८।२।२८ | |
| हिरण्यगर्भः समवर्तताम्र ७।४।१।१९ | | हुत्वा वपमेवाग्नेऽभिषारयति ३।८।२।२४ | |
| हिरण्यमयान्यु द्वेके कुर्वन्ति ६।२।१।३८ | | हृदयमु वै यशु । तदस्या० ३।८।३।१६ | |
| हिरण्यमी अरणी । याम्या १४।९।४।२१ | | हृदयमेवात्स्यैन्द्र पुरोडाशः १२।९।१।३ | |
| हिरण्येन पावयन्ति १२।८।१।१५ | | हृदयमेवेन्द्र । यकृत्सविता १२।९।१।१५ | |
| हुतासु वपासु । प्रपद्याध्वयू १३।५।३।७ | | हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे १४।१।४।१४ | |



| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०भा०क० | कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०भा०क० |
|---|------------|--|------------|
| हिरण्यमयोर्ह कुशयोरन्तरवहित ३।६।२।९ | | हुत्वा वर्षां समीच्यौ । वपा० ३।८।२।२८ | |
| हिरण्यगर्भः समवर्तताम्र ७।४।१।१९ | | हुत्वा वपामेवाग्नेऽभिघारयति ३।८।२।२४ | |
| हिरण्यममान्यु द्वेके कुर्वन्ति ६।२।१।३८ | | हृदयमु वै पशुः । तदस्या० ३।८।३।१६ | |
| हिरण्ययी अरणी । याभ्यां १४।९।४।२१ | | हृदयमेवात्स्यैन्द्रः पुरोडाशः १२।९।१।३ | |
| हिरण्येन पावयन्ति १२।८।१।१५ | | हृदयमेवेन्द्रः । यकृत्सविता १२।९।१।१५ | |
| हुतासु वपासु । अषाध्वयू १३।५।३।७ | | हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे १४।१।४।१४ | |

